।। पूर्ण परमात्मने नमः ।।

मुसलमान

नहीं समझे

ज्ञान कुरआन

(अल्लाह एक, धरती एक। धर्म कैसे बने अनेक?)

{ मुसलमान भाईयों तथा बहनों के लिए यह
पुस्तक अल्लाह का वरदान सिद्ध होगी।
- लेखक }

जीव हमारी जाति है, मानव (*Mankind*) धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

विषय सूची

क्रम सं.	विवरण	पृठ सँख्या

(अध्याय नं. 2)

(अध्याय नं. 3)

(अध्याय नं. 4)

(अध्याय नं. 5)

भूमिका

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :– शुरू खुदा का नाम लेकर
जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

मैंने (लेखक संत रामपाल दास जी ने) सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। पता चला कि संसार में विशेषकर दो ताकतें हैं जो सब जीवों को प्रभावित कर रही हैं।

1. रहमान, 2. शैतान।

इसी पुस्तक के अंत में लिखी सृष्टि रचना (Creation of World) नामक अध्याय में पढ़ेंगे। उसमें आप जी को पता चलेगा कि रहमान यानि दयालु कादिर (समर्थ) अल्लाह (परमेश्वर) सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, सबका पालन-पोषण करने वाला कौन है तथा ''शैतान'' कौन है? जो प्रत्येक प्राणी को धोखे में रखकर अपने जाल में फंसाता है। यह मानव को कुछ अच्छा तथा अधिक गलत ज्ञान प्रदान करता है।

कादिर अल्लाह यथार्थ ज्ञान बताता है। शैतान (जिसे महापुरूषों ने ''काल'' कहा है) गुप्त रहता है। गुप्त रूप से अज्ञान व ज्ञान का मिश्रण मानव को देता है जो अधूरा अध्यात्म ज्ञान है। समर्थ परमेश्वर संत व सतगुरू (मुर्शिद) के रूप में प्रत्यक्ष प्रकट होकर यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान अपने मुख से बोलकर बताता है। परंतु सर्व मानव ने एक बात की रट लगा रखी है कि प्रभु (खुदा- God ,रब) निराकार है जबकि सर्व धर्मों के पवित्र ग्रन्थों में प्रमाण है कि खुदा मानव जैसा साकार है।

प्रमाण के लिए :- पवित्र बाईबल में उत्पत्ति अध्याय नं. 1 के श्लोक नं. 26 में कहा है कि ''परमेश्वर ने छठे दिन कहा कि हम मानव को अपनी समानता में अपने जैसी शक्ल-सूरत का उत्पन्न करेंगे।'' परमात्मा ने मानव को अपने जैसा उत्पन्न किया।(पवित्र बाईबल से लेख समाप्त)

इससे स्पष्ट है कि परमात्मा मानव जैसे आकार में है, निराकार (बेचून) नहीं है। ईसाई भाईयों ने रट लगा रखी है कि (God is Formless) परमात्मा निराकार है।

इसी प्रकार हिन्दू भाई भी परमात्मा को निराकार कहते हैं। श्री राम जी तथा श्री कृष्ण जी को पूजते हैं। उन्हें परमात्मा मानते हैं जो साकार मानव सदृश थे।

इसी प्रकार मुसलमान भाई कहते हैं कि अल्लाह बेचून (निराकार) है। फिर यह भी कहते हैं कि खुदा सातवें आसमान पर तख्त (सिंहासन) पर बैठा है। जब सिंहासन पर बैठा है तो वह साकार मानव समान है। जब अल्लाह पृथ्वी पर आता है तो इसी भ्रम में उसे पहचानने में धोखा खा जाते हैं। उसके यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान को अपने अज्ञान के कारण झूठा मानकर स्वीकार नहीं करते तथा न उसे खुदा मानते हैं।

इस पाक किताब ''मुसलमान नहीं समझे ज्ञान कुरआन'' में यह शंका समूल समाप्त की गई है। कृपया दिल थामकर धैर्य के साथ पढ़ोगे तो दाँतों तले अंगुली दबाते रह जाओगे।

लेखक ने इस पुस्तक को उस कादिर खुदा द्वारा आसमान से स्वयं पृथ्वी पर आकर बताया यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान से प्रमाणों सहित लिखा है। मेरा उद्देश्य है कि विश्व के मानव को यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताऊँ। आश्चर्य की बात यह है कि जो ज्ञान प्रत्येक धर्म के पाक ग्रन्थों में लिखा है। उसे भी उस धर्म के अनुयाई ठीक से नहीं समझ सके। जिस कारण से मुझे अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

यदि प्रत्येक धर्म के व्यक्ति अपने ग्रन्थों को यथार्थ रूप में समझे होते तो उनको समझाना

आसान हो जाता। जैसे यदि विद्यार्थी आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई ठीक से पढ़ा हो तो उनको उच्च जमातों (कक्षाओं) की पढ़ाई पढ़ाना बहुत आसान होता है। जो दो जमा दो छः पढ़े हैं, उसी की रट लगाए हुए हैं। उनको यह समझाना कि दो जमा दो चार होते हैं, महाकठिन कार्य है। विरोध खड़ा हो जाता है कि नया अध्यापक गलत पढ़ा रहा है। जैसा कि ऊपर बताया है कि ''पवित्र बाईबल'' में लिखा है कि परमात्मा मानव जैसा साकार है। ईसाईयों को यदि कहता हूँ कि आप ने पवित्र बाईबल ठीक से नहीं समझा। आप गलत कह रहे हो कि **God is Formless** (परमेश्वर निराकार है) तो वे मुझे मूर्ख बताते हैं कि एक हिन्दू व्यक्ति कैसे समझ सकता है पवित्र बाइबल के ज्ञान को। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। यही दशा प्रत्येक धर्म के अनुयाइयों की है।

हिन्दू धर्म में पवित्र ग्रन्थों में प्रथम नाम वेदों का है। वेदों के ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मंत्र 3 में प्रमाण है। लिखा है कि सर्व सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता परमेश्वर सब लोकों के ऊपर के लोक में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27 में तथा अनेकों स्थानों पर वेदों में लिखा है कि ''परमेश्वर ऊपर के लोक में बैठा है'' यानि निवास करता है। वहाँ पर सम्राट (राजा) की तरह सिंहासन पर विराजमान है। यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्मिक ज्ञान बताने के लिए सशरीर गति करके (चलकर) नीचे पृथ्वी आदि लोकों में प्रवेश करके, जो परमेश्वर की खोज में लगे हैं, उनकी उलझनों को सरल करता है। उन अच्छी आत्माओं को यथार्थ ज्ञान समझाता है। हिन्दू धर्म के व्यक्ति भी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि ऐसा कुछ वेदों में वर्णन है। इसलिए मुझे आलोचक कहते हैं। धर्म का विरोधी मानते हैं। मैंने प्रत्येक धर्म के पवित्र ग्रन्थों से सच्चाई उजागर की है। उसी के आधार से उस-उस धर्म के धार्मिक व्यक्ति को समझाना चाहा है। एक बार विरोध तो जोर-शोर से होता है। परंतु सत्य को अपने-अपने ग्रन्थों में देखकर शांत हो जाते हैं। परंतु उस सत्य को आँखों देखकर भी स्वीकार करने में आना-कानी करते हैं क्योंकि शैतान उनकी बुद्धि पर बैठ जाता है। उनको भयभीत करता है कि समाज के व्यक्ति क्या कहेंगे? तुझे हानि हो जाएगी। ये हो जाएगा, वो हो जाएगा। जो बुद्धिमान व अल्लाह के सच्चे चाहने वाले हैं, उनकी तो खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वे मेरे साथ मिलकर अपना मानव जीवन धन्य कर लेते हैं।

उदाहरण के लिए पेश है अल्लाह की खोज के सच्चे खोजी की आत्मकथा। समझने के लिए एक उदाहरण पर्याप्त है :-

मैं समझा पाक कुरआन

मैं शहजाद खान जिला-गुड़गाँव का रहने वाला हूँ। मैं एक मुस्लिम समाज से हूँ। मुझे शुरू से ही अल्लाह की तलाश थी। बंदी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेने के बाद मेरी अल्लाह तआला की तलाश पूरी हुई। नाम दीक्षा लेने से पहले मैंने कुरआन शरीफ भी पढ़ी। लेकिन उसमें जो लिखा है, वो मुझे समझ नहीं आया। मुझे शुरू से ही हमारे जो मुस्लिम समाज में जो मुल्ला-काजी और हमारे बड़े-बुजुर्ग होते थे, उन्होंने बस एक ही बात सिखाई थी। नमाज पढ़ो, रोजे करो, बकरा ईद मनाओ, बकरे काटो, माँस खाओ। कुछ भी करो, लेकिन मालिक का नाम लो। मैंने मुस्लिम समाज में रहते हुए ये सारी भक्ति साधना की जो मुस्लिम समाज में बताया जाता है। लेकिन इसके करते हुए मुझे कोई भी लाभ नहीं मिला। मेरा खुद का कोई काम-धंधा नहीं था। मेरे मम्मी-पापा मुझसे हमेशा कहते थे कि मैं कभी अपनी जिंदगी में कुछ नहीं कर सकता। जिसके चलते मैं बहुत परेशान रहता था। मुस्लिम समाज में मुझसे जो भी कहा जाता था, मैंने वो सब किया। लेकिन उससे भी मुझे कोई राहत नहीं मिली। मुझे

बताया था कि एक तहज्जुद की नमाज होती है इसका समय रात्रि को ईशा की नमाज के बाद से शुरू होता है और फज्र की नमाज का वक्त शुरू होने के साथ समाप्त हो जाता है। लेकिन फज्र की नमाज का समय शुरू होने से एक घण्टा पहले का समय अफजल (बहतरीन) समय माना जाता है।

इसको सबसे पहले हमारे नबी हजरत मौहम्मद सल्ल. ने पढ़ा था। इसको पढ़ने से अल्लाह तआला से नजदीकी प्राप्त होती है और गुनाहों को माफ करवा देती है। गुनाहों को रोकती है। सभी मुरादें पूरी करती है। अल्लाह तआला से जो मुरादें माँगते हैं, वही मिलता है। हर दुआ पूरी होती है। पाक हदीस में कहा है कि तहज्जुद की नमाज पढ़ा करो क्योंकि इसको नेक बंदे पढ़ा करते हैं। जितने भी नेक बंदे हुए हैं, उन्होंने इसको पढ़ा है। इससे अल्लाह तआला से नजदीकी नसीब होती है, गुनाहों को माफ करवा देती है और गुनाह करने से रोकती है। इसका यह शवाब है। तहज्जुद की नमाज के वक्त अल्लाह तआला की तरफ से ऐलान लगता है कि है कोई मांगने वाला! उसकी मुरादों को पूरा किया जाए।

सुबह सूर्योदय से लगभग एक घण्टा पहले की नमाज जिसे हम फजर की नमाज कहते हैं, अगर इस नमाज को पढ़कर आप किसी काम के लिए निकलते हो तो ये समझ लो कि आपका वह काम तो होगा ही होगा। यह सौ प्रतिशत है।

मैंने लगभग यह साधना 22 साल तक की। लेकिन मुझे इन 22 सालों में एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ कि मुझे लगा हो कि आज मुझे कुछ फायदा हुआ हो, मेरा कैरियर बन गया हो। मेरा कोई काम हो गया हो या किसी चीज में परफेक्ट हो गया हूँ। मुझे ऐसे किसी भी लाभ का अनुभव नहीं हुआ। ये तो शुक्र है उस अल्लाह तआला का जो मुझे संत रामपाल जी महाराज के रूप में मिले और शास्त्रों के अनुसार सही सत्भक्ति बताई।

मैंने ख्वाजा शरीफ की दरगाह जो अजमेर में है जिसे ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह बोला जाता है जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। मैंने उसके लिए भी चाद्दर के लिए बोला। मम्मी-पापा ने बोला कि आप वहाँ जाओ। वह सब की मुराद पूरी करते हैं तो आपकी भी पूरी करेंगे। मैं वहाँ भी गया। परंतु मैं जहाँ पर भी गया, वहाँ पर देखा कि वहाँ पर एक बहुत बड़ा देग होता है जिसमें लोग पैसे डालते हैं। कोई चांदी-सोना डाल रहा है। लेकिन मेरे पास कोई पैसे नहीं थे। वहाँ पर लोग सिर पर टोपी डाल लेते हैं। मालिक का नाम लेते हैं और एक हरे रंग का कपड़ा होता है, उसके नीचे से आपको निकाला जाता है। फिर कहते हैं कि आपको सवाब मिल चुका है। अब आपके लिए जन्नत के दरवाजे खुल चुके हैं। कहते हैं कि यही जन्नत के दरवाजे हैं जो रमजान के दिनों में खोले जाते हैं। 22 साल तक मैंने यह सब कुछ किया। लेकिन मुझे इन सबसे कोई भी फायदा नहीं हुआ। बहुत सारी जगह पर मैं गया। अलीगढ़ दरगाह, महरौली पर भी गया। वहाँ पर भी मैंने चद्दर बोली। वहाँ पर बाहर तो माँस कटता है और अंदर एक पत्थर होता है। उसके सामने सजदा करो या उसके ऊपर चद्दर चढ़ा दो। सब जगह यही कहानी और हर जगह कुछ ना कुछ नया देखने को मिलता था। मैंने अपने एक मौलवी साहब से पूछा कि क्या हम जो कर रहे हैं, हम जिस रास्ते पर चल रहे हैं, क्या वह सच है? उन्होंने कहा कि हाँ! यह बहुत अच्छा है। उन्होंने मुझसे कहा कि आप 40 दिन की जमात में जाइए। मैं 40 दिन की जमात में तो नहीं लेकिन 3 दिन की जमात में गया था। वहाँ पर भी मैंने वही सब देखा। लोग भेड़ चाल चल रहे हैं। अगर वहाँ पर कहीं खाना बन रहा है तो लोग नमाज को छोड़कर पहले खाने की तरफ भाग कर जाते हैं। वह लोग यह नहीं देखते कि हमें भक्ति करनी है, वह सिर्फ इतना देखते हैं कि हमारा पेट भरे और हम सोएँ। उन व्यक्तियों के लिए नमाज कोई भी अहमियत नहीं रखती। नमाज का मतलब है

एक नित्य नियम। नमाज से मुझे कोई भी फायदा नहीं मिला।

महरौली में एक बहुत बड़ी दरगाह बना रखी है। एक पत्थर है। उस पर चद्दर चढ़ा रखी है। और बाहर माँस काटा जाता है। माँस के टुकड़े कर-करके खिलाए जाते हैं और कहते थे कि यह बहुत बड़ा सवाब है। मालिक ने माँस खाने के लिए बोला है। मालिक ने बोला था कि कुर्बानी दो। जो भी गाय, भैंस, बकरी जो भी उनके हाथ लगता था। उनको काटते थे। लोगों को खिलाते थे। मुसलमान धर्म में जो माँस बनता है, वह इस प्रकार बनता है कि जैसे कोई हरी सब्जी बन रही हो। कोई बकरा काट देता है, कोई गाय काट देता है, कोई भैंस काट देता है। मतलब सब कुछ वहाँ पर चल रहा है। वहाँ पर एक ही पानी के मटके में सब लोग पानी पीते हैं। अगर कोई शराबी है, कोई बच्चा है, कोई कैंसर पीड़ित है या कोई नवाबी व्यक्ति है तो वह भी उसी घड़े में पानी पीता है। अगर आप उस पर प्रश्न चिन्ह उठाते हो तो आपसे कहा जाता है कि यह गलत नहीं है। इससे सवाब मिलता है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का झूठा खा सकता है।

इस बात से मैं इतना परेशान हो गया था कि मैं अपना मानसिक संतुलन तक खो चुका था। मुसलमानों में एक बात कही जाती है कि आपको सीधा मुसलमान बनाकर भेजा जाता है। मैं इस परंपरा को निभाते आ रहा था। मुझे एक भक्ति सौदागर को संदेश नाम की किताब मिली और मैं धीरे-धीरे उस पुस्तक को पढ़ने लगा। मैंने पापा से पूछा कि पापा यह पुस्तक कहाँ से आई तो उन्होंने बताया कि उन्होंने यह पुस्तक बरवाला आश्रम से डाक द्वारा मंगवाई है। उस पुस्तक में मैंने देखा कि उसमें कलाम-ए-पाक की एक हैडिंग लिख रखी थी। इसमें लिखा था कि वह अल्लाह तआला जिसने पानी की एक बूंद से आदमी और औरत को उत्पन्न किया और फिर इस पृथ्वी पर साहिब-ए-नस्ल से किसी का बाप, पिता, बेटा बनाकर भेज दिया। उस अल्लाह तआला के बारे में जिसने आसमान और जमीन, इन दोनों के दरमियान जो कुछ भी है, उसको छः दिन में बनाया और सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। उसके बारे में किसी बाखबर से पूछकर देखो। उन्होंने बताया था कि सूरः फुरकानि-25 आयत 52 से 59 में यह लिखा है। फिर मैंने उस चीज को नोट किया। उस चीज पर गौर किया और फिर कुरआन शरीफ हिंदी में लेकर आया और वो बातें मिलान की। वैसे का वैसे ही वह सब मिला तो यह सब देखकर मेरा दिमाग घूम गया। फिर मैं सोचने लग गया कि यह ज्ञान और एक हिन्दू समाज के आदमी के पास, कलाम-ए-पाक का ज्ञान एक हिन्दू समाज के व्यक्ति के पास कैसे आया? फिर धीरे-धीरे मैं उस पुस्तक को दिन-रात पढ़ने लगा। एक दिन मैंने निर्णय कर लिया कि अब से मैं जब भी दुकान खोलूंगा तो पूर्ण परमात्मा संत रामपाल जी महाराज का नाम लेकर ही खोलूंगा। नया-नया हॉस्पिटल था तो मैं जब भी दुकान खोलता था तो संत रामपाल जी महाराज का नाम लेकर खोलता। फिर धीरे-धीरे संत रामपाल जी महाराज की दया से मेरी दुकान की प्रोग्रैस होने लगी। नाम दीक्षा लेने के बाद जब मैं संत रामपाल जी महाराज के दर्शनों के लिए गया तो मैंने कहा कि मालिक! मैं इतने दु:खों से उभरकर यहाँ पर आया हूँ तो परमात्मा ने मुझसे कहा कि करोड़ों के ऊपर से तेरे को मेहर हुई है और कहा कि बेटा! इस भक्ति पर डटा रह और अगर मर्यादा में रहकर भक्ति की तो जिंदगी में तू एक दिन वह मुकाम पा जाएगा जो तूने कभी सोचा भी नहीं होगा।

यह परमात्मा/अल्लाह तआला के वचन मेरी जिंदगी में सच साबित हुए हैं। आज परमात्मा ने वो सब दे रखा है जिसको सोचा भी नहीं था। संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेने के बाद मैंने माँस खाना छोड़ दिया। जो कहते थे कि अल्लाह के लिए कुर्बानी दो, अल्लाह ने माँस खाने का आदेश दिया है। लेकिन मुझे यह संत रामपाल जी महाराज की शरण में आने के बाद पता लगा कि अल्लाह

का ऐसा कोई आदेश नहीं था। अल्लाह के लिए कुर्बानी देने का मतलब था कि आपकी जो बुराईयाँ हैं, आप उनको छोड़ दो। अल्लाह तआला ने कभी भी माँस खाने का आदेश नहीं दिया। मैं और भी बहुत से लोगों को मिला लेकिन मुझे कहीं से कोई संतुष्टि नहीं मिली। संतुष्टि केवल संत रामपाल जी महाराज के तत्त्वज्ञान से मिली। किसी भी मुसलमान प्रवक्ता के पास ऐसा ज्ञान नहीं है। मैं खुद एक मुसलमान हूँ और सभी मुसलमान भाईयों से कहना चाहता हूँ कि मैंने भी नमाज पढ़ी हैं, आयतें पढ़ी हैं।

वह अल्लाह तआला के बारे में बोलते है कि :-

''सुभानाका अल्ला हुम्मा व बिहाम्दिका व ताबराकस्मुका
वा ताआला। जदुका वा ला इलाहा गैरूक।''

हे अल्लाह! मैं तेरी पाकी बयान करता हूँ और तेरी हमद (तारीफ) करता हूँ। और तेरा नाम बरकत वाला है। और तेरी शान बुलंद है। और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है।

''अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। अर्रहमानिर रहीम।
मालिकि योमिद्दीन इय्या–क नाबुदू व इय्या–क नस्तईन।
इहदि नस–सिरातल मुस्तकीम, सिरातल लजी–न
अन–अम–त अलैहिम गैरिल मग्जूबि अलैहिम वलज–जाल्लीन (अमीन)''

हमें नमाज का मतलब समझना है। नमाज का मतलब जो परमात्मा बताते हैं कि अपनी अरदास लगाना, प्रार्थना करना, नित्य नियम करना। जब हम पैदा होते हैं, तब हिंदू होते हैं। जब हमारी मुसलमानी कर दी जाती है, तब हम मुसलमान हो जाते हैं। ऐसा क्यों? अगर मालिक ने हमें मुसलमान ही बनाना था तो वह मालिक हमारी ऊपर से ही मुसलमानी करके भेजता। इसका किसी भी मुल्ला-काजी के पास कोई जवाब नहीं है। ना ही कभी मुहम्मद साहब ने माँस को छूआ था। उनके 1 लाख 80 हजार शिष्य हो गए थे। लेकिन उन्होंने कभी भी माँस को नहीं छूआ और ना माँस खाने के लिए बोला।

मेरी विश्व के सभी मुसलमान भाईयों से प्रार्थना है कि माँस खाना मतलब हम अपने बेटे का माँस खा रहे हैं। एक माँस दूसरे माँस को खा रहा है। इससे बड़ा राक्षस और कौन होगा? मेरी विश्व के सभी मुसलमान भाईयों से प्रार्थना है कि मुसलमान हो तो मुसले ईमान बनो। लेकिन हमारा ईमान कहाँ है? हमारा ईमान तो कुछ है नहीं, आज हम माँस खाते हैं। फिर तम्बाकू खा लेते हैं। फिर झूठ बोलते हैं। लेकिन पहले मुसलमान समाज में ऐसा नहीं था। पहले अगर किसी मुसलमान व्यक्ति के ऊपर शराब भी गिर जाती थी तो जिस अंग पर शराब गिरती थी, वह उस अंग को काट देता था। आज मुसलमान शराब पीते हैं। मस्जिद में शराब लेकर चले जाते हैं। कुर्बानी देते हैं, बकरे को काट देते हैं। मुसलमान समाज एक पाक समाज है। वह सिवाय अल्लाह तआला के किसी को नहीं मानते। लेकिन आज का मुसलमान समाज मुल्ला-काजियों द्वारा भ्रमित है। मेरे पिताजी जिनकी हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई थी, उनके फेफड़े गल गए थे। तब मैंने उनसे कहा कि अब कहाँ गया आपका खुदा? वह रोजे भी रखते थे, नमाज पढ़ते थे। लेकिन उस दुःख के समय में वह कुछ काम नहीं आया। तब उन्होंने संत रामपाल जी महाराज से प्रार्थना की कि मैं जन्मजात नाम ले लूँगा। मेरी यह बीमारी ठीक कर दो।

मेरे पूरे घर वालों ने, यहाँ तक कि डॉक्टरों ने भी बोल दिया था कि अब ये जीवित नहीं रह सकता। लेकिन संत रामपाल जी महाराज की दया से मेरे पिता जी की बीमारी ठीक हो गई। परमात्मा के नाम में इतनी शक्ति है कि आप बिना नाम उपदेश लिए अगर सच्चे दिल से परमात्मा को याद करते हो तो वह परमात्मा आपके सारे दुःख ठीक कर देता है। अगर आप अब भी परमात्मा को नहीं पहचान रहे तो फिर कब पहचानोगे? अब मैंने संत रामपाल जी महाराज की शरण में आने के बाद तहेदिल से तीन बार

कलाम-ए-पाक को पढ़ा है। वहाँ पर मुझे एक-एक चीज के बारे में पता लगा। वहाँ पर एक बात लिखी है कि शुरू करता हूँ उस अल्लाह तआला के नाम से जो सबसे बड़ा है और वह अपने बंदे के गुनाहों को माफ करने वाला है।

सूरः फुरकानि-25 आयत 52 से 59 में कबीर परमात्मा को बड़ा बोला गया है। असली ज्ञान तो यह था कि वह कबीर परमात्मा है। कबीर ही अल्लाह है। हजरत मुहम्मद साहब को भी कबीर परमात्मा जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। जब मुहम्मद जी ने जिंदा गाय को मार दिया था। लेकिन फिर उनसे वह गाय जीवित नहीं हुई और वह गुफा के अंदर चले गए और बहुत जोर से रोए और बोले अल्लाह-हू कबीर, अल्लाह-हू कबीर। फिर परमात्मा अल्लाह सूक्ष्म रूप बनाकर वहाँ पर आए और उन्होंने कहा कि जा हजरत तेरी गाय जीवित कर दी है और उस दिन से मुहम्मद साहब की महिमा बनी। जिस दिन गाय को काटा गया था, उस दिन को इन मुसलमान भाईयों ने लिख लिया और उसी दिन से यह जीव हत्या की परंपरा चल पड़ी। अगर आपको मेरी बातों पर यकीन नहीं होता तो आप अपने मुल्ला-काजियों से जाकर पूछो कि अगर मुहम्मद साहब अल्लाह को इतने प्यारे थे तो उनकी मौत इतनी दुर्गति से क्यों हुई? अपने मुल्ला-काजियों से जाकर पूछो। सारा ज्ञान खंगालो। अगर फिर भी संतुष्टि नहीं होती है तो आप यहाँ बरवाला आश्रम में आओ और आपको यहाँ सभी प्रश्नों का उत्तर संतुष्टि के साथ दिया जाएगा। आपको बिल्कुल संतुष्ट किया जाएगा। हमारी जाति ''जीव'' है। हमारा मानव धर्म है। हमारा हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। अगर आप इस जाति प्रथा में चलते रहे तो आप कभी भी अल्लाह तआला की प्राप्ति नहीं कर सकते। अजान जो हम लगाते हैं, अजान का मतलब ही क्या होता है?

अल्लाहू अकबर। अल्लाहू अकबर। अल्लाहू अकबर। अल्लाहू अकबर।
अश्हदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह। अशहदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह।
अश्हदु अन–न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह। अश्हदु अन–न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।
हय–य अलस्सलाह। हय–य अलस्सलाह।
हय–य अलल फलाह। हय–य अलल फलाह।
अल्लाहू अकबर। अल्लाहू अकबर।
ला इला–ह इल्लल्लाह असिस्लातु खैरूम्मिनन्नौम, अस्सलातु खैरूम्मिन्नौस।

इसका मतलब हमें आज तक नहीं पता लगा। बस सब लोग भेड़ चाल चल रहे हैं। एक के पीछे एक। अगर कोई सही रास्ता बताता है तो लोग उसकी सुनते नहीं। कहते हैं कि हमारे बड़े-बुजुर्ग इसी परंपरा को निभाते आए हैं।

अब समय है सही साधना करने का। भेड़ चाल से मुक्ति नहीं होगी। मुक्ति तो सतभक्ति से ही होगी और वर्तमान में वह केवल संत रामपाल जी महाराज जी के पास है। मेरी विश्व के सभी मुस्लिम भाईयों से प्रार्थना है कि समय रहते इस ज्ञान को समझ लो। अभी समय से संत रामपाल जी महाराज के तत्त्वज्ञान को समझो क्योंकि परमात्मा की वाणी है कि :-

गरीबदास यह वक्त जात है, रोओगे इस पहरे नूं।

यह हकीकत बात है। आज आप जितना लेट यहाँ आओगे तो आपके हाथ कुछ नहीं लगेगा रोने के सिवाय। कुरआन शरीफ में कहीं पर भी बकरे की कुर्बानी नहीं लिखी है। वहाँ पर कुर्बानी लिखी है, कुर्बानी का मतलब है कि अल्लाह तआला की राहों में अपनी बुराईयों को कुर्बान कर देना, उनको छोड़ देना, ना कि बकरे को काट देना, मुर्गे को काट देना। हम ईद पर जितनी भी कुर्बानी देते हैं, वह हमारे

पाप इकट्ठे हो रहे हैं। कलमा पढ़कर बकरे की कुर्बानी देना बहुत बड़ा पाप है, बहुत बड़ा हराम है। अगर मुल्ला-काजियों ने यह बात पहले बता दी होती तो इतने बड़े पाप नहीं होते। इन्हीं की वजह से आज मुसलमान समाज में मुसलमान शुरू से ही माँस खाने लग जाता है। परमात्मा ने हमें यहाँ भेजा था तो कुछ नियम बनाकर भेजे थे और अगर हम परमात्मा के नियमों को तोड़ते हैं तो हम सीधा शैतान के पास जाते हैं। नरक में जाएँगे। अल्लाह कबीर है और उस अल्लाह का ज्ञान वर्तमान में संत रामपाल जी महाराज के अलावा और किसी के पास भी नहीं है। अगर मुल्ला-काजियों को थोड़ा-सा भी ज्ञान था तो उन्होंने क्यों नहीं बताया कि कुरआन शरीफ में यह कहा है कि उस अल्लाह की खबर किसी बाखबर से पूछो। यह मानुष जन्म दुर्लभ है। समय रहते इसका सदुपयोग कर लो। बाद में पछतावे के अलावा कुछ नहीं मिलेगा। आज आप पढ़े-लिखे हो। अपनी पवित्र पुस्तकों को पढ़कर देखो। उनमें सब कुछ लिखा है। आपको वहाँ बहुत कुछ मिलेगा। वह अल्लाह तआला साकार है। कण-कण में समाया हुआ है। हमारी कुरआन शरीफ में लिखा है कि उस अल्लाह तआला ने 6 दिन में सृष्टि की रचना की और सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। उस अल्लाह तआला की खबर किसी बाखबर से पूछकर तो देखो।

वर्तमान में वह बाखबर (तत्त्वदर्शी) संत रामपाल जी महाराज हैं। आप पवित्र कुरआन शरीफ को खोलकर देखो। उसमें स्पष्ट लिखा है कि वह अल्लाह तआला कबीर है। वह सातवें आसमान पर बैठा है। हम सब उसी की आत्माएँ हैं। यह पूरा संसार उसी की आत्मा है। हमारा मोक्ष केवल शास्त्रों के अनुसार की हुई सत्भक्ति से ही हो सकता है। सत्भक्ति के लिए आपको तत्त्वदर्शी संत की तलाश करनी पड़ेगी। उस तत्त्वदर्शी संत के द्वारा बताई गई सत्भक्ति से ही आत्मा की मुक्ति संभव है। वर्तमान में वह तत्त्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज हैं। अल्लाह तआला के भेजे हुए नुमाइंदे हैं। अल्लाह तआला के फरिश्ते हैं। इनके द्वारा बताई गई सत्भक्ति को अगर आप पूरी तड़फ के साथ करोगे तो आप वास्तव में उस जन्नत में चले जाओगे जहाँ पर वह अल्लाह तआला विराजमान है। इस काल के लोक में सभी के ऊपर दुःखों का पहाड़ टूटा हुआ है और वह दुःख केवल संत रामपाल जी महाराज की शरण में आकर ही समाप्त हो सकते हैं।

भगत शहजाद दास
गुरूग्राम (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र :- 8950781981

इस पुस्तक में सर्व ज्ञान पाक कुरआन व महापुरूषों की पवित्र अमृतवाणी से लिखा है। इसको पढ़कर पाठक को संदेह की गुंजाईश नहीं रहेगी।

मेरा उद्देश्य विश्व के मानव को भक्ति की सही दिशा देना है। सत्य की राह पर लगाना है। निःस्वार्थ प्रयत्न कर रहा हूँ। परमात्मा व सतगुरू को साक्षी मानकर तथा भय मानकर परोपकार कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि विश्व का मानव वर्तमान में शिक्षित है। अपने-अपने पवित्र ग्रन्थों को स्वयं समझेगा और मेरे परोपकारी कार्य को सफल बनाने में मदद करेगा। अपना तथा अपने परिवार का कल्याण करवाएगा।

सर्व मानव का शुभचिंतक
संत रामपाल दास
(सतपुरूष का अंतिम नबी)

(अध्याय नं. 1)

क्या कहता है पाक कुरआन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :– शुरू खुदा का नाम लेकर
जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।
{जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।}
(रामपाल दास)

अर्थात् हम सब जीव हैं। मानव शरीर मिला है। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख तथा ईसाई सब मानव हैं। इसलिए हम सबका एक मानव धर्म है। मानवता (इंसानियत) कर्म है। इस कारण से कोई भिन्न धर्म नहीं है। पूरी पृथ्वी के मानव (स्त्री-पुरूष) एक खुदा (प्रभु) के बच्चे हैं।}

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।
एक लाख अस्सी कूँ सौगंध, जिन नहीं कर्द चलाया।।1।।
अर्श कुर्श में अल्लाह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली।
वै पैगंबर पाख पुरुष थे, साहिब के अबदाली।।2।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने कहा है कि नबी मुहम्मद जी को मेरा नमस्कार (सलाम) है। वे (राम) अल्लाह के (रसूल) संदेशवाहक कहलाए। बाबा आदम से लेकर अंतिम नबी हजरत मुहम्मद जी तक एक लाख अस्सी हजार नबी हुए हैं तथा जो उनके अनुयाई उस समय थे, कसम है उन्होंने (करद) छुरी चलाकर जीव हिंसा नहीं की।(वाणी 1)

(अर्श) आसमान के (कुर्श) अंतिम छोर पर ऊपर (अल्लाह) परमेश्वर का (तख्त) सिंहासन है। वह वहाँ पर विराजमान है। परंतु उस (खालिक) जगत के मालिक (बिन नहीं खाली) की पहुँच प्रत्येक प्राणी तथा प्रत्येक लोक तक है। उसकी शक्ति सर्वव्यापक है। उस खालिक से कुछ नहीं छुपा है। कोई स्थान ऐसा नहीं है जो खुदा की पहुँच से बाहर हो। वे एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर (Messengers) तो (पाक पुरुष थे) पवित्र महापुरूष थे जो (साहिब के) अल्लाह के (अबदाली) कृपा पात्र थे।(वाणी 2)

{नोट :- यहाँ पर यह स्पष्ट करना अनिवार्य समझता हूँ कि कुछ मुसलमान प्रवक्ता कुल एक लाख चौबीस हजार पैगम्बर मानते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने, उनके शिष्य गरीबदास जी ने तथा बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक बाबा जम्भेश्वर जी ने एक लाख अस्सी हजार कुल पैगंबर बताए हैं। पूर्ण परमात्मा ने जो बताया है, वह गलत नहीं हो सकता। फिर भी हमने यह जानना है कि जीव हिंसा माँस भक्षण महापाप बताया है जो उन एक लाख अस्सी हजार या एक लाख चौबीस हजार ने भी वह पाप नहीं किया। हमें भी नहीं करना चाहिए।}

पाक कुरआन से ज्ञान

{नोट :- ''पाक कुरआन'' की जो आयतें इस पुस्तक में प्रमाण के लिए लिखी गई हैं, उनकी पाक कुरआन से ली गई फोटोकापियां इसी पुस्तक के पृष्ठ 229 पर लगी हैं। कृपया मिलान के लिए वहाँ पर पढ़ें।}

बाइबल तथा कुरआन का ज्ञानदाता एक है

जिस अल्लाह ने ''कुरआन'' का पवित्र ज्ञान हजरत मुहम्मद पर उतारा। उसी ने पाक ''जबूर'' का ज्ञान हजरत दाऊद पर, पाक ''तोरात'' का ज्ञान हजरत मूसा पर तथा पाक ''इंजिल'' का ज्ञान हजरत ईसा पर उतारा था। इन सबका एक ही अल्लाह है।

प्रमाण :- कुरआन मजीद की सूराः अल् मुअमिनून नं. 23 आयत नं. 49-50 :-

आयत नं. 49 :- और मूसा को हमने किताब प्रदान की ताकि लोग उससे मार्गदर्शन प्राप्त करें।

आयत नं. 50 :- और मरियम के बेटे और उसकी माँ को हमने एक निशानी बनाया और उनको एक उच्च धरातल पर रखा जो इत्मीनान की जगह थी और स्रोत उसमें प्रवाहित थे।

सुरा अल् हदीद नं. 57, आयत नं. 26-27 :-

आयत नं. 26 :- हमने नूह और इब्राहिम को भेजा और उन दोनों की नस्ल में नुबूवत (पैगम्बरी) और किताब रख दी। फिर उनकी औलाद में से किसी ने सन्मार्ग अपनाया और बहुत से अवज्ञाकारी हो गए।

आयत नं. 27 :- उनके बाद हमने एक के बाद एक अपने रसूल भेजे और उनके बाद मरियम के बेटे ईसा को भेजा और उसे इंजिल प्रदान की और जिन लोगों ने उनका अनुसरण किया। उनके दिलों में हमने तरस और दयालुता डाल दी और रहबानियत (सन्यास) की प्रथा उन्होंने खुद आविष्कृत की। हमने उनके लिए अनिवार्य नहीं किया। मगर अल्लाह की खुशी की तलब में उन्होंने खुद ही यह नई चीज निकाली और फिर इसकी पाबंदी करने का जो हक था, उसे अदा न किया। उनमें से जो लोग ईमान लाए हुए थे, उनका प्रतिफल हमने उनको प्रदान किया। मगर उनमें से ज्यादा लोग अवज्ञाकारी हैं। {सन्यास यानि घर त्यागकर पहाड़ों व जंगलों में परमात्मा की तलाश में चले जाना। जैसे शेख फरीद, बाजीद आदि-आदि। उनके विषय में कहा है। आप जी विस्तृत उल्लेख ''अल-खिज्र (अल-कबीर) की जानकारी'' इसी पुस्तक में पढ़ेंगे।}

☛ अन्य प्रमाण :- कुरआन मजीद की सूरः अल बकरा-2 आयत नं. 35-38 तक कुरआन का ज्ञान देने वाला अल्लाह कह रहा है कि :-

आयत नं. 35 :- फिर हमने आदम से कहा ''तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत (स्वर्ग) में रहो और यहाँ जी भरकर जो चाहो खाओ, किन्तु इस पेड़ के निकट न जाना नहीं तो जालिमों में गिने जाओगे।''

आयत नं. 36 :- अन्ततः शैतान ने उन दोनों को उस पेड़ की ओर प्रेरित करके हमारे आदेश की अवहेलना करवा दी। हमने हुकम दिया कि अब तुम सब यहाँ से उतर जाओ। एक-दूसरे के दुश्मन बन जाओ। (साँप और इंसान एक-दूसरे के शत्रु हो गए) और तुम्हें एक समय तक धरती पर ठहरना है। वहीं गुजर-बसर करना है।

आयत नं. 37 :- उस समय आदम ने अपने रब से कुछ शब्द सीखकर तौबा (क्षमा याचना) की जिसको उसके रब ने स्वीकार कर लिया क्योंकि वह बड़ा क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।

आयत नं. 38 :- हमने कहा कि ''तुम अब यहाँ से उतर जाओ।'' फिर मेरी ओर से जो मार्गदर्शन तुम्हारे पास पहुँचे, उसके अनुसार (चलना)। जो मेरे मार्गदर्शन के अनुसार चलेंगे, उनके लिए किसी भय और दुःख का मौका न होगा। (कुरआन मजीद से लेख समाप्त)।

पवित्र कुरआन में अच्छी शिक्षा

पवित्र ''कुरआन मजीद'' पुस्तक में अनेकों नेक बातें हैं।

उदाहरण के लिए कुछ पेश हैं :-

कुरआन मजीद से सूरः लुकमान-31 आयत नं. 12 :- हमने लुकमान को हिकमत (तत्त्वदर्शिता) प्रदान की थी कि अल्लाह (परमेश्वर) के प्रति कृतज्ञता दिखाए। जो कोई कृतज्ञता दिखाएगा, उसकी कृतज्ञता उसके अपने लिए ही लाभदायक है। और जो इन्कार और अकृतज्ञता की नीति अपनाएगा तो अपनाए। अल्लाह तो वास्तव में निस्पृह और अपने आप प्रशंसित है यानि परमात्मा को अपनी बड़ाई करवाने की आवश्यकता नहीं है, वह तो महान है ही। कोई उसकी महिमा करता है तो उसे स्वतः अच्छा फल परमात्मा देता है उसकी नेकता को देखकर।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 13 :- याद करो जब लुकमान अपने बेटे को नसीहत कर रहा था तो उसने कहा, बेटा! अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना यानि परमेश्वर के साथ-साथ अन्य देव को ईष्ट न मानना। यह सत्य है कि अल्लाह के साथ शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 14 :- और यह वास्तविकता है कि हमने इंसान को अपने माँ-बाप का हक पहचानने की स्वयं तकीद (नसीहत) की है। उसकी माँ ने कमजोरी पर कमजोरी झेलकर उसको पेट में रखा और दो वर्ष दूध छुटाने में लगे। इसलिए नसीहत दी है कि मेरे प्रति कृतज्ञता दिखाओ तथा अपने माँ-बाप के प्रति कृतज्ञ हो। मेरी ही ओर तुम्हें पलटना है।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 15 :- लेकिन वे तुझ पर दबाव डालें कि मेरे (अल्लाह के) साथ तू किसी ऐसे को शरीक करे जिसे तू नहीं जानता अर्थात् तेरी जानकारी में मेरा साझी नहीं है तो उनकी बात हरगिज न मान। संसार में उनके साथ अच्छा व्यवहार करता रह। मगर चल उस व्यक्ति यानि संत या नबी के मार्ग पर जिसने मेरी ओर रजू किया है यानि परमात्मा की भक्ति की प्रेरणा की है। फिर तुम सबको मेरे पास ही आना है। उस

समय मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम कैसे कर्म करते रहे हो।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 16 :- (और लुकमान ने कहा कि) बेटा! कोई चीज राई के दाने के बराबर भी हो और किसी चट्टान में या आसमान में छुपी हो, अल्लाह उसे निकाल लाएगा। वह सूक्ष्मदर्शी और सब खबर रखने वाला है।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 17 :- बेटा नमाज (आरती) कायम कर। नेकी का संदेश दे, बुराई से रोक और जो मुसीबत भी पड़े तो सब्र कर। ये बातें हैं जिनकी बड़ी ताकीद की गई है यानि सब इन बातों को अच्छी मानते हैं।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 18 :- और लोगों से मुख फेरकर बात न कर, न जमीन पर अकड़कर चल। अल्लाह किसी अहंकारी और डींग मारने वाले को पसंद नहीं करता।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 19 :- अपनी चाल में संतुलन बनाए रख और अपनी आवाज तनिक धीमी रख। सब आवाजों से बुरी आवाज गधे की आवाज है।

सूरः लुकमान-31 आयत नं. 22 :- जो व्यक्ति अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे और व्यवहार में वह नेक हो। उसने वास्तव में एक भरोसे के योग्य सहारा थाम लिया यानि परमात्मा उसके साथ है और सारे मामलों का अंतिम निर्णय अल्लाह ही के पास है।

सूरः अस् सज्दा-32 आयत नं. 4 :- वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों और जमीन को और उन सारी चीजों को जो इनके बीच है, छः दिन में पैदा किया और उसके बाद सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई अपना है, न सहायक है और न कोई उसके आगे सिफारिश करने वाला है। फिर क्या तुम होश में न आओगे।

सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 188 :- और तुम लोग न तो आपस में एक-दूसरे का माल अवैध रूप से खाओ और अधिकारियों (ऑफिसरों) के आगे उनको इस गरज से पेश न करो कि तुम्हें दूसरों के माल का कोई हिस्सा जान-बूझकर अन्यायपूर्ण तरीके से खाने का अवसर मिल जाए। {अर्थात् ऑफिसरों (अधिकारियों) को रिश्वत देकर अनुचित लाभ न उठाओ।}

सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 268 :- शैतान (काल का दूत तुम्हारे कर्म खराब करने के लिए) तुम्हें निर्धनता से डराता है और शर्मनाक नीति अपनाने के लिए उकसाता है, मगर अल्लाह तुम्हें अपनी बख्शीश और उदार कृपा से उम्मीद दिलाता है। अल्लाह बड़ी समाई वाला और सर्वज्ञ है।

सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 269 :- अल्लाह जिसको चाहता है, हिकमत (तत्त्वज्ञान) प्रदान करता है और जिसे हिकमत (तत्त्वज्ञान) मिली, उसे वास्तव में बड़ी दौलत मिल गई।

कुरआन सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 256 :- धर्म के विषय में कोई जोर-जबरदस्ती नहीं।

सूरः यूनुस-10 आयत नं. 99 :- (हे मुहम्मद) तू किसी को मुसलमान बनने के लिए मजबूर न करना। अल्लाह के हुक्म बिना कोई इमान नहीं ला सकता।

सूरः अर-रहमान-55 आयत नं. 7-9 :- तोल में डांडी न मारो, न्याय करो। पूरा-पूरा तोलो।

सूरः अन आम-6 आयत नं. 108 :- और (ए मुसलमानों) जो लोग अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं, उन्हें गाली ना दो, कहीं ऐसा न हो कि वे शिर्क (बहूदेववादी) से आगे बढ़कर अज्ञान के कारण अल्लाह को गालियाँ देने लग जाएँ (महापाप के भागी हो जाएँ) ये भी कभी अल्लाह की ओर मुड़ेंगे।

सूरः अन् निसा-4 आयत नं. 10 :- जो लोग जुल्म के साथ यतीमों (बेसहाराओं) का माल खाते हैं, वास्तव में वे अपने पेट आग से भरते हैं और वे जरूर जहन्नुम की भड़कती हुई आग में झोंके जाएँगे अर्थात् वे नरक में जाएँगे।

आयत नं. 9 :- (उन) लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर वे स्वयं अपने मरने के पश्चात् बच्चे छोड़ते तो मरते समय उनको कैसी कुछ आशंकाएँ घेरती? इसलिए चाहिए कि वे अल्लाह से डरें और ठीक बात करें।

सूरः अन् निसा-4 आयत नं. 36 :- अल्लाह की भक्ति करो। आन-उपासना न करो। माता-पिता, नातेदारों, यतीमों, मुहताजों, पड़ोसी, मुसाफिर (यात्रा के साथी) उन दास-दासियों से जो तुम्हारे अधिकार में हों, सबके साथ अच्छा व्यवहार करो। यकीन जानो! अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसंद नहीं करता जो डींग मारने वाला हो और

अपनी बड़ाई पर गर्व करे।

नशा तथा जूआ निषेध

सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 219 :- शराब तथा जूए में बड़ी खराबी है, महापाप है।

ब्याज लेना पाप है

कुरआन मजीद सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 276 :- अल्लाह ब्याज लेने वाले का मठ मार देता है यानि नाश कर देता है और (खैरात) दान करने वाले को बढ़ाता है। और अल्लाह किसी नाशुक्रे बुरे अमल वाले इंसान को पसंद नहीं करता।

सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 277 :- हाँ, जो लोग इमान लाए हैं और अच्छे कर्म करें और नमाज कायम करें और (जकात) दान दें, उनका बदला बेशक उनके रब के पास है। उनके लिए किसी खौप (भय) और रंज (शोक) का मौका नहीं है।

सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 278 :- ऐ लोगो जो इमान लाए हो। अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा ब्याज लोगों पर बाकी रह गया है, उसे छोड़ दो। अगर वास्तव में तुम इमान लाए हो।

सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 279 :- अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो सावधान हो जाओ कि अल्लाह और उसके रसूल (संदेशवा. हक) की ओर से तुम्हारे खिलाफ युद्ध की घोषणा है यानि सख्त दंड दिया जाएगा।

सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 280 :- तुम्हारा कर्जदार तंगी में हो तो हाथ खुलने तक उसे मोहलत (छूट) दे दो और अगर दान कर दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है अगर तुम समझो।

(जकात) दान करना चाहिए

सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 261 :- जो लोग अपना माल (धन) अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं, उनके खर्च की मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना बोया जाए। उससे सात बालें निकलें और हर बाल में सौ दाने हों। इस तरह अल्लाह जिसके कर्म को चाहता है, बढ़ोतरी प्रदान करता है। वह समाई वाला भी है और सर्वज्ञ भी।

सूरः अल् बकरा-2

आयत नं. 262 :- जो लोग अपना माल (धन) अल्लाह के मार्ग में खर्च करते हैं और खर्च करके फिर अहसान नहीं जताते, न दुःख देते हैं। उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए किसी रंज (चिंता) तथा खौफ (भय) का मौका नहीं। (यानि उनको कोई चिंता तथा भय की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा उनकी रक्षा करता है। धन वृद्धि भी करता है।)

कुरआन का ज्ञान देने वाला अपनी महिमा बताता है

सूरः अंबिया-21 (कुरआन मजीद बड़े साइज वाली से)

आयत नं. 92 :- यह है तुम्हारा तरीका कि (जिस पर तुमको रहना वाजिब है और) वह एक ही तरीका है और मैं तुम्हारा रब हूँ सो तुम मेरी इबादत किया करो।

सूरः अंबिया-21 (कुरआन मजीद बड़े साइज वाली से)

आयत नं. 30 :- उन काफिरों को यह मालूम नहीं हुआ कि आसमान और जमीन (पहले) बंद थे। फिर हमने दोनों को (अपनी कुदरत से) खोल दिया। और हमने पानी से हर जानदार चीज को बनाया। क्या (उन बातों को सुनकर) फिर भी ईमान नहीं लाते।

सूरः अंबिया-21 (कुरआन मजीद बड़े साइज वाली से)

आयत नं. 31 :- और हमने जमीन में इसलिए पहाड़ बनाए कि जमीन उन लोगों को लेकर हिलने न लगे।

और हमने इस जमीन में खुले रास्ते बनाए ताकि वे लोग (उनके जरिये से) मंजिलों (मकसूद) को पहुँच जाएँ।

सूरः अंबिया-21 (कुरआन मजीद बड़े साइज वाली से)

आयत नं. 32 :- और हमने अपनी (कुदरत से) आसमान को एक छत (की तरह) बनाया जो महफूज (सदा रहने वाला) है और ये लोग इस (आसमान के अंदर) की (मौजूदा) निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं।

कुरआन ज्ञान दाता अपने से अन्य कादिर अल्लाह की महिमा बताता है

सूरः अस् सज्दा-32 आयत नं. 4 :- वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों और जमीन को और उन सारी चीजों को जो इनके बीच है, छः दिन में पैदा किया और उसके बाद सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई अपना है, न सहायक है और न कोई उसके आगे सिफारिश करने वाला है। फिर क्या तुम होश में न आओगे।

कुरआन का ज्ञान उतारने वाले अल्लाह ने सूरः बकरा-2 आयत नं. 255 में कहा है कि अल्लाह वह जीवन्त शाश्वत् सत्ता है जो सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है। उसके सिवा कोई खुदा नहीं है। वह न तो सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। जमीन और आसमान में जो कुछ भी है, उसी का है। कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफारिश कर सके। वह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सब बातों को जानने वाला है। या वह जान सकता है जिस पर वह अनुग्रह करे।

उसका राज्य आसमानों और जमीन पर छाया हुआ है और उनकी देखरेख उसके लिए कोई थका देने वाला काम नहीं है। सब ओर एक वही महान और सर्वोपरि सत्ता है। {स्पष्ट हुआ कि कादिर अल्लाह जो सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, सबका मालिक है, सृष्टि की उत्पत्ति करता है, वह कुरआन ज्ञान बताने वाले से अन्य है।}

पुस्तक फजाइले आमाल से जानकारी

कुरआन ज्ञान देने वाले से अन्य समर्थ अल्लाह के विषय में अन्य जानकारी :-

फजाईले आमाल मुसलमानों की एक विश्वसनीय पवित्र पुस्तक है जो हदीसों में से चुनी हुई हदीसों का प्रमाण लेकर बनाई गई है। हदीस मुसलमानों के लिए पवित्र कुरआन के पश्चात् दूसरे नम्बर पर है। फजाईले आमाल में एक अध्याय फजाईले जिक्र है। उसकी आयत नं. 1, 2, 3, 6 तथा 7 में कबीर अल्लाह की महिमा है।

विशेष विचार :- फजाईले आमाल मुसलमानों की एक विशेष पवित्र पुस्तक है जिसमें पूजा की विधि तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब का नाम विशेष रूप से वर्णित है। जैसा कि आप निम्न फजाईले आमाल के ज्यों के त्यों लेख देखेंगे उनमें फजाईले जिक्र में आयत नं. 1, 2, 3, 6 तथा 7 में स्पष्ट प्रमाण है कि पाक कुरआन का ज्ञान उतारने वाला (अल्लाह) ब्रह्म (काल अर्थात् क्षर पुरूष) कह रहा है कि तुम कबीर अल्लाह कि बड़ाई बयान करो। वह कबीर अल्लाह तमाम पोसीदा और जाहिर चीजों को जानने वाला है और वह कबीर है और आलीशान रूतबे वाला है। जब फरिश्तों को कबीर अल्लाह की तरफ से कोई हुक्म होता है तो वे खौफ के मारे घबरा जाते हैं। यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होती है तो एक दूसरे से पूछते हैं कि कबीर परवरदिगार का क्या हुक्म है। वह कबीर आलीशान मर्तबे वाला है। ये सब आदेश कबीर अल्लाह की तरफ से है जो बड़े आलीशान रूतबे वाला है। हजुरे अक्सद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (हजरत मुहम्मद) का इर्शाद (कथन) कहना है कि कोई बंदा ऐसा नहीं है कि 'लाइला-ह-इल्लल्लाह' कहे उसके लिए आसमानों के दरवाजे न खुल जाएँ, यहाँ तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे। दो कलमों का जिक्र है कि एक तो 'लाइला-ह-इल्लल्लाह' है और दूसरा 'अल्लाहु अकबर'(कबीर)। {यहाँ पर अल्लाहु अकबर का भाव है भगवान कबीर (कबीर साहेब अर्थात् कविर्देव)।}

फिर फजाईले दरूद शरीफ़ में भी कबीर नाम की महिमा का प्रत्यक्ष प्रमाण छुपा नहीं है।

कृप्या निम्न पढ़िये फजाईले आमाल का लेख :-

फजाइले आमाल से सहाभार ज्यों का त्यों लेख :-

फजाइले जिक्र

١- وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ - (سورۂ بقرہ، رکوع ٢٣)

वलुती कबीरू व अल्लाहा आला माहदाकुम वलाअल्लाकुम तसकूरून —1

1. और ताकि तुम कबीर अल्लाह की बड़ाई बयान करों, इस बात पर कि तुम को हिदायत फरमायी और ताकि तुम शुक्र करो अल्लाह ताला का।

फजाइले जिक्र

٢ - عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ - (سورۂ رعد، رکوع ٢)

आलीमूल गैबी वस्साहादतील कबीरूल मूतआलू —2

2. वह कबीर अल्लाह तमाम पोशीदा और जाहिर चीजों का जानने वाला है(सबसे) बड़ा है और आलीशान रुत्बे वाला है।

फजाइले जिक्र

٣ - كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ - (سورۂ حج، رکوع ٥)

कजालिका सखाराहलाकूम लीतूकबीरूल्लाहा

आला महादाकूम व बसीरील मुहसीनीन् —3

3. इसी तरह अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हारे लिए मुसख्खर कर दिया ताकि तुम कबीर अल्लाह की बड़ाई बयान करो। इस बात पर कि उसने तुमको हिदायत की इख्लास वालों को (अल्लाह की रजा की) खुशखबरी सुना दीजिए।

फजाइले जिक्र

(٦) حَتّٰى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ (س سبا ع ٣)

हय्याईजा फुजीआअन् कुलूबीहीम कालू अ,

माजा काला रब्बूकूम कालूल्हक्का व हुवलअलीयुल कबीर —6

6. (जब फरिश्तों को कबीर अल्लाह की तरफ से कोई हुक्म होता है तो वे खौफ के मारे घबरा जाते हैं) यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है, तो एक दूसरे से पूछते हैं कि कबीर परवरदिगार का क्या हुक्म है? वे कहते हैं कि (फ्लानी) हक बात का हुक्म हुआ। वाकई वह (कबीर) आलीशान और मर्तबे वाला है।

फजाइले जिक्र

٧ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ (سورۂ مومن، رکوع ٢)

फाअलहुकूम लील्लाहील् अलीयील् कबीर 7

7. पस हुक्म कबीर अल्लाह ही के लिए है, जो आलीशान है, बड़े रुतबे वाला है।

फजाईले दरूद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَرْوَاحِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ

فِي الْاَجْسَادِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِي الْقُبُوْرِ

अल्लाहुम-म सल्लि अलारूहि मुहम्मदिन फ़िल् अर्वाहि अल्लाहुम-म सल्लि अला

ज-स-दि मुहम्मदिन फिल् अज्सादि अल्लाहुम म सल्लि अला कबिर् (कबीर) मुहम्मिद फ़िल् कुबूरि 0

फजाईले जिक्र

٥ - عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا

قَالَ عَبْدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى يُفْضِيَ اِلَى الْعَرْشِ

مَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَائِرُ - رواه الترمذي وهكذا في المشكوٰة لكن ليس فيها

حسن بل غريب فقط قال القاري و رواه النسائي وابن حبان وعزاه

السيوطي في الجامع الى الترمذي و رقم له بالحسن وحكاه السيوطي في

الدر من طريق ابن مردويه عن ابي هريرة وليس فيه ما اجتنبت الكبائر

وفي الجامع الصغير برواية الطبراني عن معقل ابن يسار لكل شي مفتاح

ومفتاح السموات قول لا اله الا الله ورقم له بالضعف -

5. हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है कि कोई बन्दा ऐसा नहीं कि 'लाइला-ह-इल्लल्ला. हह' कहे और उसके लिए आसमानों के दरवाजें न खुल जायें, यहाँ तक कि यह कलमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे।

फ़—कितनी बड़ी फ़जीलत है और कुबूलियत की इन्तिहा है कि यह कलमा बराहे-रास्ता अर्श-ए-मुअल्ला तक पहुँचता है और यह अभी मालूम हो चुका है कि अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाये, तो नफ़ा से उस वक्त भी खाली नहीं।

मुल्ला अली कारी रह0 फरमाते हैं कि कबाइर से बचने की शर्त कुबूल की जल्दी और आसमान के सब दरवाजे खुलने के एताबर से है, वरना सवाब और कूबूल से कबाइर के साथ भी खाली नहीं।

बाज उलेमा ने इस हदीस का यह मतलब बयान फरमाया है कि ऐसे शख्स के वास्ते मरने के बाद उस की रूह के एजाज में आसमान के सब दरवाजे खुल जायेंगे।

एक हदीस में आया है, दो कलमे ऐसे हैं कि उनमें से एक के लिए अर्श के नीचे कोई मुन्तहा नहीं।' दूसरा आसमान और जमीन को (अपने नूर या अपने अज्र से) भर दे —

एक 'लाइला-ह इल्लल्लाह',

दूसरा 'अल्लाहु अकबर, (परमेश्वर कबीर)

फजाइले जिक्र

سُبْحَانَ اللهِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ اللهُ اَكْبَر

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बरू'(कबिर्)

फजाइले दरूद शरीफ

مَنْ صَلّٰے عَلٰے رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِی الْاَرْوَاحِ وَعَلٰے جَسَدِہٖ فِی الْاَجْسَادِ وَعَلٰے قَبْرِہٖ فِی الْقُبُوْرِ

मन सल्ला अला रूहि मुहम्मदिन फिल् अर्वाहि व अला-ज-स
दिही फिल् अज्सादि व अला कबिर् (कबीर) ही फिल कुबूरि0

وَ اِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخَاشِعِيْنَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ
مُلَاقُوْا رَبِّهِمْ وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

व इन्नहालकबीरतुनइल्ला अलल खाशिलीन अ ल्लजीन यजुन्नून
अन्हुमा मुलाकू रगिबहिमव अन्हुमा इलैहि राजिऊन

(फजाइले आमाल से लेख समाप्त)

अन्य प्रमाण :- कुरआन का ज्ञान देने वाले ने अपने से अन्य सृष्टि उत्पत्तिकर्ता के विषय में बताया है जो इस प्रकार है :-

कुरआन मजीद से प्रमाण

सूरत फुरकानि (फुरकान)-25 आयत नं. 52-59 :-

कुरआन मजीद से मूल पाठ इस प्रकार है :-

आयत नं. 52 :- फला तुतिअल काफिरन व जाहिद्हुम् बिही जिहादन कबीरा।(52)

आयत नं. 52 :- तो (ऐ पैगम्बर) तुम काफिरों का कहा न मानना और इस (कुरआन की दलीलों) से उनका सामना बड़े जोर से करना।(52)

कुरआन शरीफ से आयत नं. 53 से 59 का हिन्दी अनुवाद निम्न है :-

आयत नं. 53 :- और वही है जिसने दो दरियाओं को मिला (मिला) चलाया। एक (का पानी) मीठा प्यास बुझाने वाला और एक (का) खारी कड़वा और दोनों में एक मजबूत रोक बना दी।

आयत नं. 54 :- और वही है जिसने पानी (की बूँद) से आदमी को पैदा किया। फिर उसे साहिबे नसब (यानि

किसी का बेटा या बेटी) और ससुराल वाला (यानि किसी का दामाद, बहू) बनाया। और तुम्हारा परवरदिगार हर चीज करने पर शक्तिमान है।

आयत नं. 55 :- और (काफिर) अल्लाह के सिवाय ऐसों को पूजते हैं जो न उनको नफा पहुँचा सकते हैं और न (उनको) नुकसान (पहुँचा सकते हैं) और काफिर तो अपने परवरदिगार से पीठ दिए हुए (मुँह मोड़े) हैं।

आयत नं. 56 :- और (ऐ पैगम्बर) हमने तुमको खुशखबरी सुनाने और (सिर्फ अजाब से) डराने के लिए भेजा है।

आयत नं. 57:-(इन लोगों से) कहो कि मैं तुमसे इस (अल्लाह के हुक्म) पर कुछ मजदूरी नहीं माँगता। हाँ, जो चाहे अपने परवरदिगार तक पहुँचने की राह इख्तियार कर ले।

आयत नं. 58 :- और (ऐ पैगम्बर) उस जिंदा (चैतन्य) पर भरोसा रखो जो कभी मरने वाला नहीं और तारीफ के साथ उसकी पाकी बयान करते रहो और अपने बंदों के गुनाहों से वह काफी खबरदार है।

{अरबी भाषा वाला मूल पाठ ''नागरी लिपि में'' आयत नं. 58 :-

व तवक्कल अल्ल् हय्यिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिह व कफा बिही बिज़ुनूबि अिबादिह खबीरा।

सूरत फुरकानि-25 (कुरआन शरीफ से हिंदी) आयत नं. 59 :- जिसने आसमानों और जमीन और जो कुछ उनके बीच में है (सबको) छः दिन में पैदा किया और फिर तख्त पर जा विराजा। (वह अल्लाह बड़ा) रहमान है तो उसकी खबर किसी बाखबर (इल्मवाले) से पूछ देखो।

{आयत नं. 59 का अरबी भाषा वाला मूल पाठ नागरी लिपी में इस प्रकार है :-

अल्लजी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अल्लअर्शि ज अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्।

विवेचन :- (आयत नं. 52) जो अल्लाह कुरआन (मजीद व शरीफ) का ज्ञान हजरत मुहम्मद जी को बता रहा है, वह कह रहा है कि हे पैगम्बर! तुम काफिरों की बात न मानना क्योंकि वे कबीर अल्लाह को नहीं मानते। उनका सामना (संघर्ष) मेरे द्वारा दी गई कुरआन की दलीलों के आधार से बहुत जोर से यानि दृढ़ता के साथ करना अर्थात् वे तुम्हारी न मानें कि कबीर अल्लाह ही समर्थ (कादिर) है तो तुम उनकी बातों को न मानना।

आयत नं. 53 से 59 तक उसी कबीर अल्लाह की महिमा (पाकी) बयान की गई है। कहा है कि यह कबीर वह कादिर अल्लाह है जिसने सब सृष्टि की रचना की है। उसने मानव उत्पन्न किए। फिर उनके संस्कार बनाए। रिश्ते-नाते उसी की कृपा से बने हैं। खारे-मीठे जल की धाराएँ भी उसी ने भिन्न-भिन्न अपनी कुदरत (शक्ति) से बहा रखी हैं। पानी की बूँद से आदमी (मानव=स्त्री-पुरूष) उत्पन्न किया। {सूक्ष्मवेद में कहा है कि पानी की बूँद का तात्पर्य नर-मादा के तरल पदार्थ रूपी बीज से है।}

जो इस अल्लाह अकबर (परमेश्वर कबीर) को छोड़कर अन्य देवों व मूर्तियों की पूजा करते हैं जो व्यर्थ है। वे साधक को न तो लाभ दे सकते हैं, न हानि कर सकते हैं। वे तो अपने उत्पन्न करने वाले परमात्मा से विमुख हैं। मृत्यु के पश्चात् पछताना पड़ेगा। उन्हें समझा दो कि मेरा काम तुम्हें सच्ची राह दिखाना है। उसके बदले में मैं तुमसे कोई रूपया-पैसा भी नहीं ले रहा हूँ, कहीं तुम यह न समझो कि यह (नबी) अपने स्वार्थवश गुमराह कर रहा है। यदि चाहो तो अपने परवरदिगार (उत्पत्तिकर्ता तथा पालनहार) का भक्ति मार्ग ग्रहण कर लो।

(कुरआन ज्ञानदाता नबी मुहम्मद जी से फिर कहता है कि)

आयत नं. 58 :- और (ऐ पैगम्बर) उस जिंदा {जो जिंदा बाबा के वेश में तुझे काबा में मिला था, वह अल्लाह कबीर} पर विश्वास रखो जो कभी मरने वाला नहीं है (अविनाशी परमेश्वर है) और तारीफ (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी बयान (पवित्र महिमा का गुणगान) करते रहो और अपने बंदों के गुनाहों (पापों) से वह कबीर परमेश्वर अच्छी तरह परिचित है यानि सत्य साधक के सब पाप नाश कर देता है।

वह ज्ञान जिसको कुरआन तथा गीता ज्ञान उतारने वाला भी नहीं जानता

आयत 59 :- कबीर अल्लाह (अल्लाहू अकबर) वही है जिसने सर्व सृष्टि (ऊपर वाली तथा पृथ्वी वाली) की रचना छः दिन में की। फिर ऊपर अपने निज लोक में सिंहासन पर जा विराजा। (बैठ गया।) वह कबीर अल्लाह बहुत रहमान (दयावान) है। उसके विषय में पूर्ण जानकारी किसी (बाखबर) तत्त्वदर्शी संत से पूछो, उससे जानो।

इससे यह बात स्पष्ट हुई कि कुरआन ज्ञान देने वाला उस समर्थ परमेश्वर कबीर के विषय में पूर्ण ज्ञान नहीं रखता। उसको प्राप्त करने की विधि कुरआन ज्ञान दाता को नहीं है। इसीलिए तो सूरः अश् शूरा 42 की आयत नं. 1 व 2 में सांकेतिक शब्द बताए हैं जिनके अर्थ का वर्तमान तक मुझ दास (रामपाल दास) के अतिरिक्त किसी को भी ज्ञान नहीं था। हजरत मुहम्मद को भी इनका ज्ञान नहीं था। इनके ज्ञान बिना मोक्ष नहीं हो सकता। न जन्नत (काल वाला स्वर्ग) प्राप्त हो सकता।

इससे यह भी सिद्ध हुआ कि हजरत आदम से लेकर हजरत मुहम्मद तक सब नबी व उनके अनुयाई मोक्ष से वंचित रहे। बहिश्त (स्वर्ग) में भी नहीं जा पाए। संत गरीबदास जी ने कहा है कि यथार्थ भक्ति विधि से साधना न करने से नबी मुहम्मद भी बहिश्त (स्वर्ग) नहीं जा सका। उसके पीछे उसी साधना को करके सब (तुर्क) मुसलमान भी सत्य साधना भूले हुए हैं।

{**वाणी** :- गरीब, नबी मुहम्मद नहीं बहिश्त सिधाना। पीछे भूला है तुर्काना।।}

कुरआन का अन-सुलझा ज्ञान (अैन, सीन, काफ का भेद)

कुरआन के अनुवादकर्ताओं ने सूरः अश् शूरा-42 की आयत नं. 1 के शब्दों हा.मीम. तथा आयत नं. 2 के शब्द अैन.सीन.काफ. का अनुवाद नहीं किया है। टिप्पणी की है कि यह गूढ़ रहस्य है। इसको तो खुदा ही जानता है। फिर यह भी तर्क दिया है कि यदि इन पाँच अक्षरों का ज्ञान न भी हो तो भी कुरआन के ज्ञान की महिमा कम नहीं होती। न ही मानव को कोई हानि होती है। कुरआन तो ज्ञान का भंडार है। ज्ञान से ही आत्म कल्याण संभव है।

लेखक (रामपाल दास) का तर्क :- अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। परंतु समाधान न हुआ तो ज्ञान व्यर्थ है। उदाहरण के लिए जैसे किसी व्यक्ति को किसी ने बताया कि आपको यह रोग है। इस रोग के ये लक्षण होते हैं। रोगी को ज्ञान हो गया कि मुझे यह रोग है, परंतु उपचार का ज्ञान न तो रोग के ज्ञान करवाने वाले को तथा न रोगी को हो तो उस ज्ञान का क्या लाभ हुआ?

इसी प्रकार कुरआन मजीद का सब ज्ञान पढ़ लिया, याद भी हो गया। परंतु जो गूढ़ रहस्य है यानि जो उपचार है, हा.मीम. तथा अैन.सीन.काफ. का ज्ञान नहीं है तो कुरआन के पढ़ने से आत्म कल्याण नहीं हो सकता क्योंकि इन पाँच अक्षरों में आत्म कल्याण का रहस्य भरा है जो आप आगे पढ़ेंगे। कुरआन मजीद के ज्ञान से भक्ति मर्यादा का ज्ञान होता है तथा कर्म, अकर्म का ज्ञान होता है। धर्म करो, पाप न करो। ग्रंथ का (कुरआन का) नित्य कुछ अंश पाठ करो। नमाज करो, अजान दो, रोजे रखो, आदि-आदि इन क्रियाओं से जीव का जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं हो सकता। जन्म-मरण के कष्ट से छुटकारे के लिए नाम (मंत्र) का जाप करना पड़ता है। अैन.सीन.काफ.। ये उन तीन नामों (मंत्रों) के सांकेतिक शब्द हैं जो मोक्षदायक कल्याणकारक मंत्र हैं। उनके प्रथम अक्षर हैं। पूर्ण संत जो इस रहस्य को जानता है, उससे दीक्षा लेकर इन तीनों मंत्रों का जाप करने से आत्म कल्याण होगा। और किसी साधन से जीव को मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

रहस्यमयी मंत्रों का ज्ञान :- हा.=हक , मीम.=माबूद यानि यथार्थ पूजा के अैन.सीन.काफ. मंत्र हैं। जो साधना मुसलमान करते हैं, पाँच समय नमाज, जकात (दान), रोजे (व्रत) रखना, कुरआन मजीद का तिलावत (पाठ) करना आदि-आदि यह तो ऐसा जानो जैसे रोगी को ग्लुकोज लगा दी। परंतु रोग नाश करने की गोली व इंजैक्शन लगाए बिना रोगी स्वस्थ नहीं होगा। अैन.सीन.काफ. जिन तीन मंत्रों (नामों) के सांकेतिक शब्द हैं, उन नामों को रोगनाशक गोली (Tablet) तथा इंजैक्शन (Injection) जानो। इन नामों का जाप करने से जन्म-मरण का चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाएगा। अब पढ़ें अैन.सीन. काफ. का भेद जो इस प्रकार है :-

सूरत अश् शूरा-42 की आयत नं. 1 :- हा. मीम.

आयत नं. 2 :- अैन. सीन. काफ.

इन दोनों आयतों का सरलार्थ या विश्लेषण वर्तमान तक किसी ने नहीं किया है। कुरआन के अनुवादकों ने यह कहकर छोड़ दिया कि इनका मतलब तो अल्लाह ही जानता है। अब जानो वह रहस्य।

चारों वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद) का ज्ञान भी काल ब्रह्म ने सूक्ष्मवेद से चुनकर अधूरा दिया है। सामवेद के मंत्र नं. 822 में इन्हीं तीन नामों का संकेत है। लिखा है ''त्री तस्य नाम'' अर्थात् उस समर्थ

परमेश्वर की पूजा के तीन नाम हैं। इसी काल ब्रह्म ने श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान दिया है।

श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान भी इसी कुरआन ज्ञान दाता ने अर्जुन (जो पाँचों पाण्डवों में से एक था) को बताया था। उसमें भी अध्याय 17 श्लोक 23 में तीन मंत्र कहे हैं।

उसमें लिखा है कि :-

गीता अध्याय 17 श्लोक 23 :- मूल पाठ संस्कृत भाषा में लिपी नागरी ही है :-

ॐ (ओम्) तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणाः तेन वेदाः च यज्ञाः च विहिता पुरा।।23।।

सरलार्थ :- गीता में कहा है कि ओम् (ॐ), तत्, सत्, यह (ब्रह्मणः) समर्थ परमेश्वर सृष्टिकर्ता की साधना करने का तीन नाम का मंत्र है। इसकी स्मरण की विधि तीन प्रकार से बताई है। सृष्टि के प्रारंभ में आदि सनातन पंथ के (ब्राह्मणाः) विद्वान साधक इसी आधार से साधना करते थे। सूक्ष्मवेद का ज्ञान स्वयं परमेश्वर जी ने बताया था। उसी आधार से ब्राह्मण यानि साधक बने। उसी सूक्ष्मवेद के आधार से (यज्ञाः) धार्मिक अनुष्ठानों का विधान बना तथा चारों वेद उसी सूक्ष्मवेद का अंश है जो काल ब्रह्म ने जान-बूझकर अधूरा ज्ञान ऋषियों को देकर भ्रमित किया जो बाद में सनातन पंथ (धर्म) के साधकों ने अपनाया। वह भी समय के अनुसार लुप्त हो गया था। फिर गीता के माध्यम से कुछ स्पष्ट, कुछ अस्पष्ट (सांकेतिक) ज्ञान ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) ने दिया। इसको भी इन (कोड वर्डस्) सांकेतिक मंत्रों का ज्ञान नहीं है कि पूरे मंत्र क्या हैं? सामवेद के मंत्र संख्या 822 में इन्हीं तीनों नामों का संकेत है। वेदों में बताया है कि परम अक्षर ब्रह्म यानि अल्लाह कबीर ही इन सांकेतिक मंत्रों का यथार्थ ज्ञान करवाता है।

मुझ दास (रामपाल दास) को इन तीनों मंत्रों का ज्ञान करवाया है जो इस प्रकार है :- ''ऐन'' यह अरबी भाषा का अक्षर है, देवनागरी में हिन्दी भाषा का ''अ'' है तथा ''सीन'' यह अरबी भाषा की वर्णमाला का अक्षर है जो देवनागरी में हिन्दी भाषा का ''स'' है तथा ''काफ'' यह अरबी वर्णमाला का अक्षर है, देवनागरी में हिन्दी भाषा का ''क'' है।

जैसे ओम् (ॐ) मंत्र का पहला अक्षर वर्णमाला का ''अ'' है। इसलिए ''ऐन'' अक्षर ''ओम्'' का सांकेतिक है। ''तत्'' यह सांकेतिक मंत्र है। इसका जो यथार्थ मंत्र है, उसका पहला अक्षर ''स'' है तथा तीसरा जो ''सत्'' सांकेतिक मंत्र है, इसका जो यथार्थ मंत्र है, उसका पहला मंत्र ''क'' है। इसलिए गुप्त यानि सांकेतिक ''ऐन, सीन, काफ'' कुरआन में बताए। वे गीता में बताए ''ओम्, तत्, सत्'' की तरह हैं। ये इन्हीं का संकेत है। इन मंत्रों के जाप से मानव को सांसारिक सुख मिलेगा तथा पाप कर्मों के कारण होने वाले कष्ट (संकट) समाप्त होंगे तथा अकाल मृत्यु से बचाव होगा। काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) की जन्नत से असंख्य गुणा अधिक सुख वाली जन्नत (सतलोक सुख सागर) में स्थाई निवास मिलेगा तथा दोजख (नरक) में नहीं जाएँगे। सतलोक वाली जन्नत (स्वर्ग) में सदा सुखी रहेंगे। फिर पृथ्वी के ऊपर कभी जन्म उस तीन नाम का जाप करने वाले का नहीं होगा। ये तीनों नाम दास (रामपाल दास) परमेश्वर कबीर जी की साधना करने वाले यथार्थ कबीर पंथ यानि आदि सनातन पंथ के (तेरहवें अंतिम पंथ के) साधकों को साधना के लिए दीक्षा में देता है। (यथार्थ कबीर पंथ में किसी भी धर्म, पंथ तथा जाति के स्त्री-पुरूष दीक्षा लेकर जुड़ सकते हैं।) यहाँ पर उन दो अन्य मंत्रों के यथार्थ मंत्रों को नहीं बताऊँगा। मेरे से दीक्षा प्राप्त भक्त इस प्रकरण को पढ़ते ही समझ जाएँगे। विश्व के मानव (स्त्री-पुरूष) को अल्लाहू अकबर यानि परमेश्वर कबीर जी की भक्ति करनी पड़ेगी। तब ही उनका मानव जीवन सफल होगा। सदा रहने वाली शांति व सुख मिलेगा। उसे ये तीनों मंत्र दीक्षा में दिए जाएँगे। तीनों की स्मरण विधि तीन प्रकार से है। ''हाः मीमः'' **भी इसी प्रकार सांकेतिक हैं। इनके विषय में पृष्ठ 28 पर पढ़ें। उस कादिर अल्लाह कबीर ने कलाम-ए-कबीर में कहा है कि :-**

बारहवें पंथ हम ही चल आवें। सब पंथ मिटा एक पंथ चलावें।।
कलयुग बीते पाँच हजार पाँच सौ पांचा। तब यह वचन होगा साचा।।
धर्मदास तोहे लाख दुहाई। सारशब्द कहीं बाहर ना जाई।।
तेतीस अरब ज्ञान हम भाखा। मूल ज्ञान हम गुप्त ही राखा।।
मूल ज्ञान तब तक छिपाई। जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।।

कलयुग सन् 1997 में पाँच हजार पाँच सौ पाँच पूरा हो जाता है। उसी समय से सारनाम को दिया जाने लगा है। जैसे कुरआन मजीद (शरीफ) की सूरत फुरकानि आयत नं. 59 में कहा है कि सृजनहार सबके पालनहार के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान यानि तत्त्वज्ञान किसी तत्त्वदर्शी (बाखबर) से पूछो।

उसी प्रकार गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि {जिस (ब्रह्मणः) परम अक्षर ब्रह्म यानि अल्लाह कबीर (सच्चिदानंद घन ब्रह्म) ने तत्त्वज्ञान अपने मुख से उच्चारित वाणी (कलाम-ए-कबीर) कबीर वाणी में तत्त्वज्ञान बताया है। उसकी साधना सामान्य (सहज) विधि से करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है जिसका उल्लेख गीता अध्याय 4 के ही श्लोक 32 में है। वह तत्त्वज्ञान है।} उस ज्ञान को (तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर) समझ। उनको भली-भांति दण्डवत् प्रणाम करने से उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भली-भांति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

इस विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि गीता, चारों वेदों व चारों पुस्तकों का ज्ञान देने वाला एक ही है। वह गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में स्वयं स्वीकारता है कि मैं काल हूँ। सबका नाश करने वाला हूँ। यह ब्रह्म है। इसे क्षर पुरूष भी कहा जाता है। सूक्ष्मवेद में ज्योति निरंजन काल इसका प्रचलित नाम है। यह सब प्राणियों को धोखे में रखता है, परंतु जो सूक्ष्मवेद का ज्ञान इसने वेदों व गीता तथा कुरआन आदि पवित्र पुस्तकों में कहा है, वह अधूरा है, परंतु गलत नहीं है। स्पष्ट नहीं बताया, अस्पष्ट घुमा-फिराकर बताया है। जब तक सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान व सम्पूर्ण भक्ति विधि नहीं मिलेगी, तब तक काल ज्योति निरंजन के जाल में जीव महादुःखी रहेगा। चाहे इसकी जन्नत (स्वर्ग) में चले जाना।

उदाहरण एक ही पर्याप्त होता है :- बाबा आदम जन्नत में दुःखी था। बांयी ओर मुँह करके मारे गम के आँसू भर लेता था। दांयी ओर मुँह करके खिल-खिलाकर हँसता था। इस काल की जन्नत (स्वर्ग) में परम शांति किसी को नहीं मिलेगी। जिस परमशांति को प्राप्त करने के लिए श्रीमद्भगवत गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने की राय दी है।

जैसा कि पाठकों ने पढ़ा कि कुरआन का ज्ञान देने वाला अल्लाह (जिसे मुसलमान अपना खुदा मानते हैं) ने अपने से अन्य कादिर, सृष्टि रचने वाले, अमर अल्लाह की जानकारी बताई तथा अन्य मुस्लिम शास्त्र ''फजाईले आमाल'' में भी कबीर अल्लाह की समर्थता को पढ़ा। इसी प्रकार अन्य परमात्मा से मिले महापुरूषों व संतों ने भी उसे आँखों देखा और गवाही दी थी जो इस प्रकार है :-

शास्त्रों में (परमात्मा) अल्लाह का जिक्र

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

वही मोहम्मद वही महादेव, वही आदम वही ब्रह्मा।
दास गरीब दूसरा कोई नहीं, देख आपने घरमा।।

भावार्थ :- मुसलमान धर्म के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद जी भगवान शिव के लोक से आए, पुण्यकर्मी आत्मा थे जो परंपरागत साधना ही एक गुफा में बैठकर किया करते थे। शिव जी का एक गण जो ग्यारह रूद्रों में से एक है, वह मुहम्मद जी से उस गुफा में मिले। उन्हीं की भाषा (अरबी भाषा) में काल प्रभु अर्थात् ब्रह्म का संदेश सुनाया। उसी रूद्र को मुसलमान जिब्राइल फरिश्ता कहते हैं जो नेक फरिश्ता माना जाता है।

हजरत आदम :- पुराणों में तथा जैन धर्म के ग्रन्थों में प्रसंग आता है जो इस प्रकार हैः- ऋषभदेव जी राजा नाभिराज के पुत्र थे। नाभिराज जी अयोध्या के राजा थे। ऋषभदेव जी के सौ पुत्र तथा एक पुत्री थी। एक दिन परमेश्वर एक सन्त रूप में ऋषभ देव जी को मिले, उनको भक्ति करने की प्रेरणा की, ज्ञान सुनाया कि मानव जीवन में यदि शास्त्रविधि अनुसार साधना नहीं की तो मानव जीवन व्यर्थ जाता है। वर्तमान में जो कुछ भी जिस मानव को प्राप्त है, वह पूर्व जन्म-जन्मान्तरों मे किए पुण्यों तथा पापों का फल है। आप राजा बने हो, यह आप का पूर्व जन्म का शुभ कर्म फल है। यदि वर्तमान में भक्ति नहीं करोगे तो आप भक्ति शक्तिहीन तथा पुण्यहीन होकर नरक में गिरोगे तथा फिर अन्य प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाओगे। (जैसे वर्तमान में इन्वर्टर की बैटरी चार्ज कर रखी है और चार्जर निकाल रखा है। फिर भी वह बैटरी कार्य कर रही है, इन्वर्टर से पँखा भी चल रहा है, बल्ब-ट्यूब भी जग रहे हैं। यदि चार्जर को फिर से लगाकर चार्ज नहीं किया तो कुछ समय उपरान्त इन्वर्टर

सर्व कार्य छोड़ देगा, न पँखा चलेगा, न बल्ब, न ट्यूब जगेंगी। इसी प्रकार मानव शरीर एक इन्वर्टर है। शास्त्र अनुकूल भक्ति चार्जर (Charger) है, परमात्मा की शक्ति से मानव फिर से चार्ज हो जाता है अर्थात् भक्ति की शक्ति का धनी तथा पुण्यवान हो जाता है।

यह ज्ञान उस ऋषि रूप में प्रकट परमात्मा के श्री मुख कमल से सुनकर ऋषभदेव जी ने भक्ति करने का पक्का मन बना लिया। ऋषभदेव जी ने ऋषि जी का नाम जानना चाहा तो ऋषि जी ने अपना नाम कविर्देव बताया तथा यह भी कहा कि मैं स्वयं पूर्ण परमात्मा हूँ। चारों वेदों में जो ''कविर्देव'' लिखा है, वह मैं हूँ। मेरा यही नाम है। मैं ही परम अक्षर ब्रह्म हूँ।

सूक्ष्मवेद में लिखा है :-

ऋषभ देव के आइया, कबी नामे करतार।
नौ योगेश्वर को समझाइया, जनक विदेह उद्धार।।

भावार्थ :- ऋषभदेव जी को ''कबी'' नाम से परमात्मा मिले, उनको भक्ति की प्रेरणा की। उसी परमात्मा ने नौ योगेश्वरों तथा राजा जनक को समझाकर उनके उद्धार के लिए भक्ति करने की प्रेरणा की। ऋषभदेव जी को यह बात रास नहीं आई कि यह ऋषि ही कविर्देव है जो वेदों में सबका उत्पत्तिकर्ता कविर्देव लिखा है। परन्तु भक्ति करने का दृढ़ मन बना लिया। एक तपस्वी ऋषि से दीक्षा लेकर ओम् (ऊँ) नाम का जाप तथा हठयोग किया। ऋषभदेव जी का बड़ा पुत्र ''भरत'' था, भरत का पुत्र मारीचि था। ऋषभ देव जी ने पहले एक वर्ष तक निराहार रहकर तप किया। फिर एक हजार वर्ष तक घोर तप किया। तपस्या समाप्त करके अपने पौत्र अर्थात् भरत के पुत्र मारीचि को प्रथम धर्मदेशना (दीक्षा) दी। यह मारीचि वाली आत्मा 24वें तीर्थकर महाबीर जैन जी हुए थे। ऋषभदेव जी ने जैन धर्म नहीं चलाया, यह तो श्री महाबीर जैन जी से चला है। वैसे श्री महाबीर जी ने भी किसी धर्म की स्थापना नहीं की थी। केवल अपने अनुभव को अपने अनुयाईयों को बताया था। वह एक भक्ति करने वालों का भक्त समुदाय है। ऋषभदेव जी ''ओम्'' नाम का जाप ओंकार बोलकर करते थे। उसी को वर्तमान में अपभ्रंश करके ''णोंकार'' मन्त्र जैनी कहते हैं, इसी का जाप करते हैं, इसको ओंकार तथा ऊँ भी कहते हैं।

हम अपने प्रसंग पर आते हैं। जैन धर्म ग्रन्थ में तथा जैन धर्म के अनुयाईयों द्वारा लिखित पुस्तक ''आओ जैन धर्म को जानें'' में लिखा है कि ऋषभदेव जी (जैनी उन्हीं को आदिनाथ कहते हैं) वाला जीव ही बाबा आदम रूप में जन्मा था।

अब उसी सूक्ष्म वेद की वाणी का सरलार्थ करता हूँ :-

वही मुहम्मद वही महादेव, वही आदम वही ब्रह्मा।
दास गरीब दूसरा कोई नहीं, देख आपने घरमा।।

बाबा आदम जी श्री ब्रह्मा जी देवता के लोक से आए थे क्योंकि मानव जन्म में की गई साधना के अनुसार प्राणी भक्ति अनुसार ऊपर तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) के लोकों में बारी-बारी जाता है, अपने पुण्य क्षीण होने पर पुनः पृथ्वी पर संस्कारवश जन्म लेता है।

संत गरीब दास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर हरियाणा प्रांत वाले) को स्वयं ही वही परमात्मा मिले थे जो ऋषभदेव जी को मिले थे। संत गरीब दास जी ने परमेश्वर के साथ ऊपर जाकर अपनी आँखों से सर्व व्यवस्था को देखा था। फिर बताया है कि आदम जी ब्रह्मा जी के लोक से आए थे, ब्रह्मा के अवतार थे। मुहम्मद जी तमगुण शिव जी के अवतार थे।

प्रिय पाठको! अवतार दो प्रकार के होते हैं, 1. स्वयं वह प्रभु अवतार लेता है जैसे श्री राम, श्री कृष्ण आदि के रूप में स्वयं श्री विष्णु जी अवतार धारकर आए थे। परंतु कपिल ऋषि जी, परशुराम जी को भी विष्णु जी के अवतारों में गिना जाता है। ये स्वयं श्री विष्णु जी नहीं थे, विष्णु लोक से आए देवात्मा थे। उनके पास कुछ शक्ति विष्णु जी की थी क्योंकि वे उन्हीं के द्वारा भेजे गए थे। इसी प्रकार हजरत मुहम्मद जी श्री शिव जी के (लोक से आए देव आत्मा) अवतार थे तथा बाबा आदम जी श्री ब्रह्मा जी के (लोक से आए देव आत्मा) अवतार थे। इसी प्रकार ईसा मसीह जी श्री विष्णु जी के (लोक से आए देव आत्मा) अवतार थे। ईसाई श्रद्धालु भी ईसा जी को प्रभु का पुत्र मानते हैं, प्रभु नहीं।

संत गरीबदास जी ने कहा है कि यदि आप जी को मेरी बात पर विश्वास नहीं होता तो मेरे द्वारा बताई शास्त्रविधि अनुसार भक्ति-साधना करके अपने घर में अर्थात् अपने मानव शरीर में अपनी आँखों देख लो।

भावार्थ है :- सर्व धर्मों के मानव (स्त्री-पुरूष) के शरीर की रचना एक जैसी है। तत्त्वज्ञान न होने के कारण हम धर्मों में बँट गए हैं। संत गरीब दास जी ने बताया है कि मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी अर्थात् **Back Bone (Spine)** के अन्दर की ओर (निचले सिरे से लेकर कण्ठ तक) पाँच कमल चक्र बने हैं।

कृपया देखें यह चित्र :-

शरीर (पिण्ड) में बने कमलों (चक्रों) के चित्र

1. मूल चक्र :- यह चक्र रीढ़ की हड्डी के अन्त से एक इंच ऊपर गुदा के पास है। इसका देवता श्री गणेश है। इस कमल की 4 पंखुडियाँ हैं।

2. स्वाद चक्र :- यह मूल कमल से दो इंच ऊपर रीढ की हड्डी के अन्दर की ओर चिपका है। इसके देवता श्री ब्रह्मा जी तथा उनकी पत्नी सावित्री जी हैं। इस कमल की छः पंखुड़ियाँ हैं।

3. नाभि कमल चक्र :- यह नाभि के सामने उसी रीढ़ की हड्डी के साथ चिपका है। इसके देवता श्री विष्णु जी तथा उनकी पत्नी लक्ष्मी जी हैं। इस कमल की 8 पंखुड़ियाँ हैं।

4. हृदय कमल चक्रः- यह कमल सीने में बने दोनों स्तनों के मध्य में रीढ़ की हड्डी के साथ चिपका है। इसके देवता श्री शिव जी तथा उनकी पत्नी पार्वती जी हैं। इस कमल की 12 पंखुड़ियाँ हैं।

5. कण्ठ कमल :- यह कमल छाती की हड्डियों के ऊपर जहाँ से गला शुरू होता है, उसके पीछे रीढ़ की हड्डी के साथ अंत में है। इसकी प्रधान श्री देवी अर्थात् दुर्गा जी हैं। इस कमल की 16 पंखुड़ियाँ हैं। शेष कमल चक्र ऊपर हैं।

6. संगम कमल या छठा कमल :- यह कमल सुष्मणा के ऊपर वाले द्वार पर है। इसकी तीन पंखुड़ियाँ हैं। इसमें सरस्वती रूप में देवी दुर्गा जी निवास करती हैं। एक पंखुड़ी में देवी दुर्गा सरस्वती रूप में रहती है। उसी के साथ में 72 करोड़ उर्वशी (सुंदर परियाँ) रहती हैं जो ऊपर जाने वाले भक्तों को अपने जाल में फँसाती हैं। दूसरी पंखुड़ी में सुंदर युवा नर रहते हैं जो भक्तमतियों को आकर्षित करके काल जाल में रखते हैं। काल भी अन्य रूप में इन युवाओं का संचालक मुखिया बनकर रहता है। तीसरी पंखुड़ी में स्वयं परमात्मा अन्य रूप में रहते हैं। अपने भक्तों को उनके जाल से मुक्त कराते हैं। ज्ञान सुनाकर सतर्क करते हैं।

7. त्रिकुटी कमल चक्र :- यह दोनों आँखों की भौंहों (सेलियों) के मध्यम में सिर के पिछले हिस्से में अन्य कमलों की ही पंक्ति में ऊपर है। इसका देवता सतगुरू रूप में परमेश्वर ही है। इस कमल की दो पंखुड़ियाँ हैं। एक सफेद (वर्ण) रंग की दूसरी काले (भंवर = भंवरे) के रंग की पंखुड़ियाँ हैं। सफेद पंखुड़ी में सतगुरू रूप में सत्यपुरूष का निवास है। काली पंखुड़ी में नकली सतगुरू रूप में काल निरंजन का वास है।

8. सहंस्र कमल चक्र :- यह कमल सिर के मध्य भाग से दो ऊंगल नीचे अन्य कमलों की ही पंक्ति में है। हिन्दू धर्म के व्यक्ति सिर पर बालों की चोटी रखते थे, कुछ अब भी रखते हैं। इसके नीचे वह सहंस्र कमल दल है। इसका देवता ब्रह्म है, इसे क्षर पुरुष भी कहते हैं जिसने गीता व वेदों का ज्ञान परोक्ष रहकर कहा है। इस कमल की एक हजार पंखुड़ियाँ हैं। इनको काल ब्रह्म ने प्रकाश से भर रखा है, स्वयं इसी कमल चक्र में दूर रहता है। वह स्वयं दिखाई नहीं देता, केवल पंखुड़ियाँ चमकती दिखाई देती हैं।

{अष्ट कमल दल :- इस कमल का देवता अक्षर पुरूष है, इसे परब्रह्म भी कहते हैं, इसकी पंखुड़ियाँ भी 8 हैं। इसकी स्थिति नहीं बताऊँगा क्योंकि नकली गुरू भी इसको जानकर जनता को भ्रमित कर देंगे।}

9. संख कमल दल :- इस कमल में पूर्ण ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म का निवास है। इसकी शंख पंखुड़ियाँ है। इसकी स्थिति भी नहीं बताऊँगा, कारण ऊपर लिख दिया है।

{जो चित्र में दिखाए हैं। इनमें छठा कमल तथा नौवा कमल नहीं दिखाया है। कारण यही है कि विद्यार्थियों की धीरे-धीरे ज्ञान वृद्धि की जाती है। कमलों का गहरा रहस्य है। यह कबीर सागर के सारांश में लिखा है।}

शरीर में ये कमल ऐसा कार्य करते हैं, जैसे टेलीविजन में चैनल लगे हैं। उन चैनलों में से जिस भी चैनल को चालू करोगे, उस पर कार्यक्रम दिखाई देगा। वह कार्यक्रम चल तो रहा है स्टूडियो में, दिख रहा है टी.वी. में। इसी प्रकार प्रत्येक कमल का फंक्शन (Function) है। इन कमलों को चालू करने के मन्त्र हैं जो यह दास (संत रामपाल दास) जाप करने को देता है। प्रथम बार दीक्षा इन्हीं चैनलों को खोलने की दी जाती है। मन्त्रों की शक्ति से सर्व कमल On (चालू) हो जाते हैं, फिर साधक अपने शरीर में लगे चैनल में उस देव के धाम को देख सकता है, वहाँ के सर्व दृश्य देख सकता है। इसलिए संत गरीब दास जी ने कहा है कि आप अपने शरीर के चैनल On (चालू) करके स्वयं देख लो कि आदम जी आप को ब्रह्मा के लोक से आए दिखाई देंगे क्योंकि वहाँ पर सर्व रिकॉर्ड उपलब्ध है। जैसे वर्तमान में You Tube है, इसी प्रकार प्रत्येक देव के लोक में आप जो पूर्व में हुई घटना देखना चाहें, आप देख सकते हैं। इसी प्रकार हजरत मुहम्मद जी आपको शिव जी के लोक से आए दिखाई देंगे। इसी प्रकार ईसा जी भी श्री विष्णु जी के लोक से आए दिखाई देंगे।

मक्का महादेव का मंदिर है

सिक्ख धर्म की पुस्तक भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण है :-

''साखी मदीने की चली'' हिन्दी वाली के पृष्ठ 262 पर श्री नानक जी ने चार इमामों के प्रश्न का जवाब देते हुए कहा है :-

आखे नानक शाह सच्च, सुण हो चार इमाम।
मक्का है महादेव का, ब्राह्मण सन सुलतान।।

भावार्थ :- सतगुरू नानक देव जी ने चार इमामों से चर्चा करते हुए कहा कि जिस मक्का शहर में जो काबा (मंदिर) है जिसको आप अपना पवित्र स्थान मानते हो। वह महादेव (शिव जी) का मंदिर है। इसमें सब देवी-देवताओं की मूर्तियाँ (बुत) थी। उसकी स्थापना करने वाला सुल्तान (राजा) ब्राह्मण था। बाद में सब मूर्तियाँ उठा दी गई थी। नबी इब्राहिम व हजरत इस्माईल (अलैहि.) ने इसका पुनः निर्माण करवाया था।

अब आप जी को अपने उद्देश्य की ओर ले चलता हूँ। आप जी को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जो यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान सूक्ष्म वेद में है, वह न गीता में है तथा न चारों वेदों में है, न पुराणों में है, न कुरआन शरीफ में, न बाइबल में, न छः शास्त्रों तथा न ग्यारह उपनिषदों में।

उदाहरण :- जैसे दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम गलत नहीं है, परंतु उसमें B.A. तथा M.A वाला ज्ञान नहीं है। वह पाठ्यक्रम गलत नहीं है, परन्तु पर्याप्त नहीं है। समझने के लिए इतना ही पर्याप्त है।

प्रश्न :- संसार के शास्त्र तथा सन्त, परमात्मा के विषय में क्या जानकारी देते हैं?

उत्तर :- विश्व के मुख्य शास्त्रों, सद्ग्रन्थों में परमात्मा को बहुत अच्छे तरीके से परिभाषित किया है। पहले यह जानते हैं कि विश्व के मुख्य शास्त्र, सद्ग्रन्थ कौन-से हैं?

1. वेद :- वेद दो प्रकार के हैं :- 1. सूक्ष्म वेद, 2. सामान्य वेद।

1. सूक्ष्म वेद :- यह वह ज्ञान है जिसको (अल्लाह ताला) समर्थ परमात्मा स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से वाणी उच्चारण करके बोलता है, यह सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान है।

प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2, 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मन्त्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 20 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मन्त्र 17 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 54 मन्त्र 3, यजुर्वेद अध्याय 9 मन्त्र 1 तथा 32, यजुर्वेद अध्याय 29 मन्त्र 25, अथर्ववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मन्त्र 7, सामवेद मन्त्र संख्या 822

अन्य प्रमाण :- श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 मन्त्र 32 में है। कहा है कि सच्चिदानंद घन ब्रह्म यानि सत्य पुरुष अपने मुख कमल से वाणी बोलकर तत्वज्ञान विस्तार से कहता है। कारण :- परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में सम्पूर्ण ज्ञान ब्रह्म (ज्योति निरंजन अर्थात् काल पुरूष) के अन्तःकरण में डाला था। (Fax किया था) परमात्मा द्वारा किए निर्धारित समय पर यह ज्ञान स्वयं ही काल पुरूष के श्वांसों द्वारा समुद्र में प्रकट हो गया। काल पुरुष ने इसमें से महत्वपूर्ण जानकारी निकाल दी। शेष अधूरा ज्ञान संसार में प्रवेश कर दिया। उसी को चार भागों में ब्यास ऋषि ने विभाजित किया। उसके चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) बनाए।

2. सामान्य वेद :- यह वही चारों वेदों वाला ज्ञान है जो ब्रह्म (ज्योति निरंजन अर्थात् काल) ने अपने ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जी को दिया था। यह अधूरा ज्ञान है। इसमें से मुख्य जानकारी निकाली गई है जो ब्रह्म अर्थात् काल ने जान-बूझकर निकाली थी। कारण यह था कि "काल पुरूष" को भय रहता है कि मानव को पूर्ण परमात्मा का ज्ञान न हो जाए। यदि प्राणियों को पूर्ण परमात्मा का ज्ञान हो गया तो सब इस काल के लोक को त्यागकर पूर्ण परमात्मा के लोक (सत्यलोक=शाश्वत स्थान) में चले जाएँगे, जहाँ जाने के पश्चात् जन्म-मृत्यु समाप्त हो जाते हैं। इसलिए ब्रह्म (काल पुरूष) ने पूर्ण परमात्मा के परमपद की जानकारी नहीं बताई, वह नष्ट कर दी थी। उसकी पूर्ति करने के लिए पूर्ण परमात्मा स्वयं सशरीर प्रकट होकर सम्पूर्ण ज्ञान बताता है। अपनी प्राप्ति के वास्तविक मन्त्र भी बताता है जो काल भगवान ने समाप्त करके शेष ज्ञान प्रदान कर रखा होता है। उसको ऋषिजन चार वेद कहते हैं। ऋषि व्यास जी ने इस वेद को लिखा तथा इस के चार भाग बनाए।

1. ऋग्वेद 2. यजुर्वेद 3. सामवेद 4. अथर्ववेद जो वर्तमान में प्रचलित हैं।

इन्हीं चार वेदों का सारांश काल पुरुष ने श्री मद्भगवत गीता के रूप में श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके महाभारत के युद्ध से पूर्व बोला था। वह भी बाद में महर्षि व्यास जी ने कागज पर लिखा। जो आज अपने को उपलब्ध हैं।

सद्ग्रन्थों में बाइबल का नाम भी है। बाइबल :- यह तीन पुस्तकों का संग्रह है।

1. तोरात 2. जबूर 3. इंजिल।

बाइबल में सर्वप्रथम सृष्टि की उत्पत्ति की जानकारी है, वह तोरात पुस्तक वाली है जिसमें लिखा है कि परमात्मा ने सर्वप्रथम सृष्टि की रचना की। पृथ्वी, सूर्य, आकाश, पशु-पक्षी, मनुष्य (नर-नारी) आदि की रचना परमात्मा ने छः दिन में की तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। सृष्टि रचना अध्याय 1 के श्लोक 26, 27-28 में यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा ने मानव को अपने स्वरूप जैसा उत्पन्न किया।

इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा भी मनुष्य जैसा (नराकार) साकार है।

मनुष्यों के खाने के लिए परमेश्वर का आदेश :-

उत्पत्ति अध्याय में (बाइबल में) लिखा है कि (श्लोक 27-28 में) मनुष्यों के खाने के लिए बीजदार पौधे (गेहूँ, चने, बाजरा आदि-आदि) तथा फलदार वृक्ष दिए हैं, यह तुम्हारा भोजन है। पशु-पक्षियों के खाने के लिए घास, पत्तेदार झाड़ियाँ दी हैं। इसके पश्चात् परमात्मा तो अपने निजधाम (सत्यलोक) में तख्त पर जा बैठा। बाइबल में आगे जो ज्ञान है वह काल भगवान का तथा इसके देवताओं (फरिश्तों) का दिया हुआ है। यदि बाइबल, ग्रन्थ में आगे चलकर माँस खाने के लिए लिखा है तो वह पूर्ण परमात्मा का आदेश नहीं है। वह किसी अधूरे प्रभु का है।

पूर्ण परमात्मा (Complete God) के आदेश की अवहेलना हो जाने से पाप का भागी बनता है।

❖ कुरआन शरीफ (मजीद):- बाइबल के पश्चात् सद्ग्रन्थों में कुरआन शरीफ का नाम श्रद्धा से लिया जाता है, कुरआन का ज्ञान दाता भी वही है जिसने बाइबल का ज्ञान दिया है तथा चारों वेदों और श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान दिया है, इसलिए उसने उन पहलुओं को बाइबल में तथा कुरआन में नहीं दोहराया जिन पहलुओं का ज्ञान चारों वेदों तथा श्रीमद्भगवत गीता में दिया है।

❖ उपनिषद :- ये सँख्या में 11 (ग्यारह) माने जाते हैं, उपनिषद का ज्ञान किसी ऋषि का अपना अनुभव है। यदि वह अनुभव वेदों व गीता से नहीं मिलता तो वह व्यर्थ है। उसको ग्रहण नहीं करना चाहिए। इसलिए उपनिषदों को छोड़कर वेदों व गीता के ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए क्योंकि उपनिषदों का अधिकतर ज्ञान वेदों व गीता के ज्ञान के विपरीत है। इसी प्रकार बाइबल तथा कुरआन के ज्ञान को समझें कि जो ज्ञान वेदों तथा गीता से मेल नहीं करता, उसको ग्रहण नहीं करना चाहिए। वेदों व गीता में जो ज्ञान सूक्ष्मवेद से नहीं मिलता, वह ग्रहण नहीं करना चाहिए।

❖ पुराण :- ये सँख्या में 18 (अठारह) माने गए हैं। वैसे यह पुराणों का ज्ञान एक ही बोध माना गया है। यह ज्ञान सर्व प्रथम ब्रह्मा जी ने अपने पुत्रों (दक्ष आदि ऋषियों) को दिया था। राजा दक्ष जी, मनु जी तथा पारासर आदि ऋषियों ने इसका आगे प्रचार करते समय अपना अनुभव भी मिला दिया। इस प्रकार 18 भागों में पुराण का ज्ञान माना गया है। 18 पुराणों के ज्ञान का जो अंश वेदों तथा गीता से मेल नहीं खाता तो वह त्याग देना चाहिए। इसी प्रकार अन्य कोई भी पुस्तक वेदों व गीता के ज्ञान से विपरीत ज्ञान युक्त है, उसे भी त्याग देना उचित है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता अर्जुन को कह रहा है कि तू सर्वभाव से उस परमेश्वर (जो गीता ज्ञान दाता से भिन्न है) की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परमशान्ति तथा सनातन परमधाम (सत्य लोक) को प्राप्त हो जाएगा। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि जो ज्ञान (सूक्ष्म वेद) स्वयं परमात्मा अपने मुख कमल से बोलकर बताता है, वह सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है, उसी को तत्वज्ञान भी कहते हैं जिसमें परमात्मा ने पूर्ण मोक्ष मार्ग का ज्ञान दिया है। गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम करके प्रश्न करने से वे तत्वदर्शी सन्त तुझे तत्व ज्ञान का उपदेश करेंगे। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई है। कहा है कि जो सन्त संसार रूपी वृक्ष के सर्वांग को जानता है, वह वेदवित अर्थात् वेदों के तात्पर्य को जानता है, वह तत्वदर्शी सन्त है। सूक्ष्म वेद अर्थात् सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी में बताया है :-

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

इसी सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी को तत्वज्ञान भी कहते हैं।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक कभी लौटकर फिर से संसार में नहीं आता अर्थात् उसका पूर्ण मोक्ष हो जाता है। उसी परमात्मा ने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है, केवल उसकी भक्ति करो। गीता ज्ञान दाता अपनी साधना से श्रेष्ठ उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति को मानता है, उसी से परमेश्वर का वह परम पद प्राप्त होता है, जिसे प्राप्त करने के पश्चात् जीव का जन्म-मृत्यु का चक्कर सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

❖ श्री गुरू ग्रन्थ साहेब जी :- यह सिक्ख धर्म का ग्रन्थ माना जाता है, वास्तव में यह कई महात्माओं की अमृत वाणी का संग्रह है, जिसमें श्री नानक देव जी की वाणी अर्थात् महला-पहला की वाणी तत्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्मवेद से मेल खाती है क्योंकि श्री नानक जी को परमात्मा मिले थे जिस समय श्री नानक देव साहेब जी सुल्तानपुर शहर में नवाब के यहाँ मोदी खाने में नौकरी करते थे। सुल्तानपुर शहर से आधा कि.मी. दूर बेई नदी बहती है, श्री नानक जी प्रतिदिन उस दरिया में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन परमात्मा जिन्दा बाबा की वेशभूषा में बेई नदी पर प्रकट हुए, वहाँ श्री नानक देव जी से ज्ञान चर्चा हुई। उसके पश्चात् श्री नानक जी ने दरिया में डुबकी लगाई लेकिन बाहर नहीं आए। वहाँ उपस्थित व्यक्तियों ने मान लिया कि नानक जी दरिया में डूब गए हैं। शहर के लोगों ने दरिया में जाल डालकर भी खोजा परन्तु निराशा ही हाथ लगी क्योंकि श्री नानक देव जी तो जिन्दा बाबा के रूप में प्रकट परमात्मा के साथ सच्चखण्ड (सत्यलोक) में चले गए थे। तीन दिन के पश्चात् श्री

नानक देव जी वापिस पृथ्वी पर आए। उसी बेई नदी के उसी किनारे पर खड़े हो गए, जहाँ से परमेश्वर के साथ जल में डुबकी लगाकर अन्तर्ध्यान हुए थे। श्री नानक जी को जीवित देखकर सुल्तानपुर के निवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं था। श्री नानक जी की बहन नानकी भी सुल्तानपुर शहर में विवाही थी। अपनी बहन के पास श्री नानक जी रहा करते थे। अपने भाई की मौत के गम से दुःखी बहन नानकी को बड़ा आश्चर्य हुआ और गम खुशी में बदल गया। श्री नानक देव को परमात्मा मिले, सच्चा ज्ञान मिला, सच्चा नाम (सत्यनाम) मिला, पुस्तक भाई बाले वाली "जन्म साखी गुरू नानक देव जी" में तथा प्राण संगली हिन्दी लिपि वाली में जिसके सम्पादक सन्त सम्पूर्ण सिंह हैं। इन दोनों पुस्तकों में प्रमाण है कि श्री गुरू नानक देव जी ने स्वयं मर्दाना को बताया कि मुझे परमात्मा जिन्दा बाबा के रूप में बेई नदी पर मिले, जब मैं स्नान करने के लिए गया। मैं तीन दिन तक उन्हीं के साथ रहा था, वह बाबा जिन्दा मेरा सतगुरू भी है तथा वह सर्व सृष्टि का रचनहार भी है। इसलिए वही "बाबा" कहलाने का अधिकारी है, अन्य को "बाबा" नहीं कहा जाना चाहिए, उसका नाम कबीर है।

कायम दायम कुदरती सब पीरन सिर पीर आलम बड़ा कबीर।।

इसलिए श्री नानक जी की वाणी (महला 1) है, वह सूक्ष्म वेद से मेल खाती है, यह सही है। श्री गुरू ग्रन्थ साहेब में कबीर जी की वाणी को छोड़कर अन्य सन्तों की वाणी इतनी सटीक नहीं है। कारण यह है कि श्री नानक देव जी को परमात्मा कबीर जी मिले थे।

प्रमाण :- श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में पृष्ठ 24 पर लिखी वाणी :-

एक सुआन दुई सुआनी नाल भलके भौंकही सदा बियाल,
कुड़ छुरा मुठा मुरदार धाणक रूप रहा करतार।
तेरा एक नाम तारे संसार मैं ऐहो आश ऐहो आधार, धाणक रूप रहा करतार।
फाही सुरत मलूकी वेश, एह ठगवाड़ा ठगी देश।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पृष्ठ 731 पर निम्न वाणी है :-

नीच जाति परदेशी मेरा, क्षण आवै क्षण जावै।
जाकि संगत नानक रहंदा, क्यूकर मुंडा पावै।।

पृष्ठ 721 पर निम्न वाणी लिखी है :-

यक अर्ज गुफतम पेश तोदर, कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

यह उपरोक्त अमृतवाणी श्री गुरू ग्रन्थ साहेब जी की है जिससे सिद्ध हुआ कि श्री नानक जी को परमात्मा मिले थे। वह "कबीर करतार" है जो काशी में धाणक रूप में लीला करने आए थे।

सन्त गरीब दास जी (गांव = छुड़ानी, जिला झज्जर हरियाणा) को भी इसी प्रकार जिन्दा बाबा के रूप में कबीर परमात्मा मिले थे, उसी प्रकार सच्चखण्ड (सत्यलोक) लेकर गए थे, फिर वापिस छोड़ा था। संत गरीबदास जी ने कहा है :-

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू कूँ उपदेश दिया। जात जुलाहा भेद न पाया, काशी माहीं कबीर हुआ।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, एक रती नहीं भार। सतगुरू पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

सन्त दादू दास जी महाराज को भी परमात्मा जिन्दा बाबा के रूप में मिले थे। श्री दादू जी 7 वर्ष की आयु के थे। (कुछ पुस्तकों में उस समय श्री दादू जी की आयु ग्यारह वर्ष लिखी है) गाँव से बाहर बच्चों में खेल रहे थे। परमात्मा उन्हें भी बाबा जिन्दा के रूप में मिले थे, सत्यलोक लेकर गए थे। दादू जी भी तीन दिन-रात तक अचेत रहे, फिर सचेत हुए तो परमात्मा कबीर जी की महिमा बताने लगे।

जिन मोकूं निज नाम (वास्तविक नाम) दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर की, जै कोई लेवे ओट। उनको कबहु लागे नहीं, काल बज्र की चोट।।

संत गरीब दास जी ने कहा है :-

गरीब, दादू कूँ सतगुरु मिले, दई पान की पीक। बूढा बाबा जिसे कहैं, याह दादू की नहीं सीख।।
गरीब, दादू के सिर पर सदा, अदली असल कबीर। टक्कर मारी जद मिले, फिर सांभर के तीर।।

❖ संत धर्मदास जी बान्धवगढ़ वाले को मिले :- महात्मा धर्मदास जी का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में गाँव-बांधवगढ़ (मध्यप्रदेश, भारत) में हुआ था। गुरू जी के आदेशानुसार तीर्थों का भ्रमण करते हुए धर्मदास जी मथुरा में पहुँचे तो समर्थ परमात्मा (कादिर खुदा) जिन्दा महात्मा के रूप में मिले थे। धर्मदास जी को भी (परमात्मा) अल्लाह कबीर सत्यलोक लेकर गए थे। तीन दिन-रात तक धर्मदास जी भी श्री नानक देव जी की तरह परमात्मा के साथ आकाश मण्डल में (सत्यलोक) में रहे। आकाश में ज्योति निरंजन के लोक (इक्कीस ब्रह्मंडों) की व्यवस्था दिखाई। फिर ऊपर को ले गए। अक्षर पुरुष के सात संख ब्रह्मंड दिखाए तथा अपना तख्त (सिंहासन) व सतलोक दिखाया। धर्मदास जी का शरीर अचेत रहा। तीसरे दिन होश में आए तो बताया कि मैं सत्यलोक में परमात्मा के साथ गया था। वे परमात्मा काशी शहर में लीला करने आए हैं, उनको मिलूँगा। धर्मदास बनारस (काशी) में गए। वहाँ जुलाहे के रूप में परमात्मा को कार्य करते देखकर आश्चर्य चकित रह गए, चरणों में गिर गए तथा यथार्थ भक्ति मार्ग प्राप्त करके कल्याण कराया।

❖ हजरत मुहम्मद जी को भी परमात्मा मक्का में जिन्दा महात्मा के रूप में मिले थे। जिस समय नबी मुहम्मद काबा मस्जिद में हज के लिए गए हुए थे तथा उनको अपने लोक में ले गए जो एक ब्रह्माण्ड में राजदूत भवन रूप में बना है, परमात्मा ने हजरत मुहम्मद जी को समझाया तथा अपना ज्ञान सुनाया परन्तु हजरत मुहम्मद जी ने परमात्मा के ज्ञान को नहीं स्वीकारा और न सत्यलोक में रहने की इच्छा व्यक्त की। इसलिए हजरत मुहम्मद को वापिस शरीर में भेज दिया। उस समय हजरत मुहम्मद जी के कई हजार मुसलमान अनुयायी बन चुके थे, उनकी महिमा संसार में पूरी गति से फैल रही थी और कुरआन के ज्ञान को सर्वोत्तम मान रहे थे। सन्त गरीब दास जी ने बताया है कि कबीर परमेश्वर जी मुहम्मद साहेब जी को ऊपर लोक में ले गए, परन्तु वहाँ नहीं रहा। गरीब दास जी ने कहा है कि कबीर परमेश्वर जी ने बताया है :-

हम मुहम्मद को सतलोक द्वीप ले गयो, इच्छा रूपी वहाँ नहीं रहयो।
उल्ट मुहम्मद महल पठाया, गुझ बिरज एक कलमा ल्याया।
रोजा, बंग, नमाज दयी रे, बिस्मल की नहीं बात कही रे।
मारी गऊ शब्द के तीरं, ऐसे होते मुहम्मद पीरं।
शब्दै फेर जिवाई, जीव राख्या माँस नहीं भख्या, ऐसे पीर मुहम्मद भाई।
मारी गऊ ले शब्द तलवार, जीवत हुई नहीं अल्लाह से करी पुकार।
तब हमों (मुझको) मुहम्मद ने याद किया रे।शब्द स्वरूप हम बेग गया रे।
मुई गऊ हमने तुरन्त जीवाई। तब मुहम्मद कै निश्चय आई।।
तुम कबीर अल्लाह दर्वेशा। मोमिन मुहम्मद का गया अंदेशा।।
कहा मुहम्मद सुन जिन्दा साहेब।तुम अल्लाह कबीर और सब नायब।।

"कुरआन शरीफ" की सुरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में भी है, कुरआन शरीफ के ज्ञान दाता को हजरत मुहम्मद तथा मुसलमान धर्म के सर्व श्रद्धालु अपना खुदा मानते हैं, उसी को पूर्ण परमात्मा भी मानते हैं, इन 52 से 59 आयतों में कुरआन ज्ञान दाता ने कहा है कि हे पैगम्बर! हजरत मुहम्मद! जो कुरआन की आयतों में मैंने तुझे जो ज्ञान दिया है, तुम उस पर अडिग रहना। अल्लाह कबीर है और ये काफिर उस अल्लाह पर विश्वास नहीं करते। तुम इनकी बातो में न आना, इनके साथ संघर्ष करना, झगड़ा नहीं करना। हे पैगम्बर! यह कबीर नामक परमात्मा है जिसने किसी को बेटा, बहु, सास, ससुर व नाती बनाया है, तुम उस जिन्दा पर भरोसा रखना। (जो तुझे काबा में मिला था) वह वास्तव में अविनाशी परमात्मा है, वह अपने बन्दों (भक्तों) के गुनाहों (पापों) को क्षमा कर देता है, वह कबीर अल्लाह है। यह कबीर अल्लाह वही है जिसका वर्णन बाइबल ग्रन्थ में उत्पत्ति ग्रन्थ में आता है कि उस परमात्मा ने छः दिन में आसमान और धरती तथा इसके बीच के सर्व नक्षत्र बनाए हैं अर्थात् सर्व सृष्टि की रचना की और सातवें दिन तख्त पर जा बैठा। उसकी खबर किसी बाखबर अर्थात् तत्वदर्शी सन्त से पूछो।

हजरत मुहम्मद जी माँस नहीं खाते थे

सन्त गरीब दास महाराज (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर) ने अपनी अमृतवाणी में भी स्पष्ट किया है कि हजरत मुहम्मद जी तथा एक लाख अस्सी हजार जो आदम जी से मुहम्मद जी तक नबी हुए हैं तथा मुहम्मद जी के

उस समय अनुयायी मुसलमान थे, उन्होंने माँस नहीं खाया तथा गाय को बिस्मिल (हत्या) नहीं किया।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया। एक लाख अस्सी कूँ सौगंध, जिन नहीं कर्द चलाया।।
अर्श कुर्श में अल्लाह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली। वै पैगंबर पाख पुरुष थे, साहिब के अबदाली।।

भावार्थ :- संत गरीब दास जी ने बताया है कि नबी मुहम्मद को मैं प्रणाम करता हूँ। वे तो परमात्मा के रसूल (संदेशवाहक) थे। उनके एक लाख अस्सी हजार मुसलमान अनुयायी मुहम्मद जी के समय में हुए हैं। एक लाख अस्सी हजार नबी भी बाबा आदम से हजरत मुहम्मद तक हुए हैं। मैं (गरीब दास जी) कसम खाता हूँ कि उन्होंने (एक लाख अस्सी हजार नबियों तथा अनुयाइयों ने) तथा हजरत मुहम्मद जी ने ज्ञान होने के बाद कभी किसी जीव पर करद (छुरा) नहीं चलाया अर्थात् कभी भी जीव हिंसा नहीं की और माँस नहीं खाया।

परमात्मा आसमान के अन्तिम छोर (सर्व ब्रह्माण्डों के ऊपर के स्थान) पर विराजमान है, परन्तु उसकी नजरों से कोई भी जीव छिपा नहीं है, वह सर्व जीवों को देखता है। वे पैगम्बर (हजरत मुहम्मद तथा अन्य) पवित्र आत्माएँ थे। वे परमात्मा के कृपा पात्र थे।

सन्त जम्भेश्वर महाराज जी के विचार

इसी बात की गवाही सन्त जम्भेश्वर जी महाराज (बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक) ने दी है। शब्द संख्या 12 में :-

महमद–महमद न कर काजी, महमद का तो विषम विचारू।
महमद हाथ करद न होती, लोहे घड़ी न सारू।
महमद साथ पयबंर सीधा, एक लाख अस्सी हजारूं।
महमद मरद हलाली होता, तुम ही भए मुरदारूं।

भावार्थ :- सन्त जम्भेश्वर जी ने बताया है कि :- हे काजी! आप उस पवित्र आत्मा मुहम्मद जी का नाम लेकर जो गाय या अन्य जीवों को मारते हो, उस महापुरूष को बदनाम करते हो, हजरत मुहम्मद जी के विचार बहुत नेक थे। आप उनके बताए मार्ग से भटक गए हैं, मुहम्मद जी के हाथ में करद (जीव काटने का छुरा) नहीं था, जो लोहे के अहरण पर घण से कूटकर तैयार होता है। हजरत मुहम्मद के साथ एक लाख अस्सी हजार पवित्रात्माएँ मुसलमान अनुयाई थे। वे तथा हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक नबी हुए हैं। वे सीधे-साधे थे तथा नेक पैगम्बर थे। हजरत मुहम्मद तो शूरवीर हलाल की कमाई करके खाने वाले थे। तुम ही मुरदारू (जीव हिंसा करने वाले) हो। आप उस महापुरूष के अनुसार अपना जीवन निष्पाप बनाओ। जीव हिंसा मत करो।

सन्त जम्भेश्वर को परमात्मा जिन्दा महात्मा के रूप में समराथल में मिले थे :-

जैसा कि वेदों में प्रमाण है कि परमात्मा सत्यलोक में रहता है, वहाँ से गति करके पृथ्वी पर प्रकट होता है, अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको आध्यात्मिक यथार्थ ज्ञान देता है, कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरता है। जिस कारण से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक कवि होता है। वह कवि की उपाधि प्राप्त करता है, परमात्मा गुप्त भक्ति के मन्त्र को उद्घृत करता है जो वेदों व कतेबों आदि-आदि पोथियों में नहीं होता। कृपया इन मन्त्रों का अनुवाद **देखें फोटोकापियों में इसी पुस्तक के पृष्ठ 140 पर।**

प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1, 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 से 20

जैसा कि पूर्व में लिख दिया है कि हजरत मुहम्मद जी तथा अन्य कई महात्माओं को परमात्मा जिन्दा महात्मा के रूप में मिला था उसी प्रकार महात्मा जम्भेश्वर जी महाराज को समराथल में जिन्दा सन्त के रूप में परमात्मा मिले थे।

प्रमाण :- श्री जम्भेश्वर जी की वाणी शब्द संख्या = 50 का कुछ अंश :-

दिल–दिल आप खुदाय बंद जाग्यो, सब दिल जाग्यो सोई।
जो जिन्दो हज काबै जाग्यो, थल सिर जाग्यो सोई।।
नाम विष्णु कै मुसकल घाते, ते काफर सैतानी।
हिन्दु होय का तीर्थ न्हावै, पिंड भरावै, तेपण रहा इवांणी।

तुरक होय हज कांबो धोके, भूला मुसलमाणी।
के के पुरूष अवर जागैला, थल जाग्यो निज वाणी।

भावार्थ :- श्री जम्भेश्वर महाराज जी ने बताया है कि जो परमात्मा जिन्दा महात्मा के रूप में हजरत मुहम्मद जी को काबा (मक्का) में उस समय मिला था जिस समय मुहम्मद जी हज के लिए मक्का में बनी मस्जिद काबा गए थे और उनको जगाया था कि मन्दिर-मस्जिद, आदि तीर्थ स्थानों पर चक्कर लगाने से परमात्मा नहीं मिलता, परमात्मा प्राप्ति के लिए मन्त्र जाप की आवश्यकता है। श्री जम्भेश्वर जी महाराज ने फिर बताया है कि वही परमात्मा थल सिर (समराथल) स्थान (राजस्थान प्रान्त) में आया और मुझे जगाया? न जाने कितने व्यक्ति और जागेंगे जैसे मेरा समराथल प्रसिद्ध है। यह मेरी निज वाणी यानि विशेष वचन है। मैंने अपनी अनुभव की खास (निज) यथार्थ वाणी बोलकर समराथल के व्यक्तियों में परमात्मा भक्ति की जागृति लाई है, सत्य से दूर होकर मुसलमान अभी भी काबे में हज करने जाते हैं, वहाँ धोक लगाते हैं, पत्थर को सिजदा करते हैं जो व्यर्थ है। इसी प्रकार हिन्दू भी तीर्थ पर जाते हैं, भूतों की पूजा करते हैं, पिण्ड भराते हैं, यह व्यर्थ साधना है।

कुरआन ज्ञान दाता के माँस आहार के विषय में निर्देश

सूरः अल्-माइदा-5

आयत नं. 1 :- ऐ लोगो! जो इमान लाए हो यानि मुसलमान बने हो। प्रतिबंधों का पूर्ण रूप से पालन करो यानि मेरी बनाई मर्यादा का पालन करो।

तुम्हारे खाने के लिए चौपायों की जाति के सब जानवर हलाल (वैध) किए हैं सिवाय उनके जो तुमको आगे चलकर बताएँगे, लेकिन हराम की हालत में शिकार को अपने लिए हलाल (वैध) न करो, बेशक अल्लाह जो चाहता है, हुक्म देता है।

{जो चार पाँव वाले जानवर खाने के लिए जायज बताए हैं, वे हैं :- ऊँट, गाय, भेड़, बकरी आदि।}

सूरः माइदा-5

आयत नं. 3 :- तुम पर हराम किया गया।(यानि जो खाना पाप है, वे जानवर बताए हैं) मुर्दार, खून, सूअर का माँस, वे जानवर जो अल्लाह के सिवाय किसी और के लिए जब्ह (मारा गया हो, उसको भोग लगा हो) किया गया हो। वह जो गला घुटकर या चोट खाकर या ऊँचाई से गिरकर या टक्कर खाकर मरा हो या किसी हिंसक जानवर ने फाड़ा हो। सिवाय उसके जिसे तुमने जीवित पाकर जब्ह न कर लिया हो और वह किसी स्थान पर जब्ह किया हो यानि जिस स्थान पर अन्य देवी-देवताओं की मूर्ति हो और यह भी तुम्हारे लिए नाजायज है और पाँसों (टौस डालकर) के द्वारा अपना भाग्य मालूम करो। ये सारे उपरोक्त काम आदेश उल्लंघन के हैं।

सूरा अल् मोमिन-40

आयत नं. 79 :- अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए हैं ताकि इनमें से किसी पर तुम सवार हो और किसी का गोश्त (माँस) खाओ।

सृजनकर्ता का मानव के खाने के लिए निर्देश व आदेश

बाइबल ग्रंथ में उत्पत्ति विषय में अध्याय 1-2 में **उत्पत्ति 1:26 :-** फिर परमेश्वर ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ। और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और घरेलू पशुओं और सारी पृथ्वी पर सब रेंगने वाले जंतुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।(26)

{अधिकार रखने से तात्पर्य है कि मानव अन्य प्राणियों से बुद्धिमान बनाया है जो सब प्राणियों को काबू कर सके। इनको खाने का निर्देश नहीं है।}

1:27 :- तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। नर-नारी करके उसने मनुष्य की सृष्टि की।

1:28 :- परमेश्वर ने मनुष्य को आशीष दी और उनसे कहा :-
फूलो, फलो और पृथ्वी के ऊपर भर जाओ।

मनुष्यों के भोजन के लिए निर्देश :-

1:29 :- फिर परमेश्वर ने उनसे (मनुष्यों से) कहा, सुनो! जितने बीज वाले छोटे-छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के

ऊपर हैं (यानि बाजरा, ज्वार, गेहूँ, चावल, चना, मक्का, काजू, बादाम, पिस्ता आदि-आदि) और जितने वृक्षों में बीज वाले फल होते हैं (आम, अमरूद, जामुन, केले, अंगूर आदि), वे सब मैंने तुमको दिए हैं, वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं।

1:30 :- और जितने पृथ्वी के पशु और आकाश के पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले जंतु हैं जिनमें जीवन के प्राण हैं, उन सबके खाने के लिए मैंने सब हरे-हरे छोटे पेड़ दिए हैं। और वैसा ही हो गया।

1:31 :- तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, देखा तो क्या देखा कि वह बहुत अच्छा है। तथा सांझ हुई। फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवां दिन हो गया।

अध्याय 2 में 2:2 :- यों आकाश और पृथ्वी और उसकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था, सातवें दिन समाप्त किया और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।

2:3 :- और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी तथा पवित्र ठहराया क्योंकि उसमें उसने सृष्टि की रचना के सारे काम से विश्राम लिया।

विशेष :- मानव के भोजन के विषय में यह आदेश उस अल्लाह का है जिसके विषय में कुरआन की सूरः फुरकानि-25 की आयत नं. 52-59 में वर्णन है कि ''कबीर अल्लाह ने सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की। फिर ऊपर आसमान में तख्त (सिंहासन) पर जा विराजा। उसकी खबर यानि सम्पूर्ण जानकारी किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी संत) से पूछो। (उससे जानो।)''

यह कादिर अल्लाह (अल्लाह ताला) है, सृष्टि का रचनहार है। इसने जो रचना करनी थी, छः दिन में की तथा जो प्राणियों के खाने का आदेश देना था, दिया और सातवें दिन ऊपर आसमान में अपने निज निवास में तख्त पर जा बैठा जिसका आदेश मानव (नर-नारी) को माँस खाने का नहीं है। इसके आदेश की अवहेलना करके अन्य का आदेश पालन करके माँस खाने वाले परमेश्वर का विधान भंग कर रहे हैं जो दंडित किए जाएँगे।

विशेष :- बाइबल के इस कथन से सिद्ध होता है कि सृष्टि रचना करने वाले ने अपने वचन से अनेकों स्त्री-पुरूषों (मनुष्यों) की उत्पत्ति की थी तथा अनेकों पशु, पक्षियों तथा पृथ्वी व जल के जीव-जंतुओं की उत्पत्ति की थी। जैसे कहा है कि {बाइबल उत्पत्ति 1:25} छठे दिन :- इस प्रकार परमेश्वर ने पृथ्वी के जाति-जाति के वन-पशुओं को और जाति-जाति के भूमि पर रेंगने वाले सब जंतुओं को बनाया।

1:26-27 :- तब परमेश्वर ने मनुष्यों को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। नर-नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की। जो बाइबल में आगे वर्णन है, यह प्रलय के बाद का है। फिर भी हमने माँस न खाने वाला प्रकरण समझना है। इससे स्पष्ट है कि पूर्ण ब्रह्म (कादिर अल्लाह) यानि परमेश्वर का आदेश मानव को माँस खाने का नहीं है। माँस खाने से पाप लगता है।

आगे पढ़ें विस्तृत वर्णन :-

अल्लाह के तख्त पर जाने के पश्चात् काल ब्रह्म ने इसमें पुनः मानव रचना की। उसका वर्णन आगे है। काल ब्रह्म ने अपने तीनों पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) को यहाँ का संचालक बनाया है। कर्मों के अनुसार फल देना इनके अधिकार में दिया है। स्वयं गुप्त रहता है।

आगे इस पवित्र ग्रंथ बाइबल में कहीं पर माँस खाने का निर्देश है, वह उस पूर्ण ब्रह्म (Complete God) का नहीं है। इसी प्रकार यदि पवित्र बाइबल में या पवित्र कुरआन में कहीं माँस खाने का आदेश है तो वह पूर्ण ब्रह्म (कादिर अल्लाह) का नहीं है। वह हमने नहीं मानना है।

सूक्ष्मवेद (कलाम-ए-कबीर) में कादिर अल्लाह का निर्देश

हजरत मुहम्मद जी जिस साधना को करता था वही साधना अन्य मुसलमान समाज भी कर रहा है। वर्तमान में सर्व मुसलमान श्रद्धालु माँस भी खा रहे हैं। परन्तु नबी मुहम्मद जी ने कभी माँस नहीं खाया तथा न ही उनके सीधे अनुयाईयों(एक लाख अस्सी हजार) ने माँस खाया। केवल रोजा व बंग तथा नमाज किया करते थे। गाय आदि को बिस्मिल(हत्या) नहीं करते थे।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।

एक लाख अस्सी कूँ सौगंध, जिन नहीं कर्द चलाया।।
अर्श कुर्श में अल्लाह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली।
वै पैगंबर पाख पुरुष थे, साहिब के अबदाली।।

भावार्थ :- नबी मुहम्मद तो आदरणीय है जो प्रभु के अवतार कहलाए हैं। कसम है एक लाख अस्सी हजार पैगंबर हुए हैं तथा जो उनके अनुयाई थे, उनको कसम है कि उन्होंने कभी बकरे, मुर्गे तथा गाय आदि पर करद नहीं चलाया अर्थात् जीव हिंसा नहीं की तथा माँस भक्षण नहीं किया। वे हजरत मुहम्मद, हजरत मूसा, हरजत ईसा आदि पैगम्बर (संदेशवाहक) तो पवित्र व्यक्ति थे तथा ब्रह्म (ज्योति निरंजन/काल) के कृपा पात्र थे, परन्तु जो आसमान के अंतिम छोर (सतलोक) में पूर्ण परमात्मा(अल्लाहू अकबर अर्थात् अल्लाह कबीर) है उस सृष्टि के मालिक की नजर से कोई नहीं बचा।

मारी गऊ शब्द के तीरं, ऐसे थे मोहम्मद पीरं।।
शब्दै फिर जिवाई, हंसा राख्या माँस नहीं भाख्या, ऐसे पीर मुहम्मद भाई।।

भावार्थ :- एक समय नबी मुहम्मद ने एक गाय को शब्द(वचन सिद्धि) से मार कर सर्व के सामने जीवित कर दिया था। उन्होंने गाय का माँस नहीं खाया। अब मुसलमान समाज वास्तविकता से परिचित नहीं है। जिस दिन गाय जीवित की थी उस दिन की याद बनाए रखने के लिए गऊ मार देते हो। आप जीवित नहीं कर सकते तो मारने के भी अधिकारी नहीं हो। आप माँस को प्रसाद रूप जान कर खाते तथा खिलाते हो। आप स्वयं भी पाप के भागी बनते हो तथा अनुयाइयों को भी गुमराह कर रहे हो। आप दोजख (नरक) के पात्र बन रहे हो।

कबीर, माँस अहारी मानई, प्रत्यक्ष राक्षस जानि। ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।1।।
कबीर, माँस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच। कुल की दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।2।।
कबीर, माँस भखै और मद पिये, धन वेश्या स्यों खाय। जुआ खेलै चोरी करै, अंत समूला जाय।।5।।
कबीर, माँस माँस सब एक है, मुरगी हिरनी गाय। आँखि देखि नर खात है, ते नर नरकहिं जाय।।6।।
कबीर, यह कूकर को भक्ष है, मनुष देह क्यों खाय। मुख में आमिख मेलिके, नरक परंगे जाय।।7।।
कबीर, पापी पूजा बैठिकै, भखै माँस मद दोइ। तिनकी दीक्षा मुक्ति नहिं, कोटि नरक फल होइ।।10।।
कबीर, जीव हनै हिंसा करै, प्रगट पाप सिर होय। निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।14।।
कबीर, तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दे दान। काशी करौंत ले मरै, तौ भी नरक निदान।।16।।
कबीर, बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो बकरी को खात है, तिनका कौन हवाल।।18।।
कबीर, मुल्ला तुझै करीम का, कब आया फरमान। घट फोरा घर घर बांटा, साहबका नीसान।।21।।
कबीर, काजी का बेटा मुआ, उर में सालै पीर। वह साहब सबका पिता, भला न मानै बीर।।22।।
कबीर, पीर सबन को एकसी, मूरख जानैं नाहिं। अपना गला कटाय के, क्यों न बसो भिश्त के माहिं।।23।।
कबीर, मुरगी मुल्ला से कहै, जबह करत है मोहिं। साहब लेखा माँगसी, संकट परि है तोहिं।।24।।
कबीर, जोर करि जबह करै, मुख से कहै हलाल। साहब लेखा माँगसी, तब होसी कौन हवाल।।28।।
कबीर, जोर कीयां जुलूम है, मांगै ज्वाब खुदाय। खालिक दर खूनी खडा, मार मुहीं मुँह खाय।।29।।
कबीर, गला काटि कलमा भरै, कीया कहै हलाल। साहब लेखा माँगसी, तब होसी जबाब–सवाल।।30।।
कबीर, गला गुसा का काटिये, मियां कहर को मार। जो पाँचू बिस्मिल करै, तब पावै दीदार।।31।।
कबीर, ये सब झूठी बंदगी, बेरिया पाँच नमाज। सांचहि मारै झूठ पढ़ि, काजी करै अकाज।।32।।
कबीर–दिन को रोजा रहत हैं, रात हनत है गाय। यह खून वह बंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।33।।
कबीर, कबिरा तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर। जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।36।।
कबीर, खूब खाना है खीचड़ी, माँहीं परी टुक लौन। माँस पराया खाय के, गला कटावै कौन।।37।।
कबीर, कहता हूँ कहि जात हूँ, कहा जो मान हमार। जाका गला तुम काटि हो, सो फिर काटै तुम्हार।।38।।
कबीर, हिन्दू के दया नहीं, मिहर तुरक कै नाहिं। कहै कबीर दोनूं गया, लख चौरासी माहिं।।39।।
कबीर, मुसलमान मारै करद से, हिंदू मारे तरवार। कहै कबीर दोनूं मिलि, जैहैं जम के द्वार।।40।।

उपरोक्त अमृतवाणी में कबीर खुदा (परमेश्वर) ने समझाया कि जो व्यक्ति माँस खाते हैं, शराब पीते हैं,

सत्संग सुनकर भी बुराई नहीं त्यागते, उपदेश प्राप्त नहीं करते, उन्हें तो साक्षात राक्षस जानों। अनजाने में गलती न जाने किससे हो जाए। यदि वह बुराई करने वाला व्यक्ति सत्संग विचार सुनकर बुराई त्याग कर भगवान की भक्ति करने लग जाता है वह तो नेक आत्मा है, वह चाहे किसी जाति व धर्म का हो। जो माँस आहार तथा सुरा पान त्याग कर प्रभु भक्ति नहीं करता वह तो ढ़ेड (नीच) व्यक्ति है, चाहे किसी जाति या धर्म का हो। भावार्थ है कि उच्च कर्म करने वाला उच्च है तथा नीच कर्म करने वाला नीच है। जाति या धर्म विशेष में जन्म मात्र से उच्च-नीच नहीं होता। जिन साधकों ने उपदेश ले रखा है उन्हें उपरोक्त प्रकार के बुराई करने वालों के पास नहीं बैठना चाहिए जिससे आपकी भक्ति में बाधा पड़ेगी।(साखी 1-2)

जो व्यक्ति माँस भक्षण करते हैं, शराब पीते हैं, जो स्त्री वैश्यावृति करती है तथा जो व्यक्ति उससे व्यवसाय करवा कर वैश्या से धन प्राप्त करते हैं, जुआ खेलते हैं तथा चोरी करते है, समझाने से भी नहीं मानते, वह तो महापाप के भागी हैं तथा घोर नरक में गिरेंगे।(साखी 5)

माँस चाहे गाय, हिरनी तथा मुर्गी आदि किसी प्राणी का है जो व्यक्ति माँस खाते हैं वे नरक के भागी हैं। जो व्यक्ति अनजाने में माँस खाते हैं(जैसे आप किसी रिश्तेदारी में गए, आपको पता नहीं लगा कि सब्जी है या माँस, आपने खा लिया) तो आप को दोष नहीं, परन्तु आगे से अति सावधान रहना। जो व्यक्ति आँखों देखकर भी खा जाते हैं वे दोषी हैं। यह माँस तो कुत्ते का आहार है, मनुष्य शरीर धारी के लिए वर्जित है।(साखी 6-7)

जो गुरुजन माँस भक्षण करते हैं तथा शराब पीते हैं उनसे नाम दीक्षा प्राप्त करने वालों की मुक्ति नहीं होती अपितु महा नरक के भागी होंगे।(साखी 10)

जो व्यक्ति जीव हिंसा करते हैं (चाहे गाय, सूअर, बकरी, मुर्गी, मनुष्य, आदि किसी भी प्राणी को स्वार्थवश मारते हैं) वे महापापी हैं, (भले ही जिन्होंने पूर्ण संत से पूर्ण परमात्मा का उपदेश भी प्राप्त है) वे कभी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते।(साखी 14)

जरा-सा (तिल के समान) भी माँस खाकर भक्ति करता है, चाहे करोड़ गाय दान भी करता है, उस साधक की साधना भी व्यर्थ है। माँस आहारी व्यक्ति चाहे काशी में करौंत से गर्दन छेदन भी करवा ले वह नरक ही जायेगा।

(नोट :- काशी/बनारस के हिन्दुओं के स्वार्थी गुरुओं ने भक्त समाज में भ्रम फैला रखा था कि जो काशी में मरता है वह स्वर्ग जाता है। अधिक भीड़ होने लगी तब एक और घातक योजना बनाई उसके तहत कहा कि जो शीघ्र स्वर्ग जाना चाहता है उसके लिए गंगा पर एक करौंत भगवान का भेजा आता है। उससे गर्दन कटवाने वालों के लिए स्वर्ग के कपाट खुले रहते हैं। उन स्वार्थी गुरुजनों ने मनुष्य हत्या के लिए एक हत्था खोल दिया। श्रद्धालु भक्तों ने आत्मकल्याण के लिए वहाँ गर्दन कटवाना भी स्वीकार कर लिया। परन्तु ज्ञानहीन गुरुओं के द्वारा बताई साधना से भी कोई लाभ नहीं होता।) इसलिए कहा है कि माँस खाने वाला चाहे कितना भी भक्ति तथा पुण्य व दान तथा बलिदान करे उसका कोई लाभ नहीं।(साखी 16)

बकरी जो आपने मार डाली वह तो घास-फूंस, पत्ते आदि खाकर पेट भर रही थी। इस काल लोक में ऐसे शाकाहारी शरीफ पशु की भी हत्या हो गई तो जो बकरी का माँस खाते हैं उनका तो अधिक बुरा हाल होगा।(साखी 18)

पशु आदि को हलाल, बिस्मिल आदि करके माँस खाने व प्रसाद रूप में वितरित करने का आदेश दयालु (करीम) प्रभु का कब प्राप्त हुआ(क्योंकि पवित्र बाइबल उत्पत्ति ग्रन्थ में पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में सृष्टि रची, सातवें दिन ऊपर तख्त पर जा बैठा तथा सर्व मनुष्यों के आहार के लिए आदेश किया था कि मैंने तुम्हारे खाने के लिए फलदार वृक्ष तथा बीजदार पौधे दिए हैं। उस करीम (दयालु पूर्ण परमात्मा) की ओर से आप को फिर से कब आदेश हुआ? वह कौन-सी कुरआन में लिखा है? पूर्ण परमात्मा सर्व मनुष्यों आदि की सृष्टि रचकर ब्रह्म(जिसे अव्यक्त कहते हो, जो कभी सामने प्रकट नहीं होता, गुप्त कार्य करता तथा करवाता रहता है) को दे गया। बाद में पवित्र बाइबल तथा पवित्र कुरआन शरीफ (मजीद) आदि ग्रन्थों में जो विवरण है वह ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का तथा उसके फरिश्तों का है, या भूतों-प्रेतों का है। करीम अर्थात् दयालु पूर्ण ब्रह्म अल्लाहु कबीरू का नहीं है। उस पूर्ण ब्रह्म के आदेश की अवहेलना किसी भी फरिश्ते व ब्रह्म आदि के कहने से करने की सजा भोगनी पड़ेगी।)

उदाहरण :- एक समय एक व्यक्ति की दोस्ती एक पुलिस थानेदार से हो गई। उस व्यक्ति ने अपने दोस्त थानेदार से कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे बहुत परेशान करता है। थानेदार (S.H.O.) ने कहा कि मार लट्ठ, मैं आप निपट लूंगा। थानेदार दोस्त की आज्ञा का पालन करके उस व्यक्ति ने अपने पड़ोसी को लट्ठ मारा, सिर में चोट लगने के कारण पड़ौसी की मृत्यु हो गई। उसी क्षेत्र का अधिकारी होने के कारण वह थाना प्रभारी अपने दोस्त को पकड़ कर लाया, कैद में डाल दिया तथा उस व्यक्ति को मृत्यु दण्ड मिला। उसका दोस्त थानेदार कुछ मदद नहीं कर सका। क्योंकि राजा का संविधान है कि यदि कोई किसी की हत्या करेगा तो उसे मृत्यु दण्ड प्राप्त होगा। उस नादान व्यक्ति ने अपने मित्र दरोगा की आज्ञा मान कर राजा का संविधान भंग कर दिया। जिससे जीवन से हाथ धो बैठा।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की आज्ञा की अवहेलना करने वाला पाप का भागी होगा। क्योंकि कुरआन शरीफ (मजीद) का सारा ज्ञान ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन, जिसे आप अव्यक्त कहते हो) का दिया हुआ है। इसमें उसी का आदेश है तथा पवित्र बाइबल में केवल उत्पत्ति ग्रन्थ के प्रारम्भ में पूर्ण प्रभु का आदेश है। पवित्र बाइबल में हजरत आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा को उस पूर्ण परमात्मा ने बनाया। बाबा आदम की वंशज संतान हजरत ईस्राईल, राजा दाऊद, हजरत मूसा, हजरत ईसा तथा हजरत मुहम्मद आदि को माना है। पूर्ण परमात्मा तो छः दिन में सृष्टि रचकर तख्त पर विराजमान हो गया। बाद का सर्व कतेबों (कुरआन शरीफ आदि) का ज्ञान ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का प्रदान किया हुआ है। पवित्र कुरआन का ज्ञान दाता स्वयं कहता है कि पूर्ण परमात्मा जिसे करीम, अल्लाह कहा जाता है उसका नाम कबीर है, वही पूजा के योग्य है। उसके तत्वज्ञान व भक्ति विधि को किसी बाखबर (तत्वदर्शी संत) से पता करो। इससे सिद्ध है कि जो ज्ञान कुरआन शरीफ आदि का है वह पूर्ण प्रभु का नहीं है।(साखी 21)

जब काजी के पुत्र की मृत्यु हो जाती है तो काजी को कितना कष्ट होता है। पूर्ण ब्रह्म (अल्लाह कबीर) सर्व का पिता है। उसके प्राणियों को मारने वाले से अल्लाह खुश नहीं होता।(साखी 22)

दर्द सबको एक जैसा ही होता है। यदि बकरे आदि का गला काट कर हलाल किया कहते हो तो काजी तथा मुल्ला अपना गला छेदन करके हलाल किया क्यों नहीं कहते यानि अपनी जान प्रिय लगती है, क्या बकरे को अपनी जान प्रिय नहीं है?(साखी 23)

जिस समय बकरी को मुल्ला मारता है तो वह बेजुबान प्राणी आँखों में आंसू भर कर म्यां-म्यां करके समझाना चाहता है कि हे मुल्ला मुझे मार कर पाप का भागी मत बन। जब परमेश्वर के घर न्याय अनुसार लेखा किया जाएगा उस समय तुझे बहुत संकट का सामना करना पड़ेगा।(साखी 24)

जबरदस्ती (बलात्) निर्दयता से बकरी आदि प्राणी को मारते हो, कहते हो हलाल कर रहे हैं। इस दोगली नीति का आपको महा कष्ट भोगना होगा। काजी तथा मुल्ला व कोई भी जीव हिंसा करने वाला व्यक्ति पूर्ण प्रभु के कानून का उल्लंघन कर रहा है, वह वहाँ धर्मराज के दरबार में खड़ा-खड़ा पिटेगा। यदि हलाल ही करने का शौक है तो काम, क्रोध, मोह, अहंकार, लोभ आदि को कर।

पाँच समय नमाज भी पढ़ते हो तथा रमजान के महीने में दिन में रोजे (व्रत) भी रखते हो। शाम को गाय, बकरी, मुर्गी आदि को मार कर माँस खाते हो। एक तरफ तो परमात्मा की स्तुति करते हो दूसरी ओर उसी के प्राणियों की हत्या करते हो। ऐसे प्रभु कैसे खुश होगा? अर्थात् आप स्वयं भी पाप के भागी हो रहे हो तथा अनुयाइयों (साहबाओं) को भी गुमराह करने के दोषी होकर जहन्नुम में गिरोगे।(साखी 28 से 33)

कबीर परमेश्वर कह रहे हैं कि हे काजी!, हे मुल्ला! आप पीर (गुरु) भी कहलाते हो। पीर तो वह होता है जो दूसरे के दुःख (पीड़) को समझे उसे, संकट में गिरने से बचाए। किसी को कष्ट न पहुँचाए। जो दूसरे के दुःख में दुःखी नहीं होता वह तो काफिर (अवज्ञाकारी) बेपीर (निर्दयी) है। वह पीर (गुरु) के योग्य नहीं है।(साखी 36)

उत्तम खाना नमकीन खिचड़ी है उसे खाओ। दूसरे का गला काटने वाले को उसका बदला देना पड़ता है। यह जान कर समझदार व्यक्ति प्रतिफल में अपना गला नहीं कटाता। दोनों ही धर्मों के मार्ग दर्शक निर्दयी हो चुके हैं। हिन्दूओं के गुरु कहते हैं कि हम तो एक झटके से बकरे आदि का गला छेदन करते हैं, जिससे प्राणी को कष्ट नहीं होता, इसलिए हम दोषी नहीं हैं तथा मुसलमान धर्म के मार्ग दर्शक कहते हैं हम धीरे-धीरे हलाल

करते हैं जिस कारण हम दोषी नहीं। परमात्मा कबीर साहेब जी ने कहा यदि आपका तथा आपके परिवार के सदस्य का गला किसी भी विधि से काटा जाए तो आपको कैसा लगेगा?(साखी 37 से 40)

बात करते हैं पुण्य की, करते हैं घोर अधर्म। दोनों दीन नरक में पड़हीं, कुछ तो करो शर्म।।

कबीर परमेश्वर ने कहा :-

हम मुहम्मद को सतलोक ले गया। इच्छा रूप वहाँ नहीं रहयो।

उलट मुहम्मद महल पठाया। गुझ बीरज एक कलमा लाया।।

रोजा बंग निमाज दई रे। बिसमिल की नहीं बात कही रे।

भावार्थ :- नबी मुहम्मद को मैं (कबीर अल्लाह) सतलोक ले कर गया था। परंतु वहाँ न रहने की इच्छा व्यक्त की, वापिस मुहम्मद जी को शरीर में भेज दिया। नबी मुहम्मद जी को काल ब्रह्म से पर्दे के पीछे से जो आदेश मिला था, उस आदेश में काल ने भी रोजा (व्रत) बंग (ऊँची आवाज में प्रभु स्तुति करना) तथा पाँच समय की नमाज करना तो कहा था, परंतु गाय आदि प्राणियों को बिस्मिल करने(मारने) को नहीं कहा। कुरआन में बाद में फरिश्ते का आदेश लिखा है, वह महापाप है।

पवित्र ग्रंथ कुरआन में प्रवेश से पहले

पाक ग्रंथ कुरआन को समझने के लिए कुछ मुख्य बातें हैं जिनका ध्यान रखना अनिवार्य है :-

1. :- कुरआन मजीद का ज्ञान नाजिल करने वाले खुदा ने अपने नबी-ए-करीम मुहम्मद (वसल्लम) को सृष्टि की उत्पत्ति करने वाले अल्लाह के विषय में सम्पूर्ण जानकारी नहीं दी है।

प्रमाण :- सूरः फुरकानि-25 आयत नं. 59 में लिखा है कि (हे मुहम्मद) अल्लाह ने सारी कायनात को छः दिन में उत्पन्न किया। फिर आसमान में तख्त (सिंहासन) पर जा बैठा। उसकी (खबर) सम्पूर्ण जानकारी किसी (बाखबर) जानकार यानि तत्त्वदर्शी संत से पूछो।(जानो)

2. :- सूरः अश शूरा-42 आयत नं. 1-2 में (कोड वर्ड) सांकेतिक शब्द हैं। उनका ज्ञान किसी मुसलमान को नहीं है जो अहम हैं। आयत नं. 1. :- ''हा. मीम्, अैन. सीन. काफ.'' ये अक्षर लिखे हैं जो जाप करने का नाम है। नाम के जाप बिन जीव का कल्याण नहीं हो सकता।

3. :- नबी मुहम्मद जी को कुरआन ज्ञान देने वाला खुदा प्रत्यक्ष नहीं मिला। पर्दे के पीछे से नमाज आदि करने का हुक्म हुआ था।

4. :- नबी मुहम्मद जी को डरा-धमकाकर कुरआन मजीद वाला ज्ञान नाजिल किया (उतारा)। नबी मुहम्मद (वसल्लम) ने बताया था कि मेरा गला घोंट-घोंटकर जिब्राइल फरिश्ते ने कुरआन ज्ञान पढ़ने के लिए विवश किया। तीसरी बार जब गला भींचा तो लगा कि मेरी जान निकल जाएगी। एक प्रकार की वह्य (संदेश) जब आती थी तो उसमें नबी जी को बहुत कष्ट होता था। यह वह्य जब आती थी तो घंटियाँ बजती सुनाई देती थी। नबी जी ने बताया कि मुझे बहुत कष्ट होता था।

6. :- नबी मुहम्मद जी की शेष मेराज सत्य हैं जो इस प्रकार हैं :-

पवित्र कुरआन मजीद का अमृत ज्ञान पाक आत्मा हजरत मुहम्मद जी को मिला। हजरत मुहम्मद जी थे तो कुरआन का ज्ञान हमारे बीच में है। इसलिए नबी मुहम्मद जी का अनुभव कुरआन मजीद से कम महत्व नहीं रखता।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद जी की जीवनी में एक अनमोल प्रसंग है जो इस प्रकार है :-

एक सुबह नबी मुहम्मद जी ने अपने साथियों को आपबीती बताई कहा कि आज रात्रि में जिब्राइल फरिश्ता आया। मेरे सीना चाक करके (खोल करके) पवित्र वस्तु डाली और फिर वैसा ही कर दिया। फिर मुझे एक बुराक नामक (खच्चर जैसे) जानवर पर बैठाकर आकाश में उड़ा ले गया। प्रथम आसमान पर जन्नत (स्वर्ग) में ले गया। वहाँ एक आदमी जन्नत तथा जहन्नुम के मध्य में बैठा था। जन्नत (स्वर्ग) की ओर मुख करता था तो खिल-खिलाकर हँसता था। तब जहन्नुम (नरक) की ओर देखता था तो फूट-फूटकर रोने लगता था। मैंने (नबी मुहम्मद जी ने) जिब्राइल फरिस्ते से पूछा कि हे जिब्राइल! यह आदमी कौन है? तथा यह दाँई (Right) ओर मुख

करता है तो खिल-खिलाकर हँसता है तथा बाँई (Left) ओर देखता है तो रोने लगता है। कारण क्या है?

जिब्राइल फरिस्ते ने बताया कि यह सब आदमियों का पिता आदम जी है। बार्यी ओर दोजख (नरक) है। नरक में इसकी बुरे कर्म करने वाली संतान है, वह नरक में कष्ट भोग रही है जो अल्लाह के बताए भक्ति मार्ग पर नहीं चली। उसे दुःखी देखकर रोता है तथा दार्यी ओर जन्नत है। उसमें इनकी वह संतान है जिसने अल्लाह के आदेशानुसार इबादत की जो महासुखी है। उसे देखकर खुशी से हँसता है। हजरत मुहम्मद जी ने आगे बताया कि जब मैं जिब्राइल के साथ बाबा आदम के निकट गया तो उन्होंने कहा कि आओ नेक नबी! नेक बेटे! यह कहकर मुझे सीने से लगाया और कौम की उन्नति करने का आशीर्वाद दिया। फिर जिब्राइल फरिश्ता मुझे आगे जन्नत में ऐसे स्थान पर (दूसरे आसमान पर) ले गया जहाँ पर नबियों की जमात बैठी थी। हजरत दाऊद जी, हजरत मूसा जी, हजरत ईसा आदि एक लाख अस्सी हजार नबी वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने मुझे विशेष सम्मान दिया। मैंने उन सबको नमाज अदा करवाई। इसके पश्चात् जिब्राइल ने मुझे ऊपर जाने को कहा और जिब्राइल तथा बुराक दोनों वहीं रह गए। मैं अकेला (नबी मुहम्मद जी) आगे गया, सीढ़ियां चढ़ी। तब पर्दे के पीछे से आवाज आई कि पचास नमाज प्रतिदिन करो तथा अपने अनुयाइयों से करवाओ। रोजा रखो, अजान (बंग) लगाओ, जाओ। मैं वापिस आ गया जिस स्थान पर सब नबी मंडली बैठी थी। मुझे देखकर मूसा जी आए और पूछा कि अल्लाह ने क्या हुक्म फरमाया? मैंने (हजरत मुहम्मद जी ने) बताया कि मुझे तथा मेरी कौम को पचास समय नमाज करने का आदेश दिया है तथा रोजा (व्रत) तथा अजान (बंग) लगाने को भी कहा है। तब मूसा जी ने कहा कि प्रतिदिन पचास वक्त नमाज कौम नहीं कर पाएगी, कुछ कम करवाओ। वापिस जाओ, अर्ज करो। करते-कराते अंत में पाँच वक्त नमाज का हुक्म मिला। रोजा तथा अजान भी करना फरमाया।(जो वर्तमान में किया जा रहा है) नबी मुहम्मद जी ने फिर बताया कि फिर जन्नत के नजारे दिखाने के लिए मुझे जिब्राइल फरिश्ता जन्नत में कई स्थानों पर ले गया। वहाँ की शोभा अनोखी है। अनेकों नेक आत्माएँ वहाँ निवास करती हैं। फिर जिब्राइल ने मुझे बुराक पर बैठाकर वापिस जमीन पर छोड़ दिया। तब यह सत्य घटना बताई। जन्नत व जहन्नुम में जो कुछ वर्तमान में है, उसके चश्मदीद गवाह (Eye Witness) नबी मुहम्मद जी हैं।

मौलवी साहेबान तर्क देते हैं कि बाबा आदम बार्यी ओर बद-संतान के कर्म देखकर रो रहे थे। दार्यी ओर नेक संतान के कर्म देखकर हँस रहे थे। उसकी संतान तो कब्रों में है। लेखक का वितर्क यह है कि आपके नियम के अनुसार तो हजरत आदम जी से हजरत ईसा जी तक को भी कब्रों में रहना चाहिए था जो नबी मुहम्मद जी ने ऊपर जन्नत में देखे, बातें की, उनको नमाज पढ़ाई। आदम जी क्या अच्छे-बुरे कर्म दीवारों पर देखकर हँस-रो रहे थे? उनके दार्यी ओर स्वर्ग था तथा बार्यी ओर नरक था। उनकी संतान भी जहन्नुम तथा जन्नत में थी।

अन्य प्रमाण :- आसमान की यात्रा के बाद हजरत मुहम्मद से उसके चाचा ने पूछा कि तेरा दादा भी देखा। वह जन्नत में है या जहन्नुम में? मुहम्मद जी ने कहा, जहन्नुम (नरक) में देखा। यह सुनकर उनका चाचा मुहम्मद जी से बहुत नाराज हो गया और बोला, तू मेरे पिता जी को जहन्नुम में बता रहा है। झूठा है। नबी जी ने कहा कि मैंने जो देखा, वही बताया है। मुहम्मद का चाचा पूरा विरोधी बन गया था। सच्चाई वही है जो ऊपर बताई है कि बाबा आदम की अच्छी-बुरी संतान नरक व स्वर्ग में देखी थी।

जन्म तथा मृत्यु पर विवेचन

इस्लाम धर्म के प्रचारकों द्वारा बताया गया विधान गलत है

मैंने (रामपाल दास ने) इस्लाम के प्रसिद्ध प्रचारकों तथा अन्य मौलवी साहेबानों के विचार भी पढ़े। उन्होंने बताया कि इस्लाम नहीं मानता कि जन्म-मृत्यु यानि फिर जन्म, फिर मृत्यु, फिर जन्म, फिर मृत्यु, जैसे हिन्दू धर्म मानता है जो उनकी प्रसिद्ध पुस्तक श्रीमद्भगवद् गीता के अध्याय 2 श्लोक 22 में लिखा है कि ''जैसे व्यक्ति पुराने वस्त्र त्यागकर नए वस्त्र पहन लेता है, ऐसे ही जीवात्मा वर्तमान शरीर को त्यागकर यानि मृत्यु को प्राप्त होकर नया शरीर यानि नया जन्म प्राप्त करती रहती है तथा गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में गीता बोलने वाले ने कहा है कि हे अर्जुन! तू, मैं तथा ये सब योद्धा पहले भी जन्में थे, आगे भी जन्मेंगे। तू यह मत समझ कि केवल वर्तमान में ही जन्मे हैं। मुस्लिम उलेमा (विद्वान) जोर देकर कहते हैं कि जो हिन्दू शास्त्रों में लिखा है

और हिन्दू मानते हैं।(जो ऊपर बताया है।) इस्लाम धर्म के ग्रंथों में कहीं नहीं लिखा है बार-बार जन्म, बार-बार मृत्यु का होना, हम नहीं मानते। मुस्लिम विद्वान बताते हैं कि इस्लाम का यह नियम है कि बाबा आदम जी हम सबके प्रथम पुरूष हैं। प्रथम नबी हैं। बाबा आदम जी से लेकर हजरत मुहम्मद जी तक जितने नबी हुए हैं तथा उन सबकी संतान यानि बाबा आदम जी सब (यहूदी, ईसाई तथा मुसलमानों के परम पिता हैं) तथा वर्तमान तक जितने स्त्री-पुरूष (बालक, जवान, वृद्ध) मर चुके हैं। सबको सम्मान के साथ कब्रों में सुरक्षित रखा गया है। उन सबका जीवात्मा उसके शव में कब्र में तब तक रहेंगे, जब तक कयामत (प्रलय) नहीं आती यानि कयामत के समय केवल जन्नत तथा दोजख (नरक) तथा अल्लाह का तख्त सातवें आसमान वाला बचेगा। शेष पृथ्वी, चाँद, तारे, ग्रह, सूर्य आदि सब नक्षत्र नष्ट हो जाएँगे। वह कयामत खरबों वर्षों के बाद आएगी। उस समय तक जितने आदमी (स्त्री-पुरूष, बालक, वृद्ध, जवान) मरेंगे, वे भी कब्रों में दफनाए जाते रहेंगे। कयामत के समय सबको कब्रों से निकालकर जिलाया (जीवित किया) जाएगा। अल्लाह उनको जीवित करके उनके कर्मों अनुसार जन्नत तथा जहन्नुम में रखेगा। जिन्होंने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक धार्मिक कर्म किए, उन सबको जन्नत में रखा जाएगा तथा जिन्होंने अल्लाह का हुक्म नहीं माना और मनमर्जी का जीवन जीया, उन सबको दोजख (नरक) की आग में डाला जाएगा। इस्लाम के विद्वानों ने यह उपरोक्त सिद्धांत इस्लाम धर्म का बताया है। इसका समर्थन सब मौलवी साहेबान भी कर रहे हैं। पूरा मुसलमान समाज इस सिद्धांत को अटल मान रहा है। परंतु सच्चाई इसके विपरित है। आप जी ने हजरत मुहम्मद जी के द्वारा बताया आँखों देखी सच्चाई पूर्व में पढ़ी कि उन्होंने ऊपर जन्नत तथा दोजख में बाबा आदम तथा उसकी अच्छी-बुरी संतान तथा हजरत मुहम्मद से पहले के सब नबी देखे। मुस्लिम विद्वान तथा मौलवी साहेबान अपने ग्रंथों को भी ठीक से नहीं समझे हैं। इसी कारण पूरा मुसलमान समाज भ्रमित है। सच्चाई से परिचित नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि या तो इन सबको इस्लाम के विषय में ज्ञान नहीं और यदि ज्ञान है तो जान-बूझकर झूठी बातों का प्रचार कर रहे हैं। तो ये मुस्लिम समाज के साथ धोखा कर रहे हैं। यह दास (रामपाल दास) मुसलमान भाईयों तथा बहनों से जानना चाहेगा कि आप अपने प्यारे नबी मुहम्मद (वसल्लम) की बात को सत्य मानोगे या इन झूठे प्रचारकों की झूठ को? आपका उत्तर स्पष्ट है कि हजरत मुहम्मद जी की बताई बातों का अक्षर-अक्षर सत्य है।

{कुछ मुसलमान मौलवी व प्रचारक इतने झूठे हैं कि वे अब शिक्षित मानव समाज को भी भ्रमित करने से नहीं चूकते। जब उनसे इस विषय पर ज्ञान चर्चा होती है कि यदि कयामत तक कब्रों में रहने वाला सिद्धांत सही मानें तो हजरत मुहम्मद ने बाबा आदम से लेकर ईसा तक सब नबी ऊपर प्रथम व दूसरे आकाश में देखे। बाबा आदम की अच्छी व बुरी संतान जन्नत व जहन्नुम में देखी जिनको देखकर बाबा आदम बार्यी ओर मुँह करके रो रहे थे तथा दार्यी ओर मुँह करके हँस रहे थे। आपका सिद्धांत तो नबी मुहम्मद जी ही खंड कर रहे हैं। तब वे झूठे नई झूठ बोलते हैं। कहते हैं कि नबियों के लिए छूट है। वे ऊपर जन्नत में जा सकते हैं। दास (लेखक रामपाल) उनसे प्रमाण चाहता है। दिखाओ कुरआन या किसी हदीस या हजरत मुहम्मद जी की यात्रा के वर्णन में या बाइबल में। इनके पास कोई प्रमाण नहीं है। दूसरी बात यह कहते हैं कि बाबा आदम जी दार्यी ओर अपनी नेक संतान के कर्म देखकर हँस रहे थे तथा बार्यी ओर बद-संतान के कर्म देखकर रो रहे थे। दास (रामपाल दास) उनसे पूछता है कि क्या उनके कर्म दार्यी व बार्यी ओर दीवारों पर लिखे थे जिनको बाबा आदम पढ़कर हँस-रो रहा था। याद रहे बाबा आदम अशिक्षित थे। सच्चाई वही है जो ऊपर बताई है।}

जन्म तथा मृत्यु बार-बार होने का प्रमाण पवित्र कुरआन में भी है जो इस प्रकार है :-

पवित्र कुरआन मजीद में सृष्टि, प्रलय तथा जन्म-मरण के विषय में कुछ सूरतों (सूरों) को पढ़ते हैं और विवेचन करते हैं कि :-

सूरत-कहफ- 18

आयत नं. 47 :- और (उस दिन की चिंता से बेखटक ना हो) जिस दिन हम पहाड़ों को हटा देंगे (नष्ट कर देंगे) और तुम जमीन को देख लोगे कि खुला मैदान पड़ा है। और हम लोगों को बुलावेंगे और उनमें से किसी को नहीं छोड़ेंगे।(47)

आयत नं. 48 :- पांती की पांती तुम्हारे परवरदिगार के सामने पेश किए जाएँगे। (और उनसे कहा जाएगा

कि कहो) जैसा हमने तुमको पहले पैदा किया था। वैसे ही तुम हमारे सामने आए हो।

विवेचन :- उपरोक्त वर्णन में स्पष्ट है कि अल्लाह ने पृथ्वी नष्ट नहीं की। उसके ऊपर जो संरचना पहाड़ों व लोगों को तथा उनके घरों को नष्ट किया है। यह पूर्ण प्रलय (कयामत) नहीं कही जा सकती। जैसे मुसलमान प्रचारक बताते हैं कि खरबों वर्षों के पश्चात् जब प्रलय (कयामत) आएगी। उस समय पूरी पृथ्वी, सूर्य, चाँद तथा नक्षत्र नष्ट हो जाएँगे और मुर्दे कब्रों से निकालकर जिंदा किए जाएँगे। जिन्होंने अल्लाह के हुक्म यानि कुरआन के ज्ञान अनुसार जीवन जीया, आज्ञाकारी (मुसलमान बनकर) रहे, उनको जन्नत (Heaven) में स्थान मिलेगा तथा जिन्होंने (कुफ्र) अल्लाह की आज्ञा मानने से इंकार किया। वे अवज्ञाकारी जहन्नुम (Hell) में डाले जाएँगे। इसके पश्चात् केवल जन्नत व जहन्नुम (दोजख) शेष रहेंगे। अल्लाह सातवें आसमान पर सदा मौजूद है, वह रहेगा। पृथ्वी, चाँद, सूरज व सब ग्रह आदि नष्ट हो जाएँगे। सृष्टि नीचे वाली सदा के लिए बंद हो जाएगी। परंतु उपरोक्त उल्लेख जो कुरआन की सूरत कहफ-18 की आयत 47-48 में कहा है कि पृथ्वी तो रहेगी। उस पृथ्वी को तुम देखोगे कि खुला मैदान पड़ा है। उसके ऊपर के पर्वत व अन्य रचना नहीं रहेंगे। और सब लोग परमात्मा के सामने अपने कर्मों का फल प्राप्त करने के लिए पंक्ति (पांती) में खड़े होंगे। अब पढ़ें सूरत-मुलकि-67 की आयत नं. 2 :-

जिस (अल्लाह) ने मरना और जीना बनाया ताकि तुम्हें जाँचे कि तुम में कौन अच्छा काम करता है और वह (अल्लाह) बड़ा बलवान और बड़ा ही क्षमा करने वाला है।

अब पढ़ें ''सूरत-अर रूम-30 की आयत नं. 11 :-

अल्लाह पहली बार सृष्टि (खिलकत) को उत्पन्न करता है। फिर उसे दोहराएगा।(पुनरावर्ती करेगा।)

अब पढ़ें (कुरआन मजीद में) सूरत-अंबिया-21 की आयत नं. 104 :-

जिस दिन आसमान को इस तरह लपेट लेगा, जिस तरह पुलंदे में कागज लपेट लेते हैं। जिस तरह हमने पहले (कायनात) सृष्टि को पैदा किया था। हम उसे दोहराएँगे।(पुनरावर्ती करेंगे)

अब पढ़ें (कुरआन शरीफ में) सूरत अंबिया-21 आयत नं. 104 का हिन्दी अनुवाद :-

जिस दिन आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तुमार (पुलिन्दा) में कागज लपेटते हैं। जिस तरह (कायनात) सृष्टि को हमने पहले पैदा किया था, फिर हम उसे दोहराएंगे। (यह) वादा हमारे जिम्मे है। हमें जरूर करना है।(104)

अब पढ़ें सूरः अल् बकरा-2 की आयत नं. 28 :-

तुम अल्लाह के साथ इंकार की नीति कैसे अपनाते हो? जबकि तुम निर्जीव थे। उसने तुम्हें जीवन प्रदान किया। फिर वहीं तुम्हारे प्राण ले लेगा। फिर वही तुम्हें पुनः जीवन प्रदान करेगा। फिर उसी ओर तुम्हें पलटकर जाना है।

अब पढ़ें सूरः अल् बकरा-2 की आयत नं. 29 :- वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती की सारी चीजें पैदा की। फिर ऊपर की ओर रूख किया और सात आसमान ठीक तौर पर बनाए और वह हर चीज का ज्ञान रखने वाला है।

आयत नं. 25 (सूरत-अल् बकरा-2) :- {कुरआन मजीद जिसका तर्जुमा अरबी मतन तथा उर्दू तर्जुमा ''हजरत मौलाना अशरफ अली थानवी (रहमतुल्लाहि अलैह) तथा उर्दू से हिन्दी तर्जुमा ''एस.खालिद निजामी ने किया है तथा प्रकाशक कुतुब खाना हमीदिया 342, गली गढ़य्या जामा मस्जिद, दिल्ली-110006 है।}

विशेष :- पाठकों से निवेदन है कि उपरोक्त अनुवादकर्ताओं के द्वारा किया हिन्दी अनुवाद नीचे लिख रहा हूँ। कृपया आप स्वयं पढ़ें और निर्णय करें कि इसका भावार्थ बार-बार जन्म-मृत्यु तथा बार-बार जन्नत (स्वर्ग) में जाना है या अन्य?(लेखक)

सूरः अल बकरा-2 की आयत नं. 25 :-

और खुशखबरी सुना दीजिए आप ए पैगम्बर! उन लोगों को जो इमान लाए और काम किए, अच्छे इस बात की कि बेशक उनके वास्ते जन्नतें हैं कि बहती होंगी। उनके नीचे से नहरें, जब कभी दिए जाऐंगे। वे लोग उन जन्नतों में से किसी फल की गिजा, तो हर बार में यही कहेंगे कि यह तो वही है जो हमको मिला था। इससे पहले, और मिलेगा भी उनको दोनों बार का फल मिलता जुलता। और उनके वास्ते उन जन्नतों में बीवियाँ होंगी।

साफ, पाक की हुई और वे लोग उन जन्नतों में हमेशा के लिए बसने वाले होंगे।(25)

{कुछ अनुवादकों ने ''दोनों बार फल एक जैसा मिलेगा'', इसका अर्थ किया है कि खाने का फल जो धरती पर भी मिला था तथा यहाँ जन्नत में भी मिलता-जुलता मिला है। विचार करें कि क्या जन्नत में एक केवल फल ही खाने को मिलेगा। और पदार्थ जन्नत में नहीं हैं? वास्तविक अर्थ इस उपरोक्त अनुवादक ने किया है कि ''जब नेक बंदे जन्नत में जाएँगे, दोबारा तब उनको याद आएगा कि पहले भी कर्म फल के बदले यही जन्नत का सुख मिला था। अब भी वही कर्मों का प्रतिफल मिला है और यह सही है कि जब वे दूसरी बार जन्नत में जाएँगे तो उनको कर्मों का फलस्वरूप जन्नत का सुख मिलेगा। जहाँ पर बीवियाँ होंगी साफ पाक की हुई।'' इससे भी जन्म-मृत्यु बार-बार सिद्ध होता है।}

पुनर्जन्म संबंधित प्रकरण

सूरः अल बकरा-2 की आयत नं. 243 :-

तुमने उन लोगों के हाल पर भी कुछ विचार किया जो मौत के डर से अपने घर-बार छोड़कर निकले थे और हजारों की तादाद में थे। अल्लाह ने उनसे कहा मर जाओ। फिर उसने उनको दोबारा जीवन प्रदान किया। हकीकत यह है कि अल्लाह इंसान पर बड़ी दया करने वाला है। मगर अधिकतर लोग शुक्र नहीं करते।

कयामत तक कब्रों में रहने वाले सिद्धांत का खंडन

कुरआन की सूरः अल् मुदस्सिर-74 आयत नं. 26-27 :-

आयत नं. 26 :- शीघ्र ही मैं उसे नरक में झोंक दूँगा।

आयत नं. 27 :- और तुम क्या जानों कि क्या है वह नरक। {एक वलीद बिन मुगहरह नामक व्यक्ति ने पहले तो मुसलमानी स्वीकार की। उसको अच्छे लाभ भी हुए। वह पहले विरोधियों का सरदार था। बाद में हजरत मुहम्मद जी की खिलाफत करने लगा। कुरआन को जादू करार देने लगा तथा कहने लगा कि यह तो मानव बोली वाणी है। अल्लाह की नहीं है। मुहम्मद नबी को जादूगर बताने लगा। तब कुरआन ज्ञान देने वाले अल्लाह ने कहा, उपरोक्त सूरः मुद्दस्सिर-74 की आयत नं. 26-27 में कि मैं शीघ्र ही उसे नरक में झोंक दूँगा यानि नरक की आग में डाल दूँगा। नरक में भेज दूँगा।

विचार करें पाठकजन! कि कब्र की बजाय शीघ्र नरक में डाला जाने को कहा है जो उस सिद्धांत को गलत सिद्ध करता है जो बताया जाता है कि कयामत तक सब नबी से लेकर सामान्य व्यक्ति तक कब्रों में रहेंगे। हजरत मुहम्मद जी की आसमान वाली यात्रा तो स्पष्ट ही कर रही है कि सब नबी व आदम जी की अच्छी-बुरी संतान ऊपर नरक व स्वर्ग में थे।}

निष्कर्ष :- कुरआन मजीद के ज्ञान के साथ-साथ हजरत मुहम्मद का अनुभव भी कम अहमियत नहीं रखता। हजरत मुहम्मद जैसे नेक नबी का जन्म हुआ तो कुरआन का पवित्र ज्ञान मानव के हाथों आया। जैसे बर्तन शुद्ध है तो घी डाला जाता है। अशुद्ध बर्तन में घी डालना उसे नष्ट करना है। कुरआन का ज्ञान हजरत मुहम्मद जी को किस सूरत में मिला? इसकी जानकारी मुसलमान समाज के बच्चे-बच्चे को है कि जिस अल्लाह ने कुरआन का ज्ञान दिया, उसे मुसलमान समाज अपना खालिक मानते हैं। उसी को कादिर (समर्थ) परमात्मा मानते हैं। यह भी मानते हैं कि उस अल्लाह ने जो ज्ञान दिया है। उसे जिब्राइल फरिश्ता ज्यों का त्यों बिना किसी बदलाव के लाया और नबी मुहम्मद जी की आत्मा में डाला। फिर हजरत मुहम्मद जी के मुख से बोला गया। उसको लिखने वालों ने लिखा। हजरत मुहम्मद जी तो अशिक्षित थे। कुरआन के ज्ञान को हजरत मुहम्मद जी प्राप्त होने की प्रक्रिया में यह भी बताया है कि कभी हजरत को जिब्राइल सामने प्रत्यक्ष होकर ज्ञान बताता। कभी अप्रत्यक्ष रूप में ज्ञान बताता है। कभी अल्लाह ताला सीधे ज्ञान नबी मुहम्मद जी की आत्मा में डाल देता। नबी मुहम्मद चद्दर से मुख ढ़ककर लेट जाता। फिर कुरआन का ज्ञान बोलता। इस प्रकार यह कुरआन का पवित्र ज्ञान प्राप्त हुआ। ऊपर कुरआन की कुछ सूरतों की आयतों का उल्लेख किया है जिनमें यह समझना है कि पुनर्जन्म के विषय में क्या संकेत है?

ऊपर विवेचन में आप जी ने पढ़ा कि सूरत-कहफ-18 की आयत 47-48 में कहा है कि प्रलय में पृथ्वी नष्ट नहीं होगी। उसके ऊपर की संरचना जैसे पहाड़, मानव, उनके घर, निवास, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी सब नष्ट हो जाएँगे। पृथ्वी एक खुला मैदान पड़ा दिखाई देगा।

फिर सूरः मुलकि-67 की आयत नं. 2 में स्पष्ट किया है कि अल्लाह ने मरने और जीने का विधान बनाया

है। मानव को जाँचने के लिए कि कौन अच्छा काम करता है, कौन गलत काम करता है।

फिर सूरः अर रूम-30 की आयत नं. 11 में कहा है कि अल्लाह पहली बार सृष्टि को उत्पन्न करता है, फिर उसे दोहराएगा (पुनरावर्ती करेगा)।

सूरः अंबिया-21 आयत नं. 104 में कहा है कि उस दिन आसमान को इस तरह लपेट देंगे, जैसे पुलंदे में कागज लपेट देते हैं। जिस तरह हमने (कायनात) सृष्टि को पहले पैदा किया था। उसे हम दोहराएँगे, यह वादा हमारे जिम्मे है, हमने जरूर करना है। सूरः अल बकरा-2 आयत नं. 243 में अल्लाह ने मारा। फिर उनको जीवन दिया।

सूरः अल मुद्दस्सिर-74 आयत नं. 26-27 में कहा है कि शीघ्र ही नरक में डाल दूँगा। यह क्या जाने नरक (जहन्नुम) क्या है? (इससे भी कब्रों में रहने वाली बात गलत सिद्ध हुई।)

❖ अब यह देखें कि पहले सृष्टि कैसे पैदा की थी?

यह भी याद रखना जरूरी है कि जिस अल्लाह ने ''कुरआन मजीद'' का ज्ञान नबी मुहम्मद जी को दिया है। उसी ने नबी दाऊद जी को ''जबूर'' का ज्ञान दिया। उसी ने नबी मूसा जी को ''तोरात''का ज्ञान दिया। उसी ने नबी ईसा मसीह को ''इंजिल'' पुस्तक का ज्ञान दिया। कुरआन को छोड़कर उपरोक्त तीनों पवित्र पुस्तकों (जबूर, तोरात तथा इंजिल) को इकठ्ठा जिल्द करके ''बाइबल'' ग्रंथ नाम दिया है। बाइबल में सृष्टि की उत्पत्ति अध्याय में लिखा है कि परमेश्वर ने पहले पृथ्वी बनाई, आसमान बनाया, पृथ्वी पर जल भर दिया जो समुद्र बने। पृथ्वी पर पेड़-पौधे उगाए, जीव-जन्तु भांति-भांति के पैदा किए। पशु-पक्षी उत्पन्न किए। छठे दिन मानव उत्पन्न किए। अल्लाह अपना कार्य छः दिन में पूरा करके सातवें दिन ऊपर सातवें आसमान पर जा बैठा। यह है पहले वाली सृष्टि की उत्पत्ति की कथा।

कुरआन की उपरोक्त आयत यही स्पष्ट करती है कि जैसे हमने सृष्टि (कायनात) की रचना की थी। उसी प्रकार फिर सृष्टि की रचना करूँगा जिससे जन्म-मरण का बार-बार होना यानि पुनर्जन्म सिद्ध होता है।

जो सिद्धांत मुस्लिम शास्त्री व प्रवक्ता मानते हैं कि प्रलय के बाद जिंदा किए जाएँगे। उसमें यह भी स्पष्ट नहीं है कि वो किस आयु के होंगे यानि कोई दस वर्ष का, कोई कम, कोई 30, 40, 50, 60, 62, 65, 80 वर्ष या अधिक आयु में मरेंगे। कब्रों में दबाए जाएँगे। फिर उसी आयु के उसी शरीर में जीवित किए जाएँगे या शिशु रूप में? जीवित किए जाएँगे, इस बात पर मुसलमान प्रवक्ता मौन हैं। कुरआन स्पष्ट करती है कि अल्लाह ने कहा है कि जैसे पहले सृष्टि की उत्पत्ति की थी (जो बाइबल यानि तोरात पुस्तक में बताई), वैसे ही पुनरावर्ती करेंगे, यह पक्का वादा है।

ऊपर की कुरआन मजीद की सूरतों की आयतों में यही कहा है कि एक बार प्रलय के समय केवल पृथ्वी के ऊपर की संरचना नष्ट की जाएगी। पृथ्वी खुला मैदान पड़ा दिखाई देगा। (इसे आदि सनातन तथा सनातन पंथ में प्रलय कहते हैं।)

फिर कहा है कि उस दिन (प्रलय के समय) आसमान को इस तरह लपेट देंगे जैसे कागज को पुलंदे में लपेट देते हैं यानि सर्व सृष्टि को नष्ट कर देंगे जिस तरह हमने पहले पैदा किया था। (आदि सनातन तथा सनातन पंथ में इसे महाप्रलय कहते हैं) उसे हम दोहराएँगे, यह वादा हमारे जिम्मे है, हम जरूर करेंगे। {यह महाप्रलय के बाद पुनः सृष्टि रचना करने को कहा है यानि फिर से पृथ्वी, जल, मानव (स्त्री-पुरूष), पशु-पक्षी व अन्य जीव-जंतुओं को उत्पन्न किया जाएगा जैसे पहले उत्पत्ति की थी। उसके विषय में कहा है कि हम उसे दोहराएंगे।} उपरोक्त प्रकरण से स्वसिद्ध हो जाता है कि पुनर्जन्म जीना-मरना होता है। जो सिद्धांत मुसलमान धर्म के उलेमा (विद्वान) बताते हैं कि अल्लाह ने सृष्टि उत्पन्न की है। मानव (स्त्री-पुरूष) जन्मते रहेंगे, मरते रहेंगे। मृत्यु के उपरांत कब्र में दफनाए जाएँगे। वे सब कब्रों में तब तक रहेंगे जब तक महाप्रलय (कयामत) नहीं आती। महाप्रलय खरबों वर्षों के पश्चात् आएगी। तब सृष्टि नष्ट हो जाएगी और कब्रों वालों को जिंदा किया जाएगा। जिसने अच्छे कर्म अल्लाह के आदेशानुसार किए थे, उनको जन्नत (स्वर्ग) में रखा जाएगा तथा जिन्होंने कुरआन के विपरीत कर्म किए, उनको जहन्नुम (नरक) की आग में डाला जाएगा। बस इसके पश्चात् सृष्टि न उत्पन्न होगी, न नष्ट होगी।

विवेचन :- विचारणीय विषय यह है कि मुसलमान प्रवक्ताओं के अनुसार जिन्होंने अल्लाह का हुक्म माना, नेक कर्म किए। वे भी कब्रों में दबाए जाएँगे। बाबा आदम तथा उसकी सब संतान तथा एक लाख से ऊपर नबी

हुए हैं, वे सब कब्रों में दफन हैं। उन कब्रों में खरबों वर्ष पड़े-पड़े सड़ेंगे, महाकष्ट उठाएँगे। फिर उनको जन्नत में रखा जाएगा। ऐसी जन्नत को सिर में मारेंगे जिससे पहले खरबों वर्षों घोर नरक का कष्ट कब्रों में भूखे-प्यासे, गर्मी-सर्दी से महादुःखी होकर उठाएँगे।

मुसलमान प्रवक्ता यहाँ यह भी तर्क देने से नहीं चूकेंगे कि मृत्यु के पश्चात् सुख-दुःख का अहसास नहीं होता। मेरा वितर्क यह है कि यदि मृत्यु के पश्चात् न सुख का अहसास होता है, न दुःख का तो फिर जन्नत की क्या आवश्यकता है? आपकी जन्नत में तो आपका प्रथम नबी आदम जी दुःखी भी है और सुखी भी। बेचैन भी होता है।

परंतु नबी मुहम्द जी ने पूर्वोक्त प्रकरण में इस सिद्धांत को गलत सिद्ध कर रखा है जिसमें आप जी ने पढ़ा कि नबी मुहम्मद जी को जिब्राइल फरिश्ता बुराक नामक (खच्चर जैसे) पशु पर बैठाकर ऊपर ले गया। वहाँ पर (जन्नत तथा जहन्नुम में) नबी जी ने बाबा आदम तथा उनकी अच्छी-बुरी संतान को स्वर्ग-नरक में देखा। नबी ईसा, मूसा, दाऊद, अब्राहिम आदि-आदि नबियों की जमात (मंडली) देखी। उनको नबी मुहम्मद जी ने नमाज अदा करवाई। फिर जन्नत (स्वर्ग) के अन्य स्थानों का नजारा देखा। अल्लाह के पास गए। अल्लाह पर्दे के पीछे से बोला। पाँच बार नमाज, रोजे तथा अजान करने का आदेश अल्लाह ने नबी मुहम्मद को दिया जिसको पूरा मुसलमान समाज पालन कर रहा है।

मुसलमान प्रवक्ता यह तर्क भी दे सकते हैं कि बाबा आदम ऊपर प्रथम आसमान पर जो दांये देखकर दुःखी व बांयी ओर देखकर खुश हो रहे थे। वे दांयी ओर नेक संतान के कर्म तथा बांयी ओर निकम्मी संतान के कर्म देखकर दुःखी व खुश हो रहे थे। दास का वितर्क यह है कि क्या वे अच्छे और बुरे कर्म दीवार पर लिखे थे? बाबा आदम अशिक्षित थे। सच्चाई ऊपर बता दी है, वही है।

इससे सिद्ध हुआ कि मुसलमान समाज भ्रमित है। अपनी पवित्र कुरआन मजीद तथा प्यारे नबी मुहम्मद जी के विचार भी नहीं समझ सके। कृपया अपने पवित्र ग्रंथों को अब पुनः पढ़ो।

दास (रामपाल दास) ने एक पुस्तक लिखी है ''गीता तेरा ज्ञान अमृत'' श्री मद्भगवत गीता का विश्लेषण किया है जिसे हिन्दू समाज के बुद्धिजीवी व्यक्तियों ने स्वीकार किया तथा हैरान रह गए कि हमारे सद्ग्रंथों का सही ज्ञान आज तक हमें नहीं था। इस पुस्तक ने आँखें खोल दी।

यहाँ पर यह बताना अनिवार्य हो जाता है कि जिस अल्लाह ने पवित्र जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन का ज्ञान दिया, उसी ने इनसे पहले चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का तथा श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान दिया था। जो ईसा से चार हजार वर्ष पहले वेद व्यास ऋषि ने लीपिबद्ध किया था। ऋषि का नाम कृष्ण द्वैपायन था। पहले वेद ज्ञान एक था। ऋषि कृष्ण द्वैपायन ने इसको चार भागों में बाँटा। नाम भी चार रखे। जिस कारण से ऋषि कृष्ण द्वैपायन को वेद व्यास कहा जाने लगा।

प्रसंग चल रहा है जन्म तथा मृत्यु का :-

सनातन पंथ सब अन्य प्रचलित पंथों से पहले का है। आदि सनातन पंथ सबसे पहले का है जिसका अनुयाई दास (रामपाल दास) है। इन दोनों पंथों (वर्तमान में धर्म कहे जाते हैं) में यही मान्यता है कि प्रत्येक प्राणी का जन्म तथा मरण होता है। यह सिद्धांत इसलिए भी विश्वसनीय है कि यह कादिर खुदा कबीर का बताया हुआ है। अंतर इतना है कि सनातन धर्म में जन्म-मरण का चक्र सदा रहने वाला मानते हैं। जैसे गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं।

गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में कहा है कि तू तथा मैं और ये सब सामने खड़े सैनिक पहले भी जन्मे थे, आगे भी जन्मेंगे। यह ना समझ कि हम सब वर्तमान में ही जन्मे हैं।

<u>आदि सनातन पंथ</u> :- आदि सनातन पंथ में यह मान्यता है कि जब तक पूर्ण सतगुरू नहीं मिलता जो सतपुरूष यानि (गीता अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10 तथा अध्याय 15 श्लोक 17 वाले) परम अक्षर ब्रह्म की संपूर्ण यथार्थ भक्ति जानता है, उससे दीक्षा लेकर भक्ति नहीं करता। उसका जन्म-मरण का चक्र सदा बना रहेगा। परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने से गीता अध्याय 15 श्लोक 4 वाली मुक्ति मिल जाती है। वह परम पद मिल जाता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 46, 61, 62 में कहा है कि (श्लोक 46 में) हे अर्जुन! जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत व्याप्त

है। उस परमेश्वर की स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

(श्लोक 61 में) :- हे अर्जुन! शरीर रूपी यंत्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को परमेश्वर अपनी माया (शक्ति) से उनके कर्मों अनुसार भ्रमण करवाता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित (विराजमान) है।

(श्लोक 62 में) :- हे भारत! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन (महफूज) परम धाम को प्राप्त होगा।

आदि सनातन पंथ को उस परमेश्वर यानि परम अक्षर ब्रह्म को सतपुरूष कहा जाता है। सनातन परम धाम को अमर लोक सतलोक कहा जाता है। उस सत्यलोक में जाने के पश्चात् साधक का जन्म-मृत्यु का चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

सिक्ख पंथ :- सिक्ख पंथ (वर्तमान में सिख धर्म) में भी जन्म-मृत्यु की मान्यता है। इनका भी यह मानना है कि जब तक पूर्ण सतगुरू की शरण में जाकर सतपुरूष की साधना नहीं करता, जन्म-मृत्यु समाप्त नहीं होता। सतपुरूष की भक्ति से जन्म-मृत्यु सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं। वह साधक सत्यलोक (सच्चखंड) में चला जाता है।

जैन धर्म (पंथ) :- जैन धर्म की सनातन धर्म वाली मान्यता है कि जन्म-मरण कभी समाप्त नहीं होगा। उनका मानना है कि जैन धर्म के प्रवर्तक तथा प्रथम तीर्थंकर आदि नाथ यानि ऋषभ देव जी की मृत्यु के पश्चात् बाबा आदम रूप में जन्मे थे।

श्री ऋषभ के पोते (भरत के पुत्र) श्री मारीचि ने ऋषभ देव से दीक्षा ली थी। उसके पश्चात् उस आत्मा के अनेकों मानव जन्म हुए। करोड़ों पशुओं (गधे, घोड़े) के जन्म हुए। अनेकों बार वृक्ष के जन्म हुए। वही आत्मा चौबीसवें तीर्थंकर जैन धर्म के हुए।

सूक्ष्मवेद में प्रमाण है कि श्री नानक देव जी (सिक्ख धर्म के प्रवर्तक) वाली आत्मा सत्ययुग में राजा अंबरीष रूप में जन्मी थी तथा त्रेतायुग में राजा जनक रूप में जन्मी थी। कलयुग में श्री नानक जी के रूप में जन्मी थी। जब सतगुरू से दीक्षा लेकर सतपुरूष (सत पुरख) की भक्ति सतनाम का जाप करके की। तब जन्म-मरण का चक्र समाप्त हुआ। पुराणों में पुनर्जन्म के और भी अनेकों प्रमाण मिलते हैं जो जन्म-मृत्यु बार-बार होना कहते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि जन्म-मरण का जो विधान मुसलमान बताते हैं, वह निराधार है। उनके पवित्र ग्रंथ भी उनकी बात को गलत सिद्ध करते हैं।

☛ बार-बार जन्म-मृत्यु का जीवित इतिहास आप जी पढ़ेंगे अध्याय ''अल खिज्र (अल कबीर) की जानकारी'' में इसी पुस्तक के पृष्ठ 135 से 136 तक।

अब पढ़ें प्रलय, महाप्रलय तथा दिव्य महाप्रलय की जानकारी :-

प्रलय की जानकारी

❖ प्रलय का अर्थ है 'विनाश'। यह दो प्रकार की होती है - आंशिक प्रलय तथा महाप्रलय।

आंशिक प्रलय : यह दो प्रकार की होती है। एक तो चौथे युग (कलियुग) के अंत में पृथ्वी पर एक निःकलंक नामक दसवाँ अवतार आता है, जिसे कल्कि भी कहा है। वह उस समय (कलियुग) के सर्व भक्तिहीन मानव शरीर धारी प्राणियों को अपनी तलवार से मार कर समाप्त करेगा। उस समय मानव की उम्र 20 वर्ष की होगी तथा 5 वर्ष खण्ड (Less) होगी अर्थात् 15 वर्ष में सब बालक-जवान-वृद्ध होकर मर जाया करेंगे। पाँच वर्षीय लड़की बच्चों को जन्म दिया करेगी। मानव कद लगभग डेढ़ या अढ़ाई फुट का होगा। उस समय इतने भूकंप आया करेंगे कि पृथ्वी पर चार फुट ऊँचे भवन भी नहीं बना पाया करेंगे। सर्व मानव धरती में बिल खोद कर रहा करेंगे। पृथ्वी उपजाऊ नहीं रहेगी। तीन हाथ (लगभग साढे चार फुट) नीचे तक जमीन का उपजाऊ तत्त्व समाप्त हो जाएगा। कोई फलदार वृक्ष नहीं होगा तथा पीपल के पेड़ को पत्ते नहीं लगेंगे। सर्व मनुष्य (स्त्री व पुरुष) मांसाहारी होंगे। आपसी व्यवहार बहुत घटिया होगा। रीछों की सवारी किया करेंगे। रीछ उस समय का अच्छा वाहन होगा। पर्याव. रण दूषित होने से वर्षा होनी बंद हो जाऐंगी। जैसे ओस पड़ती है ऐसे वर्षा हुआ करेगी। गंगा-जमना आदि नदियाँ भी सूख जाएगी। यह कलियुग का अंत होगा। उस समय प्रलय (पृथ्वी पर पानी ही पानी होगा) होगी। एक दम इतनी वर्षा होगी की सारी पृथ्वी पर सैकड़ों फुट पानी हो जाएगा। अति ऊँचे स्थानों पर कुछ मानव शेष रहेंगे। यह

पानी सैंकड़ों वर्षों में सूखेगा। फिर सारी पृथ्वी पर जंगल उग जाएगा। पृथ्वी फिर से उपजाऊ हो जाएगी। जंगल (वृक्षों) की अधिकता से पर्यावरण फिर शुद्ध हो जाएगा। कुछ व्यक्ति जो भक्ति युक्त होंगे, ऊँचे स्थानों पर बचे रह जाएंगे। उनके संतान होगी। वह बहुत ऊँचे कद की होगीं। चूंकि वायुमण्डल में वातावरण की शुद्धता होने से शरीर अधिक स्वस्थ हो जायेगा। मात-पिता छोटे कद के होंगे और बच्चे ऊँचे कद (शरीर)के होगें। कुछ समय पश्चात् माता-पिता और बच्चों का युवा अवस्था में कद समान हो जाएगा। उस समय वातावरण पूर्ण रूप से शुद्ध होगा। इस प्रकार यह सतयुग का प्रारम्भ होगा। यह पृथ्वी पर आंशिक प्रलय ज्योति निरंजन (काल) द्वारा की जाती है।

❖ दूसरी आंशिक प्रलय एक हजार चतुर्युग पश्चात् होती है। तब श्री ब्रह्मा जी का एक दिन समाप्त होता है। इतने ही चतुर्युग तक रात्रि होती है। एक रात्रि तक प्रलय रहती है। {वास्तव में श्री ब्रह्मा जी का एक दिन 1008 चतुर्युग होता है, एक ब्रह्मा जी के दिन में चौदह इन्द्रों का शासन काल पूरा होता है। एक इन्द्र का शासन काल बहत्तर चौकड़ी युग का होता है। एक चौकड़ी (चतुर्युगी) में चार युग होते हैं :- 1. सतयुग जो 17 लाख 28 हजार वर्षों का होता है। 2.त्रेता युग जो 12 लाख 96 हजार वर्षों का होता है। 3. द्वापर युग जो 8 लाख 64 हजार वर्षों का होता है। 4. कलयुग जो 4 लाख 32 हजार वर्षों का होता है। चारों युगों के कुल 43 लाख 20 हजार वर्ष हैं। गणना करने के लिए आसानी रहे, इसलिए चतुर्युग से गणना की जाती है। ब्रह्मा का एक दिन एक हजार आठ चतुर्युग का होता है। इसको सीधा एक हजार चतुर्युग गिनते हैं।}

जब ब्रह्मा का दिन समाप्त होता है तो पृथ्वी, पाताल व स्वर्ग (इन्द्र) लोक के सर्व प्राणी नाश को प्राप्त होते हैं। प्रलय में विनाश हुए प्राणी ब्रह्म अर्थात् काल जो ब्रह्म लोक में रहता है तथा व्यक्त रूप से किसी को दर्शन नहीं देता जिसे अव्यक्त मान लिया गया है उस अव्यक्त (ब्रह्म) के लोक में अचेत करके गुप्त डाल दिए जाते हैं। फिर एक हजार चतुर्युग (वास्तव में 1008 चतुर्युग की होती है) की ब्रह्मा की रात्रि समाप्त होने पर फिर इन तीनों लोकों (पाताल-पृथ्वी-स्वर्ग लोक) में उत्पत्ति कर्म प्रारम्भ हो जाता है। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव लोक के प्राणी और ब्रह्मलोक (महास्वर्ग) के प्राणी बचे रहते हैं। यह दूसरी प्रकार की आंशिक प्रलय हुई।

❖ महाप्रलय :- यह तीन प्रकार की होती है। प्रथम महाप्रलय :- यह काल (ज्योति निरंजन) महाकल्प के अंत में करता है जिस समय ब्रह्मा जी की मृत्यु होती है। {ब्रह्मा की आयु = ब्रह्मा की रात्रि एक हजार चतुर्युग की होती है तथा इतना ही दिन होता है। तीस दिन-रात्रि का एक महीना, 12 महीनों का एक वर्ष, सौ वर्ष का एक ब्रह्मा का जीवन। यह एक महाकल्प कहलाता है।}

❖ दूसरी महाप्रलय :- सात ब्रह्मा जी की मृत्यु के बाद एक विष्णु जी की मृत्यु होती है, सात विष्णु जी की मृत्यु के उपरान्त एक शिव की मृत्यु होती है। इसे दिव्य महाकल्प कहते हैं उसमें ब्रह्मा, विष्णु, शिव सहित इनके लोकों के प्राणी तथा स्वर्ग लोक, पाताल लोक, मृत्यु लोक आदि में अन्य रचना तथा उनके प्राणी नष्ट हो जाते हैं। उस समय केवल ब्रह्मलोक बचता है जिसमें यह काल भगवान (ज्योति निरंजन) तथा दुर्गा तीन रूपों महाब्रह्मा-महासावित्री, महाविष्णु-महालक्ष्मी और महाशंकर-महादेवी (पार्वती) के रूप, में तीन लोक बना कर रहता है। इसी ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बना है, उसमें चौथी मुक्ति प्राप्त प्राणी रहते हैं। {मार्कण्डेय, रूमी ऋषि जैसी आत्मा जो चौथी मुक्ति प्राप्त हैं जिन्हें ब्रह्म लीन कहा जाता है। वे यहाँ के तीनों लोकों के साधकों की दिव्य दृष्टी की क्षमता (रेंज) से बाहर होते हैं। स्वर्ग, मृत्यु व पाताल लोकों के ऋषि उन्हें देख नहीं पाते। इसलिए ब्रह्म लीन मान लेते हैं। परन्तु वे ब्रह्मलोक में बने महास्वर्ग में चले जाते हैं।}

फिर दिव्य महाकल्प के आरम्भ में काल (ज्योति निरंजन) भगवान ब्रह्म लोक से नीचे की सृष्टि फिर से रचता है। काल भगवान अपनी प्रकृति (माया-आदि भवानी) महासावित्री, महालक्ष्मी व महादेवी (गौरी)के साथ रति कर्म से अपने तीन पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) को उत्पन्न करता है। यह काल भगवान उन्हें अपनी शक्ति से अचेत अवस्था में कर देता है। फिर तीनों को भिन्न-2 स्थानों पर जैसे ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, विष्णु जी को समुद्र में शेष नाग की शैय्या पर, शिव जी को कैलाश पर्वत पर रखता है। तीनों को बारी-बारी सचेत कर देता है। उन्हें प्रकृति (दुर्गा) के माध्यम से सागर मंथन का आदेश होता है। तब यह महामाया (मूल प्रकृति/शेराँवाली) अपने तीन रूप बना कर सागर में छुपा देती है। तीन लड़कियों (जवान देवियों) को प्रकट करती है। तीनों बच्चे (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) इन्हीं तीनों देवियों से विवाह करते हैं। अपने तीनों पुत्रों को तीन

विभाग - उत्पत्ति का कार्य ब्रह्मा जी को व स्थिति (पालन-पोषण) का कार्य विष्णु जी को तथा संहार (मारने) का कार्य शिव जी को देता है जिससे काल (ब्रह्म) की सृष्टि फिर से शुरु हो जाती है। जिसका वर्णन पवित्र पुराणों में भी है जैसे शिव महापुराण, ब्रह्म महापुराण, विष्णु महापुराण, महाभारत, सुख सागर, देवी भागवद् महापुराण में विस्तृत वर्णन किया गया है और गीता जी के चौदहवें अध्याय के श्लोक 3 से 5 में संक्षिप्त रूप से कहा गया है।

❖ तीसरी महाप्रलय :- एक ब्रह्माण्ड में 70 हजार बार त्रिलोकिय शिव (काल के तमोगुण पुत्र) की मृत्यु हो जाती है तब एक ब्रह्माण्ड की प्रलय होती है तथा ब्रह्मलोक में तीनों स्थानों पर रहने वाला काल (महाशिव) अपना महाशिव वाला शरीर भी त्याग देता है। इस प्रकार यह एक ब्रह्माण्ड की प्रलय अर्थात् तीसरी महाप्रलय हुई तथा उस समय एक ब्रह्मलोकिय शिव (काल) की मृत्यु हुई तथा 70000 (सत्तर हजार) त्रिलोकिय शिव (काल के पुत्र) की मृत्यु हुई अर्थात् एक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्म लोक सहित सर्व लोकों के प्राणी विनाश में आते हैं। इस समय को परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष का एक युग कहते हैं। इस प्रकार गीता अध्याय 8 श्लोक 16 का भावार्थ समझना चाहिए।

इसी प्रकार तीन दिव्य महा प्रलय होती हैं :-

प्रथम दिव्य महाप्रलय

जब सौ (100) ब्रह्मलोकिय शिव (काल-ब्रह्म) की मृत्यु हो जाती है तब चारों महाब्रह्माण्डों में बने 20 ब्रह्माण्डों के प्राणियों का विनाश हो जाता है।

विशेषकर एक महाब्रह्मंड में ही सृष्टि रहती है। एक महाब्रह्मंड के अंदर जब प्रलय होती है, तब दूसरे महाब्रह्मंड में सृष्टि शुरू होती है। अंत में चारों महाब्रह्मंडों के बीस ब्रह्मंडों में प्रलय हो जाती है।

तब चारों महाब्रह्माण्डों के शुभ कर्मी प्राणियों (हंसात्माओं) को इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बने नकली सत्यलोक आदि लोकों में रख देता है तथा उसी लोक में निर्मित अन्य चार गुप्त स्थानों पर अन्य प्राणियों को अचेत करके डाल देता है तथा तब उसी नकली सत्यलोक से प्राणियों को खाकर अपनी भूख मिटाता है तथा जो प्रतिदिन खाए प्राणियों को उसी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बने चार गुप्त मुकामों में अचेत करके डालता रहता है तथा वहाँ पर भी ज्योति निरंजन अपने तीन रूप (महाब्रह्मा, महाविष्णु तथा महाशिव) धारण कर लेता है तथा वहाँ पर बने शिव रूप में अपनी जन्म-मृत्यु की लीला करता रहता है, जिससे समय निश्चित रखता है तथा सौ बार मृत्यु को प्राप्त होता है, जिस कारण परब्रह्म के सौ युग का समय इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में पूरा हो जाता है। तत् पश्चात् चारों महाब्रह्माण्डों के अन्दर सृष्टि रचना का कार्य प्रारम्भ करता है। {जिस एक सृष्टि में सौ ब्रह्मलोकिय शिव (काल) की आयु अर्थात् परब्रह्म के सौ युग तक सृष्टि रहती है तथा इतनी ही समय प्रलय रहती है अर्थात् परब्रह्म के दो सौ युग (क्योंकि परब्रह्म के एक युग में एक ब्रह्मलोकिय शिव अर्थात् काल की मृत्यु होती है) में एक दिव्य महाप्रलय जो काल द्वारा की जाती है का क्रम पूरा होता है} यह काल अर्थात् ब्रह्म प्रथम अव्यक्त कहलाता है। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में)। दूसरा अव्यक्त परब्रह्म तथा इससे भी परे दूसरा सनातन अव्यक्त जो पूर्ण ब्रह्म है, गीता अध्याय 8 श्लोक 20 का भाव समझें।

दूसरी दिव्य महाप्रलय

इस उपरोक्त महाप्रलय के पाँच बार हो जाने के पश्चात् द्वितीय दिव्य महाप्रलय होती है। दूसरी दिव्य महाप्रलय परब्रह्म (अविगत पुरुष/अक्षर पुरुष) करता है। उसमें काल अर्थात् ब्रह्म (क्षर पुरूष) सहित सर्व 21 ब्रह्माण्डों का विनाश हो जाता है जिसमें तीनों लोक (स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताल लोक), ब्रह्मा, विष्णु, शिव व काल (ज्योति निरंजन-ओंकार निरंजन) तथा इनके लोकों (ब्रह्म लोक) अर्थात् सर्व अन्य 21 ब्रह्माण्डों के प्राणी नष्ट हो जाते हैं।

विशेष :- सात त्रिलोकिय ब्रह्मा की मृत्यु के बाद एक त्रिलोकिय विष्णु जी की मृत्यु होती है तथा सात विष्णु की मृत्यु के बाद एक त्रिलोकिय शिव की मृत्यु होती है। 70000 (सत्तर हजार) त्रिलोकिय शिव की मृत्यु के बाद एक ब्रह्मलोकिय शिव अर्थात् काल (ब्रह्म) की मृत्यु परब्रह्म के एक युग के बाद होती है। ऐसे एक हजार युग का परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का एक दिन तथा इतनी ही रात्रि होती है। अक्षर पुरूष की रात्रि का समय शुरू होने पर प्रकृति (दुर्गा) सहित काल (ज्योति निरंजन) अर्थात् ब्रह्म तथा इसके इक्कीस ब्रह्माण्डों के प्राणी नष्ट हो जाते हैं। तब परब्रह्म (दूसरे अव्यक्त) का एक हजार युग का दिन समाप्त होता है। इतनी ही रात्रि व्यतीत होने के उपरान्त

ब्रह्म को फिर पूर्ण ब्रह्म प्रकट करता है। गीता अ. 8 श्लोक 17 का भाव ऐसे समझें। परन्तु ब्रह्माण्डों व महाब्रह्माण्डों व इनमें बने लोकों की सीमा (गोलाकार दिवार समझो) समाप्त नहीं होती। फिर इतने ही समय के बाद यह काल तथा माया (प्रकृति देवी) को पूर्ण ब्रह्म (सत्यपुरूष) अपने द्वारा पूर्व निर्धारित सृष्टि कर्म के आधार पर पुनः उत्पन्न करता है तथा सर्व प्राणी जो काल के कैदी (बन्दी) हैं, को उनके कर्माधार पर शरीरों में सृष्टि कर्म नियम से रचता है तथा लगता है कि परब्रह्म रच रहा है।

{यहाँ पर गीता अ. 15 का श्लोक 17 याद रखना चाहिए जिसमें कहा है कि उत्तम प्रभु तो कोई और ही है जो वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण–पोषण करता है तथा गीता अ. 18 के श्लोक 61 में कहा है कि अन्तर्यामी परमेश्वर सर्व प्राणियों को यन्त्र (मशीन) के सदृश कर्माधार पर घुमाता है तथा प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्थित है।

गीता के पाठकों को फिर भ्रम होगा कि गीता अ. 15 के श्लोक 15 में काल (ब्रह्म) कहता है कि मैं सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित हूँ तथा सर्व ज्ञान अपोहन व वेदों को प्रदान करने वाला हूँ।

हृदय कमल में काल भगवान महापार्वती (दुर्गा) सहित महाशिव रूप में रहता है तथा पूर्ण परमात्मा भी जीवात्मा के साथ अभेद रूप से रहता है जैसे वायु रहती है गंध के साथ। दोनों का अभेद सम्बन्ध है परन्तु कुछ गुणों का अन्तर है। गीता अ. 2 के श्लोक 17 से 21 में भी विस्तृत विवरण है। इस प्रकार पूर्ण ब्रह्म भी प्रत्येक प्राणी के हृदय में जीवात्मा के साथ रहता है जैसे सूर्य दूर स्थान पर होते हुए भी उसकी ऊष्णता व प्रकाश का प्रभाव प्रत्येक प्राणी से अभेद है तथा जीवात्मा का स्थान भी हृदय ही है।

विशेष :– एक महाब्रह्माण्ड का विनाश परब्रह्म के 100 युगों के उपरान्त होता है। इतने ही वर्षों तक एक महाब्रह्मण्ड में प्रलय रहती है।

काल अर्थात् ब्रह्म (ज्योति निरंजन) को तो ऐसा जानों जैसे गर्मियों के मौसम में राजस्थान– हरियाणा आदि क्षेत्रों में वायु का एक स्तम्भ जैसा (मिट्टी युक्त वायु) आसमान में बहुत ऊँचे तक दिखाई देता है तथा चक्र लगाता हुआ चलता है। जो अस्थाई होता है। परन्तु गंध तो वायु के साथ अभेद रूप में है। इसी प्रकार जीवात्मा तथा परमात्मा का सूक्ष्म सम्बन्ध समझे।

ऐसे ही सर्व प्रलय तथा महाप्रलय के क्रम को पूर्ण परमात्मा (सत्यपुरूष, कविर्देव) से ही होना निश्चित समझे। एक हजार युग जो परब्रह्म की रात्रि है उसके समाप्त होने पर काल (ज्योति निरंजन) सृष्टि फिर से सत्यपुरूष कविर्देव की शब्द शक्ति से बनाए समय के विद्यान अनुसार प्रारम्भ होती है। अक्षर पुरुष(परब्रह्म) पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) के आदेश से काल (ज्योति निरंजन) व माया (प्रकृति अर्थात् दुर्गा) को सर्व प्राणियों सहित काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड में भेज देता है तथा पूर्ण ब्रह्म के बनाए विद्यान अनुसार सर्व ब्रह्मण्डों में अन्य रचना प्रभु कबीर जी की कृपा से हो जाती है। माया (प्रकृति) तथा काल (ज्योति निरंजन) के सूक्ष्म शरीर पर नूरी शरीर भी पूर्ण परमात्मा ही रचता है तथा शेष उत्पत्ति ब्रह्म(काल) अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) के संयोग से करता है। शेष स्थान निरंजन पाँच तत्त्व के आधार से रचता है। फिर काल (ज्योति निरंजन अर्थात् ब्रह्म) की सृष्टि प्रारम्भ होती है। इस प्रकार यह परब्रह्म दूसरा अव्यक्त कहलाता है।}

तीसरी दिव्य महा प्रलय

जैसा कि पूर्वोक्त विवरण में पढ़ा कि सत्तर हजार काल (ब्रह्म) के शिव रूपी पुत्रों की मृत्यु के पश्चात् एक ब्रह्म (महाशिव) की मृत्यु होती है वह समय परब्रह्म का एक युग होता है। इसी के विषय में गीता अध्याय 2 श्लोक 12 अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9 में अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि मेरी भी जन्म मृत्यु होती है। बहुत से जन्म हो चुके हैं। जिनको देवता लोग (ब्रह्मा,विष्णु तथा शिव सहित) व महर्षि जन भी नहीं जानते क्योंकि वे सर्व मुझ से ही उत्पन्न हुए हैं। गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में कहा है कि मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं। परब्रह्म के एक युग में काल भगवान सदा शिव वाला शरीर त्यागता है तथा पुनः अन्य ब्रह्माण्ड में अन्य तीन रूपों में विराजमान हो जाता है। यह लीला स्वयं करता है। परब्रह्म का एक दिन एक हजार युग का होता है इतनी ही रात्रि होती है। तीस दिन-रात का एक महीना, बारह महीनों का एक वर्ष तथा सौ वर्ष की परब्रह्म (द्वितीय अव्यक्त) की आयु होती है। उस समय परब्रह्म (अक्षर पुरूष) की मृत्यु होती है। यह तीसरी दिव्य महाप्रलय कहलाती है।

तीसरी दिव्य महा प्रलय में सर्व ब्रह्माण्ड तथा अण्ड जिसमें ब्रह्म (काल) के इक्कीस ब्रह्माण्ड तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड व अन्य असंख्यों ब्रह्माण्ड नाश में आवेंगे। धूंधूकार का शंख बजेगा। सर्व अण्ड व ब्रह्माण्ड नाश में आवेंगे परंतु वह तीसरी दिव्य महा प्रलय बहुत समय पर्यान्त होवेगी। वह तीसरी (दिव्य) महाप्रलय सतपुरुष का पुत्र अचिंत अपने पिता पूर्ण ब्रह्म (सतपुरूष) की आज्ञा से सृष्टि कर्म नियम से जो पूर्णब्रह्म ने निर्धारित किया हुआ है करेगा और फिर सृष्टि रचना होगी। परंतु सतलोक में गए हंस दोबारा जन्म-मरण में नहीं आऐंगे। इस प्रकार न तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अमर है, न काल निरंजन (ब्रह्म) अमर है, न ब्रह्मा (रजगुण)-विष्णु (सतगुण) शिव (तमगुण) अमर हैं। फिर इनके पुजारी (उपासक) कैसे पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं। इसलिए पूर्णब्रह्म की साधना करनी चाहिए जिसकी उपासना से जीव सतलोक (अमरलोक) में चला जाता है। फिर वह कभी नहीं मरता, पूर्ण मुक्त हो जाता है। वह पूर्ण ब्रह्म (कविर्देव) तीसरा सनातन अव्यक्त है। जो गीता अ. 8 के श्लोक 20,21 में वर्णन है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में यही कहा है।

श्लोक 16 :- इस लोक में दो पुरूष एक क्षर पुरूष (ज्योति निरंजन-काल ब्रह्म) तथा दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तथा इनके लोकों के सब प्राणी नाशवान हैं। आत्मा सबकी अमर है। फिर गीता अध्याय 15 ही के श्लोक 17 में कहा है कि वास्तव में पुरूषोत्तम यानि श्रेष्ठ परमात्मा तो उपरोक्त क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य ही है जो परमात्मा कहलाता है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी है।

"अमर करुँ सतलोक पठाऊँ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।"

उसी पूर्ण परमात्मा (अविनाशी परमेश्वर) का प्रमाण गीता जी के अध्याय 2 के श्लोक 17 में, अध्याय 3 के श्लोक 14, 15 में, अध्याय 7 के श्लोक 13 और 19 व 29 में, अध्याय 8 के श्लोक 3, 4, 8, 9, 10, 20, 21, 22 में, अध्याय 13 श्लोक 12 से 17 तथा 22 से 24, 27 से 28, 30-31 व 34 तथा अध्याय 4 श्लोक 31-32, अध्याय 5 श्लोक 14, 15, 16, 19, 20, 24-26 में, अध्याय 6 श्लोक 7 तथा 19-20, 25 से 27 में तथा अध्याय 18 श्लोक 46, 61, 62 तथा 66 में भी विशेष रूप से प्रमाण दिया गया है कि उस पूर्ण परमात्मा की शरण में जाकर जीव फिर कभी जन्म मरण में नहीं आता।

{विशेष :— काल का जाल समझने के लिए यह विवरण ध्यान रखें कि त्रिलोक में एक शिव जी है। जो इस काल का पुत्र है जो 7 त्रिलोकिय विष्णु जी की मृत्यु तथा 49 त्रिलोकिय ब्रह्मा जी की मृत्यु के उपरान्त मृत्यु को प्राप्त होता है। ऐसे ही काल भगवान एक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्मलोक में महाशिव रूप में भी रहता है। परमेश्वर द्वारा बनाए समय के विधान अनुसार सृष्टि क्रम का समय बनाए रखने के लिए यह ब्रह्मलोक वाला महाशिव (काल) भी मृत्यु को प्राप्त होता है। जब त्रिलोकिय 70000 (सत्तर हजार) ब्रह्म काल के पुत्र शिव मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तब एक ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्म/क्षर पुरुष) पूर्ण परमात्मा द्वारा बनाए समय के विधान अनुसार परवश हुआ मरता तथा जन्मता है। यह ब्रह्मलोकिय शिव (ब्रह्म/काल) की मृत्यु का समय परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का एक युग होता है। इसीलिए गीता जी के अ. 2 के श्लोक 12, गीता अ. 4 श्लोक 5, गीता अ. 10 श्लोक 2 में कहा है कि मेरे तथा तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। मैं जानता हूँ तू नहीं जानता। मेरे जन्म आलौकिक (अद्भुत) होते हैं।}

अद्भुत उदाहरण :- आदरणीय गरीबदास साहेब जी सन् 1717 (संवत् 1774) में श्री बलराम जी के घर पर माता रानी जी के गर्भ से जन्म लेकर 61 वर्ष तक शरीर में गांव छुड़ानी जिला झज्जर में रहे तथा सन् 1778 (विक्रमी संवत् 1835) में शरीर त्याग गए। आज भी उनकी स्मृति में एक यादगार बनी है जहाँ पर शरीर को जमीन में सादर दबाया गया था। छः महीने के उपरान्त वैसा ही शरीर धारण करके आदरणीय गरीबदास साहेब जी 35 वर्ष तक अपने पूर्व शरीर के शिष्य भूमड़ सैनी जी के पास शहर सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) में रहकर शरीर त्याग गए। वहाँ पर हिन्दू तथा मुसलमान दोनों उनके शिष्य हुए। वहाँ भी आज उनकी स्मृति में यादगार बनी है। स्थान है :- सहारनपुर शहर में चिलकाना रोड़ से कलसिया रोड़ निकलता है, कलसिया रोड़ पर आधा किलोमीटर चल कर बायीं तरफ यह अद्वितीय पवित्र यादगार विद्यमान है तथा उस पर एक शिलालेख भी लिखा है जो प्रत्यक्ष साक्षी है। उसी के साथ में बाबा लालदास जी का बाड़ा भी बना है।

(अध्याय नं. 2)
अल्लाह पृथ्वी पर आता है या नहीं

❖ मुसलमान धर्म के उलेमा (विद्वान) कहते हैं कि अल्लाह ताला धरती के ऊपर मानव सदृश कभी नहीं आता। जैसा हिन्दू धर्म की पुस्तक श्रीमद्भगवत गीता के अध्याय 4 के श्लोक 7-8 में कहा है। गीता अध्याय 4 श्लोक 7 :-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिः भवति भारतः। अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदा आत्मानाम् सृजामि अहम।।7।।

अर्थात् हे भारत (अर्जुन)! जब-जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ता है और धर्म की हानि होती है, तब-तब मैं अपने अंश अवतार पैदा करता हूँ। वे पृथ्वी पर जन्म लेते हैं।

गीता अध्याय 4 श्लोक 8 :-

परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।8।।

अर्थात् साधु-महापुरूषों का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए अपने अवतार उत्पन्न करता हूँ।

यह हम (मुसलमान) नहीं मानते।

मुसलमान धर्म प्रचारकों का कहना है कि जैसे इंजीनियर ने DVD Player बना दिया। उसको चलाने-समझने के लिए User Manual लिखकर दे दिया। Manual को पढ़ो और DVD Player चलाओ। इंजीनियर किसलिए आएगा?

यानि परमात्मा (अल्लाह) ने मानव (स्त्री-पुरूष) बनाया। फिर धर्मग्रंथ जैसे पवित्र कुरआन, बाइबल (तोरात, जबूर तथा इंजिल) अल्लाह ने Manual भेज दिए। इनको पढ़ो और अपने धर्म-कर्म करो।

दास (रामपाल दास) का तर्क :- यदि Manual को जन-साधारण नहीं समझ पाता और उसका DVD Player काम नहीं करता तो इंजीनियर उसे Manual समझाने आता है। जैसे अल्लाह कबीर ने सूक्ष्मवेद रूपी Manual काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) के पास भेजा था। इसने सूक्ष्मवेद का अधूरा ज्ञान चार वेदों, गीता, कुरआन, जबूर, तोरात तथा इंजिल, इन चार किताबों आदि ग्रंथों में भेज दिया। उस अधूरे ज्ञान रूपी Manual को भी ठीक से न समझकर सर्व धर्मों के व्यक्ति शास्त्रों के विपरीत साधना करने लगे तो कादिर अल्लाह यानि इंजीनियर सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान (सूक्ष्मवेद) रूपी Manual लेकर आया था और प्रत्येक युग में आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनकी भक्ति में उलझन को सुलझाता है। उनको यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है। फिर वे संत अपनी गलत साधना को त्यागकर सत्य भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करते हैं।

{कुरआन मजीद की सूरः अल हदीद-57 की आयत नं. 26-27 में कुरआन ज्ञान देने वाले ने कहा है कि ''रहबानियत (सन्यास) की प्रथा उन्होंने (कुछेक साधकों ने) खुद आविष्कृत की। हमने उनके लिए अनिवार्य नहीं किया। मगर अल्लाह की खुशी यानि परमात्मा से मिलने की तलब में उन्होंने खुद ही यह नई चीज निकाली।'' यह उन मुसलमान फकीरों के लिए कहा है जिनको कादिर अल्लाह अपना नबी आप बनकर आता है और नेक आत्माओं को मिलता है। उनको अल्लाह की इबादत का सही तथा सम्पूर्ण ज्ञान देता है। फिर वे उस साधना को करने लगते हैं। अपने धर्म में प्रचलित इबादत त्याग देते हैं। उनका विरोध उन्हीं के धर्म के व्यक्ति करने लगते हैं। जिस कारण से वे सन्यास ले लिया करते थे। काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) प्रत्येक धर्म के व्यक्तियों को भ्रमित करके उनके अपने धर्म ग्रन्थों के विपरीत इबादत बताता है। अपने दूत भेजता रहता है। तप करने की प्रेरणा करता है। कठिन साधना करने की प्रेरणा करता है। परमात्मा प्राप्ति की तड़फ में साधक वह करने लगता है। पूर्ण परमात्मा (कादिर अल्लाह) उनको मिलता है। यथार्थ आसान नाम जाप करने की विधि इबादत (पूजा) बताता है।}

उदाहरण के लिए :-

1. शेख फरीद जी पहले मुसलमान धर्म में प्रचलित साधना करते थे। फिर एक तपस्वी फकीर के बताए अनुसार गलत साधना कर रहे थे। स्वयं अल्लाह ताला जिंदा बाबा के वेश में उनको मिले। यथार्थ भक्ति विधि बताई। उनका कल्याण हुआ। {पढ़ें शेख फरीद के विषय में अध्याय अल-खिज्र (अल-कबीर) की

जानकारी में पृष्ठ 194 पर।}

2. धर्मदास जी (बांधवगढ़) को मिले जो श्री राम, श्री कृष्ण (श्री विष्णु) तथा श्री शिव जी को पूर्ण परमात्मा मानकर इन्हीं की भक्ति पर दृढ़ था। पूर्ण ब्रह्म जिंदा बाबा के वेश में मथुरा शहर (भारत) में तीर्थ पर मिले। उस सच्चे मालिक की (अपनी) जानकारी दी। सत्य साधना की विधि बताई। धर्मदास जी ने अपनी गलत धारणा तथा गलत साधना त्यागकर सत्य साधना परमात्मा कबीर जी द्वारा बताई करके मानव जीवन धन्य किया।

3. दादू दास जी को मिले। उनको सत्य भक्ति बताई। उनका कल्याण किया।

4. स्वामी रामानंद जी महर्षि को काशी शहर (भारत) में मिले। जब अल्लाह ताला कबीर जी लीला करने के लिए धरती पर एक सौ बीस वर्ष रहे। स्वामी रामानंद जी ने अधूरा Manual यानि चारों वेदों व गीता वाला ज्ञान भी ठीक से नहीं समझा था। गलत अर्थ कर रखे थे। गलत साधना श्री विष्णु जी को पूर्ण परमात्मा मानकर कर रहा था। समर्थ परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानंद जी को वेदों से व गीता से ही समझाया कि यदि आप मानते हैं कि गीता श्री कृष्ण ने कहा तो गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता अपने को जन्म-मृत्यु के चक्र में बता रहा है। वह नाशवान है।

गीता अध्याय 2 श्लोक 17, अध्याय 15 श्लोक 17, अध्याय 18 श्लोक 46, 61-62 में तथा अध्याय 8 श्लोक 3, 8-10 तथा 20-22 में अपने से अन्य अविनाशी तथा पूर्ण मोक्षदायक परम अक्षर ब्रह्म के विषय में बताया है तथा उसी की शरण में जाने को कहा है।

स्वामी रामानंद जी वेदों तथा गीता यानि Manual को ठीक से नहीं समझ पाए थे। उस Manual को ठीक से समझाने के लिए अल्लाह ताला सृष्टि सृजनकर्ता कबीर जी को धरती पर आना पड़ा तथा सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान (सूक्ष्मवेद) बताना पड़ा। तब स्वामी रामानंद जी ने हिन्दू धर्म वाली गलत साधना त्यागकर यथार्थ भक्ति करके कल्याण करवाया।

❖ संत गरीबदास जी {गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा (भारत)} को पूर्ण ब्रह्म एक जिंदा बाबा के वेश में सतलोक (सनातन परम धाम) से चलकर पृथ्वी पर आकर मिले। उनको ऊपर आसमान में उस अमर लोक में ले गए जहाँ पर कादिर अल्लाह रहता है। (तख्त) सिंहासन पर बैठता है। अपना गवाह बनाकर वापिस शरीर में छोड़ा तथा यथार्थ अध्यात्म ज्ञान यानि सम्पूर्ण व सही Manual दिया जो संत गरीबदास जी की वाणी यानि अमर ग्रंथ में लिखा है जिसके आधार से यह दास (लेखक) सब धार्मिक क्रिया करता तथा करवाता है।

☛ बाइबल में (जो जबूर, तोरात तथा इंजिल तीन पुस्तकों का संग्रह है, उसमें) पृष्ठ 30 पर उत्पत्ति अध्याय 26 : 1-3 में प्रमाण है कि यहोवा (परमात्मा यानि अल्लाह) ने इसहाक को दर्शन देकर कहा कि ''मिस्र में मत जा। जो देश मैं तुझे बताऊँ, उसी में रह। मैं तेरे संग रहूँगा।''

☛ बाइबल में उत्पत्ति अध्याय में पृष्ठ 17 पर ''वाचा का चिन्ह खतना'' में अध्याय 17 श्लोक 1-2 में लिखा है :- जब अब्राहिम निनानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा (प्रभु) ने उसको दर्शन देकर कहा, ''मैं सर्व शक्तिमान हूँ। मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।''

❖ तैमूरलंग को अल्लाह पृथ्वी पर मिले :- तैमूरलंग मुसलमान बहुत निर्धन था। उसकी माता जी बहुत धार्मिक थी। अतिथि व साधु-बाबाओं की सेवा करती थी। कई बार स्वयं भूखी रह जाती थी। अतिथियों व राह चलते लोगों को रोटी अवश्य खिलाती थी। एक दिन ऐसा ही आया कि घर में एक रोटी का आटा था। माता जी रोटी बनाकर बेटे तैमूरलंग के लिए जंगल में लेकर गई थी जो साहूकारों की भेड़-बकरियाँ चराया करता था। माता स्वयं भूखी रही। बेटे के लिए रोटी ले गई थी। तैमूरलंग खाना खाने लगा तो उसी समय अल्लाह ताला एक जिंदा साधु के वेश में आया और रोटी माँगी। कहा, बच्चा! कई दिन से भूखा हूँ। बहुत लोगों से भोजन माँगा, किसी ने नहीं दिया, जान जाने वाली है। {तैमूरलंग में माता वाले गुण थे। अच्छे संस्कार माता-पिता से मिले थे। पिता का इंतकाल हो चुका था।} तैमूरलंग ने उसी समय रोटी उठाकर साधु बाबा को दे दी। अल्लाह ताला कबीर जी ने रोटी खाई। जल पीया। जब अल्लाह रोटी खा रहा था, तब दोनों माँ-बेटे ने अर्ज की, हे बाबा! हम बहुत निर्धन हैं। इतना दे दो कि हम भी भूखे ना रहें, अतिथि न भूखा जाए। अर्ज कई बार की। खाना खाकर जिंदा वेशधारी

अल्लाह ने एक सांकल (Chain) जो गाय, भैंस या बकरे को खूँटे या पेड़ से बाँधने के लिए रस्से के स्थान पर प्रयोग की जाती है जो तैमूरलंग के पास ही रखी थी, उठाई। उसको तीन बार मोड़ा और प्यार से तैमूरलंग की कमर में गिनकर सात मारी। (जैसे एक, दो, तीन .... सात।) फिर लात मारी, मुक्के मारे।

तैमूरलंग की माता ने विचार किया हमने बार-बार अर्ज की है, बाबा चिढ़ गया। नाराज होकर लड़के को पीट रहा है। माई ने कहा, हे महाराज! हे अल्लाह की जात! मेरे बेटे ने क्या गलती कर दी? माफ करो। आपका बच्चा है। तब जिंदा वेशधारी बाबा ने कहा, माई! जो सात सांकल मारी हैं, तेरे बेटे को सात पीढ़ी का राज बख्श दिया है। जो लात-मुक्के मारे हैं, ये सात पीढ़ी के बाद तुम्हारा राज टुकड़ों में बंट जाएगा। यह कहकर जिंदा बाबा रूप अल्लाह अंतर्ध्यान हो गए। समय आने पर तैमूरलंग राजा बना। भारत पर भी कब्जा किया। तैमूरलंग से लेकर औरंगजेब तक सात पीढ़ी ने दिल्ली पर राज किया। फिर राज टुकड़ों में बंट गया। इतिहास भी साक्षी है।

❖ नानक देव जी (सिक्ख धर्म के प्रवर्तक) को भी अल्लाह अकबर (कबीर परमेश्वर) मिले। श्री नानक देव जी, श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण अर्थात् विष्णु जी के परम भक्त थे। हिन्दू धर्म में जन्म हुआ था। श्रीमद्भगवत गीता का पाठ किया करते थे। ब्रजलाल पांडे उनको गीता पढ़ाया करता था। परमेश्वर कबीर जी उनको सुल्तानपुर लोधी शहर के पास बेई दरिया पर सुबह के समय मिले तथा सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान रूपी Manual दिया। सच्चखंड (सतलोक) लेकर गए और वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् श्री नानक देव जी ने हिन्दू धर्म में प्रचलित सब साधना त्यागकर एक परमेश्वर (सतपुरूष) की भक्ति करके जीवन धन्य बनाया।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि अल्लाह ताला कबीर सबका उत्पत्तिकर्ता पृथ्वी पर मानव की तरह भ्रमण करता है। यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है। इसी से संबंधित प्रकरण ''अल-खिज (अल-कबीर) की जानकारी'' अध्याय में इसी पुस्तक के पृष्ठ नं. 135 पर विस्तारपूर्वक लिखा है।

मुसलमान धर्म के मौलानाओं की शंका का समाधान

बाखबर कौन है? अल्लाह का नाम क्या है?

❖ गुरूदेव रामपाल दास जी से सेवकों का निवेदन है कि हम जब मुसलमान विद्वानों से ज्ञान चर्चा करते हैं। वे प्रश्न करते हैं। उनका हम सही जवाब नहीं दे पाते। कृपया हमें बताएँ कि हम क्या उत्तर दें। प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न :- यदि खुदा साकार यानि जिस्मानी रूप है और उनका नाम कबीर है। इसका क्या प्रमाण है?

❖ रामपाल दास :- उनको इस प्रकार उत्तर दो :-

उत्तर :- खुदा साकार है। कुरआन मजीद में खुदा को निराकार नहीं बताया गया है। परन्तु मुस्लिम धर्म गुरूओं को खुदा का इल्म ना होने के कारण इस परवरदिगार को निराकार अर्थात् बेचून बताया है। कुरआन मजीद में खुदा को जिस्मानी अर्थात् दिखाई देने वाला साकार खुदा बताया गया है। अधिक जानकारी के लिए पढ़ें इसी पुस्तक में अध्याय ''हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक'' में पृष्ठ 129 पर।

मिसाल के तौर पर देखिए :-

कुरआन मजीद की सूरः लुकमान-31 आयात नं. 27-29 :- इन आयतों में खुदा को सुनने वाला अर्थात् देखने वाला बताया है।

कुरआन मजीद की सूरः हज-22 आयत नं. 61 :- इसमें खुदा को बड़ी शान और बड़ा (कबीर) बताया गया है। अल्लाह सुनता तथा देखता है।

सूरः मुअ्मिन्-40 आयत नं. 12 में कबीर का अर्थ बड़ा किया है जबकि कबीर ही लिखना था।

इन आयतों से यह साबित होता है कि अल्लाह साकार अर्थात् जिस्मानी है। इन इल्म न रखने वाले मुस्लिम धर्मगुरुओं ने खुदा के असली नाम कबीर का अर्थ बड़ा कर दिया है जो कि गलत है। मुस्लिम प्रवक्ता यह तो स्वीकार करते हैं कि अल्लाह एक बार धरती के ऊपर, जल के ऊपर मंडराता था। धरती व आसमान व सब पेड़-पौधे व मानव, पशु-पक्षी आदि की उत्पत्ति करके ऊपर आसमान पर तख्त पर जा बैठा। इससे तो स्वतः

परमेश्वर साकार मानव जैसा सिद्ध होता है। (तख्त) सिंहासन पर मानव ही बैठता है। बाइबल ग्रंथ के उत्पत्ति अध्याय में स्पष्ट ही है कि उस सबकी उत्पत्ति करने वाले कादिर अल्लाह ने मनुष्य को अपनी शक्ल-सूरत जैसा बनाया यानि अपने स्वरूप जैसा उत्पन्न किया। इससे भी अपने आप अल्लाह (God) नराकार (मानव जैसे आकार का) सिद्ध हुआ। यह भी सिद्ध हुआ कि खुदा साकार अर्थात् जिस्मानी रूप है। उसका नाम कबीर है जिसका कुरआन के अनुवादकों ने बड़ा अर्थ किया है।

मिसाल के तौर पर :-

सूरः मुअ्मिन्-40 आयत 12 :- जालिकुम् बिअन्नहू इजा दुअि–यल्लाहु बहदहू क–फर्तुम व इंय्युश्–रक् बिही तुअ्मिनू फल्हुक्मु लिल्लाहिल् अलिय्यिल्–कबीर।।12।।

मुसलमानों का किया अनुवाद :- यह इसलिए कि जब तन्हा खुदा को पुकारा जाता था तो तुम इंकार कर देते थे। अगर उसके साथ शरीक मुकर्रर किया जाता था तो मान लेते थे। तो हुक्म तो खुदा ही का है जो (सबसे) ऊपर (और सबसे) बड़ा है।(12)

सूरः मुअ्मिन्-40 आयत 12 का संत रामपाल दास द्वारा किया सही अनुवाद :- (मरने के पश्चात् कयामत के दिन जो नरक में डाले जाएँगे, तब वे अपनी गलती को मानकर क्षमा चाहेंगे तो उनको कहा जाएगा कि) जब तुमको एक खुदा की इबादत के लिए कहा जाता था तो तुम इंकार कर देते थे। खुदा के सिवाय किसी अन्य देव या मूर्ति की पूजा के लिए कहते थे तो मान लेते थे। वह हुक्म (खुदा के सिवा अन्य को न पूजने का हुक्म) तो उस सर्वोपरि खुदा कबीर का ही है।(12)

भावार्थ :- मूर्ति पूजकों को कबीर खुदा का हुक्म बताया जाता था कि एक उसी कबीर कादिर खुदा की इबादत करो तो तुम मना कर देते थे। आज जहन्नुम में डालने का हुक्म (आदेश) भी उसी सर्वोच्च खुदा कबीर ही का तो है। मुसलमान अनुवादकों ने ''कबीर'' जो नाम खुदा का है, उसका अर्थ बड़ा कर दिया। जबकि ''सबसे ऊपर खुदा'' का अर्थ भी बड़ा होता है। फिर कबीर का अर्थ करना उचित नहीं है। सबसे ऊपर का अर्थ बड़ा ही होता है तो ''सबसे ऊपर बड़ा'' अर्थ करना अनुचित है। यह सबसे ऊपर वाले यानि सबसे बड़े खुदा कबीर का हुक्म ही है। यह अर्थ सही है।

और देखें :- सूरः सबा-34 आयत नं. 23 :-

व ला तन्फअुश–शफाअतु अिन्दहू इल्ला लिमन् अजि–न लहू हत्ता इजा फुज्जि–अ अन् कुलूबिहिम् कालू माजा का–ल रब्बुकुम् कालुल्हक्–क व हुवल्– अलिय्युल्–कबीर।।23।।

मुसलमान विद्वानों द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद (सूरः सबा-34 आयत नं. 23) :- और खुदा के यहाँ (किसी के लिए) सिफारिश फायदा न देगी। मगर उसके लिए जिसके बारे में वह इजाजत बख्शे, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से बेचैनी दूर कर दी जाएगी तो कहेंगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फरमाया है? फरिश्ते कहेंगे कि हक (फरमाया) है। और वह ऊँचे मर्तबे वाला (और) बहुत बड़ा है।(23)

इसका सही अनुवाद :- (संत रामपाल दास द्वारा किया गया)

सूरः सबा-34 आयत नं. 23 :- और खुदा के यहाँ कोई सिफारिश लाभ नहीं देगी। जो जैसे कर्म करके आया है, उसे उसका फल स्वतः मिलेगा। मगर उसके लिए जिसके बारे में वह इजाजत बख्शे। यहाँ तक कि जब उनके दिलों की बेचैनी दूर कर दी जाएगी तो वे कहेंगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फरमाया है? फरिश्ते कहेंगे कि हक (फरमाया) है यानि सबको सबके किए कर्म का फल दिया जाए। वह कबीर परवरदिगार बहुत ऊँचे मर्तबे वाला है यानि वह कबीर अल्लाह सबसे ऊपर शक्ति वाला है यानि कबीर खुदा सर्व शक्तिमान है।(23)

अब देखें सूरः मुल्क-67 आयत नं. 9 :-

आयत नं. 9 :- कालू बला कद् जा–अना नजीरून् फ–कज्जब्ना व कुल्ना मा नज्ज–लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फी जलालिन् कबीर।।9।।

मुसलमान विद्वान द्वारा किया गया अनुवाद :-

आयत नं. 9 :- वे कहेंगे क्यों नहीं, जरूर हिदायत करने वाला आया था। लेकिन हमने उसको झुठला दिया और कहा कि खुदा ने तो कोई चीज नाजिल ही नहीं की। तुम तो बड़ी गलती में (पड़े हुए) हो।(9)

{इस अनुवादकर्ता ने इस आयत के अनुवाद में भी ''कबीर'' का अर्थ ''बड़ा'' किया है।}

सूरः मुल्क-67 आयत नं. 9 :- (यथार्थ अनुवाद रामपाल दास द्वारा) :- आयत नं. 9 से पहले वाली आयतों में बताया है कि जो इस कुरआन का ज्ञान बताने वाले नबी से लोग कहते हैं कि तू झूठ बोल रहा है। और अल्लाह की हिदायतों की पालना न करके गलत साधना करके मरेंगे। फिर वे नरक (दोजख) में डाले जाएँगे तो उनसे दोजख के दरोगा (थानेदार) पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई हिदायत देने वाला रसूल (Messenger) नहीं आया था। तुमने गलत काम किए और कष्ट भोगने आ गए।

इस आयत नं. 9 में बताया है कि ''वे कहेंगे कि हिदायत देने वाला यानि नबी तो आया था। हमने उसको यह कहकर झुठला दिया कि कबीर खुदा ने कोई चीज (जैसा तू बता रहा है) नाजिल नहीं की है, तुम गलत कह रहे हो।

विशेष :- कबीर अरबी भाषा का शब्द माना जाता है जिसका अर्थ बड़ा है। वैसे कोई भी शब्द है, उसका अर्थ तो होता ही है। जैसे ''सूरज, प्रकाश'' एक देश के राजा का नाम था। उसकी महिमा में कहा था कि राजा सूरज प्रकाश ने अपने नागरिकों के भले के लिए अनेकों काम किए। न्यायकारी था, नेक राजा था। यह महिमा दोहों, साखियों या कविता रूप में थी। यदि कोई उसका अनुवाद करे और उसके अनुवाद में ''सूरज प्रकाश'' का अर्थ ''सूर्य की रोशनी'' कर दे और ''सूरज प्रकाश'' न लिखे तो यह कैसे पता चलेगा कि उस देश के राजा का नाम क्या है जिसने जनहित के कार्य किए थे। ऊपर की आयतों में यदि अल्लाह से संबंधित प्रकरण नहीं होता, अन्य प्रकरण कोई नशा निषेध या धर्म-कर्म का वर्णन होता और उसमें कबीर शब्द होता और उसका अर्थ ''बड़ा'' किया होता तो ठीक था। परंतु इसमें परमात्मा का जिक्र है। इसलिए कबीर को कबीर ही लिख दिया जाए तो अल्लाह का नाम स्पष्ट होता जाता है जो अनिवार्य है और ग्रंथ की सार्थकता स्पष्ट होती है। और पढ़ें :-

सूरः फातिर (फातिह)-1 आयत नं. 1-7 :- बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इसमें खुदा को रहीम कहा है। रहीम का मतलब रहम करने वाला। इस आयत का हिन्दी अनुवाद :- ''शुरू करता हूँ खुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान व निहायत रहम वाला है।''

इसमें कबीर नाम मूल पाठ में नहीं है, परंतु उसका नाम कबीर है, यह भी लिखना चाहिए।

संत रामपाल जी महाराज बाखबर द्वारा बताए ज्ञान को समझकर आज बहुत बड़ा जन समूह अपने रहमान कादिर रब (प्रभु) कबीर को पहचानकर सत्भक्ति कर रहा है अर्थात् वे सच्ची इबादत कर रहे हैं। इस आयत का सही तर्जुमा अर्थात् अनुवाद इस प्रकार है :- शुरु करता हूँ खुदा का नाम लेकर, जो कबीर बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है। वो खुदा कबीर है जो सभी चीजों का जानकार है तथा जिसमें ये गुण हैं।

विशेष :- सूरः फातिह-1 में 7 आयत हैं। मुसलमान समाज कहता है कि यह कुरआन का ज्ञान जिसने भेजा है, वह हमारा रब है। उसका दिया (बताया) इल्म (ज्ञान) जिब्राइल फरिश्ता बिन मिलावट व फेर-बदल किए ज्यों का त्यों लाया और हजरत मुहम्मद को दिया।

कुरआन ज्ञान दाता ने कहा है कि ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम करने वाला है।'' (यदि इसके तर्जुमा में ऐसे लिख दिया जाए कि ''शुरू कबीर अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम वाला है'', तो और सार्थकता बन जाती है।)

आयत नं. 1 :- तारीफ (प्रशंसा) अल्लाह के लिए जो सारे जहान का रब (सबका मालिक) है।

आयत नं. 2 :- (वह) बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है।

आयत नं. 3 :- अंतिम न्याय के दिन का मालिक है। (सबके कर्मों का लेखा वही करता है, उसी के अधिकार में है।)

आयत नं. 4 :- हम तेरी ही इबादत (पूजा) करते हैं और तुझसे ही मदद चाहते हैं।

आयत नं. 5 :- हमको सीधा मार्ग दिखा।

आयत नं. 6 :- उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपा पात्र हुए।

आयत नं. 7 :- जो तेरे (गजब) प्रकोप के भागी नहीं हुए हैं, जो भटके हुए नहीं हैं।

विशेष :- इस सूरः में कुरआन ज्ञान देने वाला अपने से अन्य (कादिर अल्लाह) सबके मालिक की इबादत करने को कह रहा है। उसकी महिमा बता रहा है कि मैं उसकी प्रशंसा कर रहा हूँ जो सारे जहान का (रब)

पालनहार सृजनहार मालिक है। वह (कबीर) बड़ा मेहरबान है और दया करने वाला है। सब कर्मों का हिसाब वही करता है। उसी से प्रार्थना की है कि तेरी इबादत करने वालों को सच्चा भक्ति का मार्ग बता।

विचार करें :- अल्लाह का कोई नाम भी है, वह नाम लिखना भी अनिवार्य है। जैसे प्रधानमंत्री की महिमा बताएँ तो उसका नाम भी बताना होता है। मुसलमान प्रचारक यही गलती किए हुए हैं। जिन साधकों यानि संतों-महापुरूषों को वह अल्लाह आसमान से अपने तख्त (सिंहासन) से चलकर पृथ्वी पर आकर मिला, उनको यथार्थ ज्ञान बताया। अपना वह लोक दिखाया जिसमें उसका (तख्त) सिंहासन है जो सब जन्नतों से उत्तम जन्नत (सतलोक) है। उन संतों को फिर पृथ्वी पर छोड़ा। उन महान आत्माओं ने आँखों देखा अल्लाह का स्वरूप नाम तथा स्थान बताया है। हमने उन महापुरूषों पर विश्वास करना चाहिए।

हजरत मुहम्मद को जिब्राइल जिस अल्लाह के पास ले गया, उसने तो नबी जी को दर्शन भी नहीं दिए। उस पर्दे के पीछे वाले अल्लाह के विषय में उन महात्माओं ने बताया कि वह ज्योति निरंजन काल है जो सबको अपने जाल में फँसाकर रखे हुए है। यह जीव को भ्रमित करके रखता है। स्पष्ट ज्ञान नहीं बताता। अधूरा ज्ञान बताता है। इसको श्राप लगा है एक लाख मानव को प्रतिदिन खाने का। अधिक जानकारी इसी पुस्तक के अध्याय सृष्टि रचना में पृष्ठ 183 पर पढ़ें, सब स्पष्ट हो जाएगा।

❖ संत रामपाल दास गुरूदेव जी से निवेदन है कि हम किसी मौलवी से ज्ञान चर्चा करते हैं तो वे प्रश्न करते हैं जिनका उत्तर हम ठीक से नहीं दे पाते। कृपया निम्न प्रश्नों का जवाब बताएँ, हम क्या उत्तर दें?

प्रश्न :- यदि खुदा कबीर है तो आप बाखबर संत रामपाल जी की पूजा अर्थात् इबादत क्यों करते हो?

बहुत से हमारे मुस्लिम भाईयों का कहना है कि यदि खुदा कबीर साहेब है तो आप संत (बाखबर) रामपाल जी महाराज की फोटो की इबादत क्यों करते हो।

❖ रामपाल दास :- उनका उत्तर इस प्रकार दो :-

उत्तर :- पहले आप यह समझें कि पूजा तथा सत्कार में क्या भेद है :-

सुनो! जैसे पत्नी अपने पति के लिए समर्पित होती है। उसकी पूजा करती है। परंतु सत्कार यथोचित सबका करती है। सलाम सबको बोलती है। किसी को सत्कार देना पूजा में नहीं गिना जाता। जिस महापुरूष ने सच्चे खुदा की सच्ची राह बताई है, उसने मानव का महाउपकार किया है। उसका सत्कार करना हमारा फर्ज बनता है।

आप (मुसलमान) चार किताबों को तो सत्य मानते हैं :- 1. कुरआन 2. तोरात 3. जबूर 4. इंजिल {बाइबल में तीन पुस्तक तोरात, जबूर तथा इंजिल इकठ्ठी जिल्द की गई हैं। बाइबल कोई अलग ग्रंथ नहीं है।} आप जी ने बाइबल में सृष्टि रचना पढ़ी है जो तोरात पुस्तक में लिखी है। उसमें वर्णन आता है कि परमेश्वर ने ''आदम'' को मिट्टी से उत्पन्न किया। फिर सब फरिश्तों को बुलाया तथा कहा कि ''आदम'' आदमी को सजदा करो। एक इबलिस नाम के फरिस्ते ने सजदा नहीं किया तथा कहा कि यह तो मिट्टी से बना आदमी है। मैं इसके आगे सिर नहीं झुकाऊँगा। बार-बार कहने पर भी उसने परमेश्वर का हुक्म नहीं माना तो उसे जन्नत से निकाल दिया। वह शैतान कहलाया। अन्य सब फरिश्तों ने परमेश्वर के हुक्म का पालन किया। वे जन्नत में सुखी हैं। हम **कादिर खुदा कबीर के हुक्म से संत रामपाल जी जो हमारे गुरु हैं, को दण्डवत प्रणाम करते हैं। उसी परमेश्वर (खुदा कबीर) का सूक्ष्मवेद (कलाम-ए-कबीर) में आदेश है जो इस प्रकार है :-**

कबीर, गुरु गोविंद कर जानिये, रहिये शब्द समाय। मिलै तो दण्डवत् बन्दगी, नहीं पल पल ध्यान लगाय।।

कबीर, गुरु मानुष कर जानते, ते नर कहियें अंध। होवें दुखी संसार में, आगै यम के फंद।।

अर्थात् अल्लाह कबीर सृष्टि रचनहार, पालनहार का आदेश है कि अपने गुरू जी को (गोबिन्द) खुदा मानना और उसकी आज्ञा का पालन करना। जब उनके दर्शन करने आश्रम में जाओ या वे मार्ग में मिल जाएँ तो अपने गुरू को दण्डवत् प्रणाम करो। बाकी समय में उनके अहसान को याद रखो। जो गुरू जी को मनुष्य मानते हैं, परमात्मा के तुल्य सम्मान नहीं देते हैं, वे तत्त्वज्ञान नेत्रहीन (अंधे) हैं। वे संसार में भी दुःखी रहेंगे। फिर यमराज के फंद यानि जहन्नुम में गिरेंगे।

गुरू जी का अहसान बताया है कि :-

कबीर, सतगुरू के उपदेश का सुनिया एक विचार। जै सतगुरू मिलते नहीं तो जाते यम द्वार।।
कबीर, यमद्वार में दूत सब, करते खेंचातान। उनसे कबहू ना छूटता, फिर फिरता चारों खान।।
कबीर, चार खानी में भ्रमता, कबहू ना लगता पार। सो फेरा सब मिट गया, मेरे सतगुरू के उपकार।।
कबीर, सात समुद्र की मसि करूँ, लेखनी करूँ बनराय। धरती का कागज करूँ, गुरू गुण लिखा न जाय।।

अर्थात् सतगुरू जी से दीक्षा लेने से क्या लाभ हुआ और यदि सतगुरू ना होता तो फिर क्या हानि होती, वह बताई है कि यदि सतगुरू जी नहीं मिलते तो दोजख की आग में जलते। यम के दूत पिटाई करते। फिर पशु-पक्षी, कीड़े आदि के जीवनों में कष्ट भोगते।

ये सब कष्ट सतगुरू जी के उपकार से समाप्त हो गए। ऐसे सच्चे पीर का गुण लिखने लगूँ तो सारे वृक्षों की कलम घिस जाए। यदि सात समुद्रों की जितनी मसि (Ink) हो, वह समाप्त हो जाए और धरती जितने क्षेत्रफल का कागज लूँ, वह समाप्त हो जाए तो भी गुरू जी के उपकार का वर्णन नहीं हो सकता।

संत रामपाल दास जी हमारे सतगुरू (सच्चे पीर) हैं। उनका सत्कार सजदा करके करना उपरोक्त उपकार के कारण फर्ज बनता है।

गुरू जी को दंडवत् प्रणाम करने का कबीर खुदा (परमेश्वर) का आदेश (हुक्म) है। उसको पालन करना अनिवार्य है, नहीं तो शैतान की पदवी मिलेगी। आदेश का पालन करने से जन्नत मिलेगी। इसलिए हम अपने सतगुरू को दण्डवत् करते हैं।

मुसलमान भाई कहते हैं कि हमारे खुदा ने हजरत मुहम्मद जी पर कुरआन मजीद का ज्ञान उतारा। हम उस अल्लाह को सजदा (सिर झुकाकर जमीं पर रखकर सलाम) करते हैं। मुसलमान भाई विचारें कि कुरआन मजीद के ज्ञान दाता ने सूरः फुरकान-25 आयत नं. 52-59 में अपने से अन्य खुदा के विषय में बताया है कि जिसने सारी कायनात को पैदा किया। वह अपने भक्तों के पाप माफ करता है। उसी ने मानव पैदा किए। फिर किसी को दामाद, बहू बनाया। मीठा, खारा जल पृथ्वी में भिन्न-भिन्न भरा। वह छः दिन में सब रचना करके सातवें दिन तख्त पर जा बैठा। उसकी खबर किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी संत) से पूछो। इससे स्पष्ट है कि कुरआन मजीद (शरीफ) का ज्ञान बताने वाला बाखबर नहीं है। मुसलमान भाई उस अल्प ज्ञान वाले को सिर झुकाकर सलाम (सजदा) करते हैं। यदि हम बाखबर संत रामपाल जी को सजदा (दण्डवत् करके) करते हैं तो इसमें क्या दोष है?

प्रश्न :- क्या हजरत मुहम्मद (सल्ल.) बाखबर नहीं हैं? क्या इनके द्वारा बताई गई इबादत जैसे रोजे, नमाज, जकात देना इनके करने से जन्नत में नहीं जाया जाएगा, स्पष्ट कीजिए?

उत्तर :- इसका उत्तर यह है कि कुरआन की सूरः फुरकानि-25 आयत नं. 52-59 में कुरआन का ज्ञान देने वाला अल्लाह स्पष्ट कर रहा है जिसने सब सृष्टि के सब जीव उत्पन्न किए। वह कादिर अल्लाह है। उसने छः दिन में सृष्टि की रचना की। फिर आसमान पर तख्त पर जा बैठा। उसकी खबर किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी) संत से पूछो।

हजरत मुहम्मद जी को तो कुरआन वाला ज्ञान था। जब हजरत मुहम्मद का खुदा ही बाखबर नहीं है तो उसका भेजा नबी बाखबर कैसे हो सकता है? जब ज्ञान ही अधूरा (Incomplete) है तो जन्नत में कैसे जाया जा सकता है? जब बाखबर नहीं है तो जन्नत में भी नहीं जा सकता। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

नबी मुहम्मद नहीं बहिसत सिधाना। पीछे भूला है तुरकाना।।

अर्थात् नबी मुहम्मद ही (बहिश्त) स्वर्ग नहीं गया। उसके पीछे लगकर सब (तुर्क) मुसलमान यथार्थ भक्ति मार्ग को भूले हुए हैं। वे भी जन्नत में नहीं जा सकते।

हजरत मुहम्मद (सल्ल.) कुरआन शरीफ को बोलने वाले खुदा के भेजे हुए पैगम्बर हैं ना कि अल्लाह कबीर के भेजे हुए। इसके लिए आप जी एक नजर जीवनी हजरत मोहम्मद (सल्ल.) पर डालें जिससे पता चलेगा कि हजरत मौहम्मद (सल्ल.) पाक आत्मा (रूह) को पूरी जिन्दगी दुःखों का सामना करना पड़ा। बचपन में ही अब्बू (पिता जी) अम्मी (माता जी) का साया उनके ऊपर नहीं रहा। उनके चाचा जी ने उनकी परवरिश की थी। जवान हुए तो दो बार विधवा (बेवा) हो चुकी खदीजा से निकाह हुआ। वो भी ज्यादा समय तक उनके

साथ न रह सकी। तीन पुत्र तथा चार बेटी संतान हुई। उनकी आँखो के सामने उनके तीनों पुत्र भी इंतकाल को प्राप्त हुए।

जिस खुदा की दिन-रात सच्चे दिल से इबादत नबी जी किया करते थे। उनके बताए कुरआन मजीद वाले ज्ञान का प्रचार करने में काफिरों के पत्थर खाए, सिर फुड़वाया। अनेकों यातनाएँ काफिरों ने दी। सब सहन करते हुए कुरआन का ज्ञान फैलाया। उस सारे संघर्ष तथा उसकी इबादत करने से हजरत मुहम्मद सल्ल. को पूरा जीवन दुःखों में गुजारना पड़ा और जीवन के आखिरी क्षणों में भी तड़फ-तड़फकर इंतकाल को प्राप्त हुए तो आप जी खुद ही अनुमान लगा सकते हो। वे काल ब्रह्म के नबी थे। खुदा कबीर (अल्लाहू अकबर) के भेजे हुए नहीं थे। इसलिए उनके द्वारा बताई गई इबादत (रोजे, नमाज और जकात देने, ईद-बकरीद मनाने आदि के करने) से जन्नत में नहीं जाया जा सकता। जन्नत में केवल एक कबीर खुदा की इबादत बाखबर संत रामपाल जी महाराज की शरण ग्रहण करके इनके द्वारा बताई भक्ति आजीवन मर्यादा में रहकर करके जन्नत में जाया जा सकता है न कि मोहम्मद सल्ल. को कुरआन ज्ञान दाता अल्लाह के द्वारा बताई गई साधना (इबादत) से।

❖ संत रामपाल गुरूदेव जी से निवेदन है कि हम जब मुसलमान धर्म के मौलवियों व अन्य प्रवक्ताओं से ज्ञान चर्चा करते हैं तो वे प्रश्न करते हैं। हम क्या जवाब दें, कृपया मार्गदर्शन करें। उनके प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न :- बाखबर किसे कहते हैं अर्थात् कौन होता है? प्रमाण सहित बताइए।

❖ (रामपाल दास) उनको इस प्रकार उत्तर दें :-

उत्तर :- सभी किताबों का इल्म और खुदा की सच्ची इबादत बताने वाले को बाखबर कहते हैं। उसे ही हिन्दू समाज (धर्म) में तत्त्वदर्शी संत, सिक्ख समाज में वाहेगुरू, ईसाई समाज में मसीहा अर्थात् परमेश्वर का जानकार और मुस्लिम समाज में बाखबर कहते हैं। बाखबर ही हमें इस जहान में आकर खुदा कबीर की पूर्ण जानकारी तथा सच्ची इबादत का तरीका बताता है। खुदा कौन है? कैसा है? कहाँ रहता है? ये सब बाखबर ही बताता है। आज वर्तमान समय में बाखबर केवल इस जहांन में संत रामपाल जी महाराज हैं। पवित्र कुरआन मजीद से प्रमाण :-

प्रमाण नं. 1 :- सूरः बकरा-2 आयत नं. 115

इसमें खुदा को बाखबर बताया गया है। जब खुदा बाखबर है तो जो बाखबर है, उसे क्या उपमा दी जाए? उसे भी उतना ही सम्मान देने का फर्ज है।

प्रमाण नं. 2 :- सूरः लुकमान-31 आयत नं. 34

इस आयत में भी खुदा को जानने वाला अर्थात् बाखबर बोला गया है।

प्रमाण नं. 3 :- सूरः फुरकानि-25 आयत नं. 52-59

इन आयतों में बताया है कि अल्लाह ने छः दिन में सृष्टि रची और सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। उसके विषय में किसी बाखबर से पूछने के लिए बोला है।

उपरोक्त आयतों में जिस बाखबर के विषय में कहा गया है, वह बाखबर संत रामपाल जी महाराज ही हैं जिन्होंने वर्तमान समय में एक कादिर खुदा कबीर के विषय में बताया और उनकी इबादत करने का सही तरीका बताया है जो हमारी सभी किताबों (तोरात, जबूर, इंजिल और कुरआन) में प्रमाण है। इनसे पहले किसी भी हिन्दू गुरू या ऋषि ने तथा पैगंबर ने यह नहीं बताया कि कबीर ही वह खुदा है जिसको हमारी कुरआन शरीफ प्रमाणित करती है, चारों वेद प्रमाणित करते हैं। इससे यह साबित होता है कि उस अल्लाह कबीर का भेजा हुआ बाखबर तत्त्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज हैं। मुस्लिम धर्म के गुरूओं (मौलानाओं) को पवित्र कुरआन शरीफ का इल्म (ज्ञान) न होने के कारण बाखबर मोहम्मद सल्ल. को समझ लिया जबकि कुरआन शरीफ बोलने वाला खुदा (काल भगवान) खुद मोहम्मद सल्ल. को बता रहे हैं कि जिस खुदा ने आसमान और जमीन और जो कुछ इसके बीच में है, उसको छः दिन में बनाया और सातवें दिन ऊपर तख्त पर जाकर विराजमान हो गया। उसके बारे में खुद कुरआन शरीफ बोलने वाला खुदा भी नहीं जानता कि वो बाखबर कौन है? यदि मोहम्मद सल्ल. ही वो बाखबर होते तो कुरआन शरीफ बोलने वाला खुदा (काल भगवान) बाखबर की जगह मोहम्मद सल्ल. ही नाम बोल सकता था। इससे स्पष्ट होता है कि कुरआन शरीफ बोलने वाले खुदा (काल भगवान) को

भी नहीं पता कि बाखबर कौन है? बाखबर वही है जो सच्चे खुदा कबीर की इबादत बताएगा।

सभी मुस्लिम समुदाय से प्रार्थना है कि कृपया करके अपने सच्चे बाखबर, रहनुमा, खुदा का भेजा हुआ वर्तमान में नबी, पैगम्बर (अवतार) जोकि संत रामपाल जी महाराज हैं, आयें और जन्नत में जाने का रास्ता इख्तयार करवाऐं। इसलिए कुरआन मजीद का ज्ञान दाता भी इबादत के योग्य नहीं है क्योंकि वह बाखबर नहीं है। संत रामपाल दास बाखबर हैं। इसलिए उनकी दण्डवत् प्रणाम रूप इबादत करते हैं जो कबीर कादिर अल्लाह का आदेश है।

❖ बाखबर के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान इसी पुस्तक में पढ़ें ''सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान किसने बताया'' नामक अध्याय में पृष्ठ नं. 177 पर।

नबी मुहम्मद की (मेराज) आसमान यात्रा पर मतभेद

प्रश्न :- कुछ मुसलमान मानते हैं कि मेराज (सीढ़ी) यानि आसमानों की यात्रा कुछ नहीं है। यह मुहम्मद जी ने स्वपन देखा था। अधिकतर इसे सत्य मानते हैं। उस समय के व्यक्तियों ने उसे कोरी झूठ माना। मुहम्मद साहेब ने बताया कि जब मैं अकेला खुदा के पास चला तो मैंने सतरह पर्दे पार किए। एक पर्दे से दूसरे पर्दे तक जाने का मार्ग पाँच सौ वर्ष का था यानि व्यक्ति को एक पर्दे से दूसरे पर्दे तक जाने में पाँच सौ वर्षों का समय लगा। खच्चर जैसे जानवर (बुराक) पर बैठकर सीढ़ियों पर से चढ़कर ऊपर गए, आदि-आदि बातों को तथा अन्य सब बातें जो मुहम्मद जी ने अपने साथियों को बताई तो हजरत अबु बक्र ने तो तुरंत मान लिया। परंतु बहुत से मुसलमान मुसलमानी छोड़ गए। उनको एक बात अधिक खटकी, जब मुहम्मद ने कहा कि यह सब इतने समय में हुआ कि जब मैं (मुहम्मद) बुराक पर बैठने लगा तो मेरा पैर पानी से भरे कटोरे को लगा। उसका आधा पानी निकल पाया था। सब आसमानों की यात्रा करके वापिस आकर मैंने उसे रोका और शेष जल बचा दिया। क्या यह सत्य है?

उत्तर :- जो कुछ हजरत मुहम्मद जी ने आसमानों की यात्रा में देखा, वह सब सत्य है। जो पानी के कटोरे को पैर लगना, फिर वापिस आकर शेष पानी निकलने से बचाना, कटोरे को सीधा करना। प्रत्येक पर्दे की दूरी पाँच सौ वर्ष में तय होने का समय लगना। ऊपर नबियों की मंडली देखना। उनको नमाज अता करवाना, बाबा आदम को हँसते-रोते देखना आदि-आदि सब सत्य है।(लेखक)

उदाहरण :-

मुहम्मद साहब के मेराज

मुहम्मद साहब मेराज को गए। एक क्षण में ही सारे आकाश का भ्रमण करके नीचे आ गए। नीचे आने पर लोगों से अपना सब हाल कहा, किसी-किसी ने तो मान लिया पर बहुतों ने न माना। सुल्तान रूम ने तो इस बात के ऊपर तनिक भी विश्वास ही नहीं किया। मुहम्मद साहब की बात को बिल्कुल झूठ समझा बहुत दिनों तक ऐसा ही अविश्वासी बना रहा। एक दिन एक फकीर बादशाह के सामने आकर कहने लगा कि ईश्वर में सब शक्ति है। वह जो चाहे दिखलावे, जो चाहे सो कर दे। आप मुहम्मद साहब के मेराज पर क्यों नहीं विश्वास लाते? मुहम्मद साहब का मेराज बहुत ही ठीक है। उस फकीर ने बहुत प्रकार बादशाह को समझाया पर बादशाह ने एक भी न मानी, उस फकीर ने बादशाह से कहा कि पानी का एक बड़ा बर्तन मँगवाओ। बर्तन मँगवाया गया फकीर के कहने से उसमें पानी भरकर मैदान में रखवा दिया गया। उसने बादशाह से कहा कि इसमें अपना माथा डूबाकर निकाल लो। दरबारी लोग चारों तरफ से घेरकर खड़े थे। बादशाह ने जल में सिर डाल के तुरंत ही निकाल लिया। सिर निकालते ही उस फकीर के ऊपर क्रोध करके बहुत झुझंलाया कहा कि इस फकीर ने मेरे ऊपर बहुत कष्ट डाला था। फकीर ने कहा आपके सब आदमी यहाँ खड़ें हैं, मैंने आपको कुछ भी नहीं किया। मैं अलग खड़ा था। इन लोगों से पूछकर देखिये! लोगों ने भी कहा, हाँ हुजूर! यह फकीर तो अलग ही खड़ा है, इसने कुछ भी नहीं किया। अपने आदमियों की यह बात सुनकर बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ कहने लगा कि मैंने जब पानी में सिर डुबोया उस समय देखा कि मैं स्त्री हो गया हूँ। एक मैदान में इधर-उधर फिर रहा हूँ। न कोई आगे है, न कोई पीछे। वहाँ से थोड़े ही दूर पर खेतिहर लोग खेती का काम कर रहे थे। मैं उसी (स्त्री के) रूप में

उन लोगों के पास गया। उन लोगों ने मुझे अकेला लावारिस जानकर अपने गाँव में चलने को कहा। वहाँ पहुँच कर एक युवक के साथ मेरा विवाह कर दिया, मैं उसके साथ रहने लगा। उसी अवस्था में बहुत से लड़के और लड़कियाँ उत्पन्न हुई। यहाँ तक कि मैं बहुत वृद्ध हो गया उसी बूढ़ी स्त्री के स्वरूप में एक दिन तालाब में स्नान करने गया। जल में सिर डुबाकर बाहर निकलते ही अपने को यहाँ खड़ा पाया और जाना कि मैं शहंशाह रूम हूँ। आप लोगों को भी जैसे का तैसा खड़ा पाया। आश्चर्य है कि इतनी ही देर में क्या-क्या हो गया। स्त्री होकर बहुत से बच्चे जने वृद्ध हो नदी में स्नान करने गया डुबकी मारते ही पूर्वावस्था में आ गया। यह क्या कौतुक है? जो एक क्षण मात्र में ऐसा देखा। उस फकीर ने कहा कि खुदा की कुदरत है। वह जो चाहे सो कर सकता है। तब उस बादशाह को मुहम्मद के कथन पर विश्वास हुआ।

प्रश्न :- वह फकीर कौन था?

उत्तर :- वह अल्लाह कबीर था जो जिंदा बाबा के वेश में थे तथा जो अल-खिज्र नाम से भी जाना जाता है। परमात्मा चाहता है कि मानव आस्तिक बना रहे। किसी समय सच्ची भक्ति करके अपना कल्याण करवा ले।

☛ पुराणों में प्रमाण है कि एक राजा अपनी बेटी को लेकर ब्रह्मा जी के पास (ऊपर ब्रह्मा के लोक में) बेटी के योग्य पति पूछने तथा विवाह की तारीख रखवाने के लिए गया। यह त्रेतायुग की बात है। त्रेतायुग में व्यक्तियों की ऊँचाई तीस फुट से भी अधिक होती थी। त्रेतायुग बारह लाख छयानवें हजार (12 लाख 96 हजार) वर्ष का होता है। यह त्रेतायुग के मध्य की घटना थी। ब्रह्मा ने कहा कि आप नीचे जाओ। लड़की का विवाह बलराम से कर दो। पृथ्वी का तो युग बीत गया है, यहाँ कुछ क्षण ही बीते हैं। राजा नीचे पृथ्वी के ऊपर आया तो उसके परिवार का कोई व्यक्ति नहीं बचा था। लड़की की ऊँचाई बलराम से बहुत अधिक थी। लिखा है कि राजा हैरान था। बलराम पंद्रह फुट लंबा था। लड़की तीस फुट लंबाई की थी। बलराम (श्री कृष्ण का भाई) ने हल उठाया और लड़की के सिर के ऊपर रखकर दबाया। उसे अपने समान लंबाई वाला बना दिया। तब उनका विवाह हुआ। वह राजा भी श्री कृष्ण के राज में रहा।

परमात्मा के मार्ग में सब कुछ संभव है। अविश्वास करना परमात्मा का अपमान करना है। भक्त का उद्देश्य जन्म-मृत्यु के कष्ट से छुटकारा पाना होना चाहिए। सत्य साधना के मंत्र पूर्ण गुरू से लेकर मर्यादा में रहकर मोक्ष प्राप्त करें। किसी पाखंडी गुरू की बातों में न आएँ। भोले व्यक्तियों को अपने जाल में फँसाते हैं। कहते हैं कि इतनी दक्षिणा दो। इतने रूपये अलग दो, तुम्हारे संकट निवारण के लिए अनुष्ठान करूँगा। जिनको सतनाम व सारनाम देने का अधिकार नहीं है, उनके द्वारा किया गया धार्मिक अनुष्ठान किसी काम का नहीं होता।

अन्य प्रमाण :-

परमात्मा के लिए कुछ भी असंभव नहीं है

एक नगर के बाहर जंगल में दो महात्मा साधना कर रहे थे। एक चालीस वर्ष से घर त्यागकर साधना कर रहा था। दूसरा अभी दो वर्ष से साधना करने लगा था। परमात्मा के दरबार से एक देवदूत प्रतिदिन कुछ समय उन दोनों साधकों के पास व्यतीत करता था। दोनों साधकों के आश्रम गाँव के पूर्व तथा पश्चिम में जंगल में थे। बड़े का स्थान पश्चिम में तथा छोटे का स्थान गाँव के पूर्व में था।

देवदूत प्रतिदिन एक-एक घण्टा दोनों के पास बैठता, परमात्मा की चर्चा करते थे। दोनों साधकों का अच्छा समय व्यतीत होता। एक दिन देवदूत ने भगवान विष्णु जी से कहा कि भगवान! कपिला नगरी के बाहर आपके दो परम भक्त रहते हैं। श्री विष्णु जी ने कहा कि एक परम भक्त हे, दूसरा तो बनावटी भक्त है। देवदूत ने विचार किया कि जो चालीस वर्ष से साधनारत है, वह पक्का भक्त होगा क्योंकि लंबी-लंबी दाढ़ी, सिर पर बड़ी जटा (केश) है और समय भी चालीस वर्ष बहुत होता है। देवदूत बोला कि हे प्रभु! जो चालीस वर्ष से आपकी भक्ति कर रहा है, वह होगा परम भक्त। प्रभु ने कहा, नहीं। दूसरा जो दो वर्ष से साधना में लगा है। प्रभु ने कहा कि देवदूत! मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ। देवदूत बोला, प्रभु ऐसा नहीं है। परंतु मेरी तुच्छ बुद्धि यही मान रही है कि बड़ी आयु वाला भी अच्छा भक्त है। श्री विष्णु जी ने कहा कि कल आप देर से पृथ्वी पर जाना। दोनों ही देर से आने का कारण पूछेंगे तो आप बताना कि आज प्रभु जी ने हाथी को सूई के नाके से

निकालना था। वह लीला देखकर आया हूँ। इसलिए आने में देरी हो गई। जो उत्तर मिले, उससे आपको भी पता लग जाएगा कि परम भक्त कौन है? पहले प्रतिदिन देवदूत सुबह आठ बजे के आसपास बड़े के पास जाता था और 10 बजे के आसपास छोटी आयु वाले के पास जाता था। अगले दिन बड़ी आयु वाले के पास दिन के 12 बजे पहुँचा। देर से आने का कारण पूछा तो देवदूत ने बताया कि आज 11:30 बजे दिन के परमात्मा ने लीला करनी थी, वह देखकर आया हूँ। चालीस वर्ष वाले ने पूछा कि क्या लीला की प्रभु ने? बताईएगा। देवदूत ने कहा कि श्री विष्णु जी ने कमाल कर दिया, हाथी को सूई के नाके (छिद्र) में से निकाल दिया। यह सुनकर भक्त बोला कि देवदूत! ऐसी झूठ बोल जो सुने उसे विश्वास हो। यह कैसे हो सकता है कि हाथी सूई के नाके में से निकल जाए। मेरे सामने निकालकर दिखाओ। देवदूत समझ गया कि भगवान सत्य ही कह रहे थे। यह तो पशु है, भक्त नहीं जिसे परमात्मा पर ही विश्वास नहीं कि वह सक्षम है। जो कार्य मानव नहीं कर सकता, परमात्मा कर सकता है। उसकी भक्ति व्यर्थ तथा बनावटी है। देवदूत नमस्ते करके चल पड़ा और छोटे भक्त के पास आया। भक्त ने देरी से आने का कारण पूछा तो देवदूत ने संकोच के साथ बताया कि कहीं यह कोई गलत भाषा न बोल दे। कहा कि भक्त क्या बताऊँ? परमात्मा ने तो अचरज कर दिया। कमाल कर दिया। देखकर आँखें फटी की फटी रह गई। परमात्मा ने हाथी को सूई के नाके (धागा डालने वाले छिद्र) के अंदर से निकाल दिया। यह सुनकर भक्त बोला कि देवदूत जी! इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है? परमात्मा निकाल दे पूरी पृथ्वी को सूई के नाके में से, हाथी की तो बात ही क्या है? देवदूत ने भक्त को सीने से लगाया और कहा कि धन्य हैं आपके माता-पिता जिनसे जन्म हुआ। कुर्बान हूँ आपके परमात्मा पर अटल विश्वास पर।

भक्त को परमात्मा पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि परमात्मा जो चाहे सो कर सकता है।

सर्वनाश के लिए शराब पीना पर्याप्त है

प्रश्न :- मुसलमान धर्म में शराब के निकट भी जाना हराम बताया है। इसके पीछे क्या राज है? पाकिस्तान देश के प्रधानमंत्री जुलफिकार भुट्टो को इसी बात पर फाँसी दे दी गई थी कि उन्होंने शराब पी ली थी। इसके साथ-साथ अन्य जुल्म भी उसकी मौत का कारण था। आरोप था कि भुट्टो ने अपने राजनीतिक प्रतिद्वंदी मोहम्मद अहमद खाँ कसूरी की हत्या करवाई थी।

उत्तर :- मुहम्मद साहब के समय में दैत्यों (राक्षसों) के रहने की जगह खैबर थी। मुहम्मद साहब ने अली से कहा कि जिबराईल मेरे पास इस्म-ए-आजम लाये थे। वह मुझसे सीख जाओ वहाँ के खजाने से धन ले आओ। यदि तुमसे कोई सामना करे तो उससे लड़ो, डरो मत। क्योंकि इस्म-ए-आजम जिसके पास होता है, उसकी सर्वदा विजय होती है। अली इस्म-ए-आजम को सीखकर वहाँ गये, पर विजय प्राप्ति नहीं हुई। क्योंकि उस गढ़ में एक महात्मा रहता था। जिसकी रक्षा में वहाँ के रहने वाले थे। उसी महात्मा की कृपा से कोई किला ले नहीं सकता था। जब हजरत अली किले को न जीत सका तो मुहम्मद साहब ने उन्हें स्वप्न में उपदेश दिया कि ऐ अली! इस शहर में एक फकीर रहता है उसे किसी न किसी उपाय से शराब खाने के निकट ले जा। उसकी नाक में शराब की गन्ध आवेगी तो उसका माहात्म्य जाता रहेगा। जागने के बाद अली ने वैसा ही किया। उस फकीर की नाक में मद्य की गन्ध पहुँचते ही उसका माहात्म्य जाता रहा। उसकी तपस्या और भजन का सब फल नष्ट हो गया। अली ने फिर से गढ़ पर चढ़ाई की। किले को जीत लिया उस फकीर को भी कत्ल कर दिया। (केवल शराब की गन्ध से उसकी वर्षो की तपस्या और भजन का प्रभाव जाता रहा। जो नित्य मद्य पीते हैं उनकी क्या गति होगी?)

अन्य प्रमाण :- फरिश्ते हारूत और मारूत की शराब से दुर्दशा-तफसीर अजीजी में अबिन हरीरा व इब्र हातिम हाकिम, इब्र अब्बास व इब्र अब्दुल्लाह और इब्र उम्र आदिक ने कहा कि अदरीस पैगम्बर के समय पापी लोग आसमान पर चढ़े फरिश्ते मनुष्यों से घृणा करने लगे। खुदा ने कहा कि मनुष्यों में काम और क्रोध भरा हुआ है। इस कारण उनका मन पाप की ओर झुकता है। यहाँ तक कि यदि तुम पृथ्वी पर भेजे जाओ तो पाप करने से तुम भी नहीं बच सकोगे। फरिश्तों ने खुदा के वचन पर विश्वास न किया कहा कि हम पृथ्वी में जाकर किसी प्रकार का पाप न करेंगे। खुदा ने कहा तुम अपने में से ऐसे दो फरिश्ते भेजो जिसके कि बिगड़ने

की तुम्हें किसी प्रकार की शंका न हो। फरिश्तों ने अपने में से तपस्या और भजन में सबसे अधिक प्रतिष्ठित हारूत और मारूत नामक फरिश्ते खुदा के समक्ष उपस्थित किया। खुदा ने उनको पृथ्वी पर भेजा कि तुम जाकर मनुष्यों को उपदेश करो, सावधान कोई पाप न करना। दोनों पृथ्वी पर आये मनुष्यों को उपदेश करने लगे। कुछ दिनों के बाद एक महासुंदरी पुंश्चली जुहरा नामक स्त्री पर दोनों आसक्त हो गये। उससे अपने काम वृत्ति को प्रगट किया। उसने कहा कि यदि तुम मुझे चाहते हो तो मेरी चार बातों में से किसी एक को स्वीकार करो। तब तुम्हारी इच्छा पूरी होगी।

वह चार बातें यह हैं :- प्रथम मेरे पति का वध करो, दूसरी मेरे बुत्त को दण्डवत् करो, तीसरी शराब पीओ, चौथी मुझे इस्म-ए-आजम बतलाओ। उन्होंने सब तो महापाप समझा पर मद्य का पीना सुगम समझकर पी लिया। जब मद्य का नशा चढ़ा तो उसकी प्रतिमा को भी दण्डवत किया। उसके पति को मारा, जुहरा को इस्म-ए-आजम भी सिखला दिया। जुहरा तो इस्म-ए-आजम के बल से आसमान को उड़ गई। पर खुदा ने हारूत-मारूत के पैरों में जंजीर बाँधकर बाबील के कूँए में लटकवा दिया।

मुसलमान धर्म में विवाह की रीति

प्रश्न :- मुसलमान धर्म में चाचे, ताऊ की लड़कियों से विवाह करने का क्या कारण है?

हिन्दू धर्म में चाचे, ताऊ की लड़कियों से विवाह नहीं होता। यहाँ तक कि एक गोत्र में भी विवाह नहीं होता। एक गोत्र के कई गाँव होते हैं। उन गाँवों में भी नहीं होता। हिन्दू धर्म में चाचे, ताऊ की लड़कियों से विवाह तो दूर की बात है, गोत्र तथा पड़ोस के गाँव में भी विवाह नहीं किया जाता। माता के गोत्र तथा पिता के गोत्र में भी विवाह वर्जित है। यदि कोई ऐसी गलती कर देता है तो आन-शान का मामला बनाकर कत्लेआम हो जाता है। मुसलमानों में चाचे तथा ताऊ की लड़कियों से विवाह करना गर्व की, शान की बात मानते हैं जो हिन्दू लोगों की दृष्टि में घृणा का कार्य है।

उत्तर :- परिस्थितियाँ अपने अनुकूल चलाती हैं। पहले हिन्दू धर्म में चार गोत्र छोड़कर विवाह किया जाता था। पिता, माता, दादी, परदादी के चार गोत्र छोड़े जाते थे। परिस्थितियाँ बदलती गई। परदादी का गोत्र नहीं छोड़ा जाने लगा। केवल माता का गोत्र, अपना और दादी का गोत्र छोड़ रहे हैं। कुछ दादी का गोत्र भी नहीं छोड़ रहे हैं। केवल अपना व माता का गोत्र छोड़ रहे हैं। मुसलमान धर्म में केवल अपनी सगी बहन (माँ की जाई बहन) को छोड़ते हैं। चाचा, ताऊ की लड़कियाँ जो बहन ही होती हैं, उनसे विवाह करना अजीबो-गरीब लगता है।

कारण :- मक्का शहर में काबा (एक मस्जिद) का निर्माण पैगम्बर इब्राहिम तथा हजरत इस्माईल (अलैहि.) ने किया था। उसमें एक प्रभु की पूजा की जाती थी। समय के बदलाव के कारण उसमें 360 बुतों (देवताओं की मूर्तियों) की पूजा होने लगी थी।

उसी मक्का शहर में 20 अप्रैल सन् 571 ई. को हजरत मुहम्मद जी का जन्म अरब जाति के मशहूर कबीले कुरैश में हुआ। जब चालीस वर्ष के हुए, तब नबी बने। जो भी कुरआन में अल्लाह का आदेश हुआ, उसका प्रचार हजरत मुहम्मद जी लोगों के कल्याण के लिए करने लगे। पुरानी परंपरागत पूजा जो बुत पूजा थी, उसका खंडन करने लगे। एक अल्लाह की भक्ति करना कल्याणकारक बताने लगे जिसका भयंकर विरोध मुहम्मद जी के कबीले वालों यानि कुरैश वालों ने ही किया।

जिन व्यक्तियों ने कुरआन का आदेश माना, उनको आज्ञाकारी यानि मुसलमान तथा जो इंकार करते थे, उनको काफिर (अवज्ञाकारी) कहा जाने लगा।

इस्लाम के मानने वालों यानि मुसलमानों तथा विरोधियों के बीच झगड़ा होने लगा। मुसलमान विरोधियों की तुलना में सँख्या में बहुत कम थे। हजरत मुहम्मद और उसके अनुयाई मुसलमानों को तरह-तरह से सताया जाने लगा। तंग आकर कुछ मुसलमानों ने मक्का शहर छोड़ दिया। कहीं दूर हब्शा देश चले गए।

हजरत मुहम्मद तथा उसके खानदान का सामाजिक बॉयकाट (बहिष्कार) कर दिया। तीन साल तक हजरत मुहम्मद के खानदान के लोगों को बहुत मुसीबत की जिंदगी गुजारनी पड़ी। बच्चे भूख और प्यास से बिलखते थे। बड़े लोग पत्ते खाकर वक्त गुजार रहे थे।

तीन वर्ष बाद बहिष्कार तो समाप्त हो गया, परंतु मुहम्मद के चाचा अबू तालिब तथा पत्नी खदीजा का देहांत

इसी दुःख के कारण हो गया।

मक्का के उत्तर में मदीना शहर था जिसे पहले यसरिब के नाम से जाना जाता था। मदीनावासियों ने इस्लाम को शीघ्र स्वीकार कर लिया।

53 वर्ष की आयु में हजरत मुहम्मद अपने साथियों व परिवार के साथ मक्का छोड़कर मदीना में जाने लगे। जाते समय भी उनको मारने की योजना विरोधियों ने बनाई। मुहम्मद के घर के सामने विरोधी जमा हो गए कि रात्रि में मुहम्मद के घर में घुसकर कत्ल करेंगे। अल्लाह की कृपा से सब ऊँघने लगे। हजरत मुहम्मद चुपचाप निकल गए। आगे चलकर दुश्मनों के भय के कारण तीन दिन तक अपने मित्र अबुबक्र के साथ एक गुफा में गारे सौर में छुपे रहना पड़ा। मदीना में शहर के लोगों ने मुसलमानों व हजरत मुहम्मद को सम्मान व सहयोग दिया। तब कुछ राहत मिली। परंतु विरोधियों का सितम कम नहीं हुआ।

मुसलमानों के बच्चों का विवाह भी करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया कि इनके बच्चों का विवाह हमारे परिवारों व खानदान में नहीं होने देंगे। वे लोग मुसलमानों के जानी दुश्मन बने थे। सँख्या में अधिक थे। मुसलमानों ने भी अपने धर्म के पालन के लिए जान हथेली पर रख ली थी। बहुत लड़ाई लड़ी। लड़ाई तो जीत गए, परंतु विरोध बरकरार रहा। मुसलमानों की सँख्या भी बढ़ी, परंतु नाम मात्र ही।

बच्चों के विवाह की समस्या बन गई। मुसलमानों ने विमर्श करके अपने बच्चों का विवाह अपने ही परिवारों में करना पड़ा। चाचे व ताऊ की लड़कियों से विवाह करने लगे जो मजबूरी तथा जरूरी था। अपना वंश भी चलाना था। धर्म का पालन भी करना था। कुछ समय तक तो यह विवाह कर्म अजीब लगा, परंतु परिस्थितियों और लंबा समय गुजर जाने के कारण सब भूलना पड़ा। अब चाचे-ताऊ की लड़कियों से विवाह करना शान व इज्जत का सबब बन गया। चाचे-ताऊ के अतिरिक्त लड़की का विवाह बेइज्जती माना जाने लगा।

पहले जब कभी दो मुसलमान स्त्रियाँ आपस में झगड़ती थी और उनमें से एक चाचे-ताऊ के घर की बजाय अन्य घर की विवाही होती थी तो उसे ताना देती थी कि तू इज्जत वाली होती तो चाचे-ताऊ के घर ही रहती। वर्तमान में दूसरे परिवारों व दूर देश में भी विवाह होने लगा है।

इस प्रकार मुसलमानों में चाचे तथा ताऊ की लड़कियों के साथ विवाह की परंपरा चली जो वर्तमान में बड़ी इज्जत का काम है।

अन्य कारण :- हजरत आदम की जीवनी में लिखा है कि उनकी पत्नी हव्वा प्रत्येक बार दो जुड़वां बच्चों को जन्म देती थी जिनमें एक लड़का, एक लड़की होती थी। वे एक बार साथ जन्मे लड़का-लड़की, भाई-बहन माने जाते थे। दूसरी बार जन्मे लड़का-लड़की, भाई-बहन माने जाते थे। उनका विवाह एक-दूसरे की बहन से किया जाता था यानि प्रथम जन्मी लड़की का दूसरे जन्मे लड़के से किया जाता था तथा दूसरे जन्म की लड़की का विवाह प्रथम जन्मे लड़के से किया जाता था। यह प्रथा विवाह की चली। वास्तव में यह तो बहन-भाई का रिश्ता है। मुसलमान धर्म में माता से जन्मे लड़के-लड़की यानि भाई-बहन का विवाह नहीं होता। चाचे-ताऊ की लड़कियों से होता है। वर्तमान में अन्य दूर के परिवारों में रिश्ता होने लगा है। लेकिन चाचा-ताऊ में भी विवाह होता है। परिस्थितियां अपने अनुकूल चलाती हैं।

राजस्थान प्रांत (भारत) में पाली जिला, जोधपुर जिला की एक जाति के व्यक्तियों में अपनी मामा व बूआ की लड़कियों से विवाह का प्रचलन है। वे अपनी लड़की उसको देते हैं जो अपनी लड़की उनके बेटे से विवाह दे।

कारण :- काल के दूत नकली एक कबीर पंथी संत ने लगभग दो सौ वर्ष पहले प्रचार प्रारंभ किया था। उसने उन लोगों को अपनी पहले वाली पूजा छोड़ने को कहा। विष्णु जी की पूजा करने की प्रेरणा की। जिन्होंने उस संत से दीक्षा ली, उनको वैष्णव कहा जाने लगा। उस क्षेत्र के उन्हीं लोगों की जाति वालों ने उन वैष्णवों का बहिष्कार कर दिया। उनके बच्चों का विवाह भी अपनी कौम में करना बंद कर दिया। तब वैष्णवों के सामने मुसीबत खड़ी हो गई। उन्होंने अपनी बुआ तथा मामा की लड़कियों से विवाह करना पड़ा जो रिश्ते में बहन होती हैं। (अटा-सटा) अदला-बदली करने लगे। अपनी लड़की का बूआ के लड़के से तब विवाह करते हैं जब बूआ अपनी लड़की का विवाह उनके लड़के से यानि भाई के लड़के से कर देती है या वायदा कर लेती है। नकली गुरू

ने कबीर जी के नाम से साधना भी अधूरी यानि काल वाली बताई, ऊपर से दुर्गति और करवा दी जो वर्तमान तक परेशानी का सामना कर रहे हैं।

ऐसी परंपरा मजबूरी की देन होती हैं। वक्त गुजर जाने के बाद ग्लानि नहीं रहती क्योंकि सब उसी परंपरा का निर्वाह कर रहे होते हैं। भक्तजन समाज की मर्यादा से अधिक आत्म कल्याण को महत्व दिया करते हैं जो समाज के लोगों के साथ विवाद का कारण सदा से बनता आया है।

❖ गुरूदेव रामपाल दास जी से निवेदन है कि जब हम मुसलमान धर्म के प्रचारकों-मौलानाओं से ज्ञान चर्चा करते हैं तो वे जो प्रश्न करते हैं, उनका हम ठीक से जवाब नहीं दे पाते। कृपया आप हमें निर्देश करें कि हम उनके प्रश्नों का क्या जवाब दें?

प्रश्न इस प्रकार हैं :-

प्रश्न :- यदि बाखबर हजरत मुहम्मद (सल्ल.) नहीं है तो संत रामपाल जी महाराज जो कि एक गैर-मुस्लिम (दूसरे धर्म से सम्बंधित शख्स) हैं, किस प्रकार बाखबर साबित होते हैं? और हजरत मुहम्मद सल्ल. क्या थे और क्यों इस जहान में आए? कृपया करके स्पष्ट कीजिए।

❖ रामपाल दास :- आप उनके प्रश्नों का इस प्रकार उत्तर दें :-

उत्तर :- जब आप जी को सृष्टि (कायनात) की रचना की सम्पूर्ण जानकारी होगी, तब इस प्रश्न का उत्तर समझ आएगा। अपने द्वारा पैदा की गई कायनात (सृष्टि) की यथार्थ जानकारी सृष्टि का सृजनकर्ता ही बता सकता है। (पढ़ें सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 183 पर।)

संक्षेप में उत्तर इस प्रकार है :- हजरत मुहम्मद नबी जी को तो अल्लाह (प्रभु) के दर्शन भी नहीं हुए। पर्दे के पीछे से वार्ता हुई। तीन साधना करने को कहा {रोजा (व्रत), नमाज तथा अजान (बंग) देना}। वह आदेश पूरे मुसलमान समाज को बताया गया जिसका पालन मुसलमान कर रहे हैं। एक बात विशेष विचारणीय है कि जिन नेक आत्माओं को अल्लाह ताला यानि कादिर अल्लाह (सतपुरूष) प्रत्यक्ष मिला है, उनको अपने साथ ऊपर अपने निवास स्थान {सतलोक जिसे गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में शाश्वत् स्थान यानि अमर लोक कहा है, उस} में लेकर गया। अपना सिंहासन (तख्त) अपने अमरलोक जिसे सत्यलोक भी कहा जाता है, में दिखाया।(श्री नानक जी ने इसी को सच्चखंड कहा है।) उस सुख सागर की सर्व सुख-सुविधा व खाद्य सामग्री दिखाई। बताया कि तुम सब जीव जो काल ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्मंडों में रह रहे हो, यहाँ से गए हो। तुमने गलती की थी कि तुम सब जीव (नीचे के लोकों वाले) मुझे छोड़कर ज्योति निरंजन काल को अल्लाह ताला के समान पूजने लगे यानि उसे चाहने लगे। जिस कारण से मैंने (अल्लाह कबीर यानि सतपुरूष ने) तुम सबको तथा ज्योति निरंजन काल को अपने सतलोक से निकाल दिया।

ज्योति निरंजन यानि काल ने तप करके इक्कीस ब्रह्माण्ड मुझसे प्राप्त किए हैं। इन इक्कीस ब्रह्मंडों सहित तुमको तथा काल को निकाला था। जब तक काल के इक्कीस ब्रह्मंडों में रहोगे, तब तक तुम सुखी नहीं हो सकते। तुम सब जीव आत्माएँ मेरे (अल्लाह कबीर के) अंश हो, मेरे बच्चे हो। तुमको काल यानि शैतान ने भ्रमित कर रखा है। मेरा भेद तुमको नहीं देता। अपने को सबका खुदा बताता है। अपने नबी व अवतार भेजकर अपनी महिमा का प्रचार करवाता है। उनको निमित बनाकर स्वयं चमत्कार करता है। किसी फरिश्ते के माध्यम से किसी नगरी का विनाश करवा देता है। कहीं और उपद्रव करवाकर अपने भेजे दूत (संदेशवाहक) की महिमा करता है ताकि जनता उसकी बातों को माने और काल की बताई इबादत (पूजा) करके कर्म खराब कर ले और उसके (काल के) लोक में रहें।

काल (ज्योति निरंजन) ने सतलोक में एक कन्या के साथ बदसलूकी की थी जो इसको तप करते देखकर तथा नेक आत्मा जानकर इस पर फिदा हुई थी। उस कारण से मैंने (अल्लाह कबीर ने) उस कन्या को भी तथा तुम सबको तथा ज्योति निरंजन को अपने इस सुखसागर सतलोक से निकाल दिया था ताकि तुमको सबक मिले कि एक अल्लाह की इबादत न करके अन्य को अल्लाह का शिर्क बनाकर (अल्लाह के समान शक्ति वाला व सुख देने वाला) मानकर इबादत करने वाले को कादिर अल्लाह पसंद नहीं करता। काल (ज्योति निरंजन) ने अपने लोक में (इक्कीस ब्रह्मंडों में) प्रत्येक ब्रह्मंड में मेरे सतलोक की नकल करके जन्नत (स्वर्ग) बनाई है। जिस कारण

से सब साधक (भक्तजन) भ्रम में पड़े हैं। वे इसकी जन्नत को ही सबसे सुखदाई व स्थाई स्थान मान रहे हैं।

काल के लोक में रहने वालों का जन्म-मृत्यु का चक्र सदा रहेगा। मैं (अल्लाह कबीर) तुम सब {जितनी आत्माएँ काल के जाल में फँसी हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, सिक्ख आदि-आदि} आत्माओं को इस महासुखदाई सतलोक वाली जन्नत में वापिस लाना चाहता हूँ। इसलिए तुम अच्छी नेक आत्माओं को ऊपर लेकर आया हूँ। तुम सबको काल लोक की जन्नत तथा सतलोक की जन्नत के सुख का भेद (अंतर) दिखाने लाया हूँ। मेरे सतलोक में मानव (स्त्री-पुरूष) रूप में हैं। किसी को कोई कष्ट नहीं है, सब आत्माएँ सुखी हैं। काल लोक के अंदर कोई सुखी नहीं है। वहाँ (काल के लोक में) जन्नत (स्वर्ग) में कम, जहन्नुम (नरक) में अधिक आत्माएँ रहती हैं। फिर कुत्ते, गधे आदि पशुओं के शरीरों में भी जन्म लेते हैं। पक्षियों, जन्तुओं, जल के जीवों का भी जन्म प्राप्त करके महाकष्ट उठाते हैं। अल्लाह कबीर जी ने उन नेक आत्माओं से कहा कि तुम अब नीचे जाओ। जो तुमने आँखों देखा है, वह सब सच-सच नीचे बताओ ताकि काल के जाल में फँसे भोले मानव को विश्वास हो कि काल ज्योति निरंजन समर्थ खुदा नहीं है। वे लोग जो तुम्हारी बातों पर विश्वास करके मुझ कबीर रब की इबादत जो मैंने तुम्हें बताई है, करके अपने निज स्थान (अपने घर सतलोक सुख सागर) में आकर सदा सुखी हो जाएँ।

मैंने तुमको पृथ्वी पर मानव जन्म दिया है। तुम नेक आत्माओं को चुना है। तुम मेरे संदेशवाहक (रसूल) बनकर आँखों देखा हाल वर्णन करो। इतना समझाकर उन आत्माओं को अल्लाह ताला कबीर जी ने वापिस धरती के ऊपर शरीर में छोड़ा। वे शरीर में प्रविष्ट हुए तथा सतपुरूष (कादिर अल्लाह) के रसूल बने व यथार्थ ज्ञान जो आँखों देखा तथा अल्लाह ताला ने बताया यानि उनकी आत्मा में डाला, वह ज्ञान उन नेक आत्मा महात्माओं ने बोला-बताया तथा लिखवाया जो मेरे (रामपाल दास की) समझ में आया। आप सब धर्मों के मानव को फरमाया। अनेकों बार स्वयं अल्लाह ताला कबीर जी धरती पर रहकर कवियों की तरह आचरण करके अच्छी आत्माओं को मिले तथा उनको अपनी जानकारी बताई। उन नेक आत्माओं ने उस ज्ञान को माना। अपनी पहले वाली साधना त्यागकर उनके बताए अनुसार भक्ति करके अमर लोक (सतलोक) प्राप्त किया। वहाँ जाकर वे सुखी हैं। सदा वहाँ रहेंगे।

जो ज्ञान स्वयं अल्लाह ताला अपने मुख से बोलकर बताता है, लिखवाता है, वह कलाम-ए-कबीर (कबीर वाणी) यानि सूक्ष्मवेद कहा जाता है जिसमें सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान है। जिन आत्माओं को परमेश्वर (कादिर अल्लाह) मिला, उन्होंने जो आँखों देखा हाल व अल्लाह से सुना ज्ञान बताया व लिखवाया, वह सूक्ष्मवेद से दास (रामपाल दास) ने मिलाया, जाँचा तो शब्दा-शब्द सही मिला।

फुरकान (सत्य-असत्य) का निर्णय

प्रथम नबी बाबा आदम से लेकर अंतिम नबी मुहम्मद तक एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर (नबी) हुए हैं जो सब के सब काल (ज्योति निरंजन) की ओर से भेजे गए थे। हजरत मुहम्मद अंतिम नबी हुए हैं। इनके बाद नबी परम्परा समाप्त हो गई।

{कुरआन ज्ञान दाता ने भी कुरआन मजीद में सूरः अहजाब-33 आयत नं. 40 में बताया है :- (लोगों) मुहम्मद तुम्हारे (मर्दों) में से किसी के बाप नहीं हैं। मगर ये अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक (आखरी नबी) हैं और अल्लाह हर चीज का ज्ञान रखने वाला है।}

अल्लाह ताला (कादिर अल्लाह) स्वयं ही अपना नबी स्वयं बनकर भी धरती पर तथा सब आसमानों पर आता-जाता है यानि भ्रमण करके अपनी जानकारी बताता है। यथार्थ ज्ञान देता है। अल्लाह ताला कबीर जी अपने नबी तथा रसूल भी धरती पर भेजता है जो अल्लाह ताला की महिमा का ज्ञान बताते हैं। उनमें से कुछ काल ज्योति निरंजन द्वारा भ्रमित होकर काल का प्रचार व भक्ति करने लगते हैं। उनको सही दिशा देने स्वयं समर्थ परमात्मा (कादिर अल्लाह) धरती पर आता है। उनको साधु वेश में मिलता है। अध्यात्म ज्ञान चर्चा करके उनके ज्ञान को गलत सिद्ध करता है। फिर उनको अपना यथार्थ ज्ञान बताता है। भारत देश के काशी नगर (बनारस) में सन् 1398 से सन् 1518 तक जुलाहे की भूमिका करते हुए लाखों हिन्दू तथा मुसलमानों को

इबादत की सही विधि बताई। दोनों धर्मों के चौंसठ लाख व्यक्तियों को शरण में लिया। भक्ति की यथार्थ विधि बताई। उनको मोक्ष मार्ग पर लगाया। काशी में लीला करने के बाद दास (संत रामपाल) से पहले बारह पंथ कबीर नाम से चलाने के लिए नबी आए। परंतु उनको काल (शैतान) ने भ्रमित करके अपना ज्ञान ही उनके द्वारा फैलाया। उसी श्रृंखला में बारहवां पंथ संत गरीबदास जी का है। संत गरीबदास जी को संपूर्ण ज्ञान मिला, संपूर्ण भक्ति की विधि मिली। परंतु उनके द्वारा बताए ज्ञान को उस समय के व्यक्तियों ने अनसुना किया। उनके द्वारा बोली-लिखवाई वाणी का गलत अर्थ करके अनुयाई साधना व प्रचार करने लगे। परमेश्वर कबीर जी अपने प्यारे नबी गरीबदास जी के संपर्क में रहते थे। समय-समय पर दिशा-निर्देश देते रहते थे। संत गरीबदास जी मुक्ति पाकर सतलोक चले गए। उसी बारहवें पंथ में मुझ दास का आगमन हुआ। अब तेहरवां यानि अंतिम नबी व रसूल दास (संत रामपाल दास) भेजा है। दास ने कादिर अल्लाह के द्वारा दिया ज्ञान (सूक्ष्म वेद वाला) यथार्थ रूप से बताया है। काल ज्योति निरंजन ने सनातन धर्म (वर्तमान में हिन्दू धर्म) में भी अपने नबी (संदेश वाहक) भेजे हैं जिनकी जानकारी पढ़ें :-

आदि शंकराचार्य :- आदि शंकराचार्य जी का जन्म ईसा मसीह से पाँच सौ आठ (508) वर्ष पूर्व हुआ था।(उस समय कलयुग तीन हजार वर्ष बीत चुका था।) वे शंकर देवता (तमगुण शिव) के द्वीप (लोक) से काल की प्रेरणा से पृथ्वी के ऊपर जन्में थे। वे कुल बत्तीस (32) वर्ष जीवित रहे। असाध्य रोग से ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हुए। आठ वर्ष की आयु से ही प्रवचन करने लगे थे। थोड़े से जीवन काल में अद्‌भुत कार्य कर गए। भारत में चारों दिशाओं में चार शंकर मठों (मंदिरों) का निर्माण करवाया। श्री राम चन्द्र, श्री कृष्ण चन्द्र यानि श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की भक्ति करने को कहा। पाँच देवताओं (पंच देव) की पूजा पर दृढ़ किया। विशेषकर शंकर देवता व देवी पार्वती को अधिक महत्व दिया। परंतु हिन्दू धर्म में सर्व देवी-देवताओं की पूजा का प्रचलन व मंदिरों को महत्व, मूर्ति पूजा करना आदि शंकराचार्य जी की देन है।

आदि शंकराचार्य जी से पहले यह सनातन धर्म था। वेदों व गीता को अधिक महत्व दिया जाता था। आदि शंकराचार्य के पश्चात् अठारह पुराणों व गीता को ही जन-साधारण (सामान्य हिन्दू) अधिक पढ़ने लगा। इनका हिन्दी टीका (अनुवाद) होने के पश्चात् प्रत्येक शिक्षित हिन्दू भक्त आत्मा ने पुराणों को पढ़कर श्री ब्रह्मा जी (रजगुण), श्री विष्णु जी (सतगुण) तथा श्री शिव जी (तमगुण) तथा देवी दुर्गा, लक्ष्मी व पार्वती देवियों तथा अन्य काली, वैष्णों देवी, ज्वाला देवी जी आदि की महिमा को जाना। इस कारण से इनकी पूजा का प्रचलन शीघ्रता से बढ़ा है।

☛ हजरत मुहम्मद :- नबी मुहम्मद जी का जन्म ईसा मसीह के जन्म से 571 वर्ष पश्चात् 20 अप्रैल 571 ईशवी को यहूदी समुदाय में अरब के कुरैश घराने में हुआ। ये भी श्री शंकर (शिव तमगुण) देवता के द्वीप (लोक) से काल प्रेरणा से धरती के ऊपर जन्में थे। श्री शंकर जी के लोक से इनकी मदद के लिए बारह हजार आत्मा आई थी जो उसी क्षेत्र में जन्मी थी। उन्होंने सबसे पहले इस्लाम धर्म कबूल किया था। उनको देखकर अन्य व्यक्तियों ने भी मुसलमान बनना शुरू किया था। मुहम्मद जी पूर्व जन्म की भक्तियुक्त आत्मा थे। उन्हीं संस्कारों के कारण उनमें अल्लाह की भक्ति करने की प्रबल प्रेरणा थी। जिस कारण से वे घर-गाँव से दूर एक पहाड़ में बनी हीरे की गुफा (गार) में एकान्त स्थान पर परमात्मा का चिंतन किया करते थे। सुनियोजित योजना के तहत काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपना देवता (फरिश्ता) जिब्राइल भेजकर अपने स्तर का ज्ञान हजरत मुहम्मद जी को डरा-धमका कर दिया जो कुरआन मजीद (शरीफ) के रूप में लिखा गया है। जिस ज्ञान में पुण्य करने की विधि नाममात्र है। पाप करने का प्रावधान भरा है। नेक काम करने की राय अच्छी है, परंतु पाप करने (जब्ह करना, कुर्बानी देना आदि) की राय गलत है। धर्म करने के लिए केवल (जकात) दान करना है, वह भी निर्धन मुसलमानों को। यह साधना तथा धार्मिक क्रिया अधूरी है।

सूक्ष्मवेद में धर्म-कर्म करने की संपूर्ण तथा श्रेष्ठ विधि बताई है। पाँच यज्ञ करना, भूखों को भोजन खिलाना, असहायों की मदद करना। खुदा के नाम का जाप करना। इसी विधि से पूर्ण मोक्ष व श्रेष्ठतम् जन्नत यानि सतलोक मिलेगा। सतलोक प्राप्त करना ही मानव जीवन का मूल मकसद है।

सूक्ष्मवेद में अल्लाह ताला कबीर जी ने बताया है कि यदि मानव (स्त्री-पुरूष) बिना गुरू के कोई धार्मिक अनुष्ठान करता है, वह व्यर्थ है। उससे पूर्ण लाभ नहीं मिलता। बिना गुरू बनाए या गलत गुरू के निर्देश से किसी व्यक्ति को रूपया या अन्य वस्तु सहायता रूप में देता है तो अगले जन्म में जब कभी मानव होगा, तब वह सहयोग लेने वाला उस सहयोग देने वाले को लौटाएगा। यदि मानव जन्म (सहयोग लेने वाले को) नहीं मिला तो पशु बनकर उस सहयोग की राशि (धन) को लौटाएगा। जैसे बैल, ऊँट, गाय, भैंस आदि जो मानव के काम आने वाले पशु बनकर पूरे करेगा यानि कर्ज उतारेगा।

मुसलमान धर्म के किए जाने वाले जकात (दान) का यह फल है। नबी मुहम्मद को जकात के लिए दिया रूपया या अन्य भोजन सामग्री या कपड़ा आदि का फल पृथ्वी पर ही अगले जन्म में लाभ मिलता है। जन्नत में नहीं जाया जा सकता है। कर्मों के संस्कार से पित्तर योनि मिलती है तथा पित्तर लोक में स्थान मिलता है जिसे वहाँ रहने वाले जन्नत मानते हैं। बाबा आदम से नबी ईसा मसीह तक सब ऊपर पित्तर लोक में गए हुए थे जिनको नबी मुहम्मद जी ने ऊपर के लोकों में देखा था। पित्तरों के लिए प्रत्येक देवता के लोक में पित्तर लोक बना है। प्रत्येक लोक में जन्नत (स्वर्ग) यानि होटल बने हैं। जो साधना तथा इबादत हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक के अनुयाई (Followers) कर रहे हैं, उससे जन्नत प्राप्त नहीं होता। पित्तर लोक में कुछ समय ही रहने का बनता है। पाप अधिक होने से जहन्नुम का समय अधिक बनता है। नमाज यानि आरती (स्तुति) करना ज्ञान यज्ञ कहा जाता है। इससे भी पित्तर लोक में स्थान मिलता है। रोजा (व्रत) करने से कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं है। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा है। इसमें सूर्योदय (Sunrise) से पहले खाना होता है। फिर सूर्यास्त (Sunset) तक कुछ नहीं खाना होता है। सूरज छिपने के बाद खाना खा सकते हैं। परंतु शाम को मुर्गी, बकरा, गाय, भैंस आदि को मारना, उसका माँस खाना महापाप है। रोजे से अध्यात्म लाभ कुछ नहीं है। जब्ह करने का महापाप भी अवश्य लगता है।

विशेष :- जब हजरत मुहम्मद जी आसमानों की यात्रा पर गए, तब पर्दे के पीछे से ज्योति निरंजन खुदा ने पाँच वक्त नमाज, रोजे (व्रत) रखना तथा अजान लगाना (बंग देना) कहा था। नमाज की सँख्या तो बताई थी। रोजों की सँख्या नहीं बताई थी। हजरत मुहम्मद जी ने अपनी सूझ-बूझ (नेक बुद्धि) से रोजों की सँख्या प्रत्येक महीने में तीन (Three) रोजे रखने को कहा था जो बहुत ही उत्तम विचार था। एक वर्ष में छत्तीस (Thirty six) रोजे हो जाते हैं। रोजे (व्रत) रखने वाले को न तो दैनिक कार्य में बाधा आती थी, न सेहत पर बुरा असर पड़ता था। बाद में काल ब्रह्म ने लगातार तीस दिन रोजे करने का आदेश दे दिया। भक्त तो भक्त ही होता है। वह तो खुदा के लिए कठिन से कठिन साधना करने से भी पीछे नहीं रहता। मुसलमानों ने वह भी शुरू कर दिए। वर्तमान में कर रहे हैं।

<u>नाम का जाप</u> :- मुसलमान अल्लाह अकबर नाम पुकारते हैं जो कबीर जी का नाम है। अल्लाह माने परमेश्वर तथा अकबर नाम कबीर है। केवल बोलने का अंतर है। जैसे अरबी भाषा में स्कूल को अस्कूल तथा स्थान को अस्थान बोलते हैं। इसी प्रकार कबीर को अकबीर बोलते हैं। फिर स्थान-स्थान की भाषा में अंतर होता है। जिस कारण से अल्लाह कबीर को अल्लाह अकबर बोला जाता है। मुसलमान अल्लाह अकबर पुकारते समय चिंतन करते हैं कि हम बड़े खुदा (अल्लाह अकबर) को पुकार रहे हैं। कबीर का अर्थ अरबी भाषा में बड़ा है। कबीर उसी बड़े (कादिर) अल्लाह के शरीर का नाम है। कबीर का अर्थ बड़ा भी है। जैसे ''मन्सूर'' का अर्थ ''प्रकाश'' (Light) है। ''मूंशर'' आदमी का नाम भी रखा जाता है। इसीलिए कुरआन मजीद में जहाँ परमेश्वर के विषय में प्रकरण है, वहाँ कबीर का अर्थ बड़ा न करके ''कबीर'' ही करना उचित है। कबीर परमेश्वर की शरण में गुरू जी से दीक्षा लेकर जाप करने से इस नाम का जाप करने वाले को लाभ मिलता है। परंतु अकेले कबीर (अकबीर) बोलने से मोक्ष लाभ नहीं मिलता। संसार में कुछ कार्य सिद्ध हो जाते हैं। जैसे युद्ध में विजय, मुकदमों में न्याय आदि-आदि। इसके साथ-साथ सतनाम का (जो दो अक्षर का होता है, उसका) जाप करने से पूर्ण लाभ मिलता है। सूरः अश् शूरा-42 की आयत नं. 2 में अरबी भाषा की वर्णमाला के तीन अक्षर हैं :- ''अैन, सीन, काफ'' जिनको हिन्दी में अ, स, क, लिखा जाता है। सतनाम के दो अक्षरों का संकेत अैन (अ) तथा सीन (स) से है। ''अ'' सतनाम के प्रथम नाम का पहला (हरफ) अक्षर है। ''स'' सतनाम के दूसरे नाम का पहला अक्षर (हरफ)

है। जिन अैन, सीन, काफ का अर्थ किसी मुसलमान को ज्ञात नहीं है। यह सतनाम सूक्ष्मवेद में लिखा है यानि ये दो नाम पूरे लिखे हैं तथा परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं नबी रूप में प्रकट होकर अच्छी आत्माओं को (जिन्होंने उनके ज्ञान पर विश्वास किया यानि इमान लाए, उनको) दीक्षा में दिया है। वही नाम दास (रामपाल दास) को मेरे गुरूदेव जी ने दिया है जिसको दीक्षा में दास अपने अनुयाइयों को देता है। सारनाम इनसे भिन्न है। वह भी स्मरण करना होता है जो दीक्षा में दिया जाता है।

<u>अठासी हजार ऋषि तथा तेतीस करोड़ देवता</u> :- अठासी हजार ऋषि तथा तेतीस करोड़ देवता भी काल (ज्योति निरंजन) के नबी (संदेशवाहक) रहे हैं। इन्होंने भी वेदों व गीता को ठीक से न समझकर इनके विपरीत अपना अनुभव बताया है। उसकी अठारह पुराण बनाई हैं तथा ग्यारह उपनिषद बनाए हैं जिनमें कुछ ठीक कुछ गलत ज्ञान भरा है।

<u>श्री कृष्ण जी व श्री रामचन्द्र जी</u> :- श्री विष्णु (सतगुण) ही श्री रामचन्द्र तथा श्री कृष्ण चन्द्र जी के रूप में जन्मा था जो काल ब्रह्म का पुत्र है। जिस प्रकार नबी मुहम्मद जी को प्रेरित करके दुष्ट लोगों को ठीक करने के लिए लड़ाईयाँ करवाई, इसी प्रकार श्री विष्णु जी को प्रेरित करके कंस, केशी, चाणूर व हिरण्यकशिपु आदि-आदि दुष्ट व्यक्तियों का अंत करवाया। श्री विष्णु जी के कुल नौ (Nine) तथा चौबीस (Twenty Four) अवतार काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) के भेजे पृथ्वी पर जन्में माने गए हैं। एक अवतार अभी पृथ्वी पर आना शेष है। इनमें मुख्य श्री रामचन्द्र व श्री कृष्ण को माना जाता है। इन सब उपरोक्त काल के नबियों ने काल का साम्राज्य स्थापित किया है। रावण, कंस, केशी, चाणूर, शिशुपाल आदि को मारा जो जनता के लिए दुःखदाई थे। जिस कारण से सब जनता इन्हीं (श्री रामचन्द्र तथा श्री कृष्ण चन्द्र) को पूर्ण परमात्मा मानकर पूजने लगी। ये पूर्ण परमात्मा (कादिर अल्लाह) नहीं हैं। यह काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) का फैलाया जाल है। जब तक ऊपर बताए तीनों नामों (कुरआन की सूरः अश् शूरा-42 आयत नं. 2 वाले अैन. सीन. काफ. जो गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ॐ तत् सत'' कहे हैं) का जाप मुझ (रामपाल दास) से दीक्षा लेकर नहीं किया जाएगा, तब तक जीव सतलोक वाली जन्नत (स्वर्ग) में सदा नहीं रह सकता। जन्म-मृत्यु व अन्य प्राणियों के शरीरों में कष्ट सदा बना रहेगा। नरक में भी कष्ट भोगना पड़ेगा।

ऊपर मुसलमान धर्म की पूजा का वर्णन किया है। {रोजा, जकात, नमाज, अजान (बंग)} इनसे जन्नत के साथ बने पित्तर लोक में स्थान मिलता है। जन्म-मृत्यु का चक्र भी सदा बना रहेगा।

<u>हिन्दू धर्म में शास्त्रों में बताई साधना</u> :- जैसा कि इस ''मुसलमान नहीं समझे ज्ञान कुरआन'' पुस्तक के प्रारंभ में बताया है कि जिस अल्लाह ने कुरआन का ज्ञान हजरत मुहम्मद जी को दिया, उसी ने ''जबूर'' का ज्ञान हजरत दाऊद जी को दिया। ''तोरात'' का ज्ञान हजरत मूसा जी को तथा ''इंजिल'' का ज्ञान हजरत ईसा जी को दिया। उसी अल्लाह (काल ब्रह्म) ने इनसे पहले चारों वेदों का ज्ञान देवता ब्रह्मा जी को दिया। देवता ब्रह्मा जी ने अपनी संतान ऋषियों को दिया। चारों वेदों का ज्ञान सूक्ष्मवेद से चुना हुआ है। इनमें जितना ज्ञान है, वह सूक्ष्मवेद वाला है, परंतु अधूरा है। ऋषियों ने वेदों को पढ़ा, परंतु अर्थ ठीक से न समझ सके। जिस कारण से अपने आप अपनी बुद्धि अनुसार अर्थ करके साधना करने लगे तथा जनता को वही भ्रमित ज्ञान बताया। गलत अर्थ करके ऋषियों, देवताओं ने जो साधना की। उससे जो उपलब्धि हुई, उसके अठारह पुराण बना दिए। जब महाभारत का युद्ध होने जा रहा था, उस समय अर्जुन नामक योद्धा (पांडवों में से एक) युद्ध करने से मना कर देता है। यदि अर्जुन युद्ध करने से मना कर देता तो वह युद्ध नहीं होता। परंतु काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) यह युद्ध करवाना चाहता था। इस कारण से अर्जुन को अध्यात्म ज्ञान के द्वारा युद्ध के लिए तैयार करने लगा। परमेश्वर कबीर जी की शक्ति रूपी रिमोट (Remote) से अर्जुन प्रश्न पर प्रश्न करता गया। काल श्री कृष्ण में प्रवेश करके वेदों वाले ज्ञान से संक्षिप्त में उत्तर देता रहा। काल ने विचार किया कि अर्जुन को कुछ याद तो रहना नहीं। इसलिए वेदों वाला ज्ञान उसे बताया। जिस कारण से चारों वेदों वाला ज्ञान जो अठारह हजार श्लोकों में है, वह केवल सात सौ श्लोकों में सारांश रूप में बता दिया जिसको श्रीमद्भगवत गीता कहा जाता है। {परंतु शब्द आकाश का गुण है जो नष्ट नहीं होता। जिस कारण से वेद व्यास ऋषि (कृष्ण द्वैपायन) द्वारा दिव्य दृष्टि से जानकर महाभारत ग्रंथ में लिखा गया जो श्रीमद्भगवत गीता के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार कुरआन मजीद का ज्ञान हजरत मुहम्मद के माध्यम से काल ब्रह्म ने बोला। उसको अन्य मुसलमानों ने सुना और याद

रखा। मुहम्मद जी की मृत्यु के कई वर्ष पश्चात् उन मुसलमानों से सुनकर लिखा गया था। कुछ आयतें पत्थरों के ऊपर खोदकर लिखी गई थी। सबको इकट्ठा करके पवित्र कुरआन मजीद बनाई गई।}

पूर्ण ब्रह्म (कादिर अल्लाह) कबीर जी ने अपनी शक्ति से काल ब्रह्म से वेद ज्ञान का सार बुलवाया। समर्थ उसी का नाम है जिसके समक्ष सब विवश हों। जो वह चाहे, वह करवा सके। श्रीमद्भगवत गीता वाला ज्ञान मानव (स्त्री-पुरूष) के लिए वरदान है। भले ही यह अधूरा है। इसमें माँस खाने व अन्य व्यसन (तम्बाकू सेवन) करना, शराब आदि नशीले पदार्थ सेवन करने का प्रावधान नहीं है। काल ब्रह्म ने जैसे कुरआन में अपनी भक्ति (इबादत) करने को भी कहा है तथा अपने से अन्य सारी कायनात (सृष्टि) के पैदा करने वाले कबीर अल्लाह की भक्ति (इबादत) करने को कहा है। उस समर्थ की जानकारी किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी) संत से जानने के लिए कहा है। कादिर अल्लाह कबीर जी ने कुरआन ज्ञान देने वाले से भी यही बुलावाया है। इसी प्रकार गीता में भी उस परम अक्षर ब्रह्म (कादिर अल्लाह) के विषय में ज्ञान तत्त्वदर्शी संत (बाखबर) से जानने के लिए कहा है।

{जो भक्ति की पूजा की विधि बाइबल (जिसमें जबूर, तोरात तथा इंजिल को इकट्ठा जिल्द किया है, उस) में तथा कुरआन में काल ब्रह्म ने अपनी ओर से बताई है। वेदों और गीता वाले ज्ञान को दोहराना उचित नहीं समझा क्योंकि वह पहले बताया जा चुका था।}

हिन्दू धर्म की पूजा :- हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) के सद्ग्रन्थों में, वेदों तथा गीता में भक्ति विधि स्वर्ग (स्वर्ग), महास्वर्ग (बड़ी जन्नत) में जाने की सही है, परंतु पूर्ण मोक्ष प्राप्ति की नहीं है। जिस कारण से जन्म-मृत्यु का चक्र साधक का बना रहता है। वेदों व गीता वाली साधना एक ही है क्योंकि श्रीमद्भगवत गीता में वेदों वाला ही ज्ञान संक्षेप में कहा है। अधिकतर हिन्दू पित्तर पूजा, भूत पूजा आदि की करते हैं। देवताओं (शिव जी तथा विष्णु जी) की पूजा भी करते हैं। गीता अध्याय 9 श्लोक 25 में गीता ज्ञान देने वाले प्रभु ने स्पष्ट किया है कि जो पित्तर पूजा करते हैं, वे पित्तर योनि प्राप्त करके पित्तर लोक में चले जाते हैं। भूत (प्रेत) पूजा करने वाले भूत बनकर भूतों में रहते हैं। कुछ शिव लोक में रहते हैं जो शिव जी के उपासक होते हैं। प्रत्येक देवता के लोक में पित्तर लोक है। उसी में भूत व गण तथा पित्तर रहते हैं। फिर इसी गीता के श्लोक (9/25) में बताया है कि जो देवताओं की पूजा करते हैं, वे उसी देवता के लोक में चले जाते हैं। वहाँ भी पित्तर लोक में रहते हैं। पित्तर लोक ऐसा है जैसे अधिकारियों (Officers) की कोठियों से दूर नौकरों के निवास होते हैं। जो सुख-सुविधा अधिकारियों को होती है, वह नौकरों को नहीं होती। इसी प्रकार जन्नत में जो सुविधा मुख्य देवता की होती है, वह पित्तरों को नहीं होती। गीता ज्ञान दाता ने आगे इसी गीता के श्लोक (9/25) में बताया है कि जो मेरी पूजा (काल ब्रह्म की पूजा) करते हैं, वे मुझे प्राप्त होते हैं यानि ब्रह्मलोक में चले जाते हैं। गीता के अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट किया है कि जो ब्रह्मलोक (काल की बड़ी जन्नत) में चले जाते हैं। उनको वहाँ से पृथ्वी पर आना पड़ता है। उनका भी जन्म-मृत्यु का चक्र कभी समाप्त नहीं होता।

गीता तथा वेदों में पूजा का वर्णन :- गीता अध्याय 3 श्लोक 10-15 में यज्ञ करने को कहा है। यज्ञ का अर्थ धार्मिक अनुष्ठान है। मुख्य यज्ञ पाँच हैं :- 1. धर्म यज्ञ, 2. ध्यान यज्ञ, 3. हवन यज्ञ, 4. प्रणाम यज्ञ, 5. ज्ञान यज्ञ। यज्ञों के करने का शास्त्रों में इस प्रकार वर्णन है :-

सर्व प्रथम गुरू से दीक्षा ली जाती है। फिर उस गुरू जी की आज्ञा से उनके दिशा-निर्देशानुसार यज्ञ करना लाभदायक है।

1. धर्म यज्ञ :- धार्मिक अनुष्ठान करके साधु, भक्तों को भोजन करवाना तथा यात्री जो दूर से आए हों और उनको कहीं खाने की व्यवस्था न मिले, उनको तथा जो निर्धन हैं, भूखे हैं, उनको मुफ्त भोजन खिलाना। जरूरतमंदों को मौसम अनुसार वस्त्र मुफ्त देना, प्राकृतिक आपदा में पीड़ितों को भोजन, वस्त्र, औषधि (Medicine) आदि-आदि मुफ्त बाँटना। जहाँ पर पानी पीने की व्यवस्था नहीं, गुरू जी की आज्ञा से पानी पीने के लिए व्यवस्था करना यानि प्याऊ बनवाना आदि-आदि धर्म यज्ञ हैं।

2. ध्यान यज्ञ :- परमात्मा की याद पूरी कसक के साथ दिन-रात हृदय में बनी रहे जिससे मानव पाप कर्म करने से बचा रहेगा। सनातन धर्म (वर्तमान में हिन्दू धर्म) के ऋषिजन हठ योग करके ध्यान लगाते थे। परंतु वेद तथा गीता में हठ योग करके घोर तप करना गलत कहा है। सूक्ष्मवेद में ध्यान दैनिक कार्य करते हुए करने को

कहा है। गीता व वेद भी यही बताते हैं। गीता अध्याय 8 श्लोक 7 में कहा है कि हे अर्जुन! तू युद्ध भी कर तथा मेरा स्मरण भी कर।

3. हवन यज्ञ :- रूई की बाती बनाकर उसे कटोरे में रखकर गाय या भैंस का घी डालकर प्रज्वलित करना हवन यज्ञ कहलाता है। सूक्ष्मवेद तथा चारों वेदों में ज्योति जलाकर हवन यज्ञ करने को कहा है।

4. प्रणाम यज्ञ :- हाथ जोड़कर सिर झुकाकर नमस्कार (सलाम) करना तथा सजदा करना अर्ध (Half) प्रणाम यज्ञ है। दण्डवत् प्रणाम जो पृथ्वी पर लंबा लेटकर की जाती है, यह सम्पूर्ण प्रणाम यज्ञ है। सतगुरू को तथा कादिर अल्लाह (समर्थ परमेश्वर) को दण्डवत् प्रणाम करना चाहिए जिसका पूर्ण लाभ मिलता है।

5. ज्ञान यज्ञ :- धर्म ग्रंथों को पढ़ना, आरती यानि नमाज करना, सत्संग सुनना व सत्संग सुनाना, खुदा की चर्चा करना ज्ञान यज्ञ कही जाती है।

यज्ञों से लाभ

यदि केवल उपरोक्त यज्ञ ही की जाएँ तो उस साधक को उसके अनुष्ठानों के अनुसार स्वर्ग (जन्नत) का सुख कुछ समय मिलता है। जन्नत में सुख भोगकर पाप कर्मों का फल नरक (जहन्नुम) में भी भोगना पड़ता है। कुछ पाप ऐसे हैं जिनका फल पृथ्वी के ऊपर पशु, पक्षी, जन्तु आदि के जीवनों में भोगना पड़ता है। मानव शरीर भी मिल सकता है। यदि अधिक यज्ञ की होती हैं तो राजा भी बन जाता है। परंतु जन्म-मृत्यु का चक्र कभी समाप्त नहीं हो सकता। स्वर्ग व राज का समय बहुत कम होता है।

नाम जाप करने का लाभ :-

यदि इन यज्ञों के साथ यथार्थ नाम का भी जाप किया जाए तो फल अधिक व अच्छा मिलता है।

यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 में ओम् (ॐ) नाम का जाप करने को कहा है। गीता वेदों का ही सार रूप है। गीता में भी अध्याय 8 श्लोक 13 में भी ओम् (ॐ) नाम का जाप करने को कहा है। वेदों तथा गीता में ओम् नाम का जाप तथा ऊपर बताई यज्ञों वाली साधना करने को कहा गया है।

विशेष :- यज्ञों के साथ-साथ ओम् (ॐ) नाम का जाप करने वाला यदि आजीवन साधना करता हुआ शरीर त्याग कर जाता है तो उसे महास्वर्ग (बड़ी जन्नत) यानि ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। उसका सुख अधिक समय तक मिलता है। परंतु नरक (जहन्नुम) में भी कष्ट उठाना होगा तथा जन्म-मृत्यु का चक्र सदा रहेगा। पशु, पक्षी तथा अन्य जीव जन्तुओं के शरीरों में भी कष्ट उठाना पड़ता है।

आदि सनातन पंथ यानि यथार्थ कबीर पंथ में पूजा

आदि सनातन पंथ में सनातन धर्म (वर्तमान के हिन्दू धर्म) के उपरोक्त धर्मग्रन्थों (चारों वेदों व गीता) वाली साधना (ऊपर बताई पाँचों यज्ञों) के साथ गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में बताए तीन मंत्रों (ओम् तत् सत्) का जाप भी करना होता है। जिस साधना से जन्म व मृत्यु का चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाता है तथा सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग (सतलोक) प्राप्त होता है। जहाँ पर जन्नत ही जन्नत है। जहन्नुम (नरक) नहीं है। यह भक्ति बताने परमेश्वर (कादिर अल्लाह) स्वयं पृथ्वी पर व काल लोक के अन्य लोकों में आता है। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में तीन मंत्र (ॐ (ओम्), तत् तथा सत्) हैं :-

मूल पाठ :- ॐ (ओम्), तत्, सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणाः तेन वेदा च यज्ञाः च विहिताः पुरा।।23।।

सरलार्थ :- गीता में कहा है कि ओम् (ॐ), तत्, सत्, यह (ब्रह्मणः) सच्चिदानंद घन ब्रह्म यानि समर्थ परमेश्वर सृष्टिकर्ता की साधना का तीन नाम का मंत्र है। (त्रिविद्यः स्मृतः) इसकी स्मरण की विधि तीन प्रकार से बताई है। सृष्टि के प्रारंभ में आदि सनातन पंथ के (ब्राह्मणाः) विद्वान साधक इसी आधार से साधना करते थे। यह मंत्र सूक्ष्मवेद में स्पष्ट लिखा है। गीता में ओम् स्पष्ट है, शेष दो सांकेतिक (Code words में) हैं। {वास्तव में ''ॐ'' भी सांकेतिक है।''ओम्'' यह स्पष्ट नाम है। इसका सांकेतिक (Code) ''ॐ'' है। काल ब्रह्म ने इसे अपनी साधना का बताया है। इसलिए ऋषियों ने इसको समझ लिया कि ''ॐ'' कोडवर्ड (सांकेतिक शब्द) ओम् नाम है।} सूक्ष्मवेद का ज्ञान स्वयं परमेश्वर जी ने बताया था। उसी सूक्ष्मवेद के अंदर लिखी साधना की सम्पूर्ण विधि के आधार से ब्राह्मण यानि साधक बने तथा उसी सूक्ष्मवेद के आधार से (यज्ञाः) धार्मिक अनुष्ठानों का विधान बना।

चारों वेद उसी सूक्ष्मवेद का अंश (अधूरा ज्ञान) हैं। जो काल ब्रह्म (गीता ज्ञान दाता, कुरआन व बाइबल के ज्ञान दाता) ने जान-बूझकर अधूरा (Incomplete) दिया है ताकि सब मानव मेरे जाल में फँसे रहें। ऋषिजन चारों वेदों के अधूरे ज्ञान को सम्पूर्ण ज्ञान जानकर इसी अनुसार साधना करते थे। कोई भी काल जाल से बाहर नहीं हुआ। जन्म-मृत्यु का चक्र किसी का समाप्त नहीं हुआ। जिस कारण से ऋषियों (साधकों) ने घोर तप हठयोग करने प्रारंभ किए जिससे उनमें सिद्धियाँ प्रकट हो गई। उन सिद्धियों का प्रदर्शन करके प्रसिद्धि प्राप्त करके जनता में पूज्य बन गए। स्वर्ग, नरक, पशु-पक्षियों आदि चौरासी लाख प्रकार की योनियों में कष्ट उठा रहे हैं। जो सूक्ष्म वेद सृष्टि के प्रारंभ में बताया था, वह वर्षों तक चला। फिर लुप्त हो गया। कारण प्राकृतिक परिस्थितियाँ बनती हैं। फिर वेदों का ज्ञान भी प्रचलन में नहीं रहा। ऋषिजन भी वेदों वाली साधना त्यागकर हठ योग करके सिद्धियाँ प्राप्त करके एक-दूसरे से बढ़कर शक्ति दिखाने की होड़ (स्पर्धा) में लगे रहे क्योंकि वेदों वाली साधना से प्रभु प्राप्ति नहीं होती।

जिस प्रभु (काल ब्रह्म) को इष्ट मानकर ऋषि पूजा करते थे या वर्तमान में कर रहे हैं। उसने किसी को दर्शन न देने की प्रतिज्ञा कर रखी है (कसम खा रखी है)। इसलिए ऋषियों ने परमात्मा निराकार मान लिया, जबकि चारों वेदों में परमात्मा को साकार मनुष्य के समान स्वरूप (शरीर) वाला लिखा है। (पाठक इसी पुस्तक में वेदों के मंत्रों की फोटोकापी अध्याय ''सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान किसने बताया'' में देखें।) इसी प्रकार बाइबल तथा कुरआन मजीद में भी परमेश्वर को साकार मनुष्य जैसे स्वरूप (शरीर) वाला लिखा है। सब बाइबल व कुरआन पढ़ने वाले भी परमात्मा को (बेचून) निराकार मानते हैं। वे ग्रन्थों को ठीक से नहीं समझे हैं। काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने वेदों व गीता में तो अपनी साधना का नाम ओम् तो स्पष्ट बता दिया, परंतु पूर्ण ब्रह्म (कादिर खुदा) की प्राप्ति वाला Code words (सांकेतिक शब्दों) में ॐ, तत्, सत् लिखकर छोड़ दिया। {''ॐ'' यह अक्षर वास्तव में ''ओम्'' है। यहाँ पर (गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में) अस्पष्ट ''ॐ'' लिख दिया जबकि गीता अध्याय 8 श्लोक 13 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 में स्पष्ट ओम् लिख दिया।} इसी (काल ब्रह्म) ने कुरआन की सूरः अश् शूरा-42 में आयत नं. 2 में भी तीनों शब्द सांकेतिक (Code words) बताए हैं। कुरआन में अपना मंत्र भी सही नहीं बताया। वेदों में यह तो लिखा है कि यथार्थ भक्ति के नामों को जो सांकेतिक हैं, परम अक्षर ब्रह्म यानि कादिर अल्लाह कबीर ही आविष्कार करके बताता है। उस कादिर अल्लाह कबीर द्वारा बताए गुप्त नामों के यथार्थ मंत्र मुझ दास (रामपाल दास) के पास हैं। मुझे इन तीनों नामों का ज्ञान करवाया है जो इस प्रकार हैं :-

''ऐन'' यह अरबी भाषा की वर्णमाला का अक्षर है जो देवनागरी का ''अ'' है। ''सीन'' यह अरबी भाषा की वर्णमाला का अक्षर है जो देवनागरी का ''स'' है तथा ''काफ'' यह अरबी वर्णमाला का अक्षर है जो देवनागरी का ''क'' है। जैसे ओम् मंत्र का पहला अक्षर ''अ'' है। इसलिए ''ऐन'' अक्षर ''ओम्'' का सांकेतिक है।

तत् :- यह सांकेतिक मंत्र गीता में लिखा है। इसके यथार्थ मंत्र का पहला अक्षर ''स'' है। इसलिए ''सीन'' अक्षर उसी की ओर संकेत करता है तथा जो तीसरा ''सत्'' मंत्र है, उस यथार्थ मंत्र का पहला अक्षर ''क'' है। इसलिए ''काफ'' अक्षर उसी की ओर संकेत है। वास्तव में ॐ भी सांकेतिक है। इसका यथार्थ मंत्र (नाम) ओम् है। परंतु ''ॐ'' अक्षर का ज्ञान भी कादिर खुदा कबीर ने ऋषियों को सतयुग में सत सुकृत ऋषि के रूप में प्रकट होकर बताया था कि ''ॐ'' अक्षर ''ओम्'' है, इसी को ''प्रणव'' भी कहा जाता है।

कुरआन में सूरः अश् शूरा-42 आयत नं. 2 में ऐन, सीन, काफ, गीता अध्याय 17 श्लोक 23 के ओम्, तत्, सत् वाले ही हैं। इस तीन नाम के मंत्र के जाप से सब पाप नाश हो जाते हैं। कर्म का दंड समाप्त हो जाता है। अकाल मृत्यु से बचाव होता है। रोग, सोग (चिंता) समाप्त हो जाते हैं। इनका जाप करने वाला मर्यादित भक्त इस काल के लोक में भी सुख का जीवन जीता है तथा मृत्यु के तुरंत बाद उस सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग (सतलोक सुख सागर) में चला जाता है जहाँ नरक (जहन्नुम) नहीं है। जहाँ वृद्धावस्था तथा मृत्यु नहीं आती। सदा सुखी रहता है। वहाँ सतलोक में ऐसी ही सृष्टि (संसार) है। यह नाशवान है, वह सतलोक अविनाशी है।

विशेष :- जिन ऋषियों व अन्य साधकों ने सनातन धर्म वाली जो गीता व वेदों में वर्णित ऊपर बताई साधना की, वे ब्रह्मलोक (काल की बड़ी जन्नत) यानि महास्वर्ग में चले जाते हैं। जिन साधकों ने आदि शंकराचार्य द्वारा बताई श्री विष्णु जी तथा श्री शंकर जी आदि पाँच देव की पूजा की तथा अन्य देवी-देवताओं

की पूजा की, वे उन देवताओं के लोक में बनी जन्नत (स्वर्ग) में जाते हैं। फिर तुरंत नरक में जाते हैं। फिर पृथ्वी पर अन्य जन्म धारण करके दुःखी रहते हैं तथा पित्तर, भूत आदि का जीवन भी भोगते हैं। जो महास्वर्ग (ब्रह्म लोक) में चले जाते हैं, उनका मोक्ष समय अधिक तो है परंतु वहाँ से भी पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ता है। पित्तर, भूत आदि के जन्म, पशु-पक्षी व जीव-जंतुओं के जन्मों में भी कष्ट भोगते हैं। नरक में भी अवश्य जाते हैं।

जो भक्तजन बाइबल (तोरात, जबूर तथा इंजिल) तथा कुरआन के ज्ञान तक सीमित हैं तथा इन पुस्तकों में बताई साधना करने वाले तो जन्नत में भी नहीं जा सकते।

उदाहरण :- बाबा आदम जी इनके सबसे ऊँचे नबी थे। जो साधना आदम जी ने की, वही इबादत हजरत आदम की संतान यानि हजरत आदम से अन्य हजरत मुहम्मद तक के अनुयाइयों तक कर रहे हैं। हजरत आदम जन्नत तथा जहन्नुम यानि स्वर्ग तथा नरक के मध्य वाले स्थान पर बैठा था। वह स्थान पित्तर लोक कहा जाता है। नबी मुहम्मद जी ने आँखों देखा और बताया कि बाबा आदम जी कभी हँस रहे थे, कभी रो रहे थे। बैचेनी का जीवन जी रहे थे। इससे स्पष्ट है कि वह स्थान स्वर्ग (जन्नत) नहीं हो सकता, जहाँ सुख तथा दुःख दोनों हैं।

बात हजरत मुहम्मद (सल्ल.) से चली थी कि वे बाखबर नहीं हैं तो संत रामपाल जी महाराज जोकि एक गैर-मुस्लिम (दूसरे धर्म से संबंधित शख्स) हैं, किस प्रकार बाखबर साबित होते हैं?

अब मुसलमान भाई-बहन स्वयं जान लें कि संत रामपाल जी बाखबर हैं या नहीं। सच्चे नबी हैं या नहीं? हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक तथा सब ऋषि व देवता, श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण आदि किस-किस स्तर के नबी (संदेश वाहक) थे।

कादिर कबीर खुदा द्वारा दिया ज्ञान उनके भेजे नबी गरीबदास जी महाराज जी ने इस प्रकार बताया है :-

अमर ग्रंथ से सुमरण के अंग की वाणी :-

गरीब, ऐसा अबिगत राम है, आदि अंत नहीं कोय। वार पार कीमत नहीं, अचल हिरंबर सोय।।1।।
गरीब, ऐसा अबिगत राम है, कादिर आप करीम। मीरा मालिक मेहरबान, रमता राम रहीम।।5।।
गरीब, दोऊ दीन मध्य एक है, अलह अलेख पिछान। नाम निरंतर लीजिये, भक्ति हेत उर आन।।12।।
गरीब, राम रटत नहीं ढील कर, हरदम नाम उच्चार। अमी महारस पीजिये, यौह तत्त बारंबार।।21।।
गरीब, कोटि गऊ जे दान दे, कोटि यज्ञ जोनार। कोटि कूप तीर्थ खनै, मिटै नहीं जम मार।।22।।
गरीब, कोटिक तीर्थ व्रत करै, कोटि गज करै दान। कोटि अश्व बिपरौं दिये, मिटै न खैंचा तान।।23।।
गरीब, ऐसा निर्मल नाम है, निर्मल करै शरीर। और ज्ञान मंडलीक हैं, चकवै ज्ञान कबीर।।38।।
गरीब, नाम बिना सूना नगर, पड़्या सकल में शोर। लूट न लूटी बंदगी, हो गया हंसा भोर।।99।।
गरीब, अगम निगम कूँ खोज ले, बुद्धि विवेक विचार। उदय अस्त का राज मिले, तो बिन नाम बेगार।।100।।
गरीब, भक्ति बिना क्या होत है, भ्रम रह्या संसार। रत्ती कंचन पाया नहीं, रावण चलती बार।।105।।

सुमरण के अंग की उपरोक्त वाणियों में संत गरीबदास जी ने बताया है कि खुदा की इबादत सतनाम यानि सच्चे भक्ति मंत्रों का जाप करना पूर्ण लाभ देता है। नाम का जाप न करके अन्य धार्मिक क्रियाएँ करना पूर्ण मोक्ष प्राप्ति का साधन नहीं है। अन्य आध्यात्मिक लाभ मिलता है।

❖ भावार्थ :- वाणी (आयत) नं. 1,5 :- राम (खुदा) की कोई आदि यानि जन्म तथा (अन्त) मृत्यु नहीं है। उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जा सकता कि वह कितना महान है। उसकी प्रत्येक गतिविधि व शक्ति अपरमपार यानि अथाह है। वह (कादिर) समर्थ है, (करीम) दयावान है। वह स्वयं ही सब कार्य करता है। वह सबका मालिक (प्रभु) है। वह (रमता राम) सब जगह भ्रमण करने वाला (रहीम) दयालु परमेश्वर है।(1,5)

❖ वाणी नं. 12 :- दोनों धर्मों (मुसलमान तथा हिन्दू धर्म) का एक ही प्रभु है। उसे राम कहो, चाहे रहीम खुदा कहो। उसके नाम का जाप सच्ची श्रद्धा के साथ करो।(12)

❖ वाणी नं. 21 :- (राम रटत) अल्लाह के नाम का जाप बिन देरी के जाप करना शुरू कर दे यानि पूर्ण गुरू (पीर) से दीक्षा लेकर उस सतनाम के दो अक्षरों का (हरदम) प्रत्येक श्वांस में जाप कर। यह भक्ति का रस

पीओ यानि यह (तत्) निज (खास) साधना है, इसे बार-बार श्वांस के साथ कर।(21)

❖ वाणी नं. 22 :- जो कुरआन मजीद की सूरः अश् शूरा-42 आयत 2 में बताए ''ऐन. सीन. काफ.'' सांकेतिक नामों के जो वास्तविक मंत्र हैं, उनका नाम जाप (स्मरण) नहीं किया तो चाहे कितना ही धर्म करो, उससे (जम मार) यमदूत का दंड समाप्त नहीं होगा यानि यमराज के पास जहन्नुम में जाकर दंड भोगेगा। जैसे पुराणों में बताया है कि ब्राह्मण को दुधारू गाय दान करने से दानकर्ता को बहुत पुण्य मिलता है। उसको स्वर्ग में दूध पीने को मिलेगा। यदि राम (खुदा) का नाम जाप नहीं किया, फिर चाहे (कोटि) करोड़ गऊ (Cow) दान कर देना, चाहे करोड़ों (जग जौनार) धर्म यज्ञ कर लेना, चाहे करोड़ों कूँए (पीने के पानी के लिए धर्मार्थ) खुदवा देना, चाहे करोड़ों तीर्थ के लिए तालाब खुदवा देना, चाहे करोड़ों (व्रत) रोजे रख, करोड़ों तीर्थों का भ्रमण कर, चाहे ब्राह्मणों को करोड़ हाथी, करोड़ घोड़े दान कर, इन सारे धार्मिक कार्यों से जन्म-मृत्यु का चक्र समाप्त नहीं हो सकता। नरक में भी जाना होगा। इन धार्मिक क्रियाओं का फल पृथ्वी पर भी मिलेगा। स्वर्ग में सुख कुछ समय मिलेगा, परंतु अन्य प्राणियों के शरीरों में भी कष्ट भोगना होगा। नरक (दोजख) की आग में भी जलना होगा।(22)

❖ वाणी नं. 23 :- वह तीन मंत्र वाला (राम) खुदा का नाम इतना निर्मल (पवित्र) है कि वह साधक के सब पाप काटकर निर्मल आत्मा कर देता है। अन्य अध्यात्म ज्ञान जो चारों वेदों, चारों कतेबों, अठारह पुराणों व गीता, भागवत (सुधा सागर) आदि में है, वह (मंडलीक) क्षेत्रीय ज्ञान है। अल्लाह कबीर जी द्वारा बताया अध्यात्म ज्ञान (चक्रवर्ती) सम्पूर्ण है। सब धर्मों के मानव के लिए है। किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं है। यह तीन नाम का जाप सब मानव के करने के लिए है। यज्ञ भी सबके लिए है।(23)

❖ वाणी नं. 38 :- वेदों, गीता, पुराणों तथा कुरआन व बाइबल में मण्डलीक (आंशिक) ज्ञान है। कबीर परमेश्वर द्वारा बोली अमरवाणी स्वस्मवेद में संपूर्ण अर्थात् चक्रवर्ती ज्ञान है। इसके लिए पढ़ें ''सृष्टि रचना'' जो इसी पुस्तक में पृष्ठ 240 पर है।

❖ वाणी नं. 99 :- यदि अन्य धार्मिक उपरोक्त क्रियाओं के साथ नाम (मंत्र) का जाप नहीं किया तो मानव शरीर (सूना) लावारिस है यानि उस जीव का परमात्मा साथी नहीं है। बिना नाम के जाप के व्यर्थ का शोर किया जा रहा है यानि अन्य जो बातें की जाती हैं, वह शोर व्यर्थ है। परमेश्वर के नाम के जाप की लूट नहीं की यानि बेसब्रा होकर भक्ति नहीं की। हे भक्त! (भोर) सवेरा हो गया यानि मृत्यु हो गई, संसार स्वप्न मात्र था। स्वप्न टूटने के पश्चात् कुछ पास नहीं रहता। इसी प्रकार भक्ति किए बिना मृत्यु हो गई तो पछताएगा।(99)

❖ संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिया यथार्थ आध्यात्म ज्ञान बताया है कि हे मानव! अगम (भविष्य का यानि आगे के जीवन का) निगम (दुःख रहित होने का) का विवेक वाली बुद्धि से विशेष विवेचन करके विचार कर। यदि मानव के पास सत्यनाम गुरू से प्राप्त नहीं है और उदय (जहाँ से पृथ्वी पर सवेरा होता है) अस्त (जहाँ सूरज छिपता है, शाम होती है, वहाँ तक) का राज्य यानि पूरी पृथ्वी का राज्य भी दे दिया जाए तो वह तो बेगार की तरह है।

बेगार की परिभाषा :- सन् 1970 के आसपास पैट्रोल से चलने वाले बड़े तीन पहियों वाले टैम्पो (Three wheelar Tempo) चले थे। एक दिन एक टैम्पो वाला अपने मार्ग (Route) पर नहीं आया। अगले दिन उससे पूछा कि कल क्यों नहीं आए तो उसने बताया कि कल बेगार में चला गया था। उस समय थानों में जीप आदि गाड़ियाँ नहीं होती थी। यदि पुलिस ने कहीं छापा (रैड) मारना होता तो किसी टैम्पो (Three Wheelar या Four Wheelar) को शाम को थाने में पकड़कर लाते। रात्रि में या दिन में जहाँ भी जाना होता, उसको ले जाते। मालिक ही ड्राईवर होता था या मालिक का किराए का ड्राईवर होता था। तेल (पैट्रोल) भी गाड़ी वाले अपने पास से डलवाते थे। सारी रात-सारा दिन उसको चलाते रहते थे। शाम को देर रात पुलिस वाले उसे छोड़ते थे। अन्य व्यक्ति देखता तो ऐसे लगता कि टैम्पो वाले ने आज तो घनी कमाई करी होगी यानि बहुत अधिक किराया प्राप्त किया होगा क्योंकि दिन-रात चला है, परंतु उस टैम्पो वाले ने बताया कि अपने पास से 200 रूपये (वर्तमान के दस हजार रूपये) तेल में और खाने में खर्च हो गए, किराया एक रूपया नहीं मिला। गाड़ी (टैम्पो) की घिसाई यानि चलने से हुई टूट-फूट, वह अलग खर्च हुआ। बेगार का अर्थ है कि आय बिल्कुल नहीं तथा परिश्रम अधिक होता है। खर्च भी अधिक होता है। इसको बेगार कहते हैं।

इसी प्रकार अपने पूर्व जन्म के तप तथा दान-धर्म से राजा बनता है। राजा बनने पर जो सुख-सुविधाएँ उसे प्राप्त होती हैं, उनमें उस राजा के पुण्य खर्च होते हैं। यदि वह राजा पूरे गुरू से भक्ति के वास्तविक नाम लेकर भक्ति नहीं करता तो उसको पुण्य की कमाई नहीं होती। पुण्य का खर्च राज के ठाठ में दिन-रात समाप्त होता रहता है। जो सत्य भक्ति नहीं करता, वह राजा बेगार कर रहा है।(100)

❖ श्रीलंका का राजा रावण था। उसने अपने महल स्वर्ण (Gold) के बनवा रखे थे। वह देवता शिव (तमगुण) का पुजारी था। भक्ति के साथ-साथ गलतियाँ भी करता था। माँस खाता था, शराब भी पीता था। श्री रामचन्द्र जी जो श्री विष्णु जी देवता ही स्वयं अयोध्या में राजा दशरथ के घर जन्में थे, जब बनवास का समय व्यतीत कर रहे थे। उस समय रावण राजा श्री रामचन्द्र की पत्नी सीता जी का अपहरण कर ले गया। सीता जी को रावण से छुड़वाने के लिए श्री राम व रावण का युद्ध हुआ। युद्ध में रावण मारा गया। उस समय वह सोने के महलों में रहा करता। संसार से जाते वक्त एक (रति) ग्राम सोना साथ नहीं ले जा सका।

भावार्थ है कि इबादत करने वाले को सब बुराइयों से परहेज करना होता है, तब भक्ति में सफलता मिलती है। जो व्यक्ति भक्ति नहीं करते और धन उपार्जन में दिन-रात लगे हैं। बड़ी-बड़ी कोठी बना रखी हैं। कार ले रखी हैं। अंत समय भक्ति की कमाई (धन) साथ चलेगी। सांसारिक धन किसी काम नहीं आएगा। यदि आपके पास धन है, उसमें से धर्म भी करो, नाम का स्मरण भी करो।(105)

<u>कादिर अल्लाह कबीर जी के नबी संत गरीबदास जी ने दोनों धर्मों (इस्लाम और हिन्दू धर्म) की भक्ति की त्रुटियाँ बताई हैं</u> :-

❖ संत गरीबदास जी के अमर ग्रंथ से राग काफी से शब्द नं. 1 :-

✯ नहीं है दारमदारा वहाँ तो, नहीं है दारमदारा।। टेक।।

उस दरगह में धर्मराय है, लेखा लेगा सारा।।1।। मुल्ला कूकै बंग सुनावै, ना बहरा करतारा।।2।। तीसौं रोजे खूंन करत हो, कैसे होय दीदारा।।3।। मूल गंवाय चले हो काजी, भर लिया घोर अंघारा।।4।। भवजल बूड़ गये हो भाई, कीजैगा मुँह कारा।।5।। बेद पढैं पर भेद न जानैं, बांचैं पुरान अठारा।।6।। जड़ कूँ अंधरा पान खवावै, बिसरे सृजनहारा।।7।। ऊजड़ खेड़े बहुत बसाये, बकरा झोटा मारा।।8।। जा कूँ तो तुम मुक्ति कहत हो, सो हैं कच्चे बारा।।9।। मांस मछलिया खाते पांडे, किस बिधि रहै आचारा।।10।। स्यौं जजमान नरक में चाले, बूड़े स्यूं परिवारा।।11।। छाती तोड़ैं हनें यम किंकर, लागै यमदूतों का लारा।।12।। दास गरीब कहै बे काजी पांडे, ना कहीं वार न पारा।।13।।1।।

❖ सरलार्थ :- धर्मराय (परमात्मा के न्यायधीश) के दरबार में किसी का (दारमदारा) विशेष अधिकार नहीं है यानि किसी की सिफारिश नहीं चलती। केवल कर्म के फल पर सब निर्णय होता है। सारे जीवन के सब पुण्य तथा पाप कर्मों का लेखा लिया जाएगा। मुसलमान तथा हिन्दू दोनों धर्म ही साधना गलत करते हैं। मुल्ला मस्जिद में ऊपर चढ़कर जोर-जोर से बंग (अजान) लगाता है। परमात्मा की स्तूति करता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि करतार जो मन की बात भी सुनता है, यदि चींटी के पैर में पायल बांध दी जाये यानि उस पायल की झनकार हो तो उसकी आवाज को भी परमात्मा (अल्लाह) सुनता है। वह बहरा नहीं है अर्थात् ऊँची आवाज लगाकर स्तुति न करो। मन लगाकर सामान्य आवाज से स्तुति करो। रमजान के महीने में मुसलमान तीस दिन व्रत रखते हैं। सारा दिन पानी भी नहीं पीते। शाम को भोजन में मुर्गी, बकरी, बकरा आदि को मारकर उसका माँस खाते हैं। कैसे परमात्मा का (दीदार) दर्शन हो सकता है?

हे काजी! मूल धन यानि मानव जन्म की श्वांस पूंजी को नष्ट करके संसार त्यागकर घोर (अंघारा) पाप करके पापों का थैला भरकर चल दिये हो। खुदा के घर जब कर्मों का हिसाब होगा, तब तुम्हारा मुँह काला किया जाएगा यानि नरक (जहन्नुम) में डाला जाएगा। हिन्दू पंडितों से कहा है कि तुम वेदों को पढ़ते हो, उनके अर्थ ठीक से समझे नहीं हो। अठारह पुराण पढ़ते हो, उनको भी ठीक से नहीं समझे हो। अंधा यानि तत्त्वज्ञान नेत्रहीन पंडित वेदों को पढ़ता है, पत्थर की मूर्ति की पूजा करता है। बेल के पत्ते, तुलसी के पत्ते, पत्थर की मूर्ति पर चढ़ाता है, सृजनहार को भूल गया है। वेदों में कहीं नहीं लिखा है कि मूर्ति की पूजा करो। उज्जड़ खेड़ों (गाँव जो नष्ट हो चुके हैं, उनका खंडहर बना है, उनको खेड़ा कहते हैं।) पर उनमें रहने वाली प्रेतात्माओं को शांत करने के लिए झोटे व बकरे काटते हैं, यह महापाप है। जिसे तुम मुक्ति की साधना कहते हो, वह तो पूर्ण रूप

से व्यर्थ है जैसे चौपड़ के खेल में कच्चे बारह की कोई कीमत नहीं होती। पांडे मछली का माँस खाते हैं। ऊपर से स्नान करके तिलक लगाकर पवित्र बनकर दिखाते हो। परमात्मा कैसे प्रसन्न होगा? यजमान (जजमान) सहित नरक में जाओगे। अपने परिवार को भी नरक में लेकर जाओगे। यम के दूत बारह करोड़ हैं। (लारा लगा है) पूरी सेना की तरह पंक्ति में चलते हैं। तुम्हारी छाती तोड़ेंगे यानि वे बेरहमी से पीटेंगे। संत गरीबदास जी ने कहा है कि हे काजी! व पंडित! परमेश्वर (खुदा) की शक्ति असीम है। सत्य भक्ति करके अपना जन्म सुधारो।

❖ **राग काफी से शब्द नं. 2 :-**

★क्या गावै घर दूर दिवानें, क्या गावै घर दूर।। टेक।।

अनलहक्क सरे कूँ पौंहची, सूली चढ़े मनसूर।।1।। शेख फरीद कुँए में लटके, हो गये चूरम चूर।।2।। सुलतानी तज गये बलख कूँ, छोड़ी सोलह सहंसर हूर।।3।। गोपीचंद भरथरी योगी, सिर में डारी धूर।।4।। दादू दास सदा मतवारे, झिलमिल झिलमिल नूर।।5।। जन रैदास और कमाला, सनमुख मिले कबीर हजूर।।6।। दोन्यौं दीन मुक्ति कूँ चाहैं, खावैं गऊ और सूर।।7।। दास गरीब उधार नहीं है, सौदा पूरम्पूर।।8।।2।।

❖ **सरलार्थ :- शब्द तथा साखी, चौपाई आदि वाणी को मधुर आवाज में गाने मात्र से बात नहीं बनेगी। उनके अनुसार साधना व धर्म-कर्म करने से मोक्ष मिलेगा। गाने वालों से मोक्ष का घर बहुत दूर है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मन्सूर अली ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। अनलहक की पुकार (सरे) परमात्मा के दरबार में पहुँची थी। मन्सूर को मार दिया गया था। सच्ची लगने से समर्पित होकर भक्ति करता था, पुनः जीवित हो गया था। यह मुसलमान धर्म से था। {मन्सूर अली की सम्पूर्ण कथा इसी पुस्तक के पृष्ठ 174 पर लिखी है।} मुसलमान धर्म से शेख फरीद भक्त थे जो परमात्मा की प्राप्ति के लिए कुँए में लटके थे। इतने दुर्बल हो गए थे कि शरीर का अस्थिपिंजर शेष था। कौवों ने मृत जानकर उसके (माथे) भाल पर बैठकर आँखें निकालकर खानी चाही। तब शेख फरीद बोला कि हे कौवो! मेरे शरीर का माँस खा लो। मेरी आँखों को छोड़ दो। मैं खुदा को देखना चाहता हूँ। अब्राहिम अधम सुल्तान भी मुसलमान राजा था। परमात्मा प्राप्ति के लिए बलख शहर अपनी राजधानी त्याग दी। सोलह हजार (पदमनी) सुंदर नौ जवान स्त्रियाँ त्याग दी थी। {सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम की सम्पूर्ण कथा इसी पुस्तक के पृष्ठ 153 पर लिखी है।} गोपीचंद तथा भरथरी दोनों राजा थे। वे भी राज त्यागकर नाथ परंपरा से गोरखनाथ से दीक्षित होकर शरीर पर राख लगाकर रहा करते थे। संत दादू दास, संत रविदास, भक्त कमाल आदि कबीर परमात्मा से मिले थे। दीक्षा ली थी। पापों से बचे रहे। संत गरीबदास जी ने कहा है कि दोनों धर्मों के व्यक्ति मुक्ति की इच्छा करते हैं, जीव हिंसा करते हैं। हिन्दू सूअर का माँस खाते हैं, गाय का माँस खाना पाप मानते हैं। मुसलमान गाय का माँस खाते हैं, सूअर का माँस खाना हराम मानते हैं। सच्चे दरबार में उधार नहीं चलता। पूरा-पूरा नकद सौदा चलता है यानि जैसा कर्म किया, वैसा फल अवश्य मिलेगा। किसी भी प्राणी को मारना, उसका माँस खाना महापाप है। जब तक पूर्ण संत जो कबीर सतपुरूष की साधना बताता है, उससे दीक्षा नहीं लेता, तब तक जैसे कर्म करेगा, उनका फल भोगना पड़ेगा। सतपुरूष की भक्ति से पाप नाश हो जाते हैं। साधक सत्य साधना करके सतलोक चला जाता है।**

❖ **राग काफी से शब्द नं. 47 :-**

★मैंडी जिंदड़िये वो, रब्ब दा पंथ विषम है बाट।। टेक।।

गगन मंडल में महल साहिब का, अंदर बन्या झरोखा। एक मुल्ला मस्जिद में कूकै, एक पुकारै बोका।।1।। इनमें कौन सरे कूँ पौंहच्या, हम कूँ लग्या है धोखा। दोनों अदला बदला खेलैं, नहीं मुक्ति नहीं मोखा।।2।। कलमा रोजा बंग निवाजा, नबी मुहम्मद कीन्हा। कद मुहम्मद ने मुर्गी मारी, कर्द गलै कद दीन्हा।।3।। मुर्गी बकरी चिड़ी बुटेरी, सोई गऊ गल सीना। जिन कूँ भिसत कहां बे काजी, गूदै सीक भरीना।।4।। उस दरगह में छुरी न घड़िये, करद कहां से ल्याया। गूदा राता गोश्त ताता, केसर रंग बनाया।।5।। घाल देगचे बिस्मिल कीन्हा, सरस निवाला खाया। जा हंसा का खोज बताओ, कौन सरै पौंहचाया।।6।। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड न होते, ना थे गाय कसाई। आदम हवा न हुजरा होता, कलमां बंग न भाई।।7।। जब कादिर नहीं कुदरत सृजी, तब क्या खाना खाई। दास गरीब कहै बे काजी, अल्लह कबीर चित लाई।।8।।47।।

❖ **सरलार्थ :- हे मेरी जिन्दगी! यानि हे मेरी आत्मा! अर्थात् हे मानव! परमात्मा का मार्ग कठिन सफर (बाट)**

है। आकाश खंड में सतलोक में परमेश्वर का महल है। उसके अंदर (झरोखा है) जंगला लगा है जिसके अंदर से परमेश्वर सब देखता है। काजी एक (बोक) बड़े बकरे का चाकू से गला काट रहा है। बकरा दर्द के कारण चिल्ला रहा है। एक मुल्ला (मुसलमान धर्म का कर्मकांडी गुरू) मस्जिद में ऊपर चढ़कर चिल्ला रहा है यानि जीव मारने वाला यदि भक्ति भी करता है तो उसकी स्तुति व्यर्थ की बातें हैं यानि जैसे बकरा मरते समय भय व दर्द से मैं-मैं कर रहा है जिसका कोई अर्थ नहीं, मारने वाला मारकर ही दम लेगा। इसी प्रकार उस माँस खाने वाले काजी की स्तुति (अजान) है, उसका कोई लाभ नहीं है। पाप का दंड मिलकर रहेगा। संत गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि इन बोक तथा मुल्ला व काजी में से कोई स्वर्ग भी नहीं जाएगा। ये तो अदला-बदला खेल रहे हैं। आज काजी बकरे की गर्दन काटकर मार रहा है। किसी जन्म में काजी की आत्मा बकरा बनेगी। बकरे की आत्मा काजी बनेगी, तब अपना बदला लेगी। नबी मोहम्मद ने कलमा (अल्लाहू अकबर मंत्र का जाप) तथा रोजा (व्रत) किया था। नमाज तथा (बंग) ऊँची आवाज लगाना जिसे अजान कहते हैं, की थी। मुर्गी, बकरी, गाय आदि को नहीं मारा। कोई जीव हिंसा नहीं की। हे काजी! जो दूसरे का गला काटता है, माँस खाता है। उसको स्वर्ग कहाँ से मिलेगा? परमात्मा का बनाया जीव क्यों मार डाला? घोर पाप किया है। जिस समय कुछ भी रचना नहीं थी। उस समय केवल पूर्ण परमात्मा रहता था। तब ये कर्म करने वाले कहाँ थे? क्या खाते थे? संत गरीबदास जी ने कहा है कि हे काजी! कबीर परमेश्वर (अल्लाह अकबीर) में चित्त लगा।

नबी (संत) गरीबदास जी ने समर्थ परमेश्वर (कादिर खुदा) कबीर जी की समर्थता बताई हैः-

❖ **राग काफी से शब्द नं. 24 :-**

✯खान पान कुछ करदा नांहीं, है महबूब आचारी वो।। टेक।।

कौंम छत्तीस रीत सब दुनिया, सब से रहै विचारी वो।।1।। बेपरवाह शाहन पति शाहं, जिन याह धारना धारी वो।।2।। अनतोल्या अनमोल्या देवै, करोड़ी लाख हजारी वो।।3।। अरब खरब और लील पदम लग, संखौं संख भंडारी वो।।4।। जो सेवै ताही कूँ खेवै, भवजल पार उतारी वो।।5।। सुरति निरति गल बंधन डोरी, पावै बिरह अजारी वो।।6।। ब्रह्मा विष्णु महेश सरीखे, ताहि उठावैं झारी वो।।7।। शेष सहंसमुख करै बिनती, हरदम बारंबारी वो।।8।। शब्द अतीत अनाहद पद है, है पुरूष निराधारी वो।।9।। सूक्ष्म रूप स्वरूप समाना, खेलै अधर आधारी वो।।10।। जाकूँ कहैं कबीर जुलाहा, रचि सकल संसारी वो।।11।। गरीबदास शरणागत आये, साहिब लटक बिहारी वो।।12।।24।।

❖ **सरलार्थ :- अकह लोक में परमात्मा बिना खाये-पीये वर्षो रहता है। प्रिय परमात्मा है। साधकों को अनतोला, अनमोला अथाह धन देता है। लाख, करोड़ रूपये देता है। परमात्मा के अरब, खरब, नील, पदम, संखों भंडार भरे हैं। जो (सेवै) पूजा करता है, उसी को पार उतारता है। समर्थ परमेश्वर कबीर जी के सामने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उसके सेवक हैं। शेष नाग बारम्बार हजार मुख से नाम जाप करता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि जिसको कबीर जुलाहा कहते हैं, उसने सारी सृष्टि की उत्पत्ति की थी। हे पूर्ण ब्रह्म! (लटक बिहारी) सब ब्रह्माण्डों में बिना रोक-टोक के भ्रमण करने वाले कबीर जी! हम तो आपकी शरण आए हैं।**

राग बिलावल शब्द नं. 21 :-

✯अबिगत राम कबीर है, चकवै अविनाशी। ब्रह्मा विष्णु वजीर हैं, शिव करत खवासी।। टेक।। इन्द्र कोटि अनंत हैं, जाकै प्रतिहारा। बरूण कुबेर धर्मराय, ठाढे दरबारा।।1।। तेतीस कोटि देवता, ऋषि सहंस अठासी। वैष्णव कोटि अनंत हैं, गुण गावैं राशी।।2।। नौ योगेश्वर नाद भरैं, सुर पूरैं संखा। सनकादिक संगीत हैं, अविचल गढ़ बंका।।3।। शेष, गणेश, सरस्वती, और लक्ष्मी राजैं। सावित्री गौरा रटैं, गण संख बिराजैं।।4।। अनंत कोटि मुनि साध हैं, गण गंधर्व ज्ञानी। अरपैं पिंड रु प्राण कूँ, जहां संखौं दानी।।5।। सावंत शूर अनंत हैं, कुछ गिणती नाहीं। जती सती और शीलवंत, लीला गुण गाहीं।।6।। चंद्र सूर बिनती करैं, तारा गण गाढ़े। पांच तत्व हाजिर खड़े, हुक्मी दर ठाढे।।7।। तीर्थ कोटि अनंत हैं, और नदी बिहंगा। अठारह भार तोकूँ रटै, जल पवन तरंगा।।8।। अष्ट कुली पर्वत रटैं, धर अंबर ध्याना। महताब अग्नि तोकूँ जपैं, साहिब रहमाना।।9।। अर्श कुर्श पर तेज है, तन तबक तिराजी। एक पलक में करत है, सो राज बिराजी।।10।। अलख बिनानी कबीर कूँ, रंग खूब चवाया। एक पानी की बूंद से, संसार बनाया।।11।। अनंत कोटि ब्रह्मण्ड हैं, कुछ वार न पारा। लख चौरासी खान का, तूं सिरजनहारा।।12।। सूक्ष्म रूप स्वरूप है, बहु रंग बिनानी। गरीबदास के मुकट में, हाजिर प्रवानी।।13।।21।।

❖ **सरलार्थ :- (अविगत) दिव्य परम पुरूष कबीर जी हैं। (चकवै) चक्रवर्ती {चक्रवर्ती राजा उसे कहते हैं जिसका राज्य पूरी पृथ्वी पर होता था जो सब छोटे राजाओं का मालिक महाराजा होता था। कबीर सतपुरूष का राज्य सम्पूर्ण लोकों पर जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ज्योति निरंजन तथा अक्षर पुरुष सहित सब छोटे देवों का मालिक महाराजा यानि महादेव है।} परमात्मा हैं, अविनाशी हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव भी इनकी (खवासी) गुलामी करते हैं। इन्द्र तथा तेतीस करोड़ देवता, अठासी हजार ऋषि, नौ योगेश्वर, सनकादिक चारों, शेषनाग, गणेश, सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, पार्वती, शंखों गण, सब उसी के आदेश से चलते हैं। सबके ऊपर कबीर परमेश्वर का राज है। कबीर जी ने जल की बूंद से मानव शरीर कितना सुंदर बना रखा है। असँख्यों ब्रह्माण्डों को तथा चौरासी लाख प्रकार के जीवों को उत्पन्न करने वाले आप कबीर जी ही हैं। सबका सृजनहार है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि अनेकों रूपों में लीला करने वाला परमेश्वर मेरे सिर पर विराजमान है।**

❖ **अचला के अंग की वाणी नं. 1-13 :-**

गरीब, पंजा दस्त कबीर का, सिर पर राखो हंस। यम किंकर चंपैं नहीं, उद्धर जात है वंस।।1।।
गरीब, दर्दबंद दर्वेश है, सतगुरु पुरुष कबीर। नाम लिये बंध छूटै है, टूटै यम जंजीर।।2।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, तीन लोक तत्त सार। कोटि उनंचा पृथ्वी, चौदह भवन आधार।।3।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, तीन लोक तत्त सार। दो चार की क्या चलै, उद्धरैं हंस अपार।।4।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर हैं, चारों युग प्रवान। झूठे गुरुवा मर गये, हो गये भूत मशान।।5।।
गरीब, झूठे गुरु के आसरे, कदे न उद्धरै जीव। साचा पुरुष कबीर है, आदि परम गुरु पीव।।6।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर का, विषम पंथ बैराट। शिव सनकादिक ध्यावैं हीं, मुनि जन जोहें बाट।।7।।
गरीब, सतगुरु पुरुष कबीर की, कोई न चल है गैल। बिना पंथ पग धरत हैं, गगन मंडल में सैल।।8।।
गरीब, पग सेती दुनियां चलै, पंछी परौं उड़ान। ऊंचा महल कबीर का, जहां नहीं जमीं आसमान।।9।।
गरीब, नीम मंडेर न महल के, नहीं घाट नहीं बाट। ऊंचा तख्त कबीर का, कैसे कीजै साट।।10।।
गरीब, संख स्वर्ग पर सैल है, संख स्वर्ग पर धाम। ऐसा अचरज देखिया, बिना नीम का गाम।।11।।
गरीब, बिना नीम के नगर में, बसते पुरुष कबीर। शिव ब्रह्मादिक थकत हैं, कौन धरै जहां धीर।।12।।
गरीब, लख लख योजन उड़त हैं, सुर नर मुनि जन संत। ऊंचा धाम कबीर का, कोई न पावै अंत।।13।।

❖ **सरलार्थ :- हे साधक! परमात्मा कबीर जी का कृपा पात्र बने रहना यानि कबीर जी की शरण में रहना। (जम किंकर) यम के दूत तुझे नहीं पकड़ेंगे। तेरे कुल का उद्धार हो जाएगा।(1)**

❖ **सतगुरू कबीर (पुरूष) परमेश्वर (दर्दबंद) दुःख निवारण करने वाले हैं। कबीर जी द्वारा बताए नाम का जाप करने से काल के द्वारा लगाए कर्म बंधन छूट जाते हैं। यमराज के द्वारा बाँधा गया बँधन (जंजीर) लोहे की हथकड़ी टूट जाती है।(2)**

❖ **सतगुरू कबीर परमेश्वर तीन लोक (काल ब्रह्म का लोक, अक्षर पुरूष का लोक तथा सतपुरूष का लोक जो चार लोकों का क्षेत्र है। इन तीन लोकों का यहाँ पर वर्णन है।) का (तत सार) सर्वेसर्वा यानि कुल के मालिक हैं। उनचास (49) करोड़ पृथ्वियों तथा चौदह भुवनों (जो एक ब्रह्माण्ड में हैं) इन सबका आधार है। दो या चार की तो बात क्या है? कबीर खुदा तो अनंतों हंस (भक्त) पार कर देते हैं।(3-4)**

❖ **(सतगुरू) तत्त्वदर्शी संत रूप में प्रकट कबीर (पुरूष) परमेश्वर जी चारों युगों (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग) में सशरीर सतगुरू बनकर यानि अपना नबी आप बनकर सतलोक से आए हैं। यह प्रमाण है। झूठे गुरूजन मर गए। उनकी साधना गलत थी जो शास्त्र प्रमाणित नहीं थी। वे प्रेत योनि को प्राप्त हुए।**

प्रमाण :- सतगुरू रूप में परमात्मा कबीर जी चारों युगों में सशरीर सतलोक से आए थे तथा सशरीर गए थे। सतयुग में उनका नाम सत सुकृत था। त्रेतायुग में मुनीन्द्र नाम था। द्वापर में करूणामय नाम था। कलयुग में कबीर नाम है।

❖ **झूठे गुरू की शरण में जीव का कभी उद्धार नहीं होगा। सच्चा परम गुरू (पीव) मालिक कबीर परमेश्वर है।(6)**

❖ **सतगुरू कबीर परमेश्वर जी द्वारा बताया सच्चा भक्ति मार्ग (विषम) दुर्गम तथा विशाल है। श्री शिवजी तथा**

सनक, सनंदन, सनातन तथा संत कुमार (सनकादिक) तथा ऋषि-मुनि भी भक्ति मार्ग के (बाट) सफर पर चल रहे हैं। परंतु धोखे में काल वाले मार्ग को सतलोक वाला मार्ग मानकर चल रहे हैं। जीवन व्यर्थ हो जाएगा।(7)

❖ **सतगुरू कबीर परमेश्वर जी के (गैल) गलि यानि मार्ग पर कोई नहीं चल रहा। सतगुरू कबीर जी तो बिना (पंथ) मार्ग के चलते हैं यानि विहंगम मार्ग (पक्षी की तरह उड़कर चलना) से चलते हैं। वे पपील (चींटी) मार्ग से नहीं चलते। परमात्मा कबीर जी का (महल) सतलोक घर ऊँचा है, बहुत ऊपर है जहाँ पर नाशवान जमीन व आकाश नहीं है। वह अविनाशी धरती है। परमात्मा का महल दिव्य है। उसकी सांट यानि उसको प्राप्त करने का सौदा कैसे किया जाए? कौन-सी विधि है जिससे सतलोक प्राप्त होता है?(8-10)**

❖ **सतलोक का सुख काल ब्रह्म के लोक के संखों स्वर्गों से अधिक है। आश्चर्य की बात तो यह है कि सतलोक में मकान बिना नींव (Foundation) के बने हैं। जैसे जिस स्थान पर पृथ्वी तथा चाँद का गुरूत्व आकर्षण शून्य हो जाता है, वहाँ पर जो भी वस्तु रख दी जाती है, वह वहीं पर लटक जाती है। स्थिर रहती है। इसी प्रकार सतलोक में परमात्मा की सिद्धि-शक्ति से सब दीवारें, छत रूकी हैं।(11)**

❖ **बिना नींव के नगर सतलोक में बने गुबंद में सतगुरू कबीर जी रहते हैं। उस स्थान को प्राप्त करने का प्रयत्न कर-करके शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु भी थक गए हैं। फिर अन्य साधक कौन है जो उस सत्यलोक की प्राप्ति के लिए साधना करेगा। कारण यह रहा है कि उनकी साधना सूक्ष्मवेद (तत्त्वज्ञान) के अनुसार नहीं है।(12)**

❖ **वेदों में वर्णित अधूरी साधना करते हुए मुनिजन (मननशील व्यक्ति माने जाते हैं, वे), ऋषिजन तथा काल ब्रह्म के संत-भक्त लाख-लाख योजन (एक योजन 12 किलोमीटर के समान है) आकाश में सिद्धि से उड़ जाते थे। उनको सतलोक नहीं मिला क्योंकि सतलोक तो काल ब्रह्म के लोक से सोलह शंख कोस (एक कोस तीन किलोमीटर के समान है) ऊँचाई पर है।(13)**

❖ **अचला के अंग की वाणी नं. 16-36 :-**

गरीब, जैसे अलल आकाश कूँ, रापति चरण लगाय। ऐसे हरिजन हंस कूँ, ले चालत है ताहय।।16।।
गरीब, नाम निंरतर संगर सरू, फरकै ध्वजा निशान। अनहद बाजे बाजैं हीं, सतगुरु आंम दिवान।।17।।
गरीब, निजनाम के जाप से, बाजैं अनहद नाद। तोबा परमेश्वर कबीर की, छूटैं सब ही उपाध।।18।।
गरीब, धर्मराय दरबार में, दई कबीर तलाक। मेरे भूले चूके हंस कूँ, पकड़ियो मत कजाक।।19।।
गरीब, बोले पुरुष कबीर से, धर्मराय कर जोड़। तुमरे हंस न चंप हूँ, दोही लाख करोड़।।20।।
गरीब, मद्यहारी जारी नरा, भांग तमाखू खाहीं। परदारा पर घर तकैं, जिन कूँ ल्यूँ अक नाहीं।।21।।
गरीब, धर्मराय बिनती करै, सुनियो पुरुष कबीर। जिन कूँ निश्चय पकड़ हूँ, जड़हूँ तौंक जंजीर।।22।।
गरीब, चुंबक रूपी शब्द है, लोहे रूपी जीव। परदे माहीं भेंट हूँ, दर्श पर्श होय पीव।।23।।
गरीब, चुंबक हमरा रूप है, लोहे रूपी प्राण। धर्मराय तेरी बंध से, हम ले उड़ैं अचान।।24।।
गरीब, जा घट नौबत नाम की, जाकूँ पकड़ै कौन। खाली कूँ छोडूं नहीं, रीति जिन की जौंन।।25।।
गरीब, कर जोड़ैं बंदगी करें, चौदह मुनि दिवान। सो तो मरकब कीजियें, बंदगी बिना ज्ञान।।26।।
गरीब, कर्मों सेती रत थे, अब हैं जो शरण कबीर। जिन कूँ निश्चय मार हूँ, काढौं बल तकसीर।।27।।
गरीब, पहले किये वो बख्श हूँ, आगे करे न कोई। कबीर कह धर्मराय से, नाम रटैं मम सोई।।28।।
गरीब, कर्म भ्रम ब्रह्मंड के, पल में कर हूँ नेश। जिन हमरी दोही देई, सो करो हमारै पेश।।29।।
गरीब, शिव मंडल ब्रह्मा पुरी, जो विष्णु लोक में होय। हमरे गुण भूलै नहीं, तो आन छुटाऊँ तोहे।।30।।
गरीब, कोटि बहत्तर उर्वशी, धर्मराय की धीव। सुर नर मुनि जन मोहिया, बिसर जात हैं पीव।।31।।
गरीब, पीव को हंसा बिसरहीं, हमरे तुम्हरे नाहीं। धर्मराय कहै कबीर से, जिन कूँ बहू विधि खाहीं।।32।।
गरीब, साहिब पुरुष कबीर हैं, योनि पड़ै सो जीव। लख चौरासी भ्रमेंहीं, काल जाल घट सीव।।33।।
गरीब, साहिब पुरुष कबीर कूँ, जन्म लिया नहीं कोय। शब्द सरूपी रूप है, घट घट बोलै सोय।।34।।
गरीब, अनंत कोटि अवतार हैं, माया के गोबिंद। कर्ता होय होय उतरैं, बहुर पड़ैं जग फंद।।35।।
गरीब, त्रिलोकी का राज है, ब्रह्मा विष्णु महेश। ऊँचा धाम कबीर का, सतलोक प्रदेश।।36।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा अपने साधक को सत्यलोक में ऐसे लेकर उड़ जाता है जैसे अलल (अनल) पक्षी (रापति)**

हाथी को उठा ले जाता है।(16)

❖ जो साधक तत्त्वज्ञानी गुरू यानि सतगुरू से सतनाम व सारनाम की दीक्षा लेकर नाम का जाप करता है तो उसके शरीर में सिर के अंदर सतलोक के बाजे (संगीत की ध्वनि) सुनाई देती है। उस ऊपर के संगीत को सुनकर उसकी ओर आकर्षण इतना बन जाता है कि साधक काल लोक के गाने-बजाने, नाचने व धन संग्रह करने में हेराफेरी आदि सब उत्पात त्याग देता है।(17-18)

❖ जिस समय मार्च सन् 1727 (विक्रमी संवत् 1784) फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष द्वादशी को परमात्मा कबीर जी सतलोक से सशरीर पृथ्वी पर गाँव छुड़ानी जिला इज्जर, हरियाणा (भारत) में संत गरीबदास जी को बाबा जिंदा के वेश में जंगल में मिले थे। उस समय संत गरीबदास जी की आयु दस वर्ष थी। संत गरीबदास की आत्मा को शरीर से निकालकर ऊपर धर्मराय (काल ब्रह्म का न्यायधीश) के कार्यालय (दरबार) में लेकर गए। अपनी समर्थता दिखाने अपना गवाह बनाने के लिए बालक गरीबदास के सामने काल ब्रह्म के न्यायधीश यानि धर्मराय से कबीर जी ने कहा कि हे कजाक यानि शैतान! मेरे (कबीर जी के) भक्त को मत पकड़ना।(19)

❖ धर्मराय ने निवेदन किया :-

धर्मराज हाथ जोड़कर परमात्मा कबीर जी से बोले कि मुझे लाख दुहाई है, मैं आपके हंस (भक्त) को नहीं पकडूँगा।(20)

❖ परंतु जो (मद्यहारी) शराब सेवन करते हैं। (जारी नरा) जो पुरूष व्यभिचार करते हैं। भांग तथा तम्बाकू का सेवन करते हैं। (परदारा) दूसरे की पत्नी को (तकै) बुरी नजर से देखते हैं। उनको पकडूँ या नहीं?(21)

❖ धर्मराज ने निवेदन किया कि हे कबीर (पुरूष) परमात्मा मेरी विनती सुनो! यहाँ का नियम है कि जो उपरोक्त अपराध करते हैं, उनको निश्चय ही जंजीरों से बाँधूंगा।(22)

❖ परमात्मा कबीर जी ने आदेश किया यानि कहा कि :-

मेरा सारशब्द (सारनाम) चुंबक के समान है तथा मेरा हंस (भक्त) लोहे के तुल्य है। मैं पर्दे में यानि गुप्त रूप में अपने भक्त से मिलूँगा। वह अपने (पीव) पति परमेश्वर का दर्शन व (परस) चरण छूकर स्पर्श कर लेगा। वह मेरी आत्मा हो जाएगा। हे धर्मराय! उस अपने भक्त/भक्तमति आत्मा को तेरी बंध (कैद) से अचानक उठा ले जाऊँगा।(23-24)

❖ धर्मराय बोला :- जिस भक्त के पास आपकी दीक्षा का नाम मंत्र है, उसे कौन पकड़ सकता है? जो आपके नाम से खाली है, उसको मैं नहीं छोडूँगा।(25)

❖ जो चौदह मुनि (दिवान) मुख्य माने जाते हैं, वे सत्य भक्ति (विधान) मर्यादा में रहकर नहीं करते हैं तो वे भी (मरकब) गधे बनाए जाएँगे।(26-27)

❖ परमात्मा कबीर जी ने कहा कि जो पाप कर्म मेरी शरण में आने से पहले किए थे, उनको क्षमा कर दूँगा। आगे वह भक्त पाप कर्म नहीं करेगा। हे धर्मराय! जो मेरा नाम जाप करेगा, उसके पाप नाश कर दूँगा।(28)

❖ परमेश्वर कबीर जी ने फिर कहा कि इस काल लोक के सब (संचित, वर्तमान व प्रारब्ध) कर्म जो भ्रमित करके करवाए गए हैं, मैं उन सब पाप कर्मों को एक क्षण में नष्ट कर दूँगा। जिन्होंने मेरी दुहाई दी है यानि पुकारकर कहा है कि हम कबीर परमेश्वर के भक्त/भक्तमति हैं। उनका हिसाब (कर्मों का लेखा-जोखा) तू मत करना। उनको मेरे दरबार में त्रिकुटी पर बने सतगुरू स्थान पर पेश करो। उनके कर्मों का हिसाब मैं करूँगा।(29)

❖ जो परमात्मा कबीर जी के भक्त किसी गलती के कारण प्रथम नाम के जाप की कमाई के कारण ब्रह्मा के लोक में, चाहे विष्णु लोक में, चाहे शिव लोक में स्वर्ग में चला गया है और उसे वहाँ पर तत्त्वज्ञान याद आ जाता है कि यहाँ तो तेरी भक्ति की कमाई (पुण्य) समाप्त हो जाएगी। मोक्ष नहीं मिलेगा। वहाँ पर भी यदि मुझे याद कर लेगा तो उसे वहाँ से भी छुड़ाकर पुनः मानव जन्म प्रदान करके सत्य भक्ति की दीक्षा दिलाकर मुक्त कर दूँगा।(30)

❖ धर्मराय की बहत्तर (72) करोड़ (धीय) पुत्री उर्वशी (स्वर्ग की परी) हैं जो सुर (देवताओं) को (नर) अच्छे व्यक्तियों को मुनिजनों को मोहित किए हुए हैं। अपने जाल में फँसाए हुए हैं। जो परमात्मा को भूल जाते हैं, वे काल के जाल में फँसे रह जाते हैं।(31)

❖ **धर्मराय बोला कि हे परमेश्वर! जो जीव (पीव) परमात्मा को (बिसरहीं) भूल जाते हैं, वे न आपके हैं, न हमारे हैं। उनको तो बहुत भांति से कष्ट दिया जाएगा।(32)**

❖ **साहिब कबीर जी (पुरूष) परमेश्वर हैं क्योंकि वे जन्म-मरण से रहित हैं। जो जन्म लेता है, वह मरता है तथा अन्य चौरासी लाख प्रकार की योनियों में जन्म लेता है। वह काल के जाल में फँसा है। उसके (घट) शरीर रूपी घड़े में (सीव) संशय का जल है अर्थात् वह भ्रमित प्राणी है। उसे सत्य पुरूष का ज्ञान नहीं है।(33)**

❖ **परमेश्वर कबीर जी ने कभी जन्म नहीं लिया। उनका स्वरूप (शब्द स्वरूपी) अविनाशी है। वचन की शक्ति युक्त है। कबीर परमात्मा की शक्ति से प्रत्येक प्राणी बोल रहा है, चल रहा है।(34)**

❖ **काल ब्रह्म की माया के प्रभाव से अनंत करोड़ अवतार उत्पन्न हो चुके हैं। पृथ्वी के ऊपर (कर्ता) परमात्मा बनकर जन्म लेते हैं। ऊपर से आते हैं। फिर से कर्मों के चक्र में फँसकर जन्म-मरण के चक्र में गिरकर कष्ट उठाते हैं। फिर से जगत फँद में फँसे रह जाते हैं। जैसे श्रीरामचन्द्र कर्ता बनकर राजा दशरथ के घर माता कौशल्या के गर्भ से जन्मे थे। बाली को धोखे से मारा। उसका पाप लगा। उस पाप कर्म को भोगने के लिए द्वापर युग में श्री कृष्ण जी के रूप में जन्मे। बाली वाली आत्मा ने शिकारी का जन्म लिया। श्री कृष्ण को धोखे से मारकर बदला लिया। श्रीरामचन्द्र रूप में केवल एक पत्नीव्रत धर्म पर कायम रहे। पापों से बचे रहे। श्री कृष्ण रूप में सारी कसर निकाल ली। आठ तो विवाह किए यानि आठ स्त्रियों को भोगा। फिर हजारों गोपी-गुजरियों को भोगा। सोलह हजार स्त्रियाँ एक राजा ने घेर रखी थी। उनको छीनकर श्री कृष्ण लाया। उन सबको भोगा। भोगा काल ने, पाप लगाए श्री कृष्ण को। इन पापों का दंड भी चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाकर श्री कृष्ण उर्फ श्री राम वाली आत्मा पाप कर्मों का दंड भोगेगी।(35)**

❖ **श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव तो केवल तीन लोक (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक, पाताल लोक) के राजा (प्रभु) हैं। परमात्मा कबीर जी का (धाम) स्थान बहुत ऊँचा है। सतलोक रूपी प्रदेश है। अल्लाह कबीर सबका (मालिक) सम्राट है।(36)**

दोनों धर्मों को समझाना

❖ **अमर ग्रंथ (संत गरीबदास जी) के पारख के अंग अध्याय की वाणी नं. 568 से 619 :-**

काशी जोरा दीन का, काजी खिलस करंत। गरीबदास उस सरे में, झगड़े आन परंत।।568।।
सुन काजी राजी नहीं, पाप कर्म से खुदाय। गरीबदास किस हुकम से, पकड़ पछाड़ी गाय।।569।।
गऊ हमारी माता है, पीवत जिस का दूध। गरीबदास काजी कुटिल, कत्ल किया औजूद।।570।।
गऊ आपनी अमां है, ता पर छुरी न बाह। गरीबदास घृत दूध कूँ, सब ही आत्म खाहै।।571।।
ऐसा खाना खाईये, माता कै नहीं पीर। गरीबदास दरगह सरे, गल में पड़ै जंजीर।।572।।
काजी पटक कुर्आन कूँ, उठ गये सिर पीट। गरीबदास जुलहे कही, बाणी अकल अदीठ।।573।।
जुलहे दीन बिगाड़िया, काजी आये फेर। गरीबदास मुल्ला मुर्ग, अपनी अपनी बेर।।574।।
मुर्गे से मुल्ला भये, मुल्ला फेर मुर्ग। गरीबदास दोजख गये, पाया नहीं स्वर्ग।।575।।
काजी कलमा पढ़त है, बांचे फेर कुर्आन। गरीबदास इस जुल्म से, बूड़ैं दोहूँ जिहान।।576।।
दोनूं दीन दया करो, मानो बचन हमार। गरीबदास गऊ सूर में, एकै बोलन हार।।577।।
सूर गऊ में एक है, न गाय भखो न सूर। गरीबदास सूर गऊ, दोऊ का एकै नूर।।578।।
मुल्ला से पंडित भये, पंडित से भये मुल्ल। गरीबदास तज बैर भाव, कीजे सुल्लम सुल्ल।।579।।
हिंदू झटके मार हीं, मुस्लिम करैं हलाल। गरीबदास दोऊ दीन का, होसी हाल बेहाल।।580।।
बकरी कुकड़ी खा गये, गऊ गदहरा सूर। गरीबदास उस भिस्त में, तुम से अलहा दूर।।581।।
घोड़े ऊँट अटक नहीं, तीतर क्या खरगोश। गरीबदास ऐसे अधर्मी से, अल्लाह है सौ कोस।।582।।
भिस्त भिस्त तुम क्या करो, दोजख जल्ल हो अंच। गरीबदास इस खून से, अल्लाह नाहीं बंच।।583।।
रब्ब की रूह मारते, खाते हो रै मोर। गरीबदास उस नरक में, नहीं काजी कूँ ठौर।।584।।
सुन काजी बाजी लगी, जो जीते सो जाय। गरीबदास उस नरक कूँ, बिन काजी को खाय।।585।।

सुन काजी बाजी लगी, पासा सन्मुख डार। गरीबदास युग बांध ले, नहीं मरत हैं सार।।586।।
सुन काजी गदह गति, पान लदे खर पीठ। गरीबदास उस वस्तु बिन, खाय गदहरा बीठ।।587।।
मुल्ला कूँकै बंग दे, सुन काफर मुसटंड। गरीबदास मुर्गा मारकर, खात गोल गिर्द अंड।।588।।
सुन मुल्ला उपदेश तूं, कुफर करै दिन रात। गरीबदास हक बोलता, मारै जीव अनाथ।।589।।
मुर्गे सिर कलंगी होती, चिसमें लाल चिलूल। गरीबदास उस कलंगी का, कहां गया वह फूल।।590।।
सुन मुल्ला माली अल्लाह, फूल रूप संसार। गरीबदास गति एक सब, पान फूल फल डार।।591।।
करो नसीहत दूर लग, दरगह होसी न्याव। गरीबदास काजी कहै, करबे नान पुलाव।।592।।
काजी काढ़ कतेब कूँ, जोड़या बड़ा हजूम। गरीबदास गल काट हीं, फिर खाते दे दे गूम।।593।।
मांस कटे घर घर बटे, रूह गई किस ठौर। गरीबदास उस दरबार में, होय काजी बड़ी गौर।।594।।
सुन काजी पाप किया, जाड़ स्वाद रे जिंद। गरीबदास दरगाह में, पड़ै गले बीच फंद।।595।।
बासमती चावल पक्का, घृत खांड टुक डार। गरीबदास कर बंदगी, कूड़े काम निवार।।596।।
फुलके धोवा दाल कर, हलवा रोटी खाय। गरीबदास काजी सुन, मिट्टी मांस न पकाय।।597।।
रोजे रखै और खून करै, फिर तसबी ले हाथ। गरीबदास दरगह सरे, बौहत करी तैं घात।।598।।
शाह सिकंदर के गये, काजी पटक कुर्आन। गरीबदास जुलहदी पर, हो है खैंचातान।।599।।
तोरा सरा उठा दिया, काजी बोले यौं। गरीबदास पगड़ी पटकैं, कबीर कहै अलख अलाह मैं हौं।।600।।
दस अहदी तलबां हुई, पकड़ जुलहदी ल्याव। गरीबदास उस कुटिल को, मारत नहीं संकाव।।601।।
अहदी ले गये बांध कर, शाह सिकंदर पास। गरीबदास काजी मुल्लां, पगड़ी बहैं आकाश।।602।।
काजी पाँच हजार हैं, मुल्लां पीटैं शीश। गरीबदास यौह जुलहदी, काफर बिसवे बीस।।603।।
मिहर दया इस के नहीं, मिट्टी मांस न खाय। गरीबदास मांस पकाओ, नीरू मोमिन ल्याओ बुलाय।।604।।
मोमिन नीरू भी पकड़े गये, संग कबीरा माँय। गरीबदास उस सरे में, पकड़ पछाड़ी गाय।।605।।
शाह सिकंदर बोलता, कह कबीर तूं कौंन। गरीबदास गुजरे नहीं, कैसे बैठ्या मौंन।।606।।
हम हीं अलख अल्लाह हैं, कुतब गौस अरू पीर। गरीबदास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।।607।।
मैं कबीर सरबंग हूँ, सकल हमारी जात। गरीबदास पिंड प्राण में, युगन युगन का साथ।।608।।
गऊ पकड़ बिसमिल करी, दरगह खंड अजूद। गरीबदास उस गऊ का, पीवै जुलहा दूध।।609।।
चुटकी तारी थाप दे, गऊ जिवाई बेग। गरीबदास दूझन लगी, भरी दूध की देग।।610।।
यौह परचा प्रथम भया, शाह सिकंदर पास। गरीबदास काजी मुल्ला, हो गये बौहत उदास।।611।।
काशी उमटी सब खड़ी, मोमिन करी सलाम। गरीबदास मुजरा करै, माता सिहर अलाम।।612।।
ताना बाना ना बुनैं, अधर चिसम जोड़ंत। गरीबदास बौह रूप धर, मोड़या नहीं मुड़ंत।।613।।
शाह सिकंदर देख कर, बौहत भये मुसकीन। गरीबदास गत शेर की, थरके दोनूं दीन।।614।।
काजी मुल्ला उठ गये, शाह कदम जब लीन। गरीबदास उस जुलहदी की, ना कोई सरवर कीन।।615।।
खड़े रहे ज्यूं खंभ गति, शाह सिकंदर लोट। गरीबदास जुलहा कहै, ल्यावौ कित है गोठ।।616।।
अगरम मगरम छोड़ दे, मान हमारी सीख। गरीबदास कहै शाह से, बंक डगर है लीक।।617।।
काजी मुल्ला भाग गये, घातन पोतन लाद। गरीबदास गति को लखै, जुलहा अगम अगाध।।618।।
चले कबीर अस्थान कूँ, पालकियों में बैठ। गरीबदास काशी तजी, काजी मुल्लां ऐंठ।।619।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 568-619 का सरलार्थ :- विश्व के सब प्राणी परमात्मा कबीर जी की आत्मा हैं। जिनको मानव (स्त्री-पुरूष) का जन्म मिला हुआ है, वे भक्ति के अधिकारी हैं। काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन ने सब मानव को काल जाल में रहने वाले कर्मों पर दृढ़ कर रखा है। गलत व अधूरा अध्यात्म ज्ञान अपने दूतों (काल ज्ञान संदेशवाहकों) द्वारा जनता में प्रचार करवा रखा है। धर्म के नाम पर ऐसे कर्म प्रारंभ करवा रखे हैं जिनको करने से पाप कर्म बढ़ें। जैसे हिन्दू श्रद्धालु भैरव, भूत, माता आदि की पूजा के नाम पर बकरे-मुर्गे, झोटे (भैंसे) आदि-आदि की बलि देते हैं जो पाप के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसी प्रकार मुसलमान अल्लाह के नाम पर बकरे, गाय, मुर्गे आदि-आदि की कुर्बानी देते हैं जो कोरा पाप है। हिन्दू तथा मुसलमान, सिख तथा इसाई**

व अन्य धर्म व पंथों के व्यक्ति कबीर परमात्मा (सत पुरूष) के बच्चे हैं जो काल द्वारा भ्रमित होकर पाप इकट्ठे कर रहे हैं। इन वाणियों में कबीर जी ने विशेषकर अपने मुसलमान बच्चों को काल का जाल समझाया है तथा यह पाप न करने की राय दी है। परंतु काल ब्रह्म द्वारा झूठे ज्ञान में रंगे होने के कारण मुसलमान अपने खालिक कबीर जी के शत्रु बन गए। काल ब्रह्म प्रेरित करके झगड़ा करवाता है। कबीर परमात्मा मुसलमान धर्म के मुख्य कार्यकर्ता काजियों तथा मुल्लाओं को पाप से बचाने के लिए समझाया करते थे। कहा करते थे कि हे काजी व मुल्ला! आप गाय को मारकर पाप के भागी बन रहे हो। आप बकरा, मुर्गा मारते हो, यह भी महापाप है। गाय के मारने से (अल्लाह) परमात्मा खुश नहीं होता, उल्टा नाराज होता है। आपने किसके आदेश से गाय को मारा है?

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 569-572 :-**

सुन काजी राजी नहीं, पाप कर्म से खुदाय। गरीबदास किस हुकम से, पकड़ पछाड़ी गाय।।569।।
गऊ हमारी माता है, पीवत जिस का दूध। गरीबदास काजी कुटिल, कत्ल किया औजूद।।570।।
गऊ आपनी अमां है, ता पर छुरी न बाह। गरीबदास घृत दूध कूँ, सब ही आत्म खाहै।।571।।
ऐसा खाना खाईये, माता कै नहीं पीर। गरीबदास दरगह सरे, गल में पड़ै जंजीर।।572।।

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने काजियों व मुल्लाओं से कहा कि गऊ माता के समान है जिसका सब दूध पीते हैं। हे काजी! तूने गाय को काट डाला।

❖ गाय आपकी तथा अन्य सबकी (अमां) माता है क्योंकि जिसका दूध पीया, वह माता के समान आदरणीय है। इसको मत मार। इसके घी तथा दूध को सब धर्मों के व्यक्ति खाते-पीते हैं।

❖ ऐसे खाना खाइए जिससे माता को (गाय को) दर्द न हो। ऐसा पाप करने वाले को परमात्मा के (दरगह) दरबार में जंजीरों से बाँधकर यातनाएँ दी जाएँगी।

❖ परमात्मा कबीर जी के हितकारी वचन सुनकर काजी तथा मुल्ला कहते हैं कि हाय! हाय! कैसा अपराधी है? माँस खाने वालों को पापी बताता है। सिर पीटकर यानि नाराज होकर चले गए। फिर वाद-विवाद करने के लिए आए तो परमात्मा कबीर जी ने कहा कि हे काजी तथा मुल्ला! सुनो, आप मुर्गे को मारते हो तो पाप है। आगे किसी जन्म में मुर्गा तो काजी बनेगा, काजी मुर्गा बनेगा, तब वह मुर्गे वाली आत्मा मारेगी। स्वर्ग नहीं मिलेगा, नरक में जाओगे।

❖ काजी कलमा पढ़त है यानि पशु-पक्षी को मारता है। फिर पवित्र पुस्तक कुरआन को पढ़ता है। संत गरीबदास जी बता रहे हैं कि कबीर परमात्मा ने कहा कि इस (जुल्म) अपराध से दोनों जिहांन बूडे़ंगे यानि पृथ्वी लोक पर भी कर्म का कष्ट आएगा। ऊपर नरक में डाले जाओगे।(576)

❖ कबीर परमात्मा ने कहा कि दोनों (हिन्दू तथा मुसलमान) धर्म, दया भाव रखो। मेरा वचन मानो कि सूअर तथा गाय में एक ही बोलनहार है यानि एक ही जीव है। न गाय खाओ, न सूअर खाओ।

❖ आज कोई पंडित के घर जन्मा है तो अगले जन्म में मुल्ला के घर जन्म ले सकता है। इसलिए आपस में प्रेम से रहो। हिन्दू झटके से जीव हिंसा करते हैं। मुसलमान धीरे-धीरे जीव मारते हैं। उसे हलाल किया कहते हैं। यह पाप है। दोनों का बुरा हाल होगा।

❖ बकरी, मुर्गी (कुकड़ी), गाय, गधा, सूअर को खाते हैं। भक्ति की (रीस) नकल भी करते हैं। ऐसे पाप करने वालों से परमात्मा (अल्लाह) दूर है यानि कभी परमात्मा नहीं मिलेगा। नरक के भागी हो जाओगे। पाप ना करो।

घोड़े, ऊँट, तीतर, खरगोश तक खा जाते हैं और भक्ति बंदगी भी करते हैं। ऐसे (कुकर्मी) पापी से (अल्लाह) परमात्मा सौ कोस (एक कोस तीन किलोमीटर का होता है) दूर है यानि अल्लाह कभी नहीं मिलेगा।

❖ (भिस्त-भिस्त) स्वर्ग-स्वर्ग क्या कह रहे हो? (दोजख) नरक की आग में जलोगे।

❖ माँस खाते हो, जीव हिंसा करते हो, फिर भक्ति भी करते हो। यह गलत कर रहे हो। परमात्मा के दरबार में गले में फंद पड़ेगा यानि दण्डित किए जाओगे।(586-595)

❖ बासमती चावल पकाओ। उसमें घी तथा खांड (मीठा) डालकर खाओ और भक्ति करो। (कूड़े काम) बुरे कर्म (पाप), जुल्म त्याग दो। (फुलके) पतली-पतली छोटी-छोटी रोटियों को फुल्के कहते हैं। ऐसे फुल्के बनाओ। धोई हुई दाल पकाओ। हलवा, रोटी आदि-आदि अच्छा निर्दोष भोजन खाओ। हे काजी! सुनो, माँस ना खाओ।

परमात्मा की साधना करने के उद्देश्य से (रोजे) व्रत रखते हो, (तसबी) माला से जाप भी करते हो। फिर खून करते हो यानि गाय, मुर्गी-मुर्गा, बकरा-बकरी मारते हो। यह परमात्मा के साथ धोखा कर रहे हो। परमात्मा कबीर जी ने सद् उपदेश दिया। परंतु काजी तथा मुल्लाओं ने उसका दुःख माना।(596-598)

❖ **उस दिन दिल्ली का सम्राट सिकंदर लोधी (बहलोल लोधी का पुत्र) काशी नगर में आया हुआ था। दस हजार मुसलमान मिलकर सिकंदर लोधी के पास विश्रामगृह में गए। काजियों ने कहा कि हे जहांपनाह (जगत के आश्रय)! हमारे धर्म की तो बेइज्जती कर दी। हम तो कहीं के नहीं छोड़े। एक कबीर नाम का जुलाहा काफिर हमारे धर्म के धार्मिक कर्मों को नीच कर्म बताता है। अपने को (अलख अल्लाह) सातवें आसमान वाला अदृश्य परमात्मा कहता है।**

❖ **परमात्मा कबीर जी के साथ खेंचातान (परेशानी) शुरू हुई।**

❖ **सिकंदर राजा के आदेश से दस सिपाही परमात्मा कबीर जी को बाँधकर हथकड़ी लगाकर लाए। काजी-मुल्ला की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। गर्व से पगड़ी ऊँची कर ली। बोले कि हे राजन! यह जुलाहा पूर्ण रूप से काफिर (अवज्ञाकारी) है। यह माँस भी नहीं खाता। इसके हृदय में दया नाम की कोई वस्तु नहीं है। इसकी माता को तथा इसके पिता को भी पकड़कर लाया जाए।(604)**

❖ **मोमिन (मुसलमान) नीरू को भी पकड़ लिया। माता नीमा को भी पकड़ लिया। उन दोनों को भी वहीं राजा के पास ले आए। एक गाय को काट दिया।(605)**

❖ **राजा सिकंदर बोला कि हे काफिर! तू अपने को (अल्लाह) परमात्मा कहता है। यदि खुदा है तो इस दो टुकड़े हुई गाय को जीवित कर दे। हमारे नबी मुहम्मद ने मृत गाय को जीवित किया था। जीवित कर, नहीं तो तेरे टुकड़े कर दिए जाएँगे। अब चुपचाप क्यों बैठा है? दिखा अपनी शक्ति।(606)**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 607-610 :-**

हम हीं अलख अल्लाह हैं, कुतब गौस अरू पीर। गरीबदास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।।607।।
मैं कबीर सरबंग हूँ, सकल हमारी जात। गरीबदास पिंड प्राण में, युगन युगन का साथ।।608।।
गऊ पकड़ बिसमिल करी, दरगह खंड अजूद। गरीबदास उस गऊ का, पीवै जुलहा दूध।।609।।
चुटकी तारी थाप दे, गऊ जिवाई बेग। गरीबदास दूझन लगी, भरी दूध की देग।।610।।

❖ **कबीर परमात्मा बोले कि मैं अदृश्य परमात्मा हूँ। मैं ही संत तथा सतगुरू हूँ। मेरा नाम कबीर (अल्लाह अकबर) है। मैं (खालिक) संसार का मालिक (धनी) हूँ। मैं कबीर सर्वव्यापक हूँ।**

❖ **जो गाय मार रखी थी, उसके गर्भ का बच्चा व गाय के दो-दो टुकड़े हुए पड़े थे। परमात्मा कबीर जी ने हाथ से थपकी मारकर दोनों माँ-बच्चे को जीवित कर दिया। दूध की बाल्टी भर दी। कबीर जी ने वह दूध पीया।**

❖ **सिकंदर राजा को यह प्रथम (परिचय) चमत्कार दिखाया था यानि अपनी शक्ति का परिचय दिया था। काजी तथा मुल्ला उदास हो गए। उनकी नानी-सी मर गई। हजारों दर्शक शहर निवासी यह खड़े देख रहे थे। माता तथा पिता को धन्य-धन्य कहने लगे कि धन्य है तुम्हारा पुत्र कबीर।**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 613-619 का सरलार्थ :-**

❖ **कबीर परमात्मा जुलाहे का कार्य करता था। परंतु उस दिन जनता को पता चला कि यह बहुत सिद्धि वाला है। परमात्मा कबीर जी विशेष मुद्रा बनाए खड़े थे। उनका चेहरा सिंह (शेर) की तरह दिखाई दे रहा था। यह देखकर भारत का सम्राट सिकंदर बहुत आधीन हो गया। कबीर परमात्मा के चरणों में गिर गया। कबीर परमात्मा बोले कि लाओ कहाँ है गाय का माँस? परमात्मा कबीर खम्बे की तरह अडिग खड़े रहे। सिकंदर बादशाह चरणों में लेट गया।**

❖ **कबीर परमात्मा जी ने कहा कि हे मुसलमानों! अगर-मगर त्यागकर सीधे मार्ग चलो। अपना कल्याण करवाओ। पाप न करो। जब राजा सिकंदर ने परमात्मा कबीर जी के चरणों में लेटकर प्रणाम किया तो काजी-मुल्ला भाग गए। अहंकार में सड़ रहे थे। परमात्मा सामने था। उससे द्वेष कर रहे थे। राजा सिकंदर ने परमात्मा कबीर जी तथा उसके मुँहबोले माता-पिता (नीरू-नीमा) को पालकियों में बैठाकर सम्मान के साथ उनके घर भेजा। काजी-मुल्ला (एँठ) अकड़कर यानि नाराज होकर चले गए। फिर मौके की तलाश करने लगे कि किसी तरह सिकंदर राजा**

के समक्ष कबीर को नीचा दिखाया जाए।

❖ **राग निहपाल से शब्द नं. 1 :-**

✯जालिम जुलहे जारत लाई, ऐसा नाद बजाया है।। टेक।।

काजी पंडित पकड़ पछाड़े, तिन कूँ जवाब नहीं आया है। षट्दर्शन सब खारज कीन्हे, दोनों दीन चेताया है।।1।।
सुर नर मुनिजन भेद ना पावैं, दोहूं का पीर कहाया है। शेष महेश गणेश्वर थाके, जिन कूँ पार नहीं पाया है।।2।।
नौ अवतार हेर सब हारे, जुलहा नहीं हेराया है। चर्चा आन पड़ी ब्रह्मा से, चारों बेद हराया है।।3।।
मगहर देश कूँ किया पयाना, दोनों दीन डुराया है। घोर कफन जहाँ काठी दीन्हा, चाद्दर फूल बिछाया है।।4।।
गैबी मंजिल मारफत औंढ़ी, चाद्दर बीच न पाया है। काशी वासी है अविनाशी, नाद बिंद नहीं आया है।।5।।
ना गाड्या ना जार्या जुलहा, शब्द अतीत समाया है। च्यार दाग से रहित सतगुरु, सो हमारे मन भाया है।।6।।
मुक्ति लोक के मिले प्रगनें, अटल पटा लिखवाया है। फिर तागीर करै ना कोई, धुर का चाकर लाया है।।7।।
तख्त हिजूरी चाकर लागे, सत का दाग दगाया है। सतलोक में सेज हमारी, अबिगत नगर बसाया है।।8।।
चंपा नूर तूर बहु भांती, आन पदम झलकाया है। धन्य बंदी छोड़ कबीर गोसांई, दास गरीब बधाया है।।9।।1।।

❖ **सरलार्थ :- जालिम का अर्थ है जुल्म (अपराध) करने वाला जुल्मी। उसको ''जालिम'' भी कहते हैं। हरियाणा प्रांत की भाषा में यह एक प्यार का प्रतीक शब्द भी है जो अपने खास व्यक्ति के लिए उसकी प्रशंसा के लिए प्यार दर्शाने के लिए बोला जाता है। इसलिए संत गरीबदास जी ने अपने महबूब सतगुरू कबीर के लिए ''जालिम'' शब्द प्रयोग करके उनकी महिमा का ज्ञान करवाया है। कहा है कि जालिम जुलाहे कबीर जी ने (जारत) प्रेम भरी (जलन) तड़फ लगाई है। मैं उनके ऊपर कुर्बान जाऊँ। उसने अध्यात्म युद्ध का (नाद) बिगुल बजाया है। मुसलमान धर्म के विद्वान काजी, हिन्दू धर्म के विद्वान पंडित को अध्यात्म ज्ञान चर्चा में पछाड़ दिया (पराजित कर दिया), उनको जवाब नहीं आया।**

कबीर जी का पंडित से प्रश्न :

कौन ब्रह्मा का पिता है? कौन विष्णु की माँ? शंकर का दादा कौन है? हम कूं देय बताय।।

अर्थात् कबीर परमेश्वर जी ने पंडित से प्रश्न किया कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के माता-पिता कौन हैं? शंकर का दादा जी कौन है? कृपया बताईए?

उत्तर पंडित का :- ब्रह्मा, विष्णु, महेश के कोई माता-पिता नहीं हैं। ये कभी न जन्म लेते हैं, न मरते हैं, स्वयंभू हैं। यह पुराणों में प्रमाण है। कबीर जी ने कहा कि एक स्थान पर एक ब्राह्मण श्री देवी पुराण के तीसरे स्कंद को पढ़ रहा था। बोल रहा था कि श्री विष्णु जी ने देवी दुर्गा (अष्टांगी) को देखकर ब्रह्मा तथा शिव के सामने कहा कि हे माता! तुम शुद्ध स्वरूपा हो। यह सारा संसार तुम से ही उद्भासित हो रहा है। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है। हम अविनाशी नहीं हैं। शंकर ने कहा कि हे माता! जब विष्णु तथा ब्रह्मा आपसे उत्पन्न हुए हैं तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर तुम्हारी संतान नहीं हुआ? अर्थात् मुझे भी जन्म देने वाली तुम ही हो।

श्री शिव पुराण में विद्यवेश्वर संहिता में सदाशिव यानि काल ब्रह्म ने युद्ध कर रहे ब्रह्मा तथा विष्णु को रोककर कहा कि हे पुत्रो! तुम ''ईश'' प्रभु नहीं हो। जिसके लिए तुम लड़ रहे हो, यह सब मेरा है। तुम दोनों (ब्रह्मा तथा विष्णु) को तुम्हारे तप के प्रतिफल में दो कृत (विभाग) दिए गए हैं। सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मा को, स्थिति बनाए रखना-पालना विष्णु को। इसी प्रकार शिव को ''संहार कृत'' दिया है। मेरा पाँच अवयवों (अ,उ,म, बिन्द व नाद) से बना एक ॐ (ओं) अक्षर है। सिद्ध हुआ कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की माता प्रकृति देवी (दुर्गा) है। सदा शिव यानि काल ब्रह्म पिता है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि गीता का ज्ञान इसी काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके कहा था जो गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में स्पष्ट है जिसमें कहा है कि मुझ ब्रह्म का एक ओं (ॐ) अक्षर है उच्चारण करके स्मरण करने का। शिव पुराण में भी यही कहा है। उसने तीनों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) को अपने पुत्र कहा है। श्री कृष्ण स्वयं विष्णु थे, यह श्रीमद् भगवत (सुधा सागर) में प्रमाण है। सब हिन्दू भी यह मानते हैं।

गीता ज्ञान कहने वाले ने गीता 4 श्लोक 5, गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में

कहा है कि हे अर्जुन! तेरे तथा मेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं। तुम नहीं जानते, मैं जानता हूँ। मैं, तू तथा सब योद्धा पहले भी जन्मे थे, आगे भी जन्मेंगे। मेरी उत्पत्ति को देवता तथा महर्षिजन नहीं जानते क्योंकि वे सब मेरे से उत्पन्न हैं।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि पिता की उत्पत्ति संतान नहीं जानती, दादा जी बताता है। मैं (कबीर परमेश्वर जी) सबका उत्पत्तिकर्ता हूँ। ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) को मैंने वचन से उत्पन्न किया है। यह मेरा बागी पुत्र है। मैं इसका पिता हूँ। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तीनों भाई हैं। मैं इनका दादा हूँ।

यह सब प्रत्यक्ष प्रमाण जान व शास्त्रों में तुरंत देखकर पंडित (विद्वान) को कोई उत्तर नहीं आया, जवाब नहीं दिया। उठकर चला गया। दर्शक कबीर जी की जय बोलने लगे।

काजी (मुसलमान विद्वान) के साथ अध्यात्म ज्ञान चर्चा :- परमेश्वर कबीर जी ने प्रश्न किया कि आप किसको अल्लाह मानते हैं? काजी ने कहा कि अल्लाह तो एक है जो कादिर है। वह अल्लाह अकबर (बड़ा) है। जिस अल्लाह ने कुरआन शरीफ का ज्ञान हजरत मुहम्मद को दिया, हम उसको समर्थ अल्लाह मानते हैं। जिसने सर्व सृष्टि छः दिन में रची तथा तख्त के ऊपर सातवें आसमान पर जा बैठा, वह कादिर (समर्थ) परमात्मा है। हम (डमी गौड) असमर्थ पत्थर के अल्लाह की भक्ति नहीं करते।

कबीर परमेश्वर जी ने तर्क दिया :- कुरआन शरीफ की सूरत फुर्कानी 25 आयत 52-59 तक में पढ़ें। उसमें लिखा है कि कुरआन का ज्ञान देने वाले प्रभु (जिसे आप मुसलमान अपना पूज्य प्रभु बताते हैं) ने कहा कि हे हजरत मुहम्मद! तू काफिरों का कहा न मानना। मेरी (दलीलों) बातों पर विश्वास रखना। काफिर कबीर को अल्लाह नहीं मानते। तू उनकी बातों में न आना। उनके साथ संघर्ष करना। कबीर वही है जिसने छः दिन में सृष्टि रची। सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। उसकी खबर किसी (बाखबर) तत्त्वदर्शी संत से पूछो। कुरआन का ज्ञान देने वाला नहीं जानता। इससे स्वसिद्ध है कि कुरआन का ज्ञान देने वाले से कोई अन्य परमेश्वर है जिसने छः दिन में सृष्टि रची और सातवें दिन तख्त पर जा बैठा। हे काजी जी! आप भी असमर्थ परमात्मा की पूजा कर रहे हो। काजी दायें-बायें झांकने लगा। कुरआन खोला और पढ़ा, परंतु कुछ नहीं बोला। निरूत्तर हो गया।

कबीर जी ने प्रश्न किया कि क्या आपका धर्म पुनर्जन्म को मानता है?

काजी ने कहा कि नहीं मानता। ऐसा कहीं प्रमाण नहीं है।

परमात्मा कबीर जी ने प्रश्न किया कि मृत्यु के उपरांत मुसलमान की आत्मा कहाँ रहती है?

काजी ने अपनी दंत कथा (लोक वेद) को विस्तारपूर्वक बताया। हम यह मानते हैं कि जो भी मानव (स्त्री-पुरूष) जन्मता है, वह परमात्मा की भक्ति करे। परमात्मा के आदेशों का जो पवित्र कुरआन पुस्तक में बताए हैं, पालन करे। बुराईयों से बचें। मृत्यु के पश्चात् उसका शव जमीन में कब्र में दबा दिया जाएगा। वह जीव भी उस शरीर के साथ कब्र में ही रहेगा। सब मानव जो मुसलमान हैं, सब मृत्यु के पश्चात् जमीन में नीचे कब्रों में दबाए जाएँगे। मरते रहेंगे, जमीन में दबाते रहेंगे। हजरत आदम जो सब मनुष्यों का पिता है, उससे लेकर हजरत मुहम्मद तक सब नबी दाऊद, मूसा, अब्राहिम, ईसा आदि-आदि भी कब्रों में हैं। जब अल्लाह (कयामत) प्रलय करेगा, (जो अरबों-खरबों वर्षों के बाद होगी) तब तक सब रूहें (आत्माएँ) कब्रों में रहेंगी। प्रलय के पश्चात् सब मुर्दे जिंदे किए जाएँगे। उनके कर्मों अनुसार निर्णय किया जाएगा। जिन्होंने अच्छे कर्म किए हैं। कुरआन शरीफ के अनुसार यानि अल्लाह के हुक्म (आदेश) में रहकर धर्म कर्म किए हैं, उनको जन्नत (स्वर्ग) में रखा जाएगा। जिन्होंने (कादिर) समर्थ (अल्लाह) परमात्मा का विधान तोड़ा होगा, वह (दोजख) नरक की आग में जलाया जाएगा, नरक में डाला जाएगा। उस समय (कयामत आने तक) नरक तथा स्वर्ग में कोई नहीं रहेगा। स्वर्ग व नरक खाली पड़े रहेंगे। परमात्मा कबीर जी ने तर्क दिया कि हे काजी! मैंने एक मुल्ला से हजरत मुहम्मद नबी जी की जीवनी सुनी थी। उसमें लिखा था कि हजरत मुहम्मद ने अपने साथियों को बताया कि एक रात्रि में जिब्राइल फरिश्ता एक गधे जैसा जानवर जिसका नाम बुराक बताया, उसको लेकर आया। मुझे उस पर बैठाकर ऊपर ले गया। एक स्थान पर एक व्यक्ति बैठा था जो दायीं (**Right**) ओर (जन्नत) स्वर्ग की ओर मुख करके हँस रहा था तथा बायीं (**Left**) ओर (दोजख) नरक की ओर मुख करके

रो रहा था। मैंने जिब्राइल देवता से पूछा कि यह व्यक्ति कौन है? यह हँस तथा रो क्यों रहा है? जिब्राइल ने बताया कि यह सब मनुष्यों का बाप हजरत आदम है। दायीं ओर स्वर्ग में इसकी अच्छी संतान रहती हैं जिसने अल्लाह के आदेश का पालन करके जीवन जीया। ये सब जन्नत में सुखी हैं। इनको देखकर हँसता है। बायीं ओर इसकी निकम्मी संतान हैं जिसने अल्लाह (प्रभु) का आदेश पालन नहीं किया, पाप किए। वे नरक में दुःखी हैं। उनको देखकर रोता है। बाबा आदम ने मेरे से कहा कि आओ हे नेक बेटा! हे नेक नबी। इसके पश्चात् जन्नत के कई स्थान देखे जिनमें लोग बहुत सुखी जीवन जी रहे थे। फिर हम आगे गए तो पहले वाले नबियों की (जमात) मंडली मिली। उन्होंने मेरा सम्मान किया। वहाँ पर दाऊद, अब्राहिम, मूसा, ईसा आदि पहले वाले सब नबी थे। मैंने उनको नमाज पढ़ाई। इसके पश्चात् अल्लाह के निकट गए। वहाँ मैं अकेला गया। परमात्मा पर्दे के पीछे से बोला। पहले पचास नमाज करने को कहा। नीचे आया तो मूसा नबी ने कहा कि पचास नमाज नहीं की जा सकती, कुछ कम करवाओ। वापिस परमात्मा के पास गया। नमाज कम करवाने की अर्ज की। ऐसा दो-तीन बार करने पर अंत में पाँच बार की नमाज का आदेश परमात्मा से मिला और रोजा करना, बंग (अजान) लगाना, वे भक्ति कर्म करने का आदेश हुआ। मैं (हजरत मुहम्मद) नीचे पृथ्वी पर आ गया।

कबीर जी ने काजी से प्रश्न किया कि क्या हजरत मुहम्मद ने जो कहा था? आप इसे सत्य मानते हैं? काजी ने कहा कि शत प्रतिशत सत्य है। इसे कौन मुसलमान नहीं मानेगा?

विश्लेषण किया :- हे काजी जी! यदि आपका यह विधान सत्य है कि प्रलय (कयामत) तक सब कब्रों में रहेंगे और हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक एक लाख अस्सी हजार नबी (पगैम्बर) हुए हैं, वे सब भी कब्रों में हैं तो हजरत मुहम्मद की जन्नत यात्रा, परमात्मा से पाँच नमाज लाना। उनके द्वारा बताया उपरोक्त प्रकरण तो झूठा है। या तो आपका लोक वेद जो निराधार है कि प्रलय तक सब कब्रों में रहेंगे, झूठा है या हजरत मुहम्मद झूठे हैं। काजी के पास कोई जवाब (उत्तर) नहीं था। उठकर चला गया।

राग निहपाल के शब्द नं. 1 में यही बताया है कि कबीर परमेश्वर जी ने मुसलमानों के विद्वान काजी तथा मुल्लाओं को और हिन्दुओं के गुरू पंडितों को अध्यात्म ज्ञान में पछाड़ दिया (हरा दिया)।

हिन्दुओं के विद्वान पंडितों, षटदर्शनी साधुओं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश तक को अध्यात्म ज्ञान में पराजित कर दिया। उनको कोई उत्तर नहीं आया। दोनों धर्मों के साधकों को सतर्क किया है कि आप गलत भक्ति कर रहे हो, इसे छोड़ो। मेरे पास सत्य साधना है, उसे ग्रहण करें। संत गरीबदास जी ने बताया है कि (सुर) देवता तथा ऋषिजन भी कबीर परमेश्वर जी का भेद नहीं जान पाए। वह तो दोनों धर्मों (हिन्दू तथा मुसलमान) का (पीर) गुरू कहलाया है। नौ अवतार भी ज्ञान चर्चा में हारकर चले गए क्योंकि परमेश्वर कबीर जी प्रत्येक अच्छी आत्मा को मिलते हैं। उनको सत्य ज्ञान अवश्य बताते हैं। वे मानें या न मानें। ब्रह्मा ने चारों वेदों को लेकर परमेश्वर कबीर जुलाहे से चर्चा की। अंत में पराजित होकर उठ गया। परंतु सत्य को ग्रहण नहीं किया। मगहर से सशरीर गए, परमेश्वर कबीर जी का शरीर नहीं मिला था। एक चद्दर नीचे बिछाई थी। उसके ऊपर भक्तों ने फूल बिछाए थे। कबीर परमात्मा जी उस पर लेट गए थे और ऊपर एक चद्दर ओढ़ ली थी। फूल तथा दो चद्दर छोड़कर सतलोक सशरीर गए थे। उसी का वर्णन है। (काशी वासी) कबीर जुलाहा अविनाशी है। उनका शरीर ही नहीं मिला। इसलिए न तो मुसलमान धरती में दबा पाए, न हिन्दू अग्नि में जला पाए। कबीर परमेश्वर का शरीर नष्ट होने वाला ही नहीं है। वे मरते ही नहीं हैं तो चार दाग में कैसे आएगा? चार दाग का अर्थ चार प्रकार से मुर्दे का अंतिम संस्कार करते हैं। 1. अग्नि में जलाकर, 2. पृथ्वी में कब्र में दबाकर, 3. बहती दरिया में बहाकर, 4. खुले में एक ऊँचे मचान पर शव को डालना जिसे पक्षी खाते हैं, धर्म लगता है। वह सतगुरू मेरे (संत गरीबदास जी के) मन भाया है यानि अच्छा लगा है, शरण ली है। अमर लोक की दीक्षा मिली है। पूर्ण मुक्ति रूप अटल पट्टा लिखवा लिया है। हम तो परमेश्वर कबीर जी के सतलोक वाले दरबार में नौकर लग गए हैं। सत का दाग दगाया है यानि सच्ची दीक्षा मिली है। हम शिष्य बने हैं। हमारी सेज (बिस्तर) सतलोक है। हमारे लिए अलग नगर बसाने का आदेश हो चुका है। सतलोक में अपना परिवार बनाएँगे। बंदी छोड़ (काल की कैद से बंदियों को छुड़ाने वाले) कबीर जी का धन्यवाद है जिसने गरीबदास को बढ़ाया है यानि पार किया है, प्रसिद्धि दिलाई है तथा मोक्ष का यथार्थ नाम साधना के लिए बताया है।

❖ **राग आसावरी से शब्द नं. 12 :-**

✯दिल ही अंदर हुजरा काजी, दिल ही अंदर हुजरा। कर ले उस तालिब से मुजरा।।टेक।।
मक्का मदीना दिल ही अंदर, काबे कूँ कुर्बाना। काहे लेट निवाज करत हो, खोजो तन अस्थाना।।1।।
सत्तर काबे देख नूर के, खोल किवारी झांकी। ता पर एक गुमज है गैबी, पंथ डगरिया बांकी।।2।।
अल्लाह कबीर बड़ा जहां विराजै, झिलमिल नूरी देहा। जा समर्थ का भय कर काजी, ला ले वासैं नेहा।।3।।
हक्क हक्क कर मुल्लां बोलै, काजी पढै कुरानां। जिन्ह कूँ औह दीदार कहां है, जो काटैं गला बिरानां।।4।।
अर्श कुर्श में अल्लाह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली। वै पैगंबर पाख पुरुष थे, साहिब के अबदाली।।5।।
मुहम्मद कूँ नहीं गोश्त खाया, गऊ न बिस्मिल कीती। एक बेर कह्या मोमीन मुहम्मद, ता पर ऐती बीती।।6।।
नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया। एक लाख अस्सी कूँ सौगंध, जिन नहीं कर्द चलाया।।7।।
वैही मुहम्मद वैही महादेव, वैही आदम वैही ब्रह्मा। दास गरीब दूसरा को है, देखो अपने घर माह।।8।।12।।

❖ **सरलार्थ :- हे काजी! अपने दिल के अंदर परमात्मा का भाव है जो समर्थ परमेश्वर है। उस (तालिब) परमात्मा से (मुजरा) प्रेम कर ले। मानव शरीर में भक्ति करो। जो लाभ आप मक्का तथा मदीना धार्मिक स्थलों पर जाकर प्राप्त करना चाहते हो, वह वहाँ तो मिलेगा ही नहीं। सत्य भक्ति करने से घर पर ही कार्य करते-करते ही मिल जाएगा। परमात्मा के नाम पर कुर्बान हो जाओ। पशुओं की कुर्बानी त्याग दो। यह पाप है। जो पाँच समय लेटकर नमाज करते हो, इससे मोक्ष नहीं मिलेगा। यह तो केवल स्तुति है। नाम का स्मरण भी करना होगा। तब मोक्ष मिलेगा। केवल पाँच समय की नमाज (स्तुति) से मोक्ष नहीं मिलेगा। मानव शरीर मिला है। पाप कर्म त्यागकर सतलोक स्थान प्राप्त करने की भक्ति करो। ऊपर सतलोक के मार्ग में सत्तर काबे बने हैं। उनमें प्रणाम करता चलिए। त्रिकुटी की झांकी (Window) खोल ले यानि सुषमना द्वार खोलो। सतलोक में सबसे ऊपर एक गुमज है जो (गैबी) परमात्मा की गुप्त शक्ति से बना है। उसका पंथ कठिन है। उस गुमज में बड़ा अल्लाह कबीर बैठा है जिसका शरीर नूर का बना है। हे काजी! पाप न कर, उस समर्थ से डर। उससे प्रेम कर। उसकी आत्माओं को त्रास न दे।**

मुल्ला तो हक्क, हक्क (ठीक है, सही है) करता है। काजी कुरआन को पढ़ता है। जो अन्य जीव की (गला) गर्दन काटते हैं, उनको परमेश्वर का दर्शन नहीं हो सकता।

(अर्श) आकाश के (कुर्श) छोर पर सतलोक में (अलह) परमात्मा का (तख्त) सिंहासन है। (खालिक) परमेश्वर सर्वव्यापक है। उसकी शक्ति कण-कण में समाई है। इसलिए कहा है कि कोई भी स्थान परमात्मा के बिना नहीं है। वह (पैगंबर) नबी मुहम्मद तो पवित्र आत्मा थे। परमेश्वर के (अबदाली) कृपा पात्र थे।

हजरत मुहम्मद ने कभी (गोश्त) माँस नहीं खाया। एक बार वचन से गाय मारी थी। वचन से ही जीवित कर दी थी। हजरत मुहम्मद जी की मृत्यु के बाद में उस दिन की याद बनाए रखने के लिए माँस खाना प्रारंभ कर दिया। नबी मुहम्मद को तो मैं (संत गरीबदास जी) नमस्कार करता हूँ जो परमात्मा का रसूल कहलाया। एक लाख अस्सी हजार पैगंबर हो चुके हैं। कसम है परमात्मा की उन्होंने कभी जीव हिंसा नहीं की। वे सब नबी पवित्र आत्माएँ थी। परमेश्वर के कृपा पात्र थे। संत गरीबदास जी ने कहा है कि हजरत मुहम्मद का जीव शिव के लोक जिसे तुम लाहूत मुकाम कहते हो, से आया था। बाबा आदम ब्रह्मा के लोक से आया था। इसलिए कहा है कि वही मुहम्मद है, वही महादेव है, वही आदम है। जो ब्रह्मा के लोक से आया था, वही ब्रह्मा है। यदि मेरी बातों पर विश्वास नहीं है तो अपने शरीर में बने कमलों को खोलकर सच्ची भक्ति कर। फिर देख महादेव के लोक से मुहम्मद आया था। ब्रह्मा लोक से बाबा आदम आया था। यह सत्य है।

❖ **राग आसावरी से शब्द नं. 14 :-**

✯जो कोई ना मानै ना मानै, जैसे अजाजील ईरानैं।। टेक।।
करैं आचार विचार असंभी, पूजत जड़ पाषानैं। पाती तोड़ चढ़ावैं अंधरे, जीवत जी कूँ भांनैं।।1।।
पिण्ड प्रदान करैं पितरौं के, तीर्थ यज्ञ और दानैं। बिना सत भक्ति मोक्ष नहीं रे, भूल रहे सुर ज्ञानैं।।2।।
सुखदेव, शिव का तत्त सुना है, भक्ति लई धिगतानैं। सतगुरु जनक विदेही भेंटे, जाय स्वर्ग समानैं।।3।।
अकथ कथा कुछ कही न जाई, देखत नैन सिरानैं। अबल बली बरियाम विहंगम, लाय ले चोट निशानैं।।4।।

पंडित बेद पढ़ै बहु बाणी, काजी पढै कुरानैं। सूर गऊ कूँ दोय बतावैं, दोन्यौं दीन दिवानैं।।5।।
एक ही मिट्टी एक ही चमड़ी, एक ही बोलत प्राणैं। जिभ्या स्वाद मारत हैं नर, समझत नहीं हैवानैं।।6।।
मुर्गी बकरी कुकड़ी खाई, कूकैं बंग मुलानैं। जैसा दर्द आपनै होवै, ऐसा दर्द बिरानैं।।7।।
मन मक्के की हज नहीं कीन्हीं, दिल काबा नहीं जानैं। कैसी काजी कजा करत हो, खाते हो हिलवानैं।।8।।
जा दिन साहिब लेखा मांगैं, द्यो क्या जवाब दिवानैं। ऐसा कुफर तरस नहीं आवै, काटैं शीश खुरानैं।।9।।
उस पुर सेती महरम नांहीं, अनहद नाद घुरानैं। दास गरीब दुनि गई दोजिख, देवें गाली सत गुरूवां नै।।10।।14।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि मैं सत्य कह रहा हूँ कि परमात्मा को (बेअदबी) बकवास स्वीकार नहीं है। नम्रता पसंद करते हैं। कोई माने या ना माने, यह शत प्रतिशत सत्य है। एक अजाजील नाम का भक्त था। उसके गुरू ने प्रणाम यज्ञ करने की दीक्षा दे रखी थी। यज्ञ कोई भी है, यदि अकेली की जाती है यानि पूर्ण गुरू से नाम के जाप की दीक्षा प्राप्त नहीं है तो यज्ञ का फल स्वर्ग प्राप्ति है। अजाजील ने ग्यारह अरब प्रणाम किये।** {एक यज्ञ है धर्म की, दूसरी यज्ञ है ध्यान। तीसरी यज्ञ है हवन की, चौथी यज्ञ प्रणाम।। **पाँचवीं यज्ञ ज्ञान है।} अजाजील ने केवल एक यज्ञ अत्यधिक मात्रा में की। उसके फलस्वरूप स्वर्ग में स्थान मिला। देव पद का अधिकारी बना। देव पद देने से पहले श्री विष्णु रूप में पूर्ण परमात्मा ने अजाजील की परीक्षा लेनी चाही। उससे कहा कि अजाजील एक मनुष्य उत्पन्न कर। अजाजील ने पूछा कैसे उत्पन्न करूँ? विष्णु रूपधारी पूर्ण परमात्मा ने कहा कि यह कह कि मेरी साधना की शक्ति से एक जवान मनुष्य प्रकट हो। अजाजील ने ऐसा ही कह दिया। एक 18-20 वर्ष का युवक सामने खड़ा था। परमात्मा ने कहा कि यह तेरा वचन पुत्र स्वर्ग में तेरे साथ रहेगा। इसको प्रणाम कर। अजाजील ने कहा यह तो मेरा पुत्र है। मैं इसको प्रणाम नहीं करूँगा। परमात्मा ने कई बार आग्रह किया, परंतु अजाजील टस से मस नहीं हुआ। परमात्मा ने सोचा कि किसी तरह इसकी भक्ति बचाई जाए। एक छोटा दरवाजा वाटिका में बना था। उस लड़के को परमात्मा ने कहा कि इस छोटे द्वार के सामने दूसरी ओर वाटिका की ओर खड़ा हो जा। लड़का उस द्वार में से झुककर निकलकर दूसरी ओर खड़ा हो गया। परमात्मा ने अजाजील से कहा कि हे भक्त! अब आपको स्वर्ग में रहना है। चल तुझे स्वर्ग के बाग की सैर करवाता हूँ। दोनों चल पड़े महल के आंगन से वाटिका में प्रवेश करने के लिए, उसी छोटे द्वार से निकलने लगे। उसमें से झुककर ही निकला जा सकता था। भगवान विष्णु रूप में परमात्मा उस द्वार से झुककर निकल गए। अजाजील की विनाश काले विपरीत बुद्धि हो गई। उसने परमात्मा से कहा कि मैं आपकी चाल को समझ गया। सामने लड़का खड़ा है, मैं झुकूंगा तो आप उपहास करोगे कि देखा ना प्रणाम करवा दिया। मैं सब समझता हूँ। परमात्मा ने अजाजील को राहत देनी चाही थी कि यदि इस द्वार से झुककर निकल जाएगा तो मैं इसकी प्रणाम मान लूँगा। परंतु अजाजील नहीं माना। तब परमात्मा ने कहा कि भले व्यक्ति सारा जीवन प्रणाम किया। आधीनी आई नहीं। प्रणाम का क्या लाभ। प्रणाम तो मन का अहंकार समाप्त करने के लिए की जाती है। अहंकार तेरे अंदर भरा पड़ा है। चला जा यहाँ से। मैंने तेरी सब साधना समाप्त कर दी है। पृथ्वी पर गधा बन। अब गर्दन ऊपर कर ही नहीं पाएगा। उसी समय अजाजील का देव शरीर छूट गया यानि मर गया। अजाजील गधी के गर्भ में गया।**

गरीब, बे अदबी भावै नहीं साहिब के तांही। अजाजील की बंदगी पल माहीं बहाई।।

अर्थात् परमात्मा को बद्तमीजी अर्थात् बकवाद अच्छी नहीं लगती है। इसी कारण से अजाजील की प्रणाम की साधना एक क्षण में नष्ट कर दी।

❖ **शब्द की वाणी नं. 1-10 का सरलार्थ :- (असंभी) पाखंडी आचार-विचार यानि कर्मकांड करते हैं। { जैसे पत्थर या पीतल आदि धातु की भगवान की मूर्ति की पूजा करना, उसको प्रतिदिन स्नान करवाना, वस्त्र बदलना, चंदन का तिलक करना। गले में कंठी तुलसी की लकड़ी का एक मनका धागे में डालकर मूर्ति के गले में बांधना। अपने गले में भी बांधना, अपने को भी तिलक लगाना। मूर्ति की आरती उतारना, उसके सामने दीप व धूप जलाना। श्राद्ध करना, पिंडदान करना, तीर्थों पर जाकर अस्थि प्रवाह करवाना आदि-आदि सब आचार-विचार यानि कर्मकांड क्रियाएँ हैं जो व्यर्थ हैं।} (जड़) निर्जीव (पाषाण) पत्थर की पूजा करते हैं। तत्त्वज्ञान नेत्रहीन अंधे तुलसी तथा बेल के पत्ते तोड़कर मूर्ति के ऊपर चढ़ाते हैं। (जीवत जीव) तुलसी व बेल**

को तोड़ते हैं। पत्थर (जड़) निर्जीव की पूजा करते हैं। पित्तरों के पिंड भरना, तीर्थों पर स्नान व पूजा के लिए जाना। वहाँ पर दान करना, यह सब कर्मकांड है। यह वेद विरूद्ध गलत साधना करते हैं जो व्यर्थ है, कोई लाभ नहीं है। हे विद्वानो! सत्य भक्ति शास्त्रविधि अनुसार किए बिना मोक्ष नहीं है। तुमको भूल लगी है। सुखदेव ऋषि का जीव तोते के गंदे अंडे में पड़ा था। शिव जी ने अपनी पत्नी पार्वती को नाम दीक्षा देने से पहले पूर्ण परमात्मा की महिमा सुनाई। फिर नाम दीक्षा पाँचों कमलों को खोलने वाली सुनाई। गंदा अंडा स्वस्थ हो गया। बच्चा बन गया। पंख भी उग गई। पार्वती को निंद्रा आ गई। तोता हाँ-हाँ करने लगा तो शिव को पता चला कि पक्षी ने अनमोल नाम सुन लिया। यह किसी को बताएगा। उसको मारने के लिए चला तो पक्षी उड़ चला। शिव जी भी सिद्धि से उड़कर पीछे-पीछे चला। व्यास ऋषि के आश्रम में तोते ने अपना शरीर छोड़ दिया। उस समय व्यास की पत्नी ने जम्हाई ली। मुख खुला था। तोते वाला जीव व्यास ऋषि की पत्नी के पेट में खुले मुख द्वारा चला गया। शिव जी वहाँ जाकर ऋषि व्यास की पत्नी से बोले कि आपके गर्भ में एक जीव चला गया है। यह मेरा चोर है। मैं इसे मारूँगा। ऋषि व्यास ने करबद्ध होकर शिव जी से पूछा हे दयालु! कैसा चोर? शिव ने कहा कि इसने मेरा अमर मंत्र सुन लिया है। यह अमर हो गया है। व्यास ऋषि ने कहा कि यदि यह अमर हो गया है तो आप इसे मार नहीं सकते। शिव को भी समझ आया कि बात तो सत्य है। शिव लौटकर पार्वती के पास आए और शेष ज्ञान समझाया। कहा है कि शिव जी से सुखदेव ने (धींगताने) जबरदस्ती भक्ति ली है।

परमेश्वर की महिमा (अकथ) अवर्णनीय कहानी है। पंडितजन वेदों की वाणी बहुत पढ़ते हैं। काजी कुरआन पुस्तक को पढ़ते हैं। फिर भी सूअर तथा गाय के जीव में भेद मानते हैं। दोनों धर्मों के वक्ता विचलित हैं। वही जीव गाय में है, वही सूअर में है। वही देवता तथा मानव में है। किसी को भी न मारो। सूअर तथा गाय दोनों का शरीर हड्डियों, चाम, माँस तथा रक्त से बना है। इसको खाना पाप है। यह गंदा खाना है। माँस किसी का भी नहीं खाना चाहिए। किसी भी जीव को न मारो। जैसा (दर्द) दुःख अपने को होता है, ऐसा दर्द दूसरे को (बिराने) जानें। यदि हमारे बच्चों को, भाई या बहन को, माता-पिता को कोई मारे तो कैसा लगेगा? ऐसा ही अन्य को मारने का दुःख होता है।

मन में मक्का है। दिल में काबा यानि दिल में दया है तो भक्त है, नहीं तो कसाई है। हे जीव हिंसा करने वालो! जिस दिन परमात्मा लेखा (हिसाब) लेगा, तब क्या उत्तर दोगे? अरे इतना (कुफ्र) जुल्म करते हो, गाय या बकरे का सिर काटते हो। पैरों के खुर काटते हो। (तरस) दया नहीं आती। संत गरीबदास जी ने कहा है कि उस (पुर) सतलोक नगर के साथ लगाव नहीं है जहाँ पर मधुर ध्वनि बज रही है। यह दुनिया नरक में जाएगी। यह सतगुरू कबीर जी का अपमान करती है। जो उनको पाप से बचाना चाहता है। सदा सुखी देखना चाहता है। उसको गाली देती है। कहती है कि कबीर जुलाहा अपराधी है। देवी-देवताओं की आलोचना करता है आदि-आदि, कुवचन संसार के व्यक्ति कबीर जी को कहते हैं।

❖ **राग बिलावल से शब्द नं. 24 :-**

★कर साहिब की बंदगी, गफलत नहीं कीजै। अजाजील कूँ देख रे, अब कौन पतीजै।। टेक।।

अजाजील क्यों बह गया, कैसे ईरान्या। योजन संख समाधि रे, ता पर अस्थाना।।1।। किन्हीं साहिब की बंदगी, धर धनी धियाना। बाणी बचन अदूल रे, ऐसे ईरान्या।।2।। ब्रह्मा आदम विष्णु कूँ, वह महल न पावै। अजाजील की सैल कूँ, दूजा को ध्यावै।।3।। गफलत ऊपर मार है, सुन शब्द संदेशा। अजाजील के सफर कूँ, पौंहचे नहीं शेषा।।4।। बंदा कीन्हां नूर का, हरि हुक्म उपाया। बिना धनी की बंदगी, दोजख पैठाया।।5।। तन मन जाका नूर का, सब नूरी फिरका। कीन्हा हुकम अदूल रे, सांई के घर का।।6।। बे अदबी भावै नहीं, साहिब के तांहीं। अजाजील की बंदगी पल माहीं बहाई।।7।। हाड चाम का पूतला, जा से क्या कहिये। बंदा बह गया नूर का, अब चेतन रहिये।।8।। ईरान्यां बौहडै नहीं, साहिब के घर का। नहीं भरोसा कीजिये, इस गंदे नर का।।9।। अजराईल ठाढा रहै, साहिब के आगै। अनंत लोक ब्रह्मंड की, बाणी अनुरागै।।10।। जबराईल जुबान पर, हाजिर दरबाना। अलह तख्त की बंदगी, निर्गुण निर्बाणा।।11।। महकाईल अशील सुर, धर सुष्मण ध्याना। गगन मंडल के महल कूँ, सो करत पियाना।।12।। असराफील अलील भूमि पर, धर है ध्याना। नूर झिलमिल कर रहा, कादिर कुर्बाना।।13।। चार मुव्वकिल रहत हैं, धर्मराय दरबारी। ये ही सनक सनंदना, ये ही चार यारी।।14।। गरीबदास गति गर्भ की, कुछ लखै न माता। दोहूँ दीन भिड़ भिड़ मरैं, वोह एक कबीर विधाता।।15।।24।।

❖ **सरलार्थ :- आधीन भाव से भक्ति करो। देखो! अजाजील ने भक्ति भी की, परंतु आधीनी नहीं आई तो सब भक्ति परमात्मा ने समाप्त कर दी थी। अजाजील ने जीवन काल में ग्यारह अरब बंदगी की यानि प्रणाम किए। इसकी शक्ति से विष्णु लोक में गए। श्री विष्णु के वेश में कबीर सतपुरूष ने कहा कि एक मनुष्य उत्पन्न कर। अजाजील ने कहा कि नर भवः। एक जवान लड़का उत्पन्न हुआ। भगवान ने कहा कि अजाजील! इसे प्रणाम कर। अजाजील बोला कि यह तो मेरा पुत्र है। मैं पिता होकर इसे प्रणाम कैसे करूँ? बहुत कहने पर भी नहीं माना तो भगवान ने अजाजील की सब भक्ति नष्ट कर दी, नरक में गया। कहा कि जब नूर का बंदा भी गलती कर गया तो अन्य मानव का क्या भरोसा? ध्यान से भक्ति करो, आधीनी रखो। {अजाजील के विषय में लोकवेद है कि वह श्री विष्णु जी का पुजारी था। इसलिए विष्णु लोक में गया। वास्तविकता इससे हटकर है। अजाजील किसी को इष्ट नहीं मानता था। जैसा गुरू जी ने बताया, उसी तरह केवल बंदगी, दण्डवत् प्रणाम तथा राम-राम करता था। पूर्ण ब्रह्म कबीर जी सबको उनके कर्मों के अनुसार फल देते हैं। इसलिए वह समर्थ ही श्री विष्णु जी रूप बनाकर प्रकट हुए थे। अजाजील श्री विष्णु को भी मानते थे कि वे भी अमर प्रभु हैं जो अजाजील के अध्यात्म अज्ञान का प्रतीक है। इसलिए पूर्ण ब्रह्म कबीर जी श्री विष्णु के रूप में अजाजील को बैकुंठ में मिले। अजाजील राम को निराकार शक्ति मानता था। इसलिए उसके लिए परमेश्वर जी ने श्री विष्णु रूप बनाया तथा परीक्षा ली।} मुसलमानों ने बताया है कि ''मेकाईल (माईकल), जिब्राइल, असराफिल तथा अजराइल, ये चार फरिश्ते हैं जो अल्लाह के पास रहते हैं। हिन्दू इन्हीं को सनक, सनंदन, सनातन तथा संत कुमार कहते हैं। मुसलमान इन्हें चार यारी कहते हैं।'' संत गरीबदास जी ने कहा है कि गर्भ में परमात्मा ने एक जैसे बच्चे रखे हैं। माता को पता नहीं होता कि गर्भ में लड़का है या लड़की, हिन्दू है या मुसलमान? दोनों धर्म झगड़ा करते हैं। वह तो सबका एक विधाता है।**

खुदा कबीर चारों युगों में एक जीवन सामान्य व्यक्ति की तरह रहकर लीला करके अपनी जानकारी स्वयं ही बताता है। अपना नबी आप ही बनकर आता है। कादिर अल्लाह के रसूल गरीबदास जी ने कादिर खुदा कबीर जी का परिचय इस प्रकार बताया है :-

{रब कबीर चारों युग में प्रकट होते हैं। पहले कलयुग में प्रकट होने वाली जानकारी संत गरीबदास जी द्वारा बताई पढ़ते हैं।}

कादिर खुदा का कलयुग में प्राकाट्य

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 376-380 :-**

गरीब, चौरासी बंधन कटे, कीनी कल्प कबीर। भवन चतुर्दश लोक सब, टूटैं यम जंजीर।।376।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड में, बंदी छोड़ कहाय। सो तो एक कबीर है, जननी जन्या न माय।।377।।
गरीब, शब्द स्वरूप साहिब धनी, शब्द सिंध सब माहीं। बाहर भीतर रम रह्या, जहां तहां सब ठाहीं।।378।।
गरीब, जल थल पृथ्वी गगन में, बाहर भीतर एक। पूर्ण ब्रह्म कबीर है, अबिगत पुरूष अलेख।।379।।
गरीब, सेवक होय कर ऊतरे, इस पृथ्वी के माहीं। जीव उद्धारन जगतगुरू, बार बार बलि जाहीं।।380।।

❖ **सरलार्थ :- वाणियों में परमात्मा कबीर जी के कलयुग में प्राकाट्य का प्यारा वर्णन है जो इस प्रकार है :-**

❖ **वाणी नं. 376-380 में परमात्मा कबीर जी की महिमा का वर्णन है। कहा है कि कबीर परमेश्वर बंदी छोड़ हैं। अनंत करोड़ ब्रह्माण्डों में बन्दी छोड़ के नाम से प्रसिद्ध हैं। बन्दी छोड़ का अर्थ है कैदी को कारागार से छुड़ाने वाला। हम सब जीव काल ज्योति निरंजन की कारागार में बंदी (कैदी) हैं। इस बंदीगृह से केवल कबीर परमात्मा की छुड़ा सकते हैं। इसलिए सब ब्रह्माण्डों में परमात्मा कबीर जी एकमात्र बन्दी छोड़ हैं। केवल कबीर परमेश्वर जी ही एकमात्र हैं जिनका जन्म माता के गर्भ से नहीं हुआ।(376)**

❖ **जो परमात्मा कबीर जी की शरण में आ जाते हैं, कबीर परमेश्वर जी की कृपा से चौरासी लाख योनियों में जाने वाले बंधन कट जाते हैं। (कर्मों के कारण बंधन होता है। वे पाप कर्म परमात्मा कबीर जी की कृपा से नष्ट हो जाते हैं। सतनाम के जाप से पाप नाश होते हैं।)(377)**

❖ **परमात्मा कबीर जी (शब्द स्वरूपी) अविनाशी रूप हैं। उनकी (शब्द सिंधु) वचन शक्ति समुद्र की तरह अथाह**

है। जीव एक तुम्बे की तरह है जो समुद्र में पड़ा है। उसके अंदर भी जल बाहर भी जल होता है। ऐसे परमात्मा कबीर जी की शक्ति के अंदर सब ब्रह्माण्डों के जीव हैं। परमात्मा इस प्रकार सर्वव्यापक कहा जाता है। कबीर जी पूर्णब्रह्म हैं। (अविगत पुरूष अलेख) दिव्य अवर्णनीय परमेश्वर है।(378-379)

❖ **परमात्मा कबीर जी वेदों में बताए उनकी महिमा के अनुरूप लीला करते हैं। ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मंत्र 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मंत्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16-20 आदि-आदि अनेकों मंत्रों में कहा है कि परमात्मा (कविर्देव) कबीर परमेश्वर है जो आकाश में सबसे ऊपर वाले स्थान पर बैठा है। वहाँ से गति करके आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको उपदेश देता है। तत्त्वज्ञान का प्रचार अपनी (कविर्गिर्भिः) कबीर वाणी द्वारा (काव्येन) कवित्व से यानि कवियों की तरह साखी, शब्द, चौपाईयों द्वारा बोल-बोलकर करता है। जिस कारण से (कविनाम पदवी) कवियों में से प्रसिद्ध कवि की उपाधि प्राप्त करता है। जैसे परमात्मा कबीर जी को ''कवि'' भी कहा जाता है। परमात्मा कबीर जी पृथ्वी पर कवियों की तरह आचरण करता हुआ विचरण करता है। परमात्मा कबीर जी अपनी वाणी बोलकर भक्ति करने की प्रेरणा करता है। भक्ति के गुप्त नाम का आविष्कार करता है।(380)**

सन् 1398 में जब परमात्मा कबीर जी (कविर्देव जी) स्वयं प्रकट हुए थे उस समय सर्व सद्ग्रन्थों का वास्तविक ज्ञान लोकोक्तियों (दोहों, चौपाईयों, शब्दों अर्थात् कविताओं) के माध्यम से साधारण भाषा में जन साधारण को बताया था। उस तत्त्व ज्ञान को उस समय के संस्कृत भाषा व हिन्दी भाषा के ज्ञाताओं ने यह कह कर ठुकरा दिया कि कबीर जी तो अशिक्षित है। इस के द्वारा कहा गया ज्ञान व उस में उपयोग की गई भाषा व्याकरण दृष्टिकोण से ठीक नहीं है।

जैसे कबीर जी ने कहा है :-

कबीर बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदों माहीं। जौण बेद से मैं मिलूं, ये बेद जानते नाहीं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने कहा है कि जो चार वेद है ये मेरे विषय में ही ज्ञान बता रहे हैं परन्तु इन चारों वेदों में वर्णित विधि द्वारा मैं (पूर्ण ब्रह्म) प्राप्त नहीं हो सकता। जिस वेद (स्वसम अर्थात् सूक्ष्म वेद) में मेरी प्राप्ति का ज्ञान है। उस को चारों वेदों के ज्ञाता नहीं जानते। इस वचन को सुनकर। उस समय के आचार्यजन कहते थे कि कबीर जी को भाषा का ज्ञान नहीं है। देखो वेद का बेद कहा है। नहीं का नाहीं कहा है। ऐसे व्यक्ति को शास्त्रों का क्या ज्ञान हो सकता है? इसलिए कबीर जी मिथ्या भाषण करते हैं। इसकी बातों पर विश्वास नहीं करना। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ग्यारह पृष्ठ 306 पर कबीर जी के विषय में यही कहा है।

पूर्ण परमात्मा कविर्देव है, यह प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 तथा सामवेद संख्या 1400 में भी है जो निम्न है :-

यजुर्वेद के अध्याय नं. 29 के श्लोक नं. 25 **(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य) :-**

समिद्धोऽद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।

आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः—अद्य—मनुषः—दुरोणे—देवः—देवान्—यज्—असि—जातवेदः—आ—च—वह—

मित्रमहः—चिकित्वान्—त्वम्—दूतः—कविर्—असि—प्रचेताः

अनुवाद :— (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरूष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा ही अपने (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविरसि) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर हैं।

भावार्थ - जिस समय पूर्ण परमात्मा प्रकट होता है उस समय सर्व ऋषि व सन्त जन शास्त्र विधि त्याग कर

मनमाना आचरण अर्थात् पूजा द्वारा सर्व भक्त समाज का मार्ग दर्शन कर रहे होते हैं। तब अपने तत्त्वज्ञान अर्थात् स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक बन कर स्वयं ही कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु ही आता है।

संख्या नं. 1400 सामवेद उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5

(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्याऽवसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।5।।

भद्रा—वस्त्रा—समन्या—वसानः—महान्—कविर्—निवचनानि—शंसन्— आवच्यस्व—चम्वोः— पूयमानः—विचक्षणः—जागृविः—देव—वीतौ

अनुवाद :— (सम् अन्या) अपने शरीर जैसा अन्य (भद्रा वस्त्रा) सुन्दर चोला यानि शरीर (वसानः) धारण करके (महान् कविर्) समर्थ कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर (निवचनानि शंसन्) अपने मुख कमल से वाणी बोलकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है, यथार्थ वर्णन करता है। जिस कारण से (देव) परमेश्वर की (वितौ) भक्ति के लाभ को (जागृविः) जागृत यानि प्रकाशित करता है। (विचक्षणः) कथित विद्वान सत्य साधना के स्थान पर (आ वच्यस्व) अपने वचनों से (पूयमानः) आन—. उपासना रूपी मवाद (चम्वोः) आचमन करा रखा होता है यानि गलत ज्ञान बता रखा होता है।

भावार्थ :- जैसे यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र एक में कहा है कि 'अग्नेः तनुः असि = **परमेश्वर सशरीर है। विष्णवे त्वा सोमस्य तनुः असि = उस अमर प्रभु का पालन पोषण करने के लिए अन्य शरीर है जो अतिथि रूप में कुछ दिन संसार में आता है। तत्त्व ज्ञान से अज्ञान निंद्रा में सोए प्रभु प्रेमियों को जगाता है। वही प्रमाण इस मंत्र में है कि कुछ समय के लिए पूर्ण परमात्मा कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु अपना रूप बदलकर सामान्य व्यक्ति जैसा रूप बनाकर पृथ्वी मण्डल पर प्रकट होता है तथा कविर्निवचनानि शंसन् अर्थात् कविर्वाणी बोलता है। जिसके माध्यम से तत्त्वज्ञान को जगाता है तथा उस समय महर्षि कहलाने वाले चतुर प्राणी मिथ्याज्ञान के आधार पर शास्त्र विधि अनुसार सत्य साधना रूपी अमृत के स्थान पर शास्त्र विधि रहित पूजा रूपी मवाद को श्रद्धा के साथ आचमन अर्थात् पूजा करा रहे होते हैं। उस समय पूर्ण परमात्मा स्वयं प्रकट होकर तत्त्वज्ञान द्वारा शास्त्र विधि अनुसार साधना का ज्ञान प्रदान करता है।**

पवित्र ऋग्वेद के निम्न मंत्रों में भी पहचान बताई है कि जब वह पूर्ण परमात्मा कुछ समय संसार में लीला करने आता है तो शिशु रूप धारण करता है। उस पूर्ण परमात्मा की परवरिश (अध्न्य धेनवः) कंवारी गायों द्वारा होती है। फिर लीलावत् बड़ा होता है तो अपने पाने व सतलोक जाने अर्थात् पूर्ण मोक्ष मार्ग का तत्त्वज्ञान (कविर्गिभिः) कबीर बाणी द्वारा कविताओं द्वारा बोलता है, जिस कारण से प्रसिद्ध कवि कहलाता है, परन्तु वह स्वयं कविर्देव पूर्ण परमात्मा ही होता है जो तीसरे मुक्ति धाम सतलोक में रहता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 तथा सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 :-

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।
अभी इमम्—अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

अनुवाद :— (उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुख सुविधाओं द्वारा अर्थात् खाने—पीने द्वारा जो शरीर वृद्धि को प्राप्त होता है उसे (पातवे) वृद्धि के लिए (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गौवें, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हों अर्थात् कंवारी गायों द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआ बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है उस समय कंवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

देखें फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 की जिसका अनुवाद आर्य समाजियों ने किया है :-

अभी इममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्यं की (पातवे) वृद्धि के लिये । (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्यं की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

विवेचन :- यह फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 की है इसमें स्पष्ट है कि (सोम) अमर परमात्मा जब शिशु रूप में प्रकट होता है तो उसकी परवरिश की लीला कुंवारी गायों (अभि अध्न्या धेनुवः) द्वारा होती है। यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान सागर'' में है कि जिस परमेश्वर कबीर जी को नीरू-नीमा अपने घर ले गए। तब शिशु रूपधारी परमात्मा ने न अन्न खाया, न दूध पीया। फिर स्वामी रामानन्द जी के बताने पर एक कुंवारी गाय अर्थात् एक बछिया नीरू लाया, उसने तत्काल दूध दिया। उस कुंवारी गाय के दूध से परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई थी। कबीर सागर लगभग 600 (छः सौ) वर्ष पहले का लिखा हुआ है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 के अनुवाद में कुछ गलती की है। जैसे (अभिअध्न्या) का अर्थ अहिंसनीय कर दिया जो गलत है। हरियाणा प्रान्त के जिला रोहतक में गाँव धनाना में लेखक का जन्म हुआ जो वर्तमान में जिला सोनीपत में है। इस क्षेत्र में जिस गाय ने गर्भ धारण न किया हो तो कहते हैं कि यह धनाई नहीं है, यह बिना धनाई है। यह अपभ्रंश शब्द है। एक गाय के लिए ''अध्नि'' शब्द है। बहुवचन के लिए ''अध्न्या'' शब्द है। ''अध्न्या'' का अर्थ है बिना धनाई गौवें तथा अभिध्न्या का अर्थ है पूर्ण रूप से बिना धनायी अर्थात् कुंवारी गायें अर्थात् बछियाँ।

पारख के अंग की वाणी नं. 380 में कहा है कि :-

गरीब, सेवक होय कर ऊतरे, इस पृथ्वी के माहीं।
जीव उद्धारन जगतगुरू, बार बार बलि जाहीं।।380।।

पूर्ण ब्रह्म कबीर जी परमात्मा से (सेवक) दास बनकर (ऊतरे) ऊपर आकाश में अपने निवास स्थान सतलोक से गति करके उतरकर नीचे पृथ्वी के ऊपर आए। उद्देश्य बताया है कि जीवों का काल जाल से उद्धार करने के लिए जगत गुरू बनकर आए। मैं (संत गरीबदास जी) अपने सतगुरू कबीर जी पर बार-बार बलिहारी जाऊँ।

परमेश्वर कबीर जी का लहरतारा तालाब काशी नगर के जंगल में कमल के फूल पर प्रकट होने का वर्णन

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 381-384 :-**

गरीब, काशी पुरी कस्त किया, उतरे अधर अधार।
मोमिन नीरू कूँ मुजरा हुआ, जंगल में दीदार।।381।।
गरीब, कोटि किरण शशि भान सुधां, आसन अधर विमान।
परसत पूर्ण ब्रह्म कूँ, शीतल पिंड रू प्राण।।382।।
गरीब, गोद लिया मुख चूम कर, हिम रूप झलकंत। जगर मगर काया करै, दमकैं पदम अनंत।।383।।
गरीब, काशी उमटी गुल भया, मोमिन नीरू का घर घेर। कोई कहै ब्रह्मा विष्णु हैं, कोई कहै इन्द्र कुबेर।।384।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 381-384 का सरलार्थ :-**

कबीर परमेश्वर जी का कलयुग में अवतरण

लेखक के शब्दों में :- बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने द्वापर युग में अपने प्रिय शिष्य सुदर्शन वाल्मीकि जी को शरण में लिया था। भक्त सुदर्शन जी के माता-पिता ने परमेश्वर कबीर जी के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया था जिनके नाम थे पिता जी का नाम ''भीखू राम'' तथा माता जी का नाम ''सुखवन्ती''। जिस समय दोनों (माता तथा पिता) शरीर त्याग गए तो भक्त सुदर्शन जी अत्यन्त व्याकुल रहने लगे। भक्ति भी कम करते थे। अन्तर्यामी

करूणामय जी (द्वापर युग में कबीर परमेश्वर करूणामय नाम से लीला कर रहे थे) ने अपने भक्त के मन की बात जान कर पूछा हे भक्त सुदर्शन! आप को कौन सी चिन्ता सता रही है। क्या माता-पिता का वियोग सता रहा है? या कोई अन्य पारिवारिक परेशानी है? मुझे बताइये।

भक्त सुदर्शन जी ने कहा हे बन्दी छोड़! हे अन्तर्यामी! आप सर्वज्ञ हैं आप बाहर-भीतर की सर्व स्थिति से परिचित है। हे प्रभु! मुझे मेरे माता-पिता के निधन का दुःख नहीं है क्योंकि वे बहुत वृद्ध हो चुके थे। आप ने बताया है कि यह पाँच तत्त्व का पुतला एक दिन नष्ट होना है। मुझे चिन्ता सता रही है कि मेरे माता-पिता अत्यन्त पुण्यात्मा, दयालु तथा धर्मात्मा थे। उन्होंने अपनी भक्ति लोकवेद अनुसार की थी। जो शास्त्रविधि के विरूद्ध थी। जिस कारण से उनका मानव जीवन व्यर्थ गया। अब पता नहीं किस प्राणी की योनि में कष्ट उठा रहे होंगे? आप से नम्र निवेदन आप का दास करता है कि कभी मेरे माता-पिता मानव शरीर प्राप्त करें तो उन्हें अपनी शरण में लेना परमेश्वर तथा उन्हें भी भवसागर से (काल ब्रह्म के लोक से) पार करना मेरे दाता! मुझे यही चिन्ता सता रही है। परमेश्वर कबीर जी ने सोचा कि यह भोला भक्त सुदर्शन माता-पिता के मोह में फंस कर काल जाल में ही रहेगा। काल ब्रह्म ने मोह रूपी पाश बहुत दृढ़ बना रखा है। यह विचार कर परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे भक्त सुदर्शन ! आप चिन्ता मत करो मैं आप के माता-पिता को अवश्य शरण में लूंगा तथा पार करके ही दम लूंगा। आप सत्य लोक जाओ। यह चिन्ता छोड़ो। परमेश्वर कबीर जी के आश्वासन के पश्चात् भक्त सुदर्शन जी सत्य साधना करके सत्यलोक को गया। पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

भक्त सुदर्शन के माता-पिता वाले जीवों के कलयुग के अन्य मानव जन्मों की जानकारी

भक्त सुदर्शन के माता-पिता प्रथम बार कुलपति ब्राह्मण (पिता) तथा महेश्वरी (माता) रूप में जन्में। दोनों का विवाह हुआ। संतान नहीं हुई। एक दिन महेश्वरी जी सूर्य की उपासना करते हुए हाथ फैलाकर पुत्र माँग रही थी। उसी समय कबीर परमेश्वर जी उसके हाथों में बालक रूप बनाकर प्रकट हो गए। सूर्य का परितोष (तोहफा) जानकर बालक को घर ले गई। वे बहुत निर्धन थे। उनको प्रतिदिन एक तोला सोना परमात्मा के बिछौने के नीचे मिलने लगा। यह भी उन्होंने सूर्यदेव की कृपा माना। पाँच वर्ष की आयु का होने पर उनको भक्ति बताई, परंतु बालक जानकर उनको परमात्मा की एक बात पर भी विश्वास नहीं हुआ। उस जन्म में उन्होंने परमात्मा को नहीं पहचाना। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी बालक रूप अंतर्ध्यान हो गए। दोनों पति-पत्नी पुत्र मोह में व्याकुल हुए। परमात्मा की सेवा के फलस्वरूप उनको अगला जन्म भी मानव का मिला। चन्दवारा शहर में पुरूष का नाम चंदन तथा स्त्री का नाम उद्धा था। ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ। दोनों निःसंतान थे। एक दिन उद्धा सरोवर पर स्नान करने गई। वहाँ कबीर परमेश्वर जी कमल के फूल पर शिशु रूप धारण करके विराजमान हुए। उद्धा बालक कबीर जी को उठाकर घर ले गई। लोकलाज के कारण चन्दन ने पत्नी से कहा कि इस बालक को जहाँ से लाई थी, वहीं छोड़कर आ। कुल के लोग मजाक करेंगे। दोनों पति-पत्नी परमात्मा को लेकर जल में डालने चले तो परमात्मा उनके हाथों से गायब हो गए। दोनों बहुत व्याकुल हुए। परमात्मा का परितोष न लेने के भय से सारी आयु रोते रहे। अगला जन्म भी मानव का हुआ। कथा इस प्रकार है :-

भक्त सुदर्शन वाल्मीकि के माता-पिता वाले जीवों को कलयुग में तीसरा भी मानव शरीर प्राप्त हुआ। भारत वर्ष के काशी शहर में सुदर्शन के पिता वाले जीव ने एक ब्राह्मण के घर जन्म लिया तथा गौरीशंकर नाम रखा गया तथा सुदर्शन जी की माता वाले जीव ने भी एक ब्राह्मण के घर कन्या रूप में जन्म लिया तथा सरस्वती नाम रखा। युवा होने पर दोनों का विवाह हुआ। गौरी शंकर ब्राह्मण भगवान शिव का उपासक था तथा शिव पुराण की कथा करके भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया करता। गौरीशंकर निर्लोभी था। कथा करने से जो धन प्राप्त होता था उसे धर्म में ही लगाया करता था। जो व्यक्ति कथा कराते थे तथा सुनते थे सर्व गौरी शंकर ब्राह्मण के त्याग की प्रशंसा करते थे।

जिस कारण से पूरी काशी में गौरी शंकर की प्रसिद्धि हो रही थी। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों का कथा करके धन इकत्रित करने का धंधा बन्द हो गया। इस कारण से वे ब्राह्मण उस गौरीशंकर ब्राह्मण से ईर्ष्या रखते थे। इस बात का पता मुसलमानों को लगा कि एक गौरीशंकर ब्राह्मण काशी में हिन्दू धर्म के प्रचार को जोर-शोर से कर रहा

है। इसको किस तरह बन्द करें। मुसलमानों को पता चला कि काशी के सर्व ब्राह्मण गौरीशंकर से ईर्ष्या रखते हैं। इस बात का लाभ मुसलमानों ने उठाया। गौरीशंकर व सरस्वती के घर के अन्दर अपना पानी छिड़क दिया। अपना झूठा पानी उनके मुख पर लगा दिया। कपड़ों पर भी छिड़क दिया तथा आवाज लगा दी कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं। पुरूष का नाम नूरअली उर्फ नीरू तथा स्त्री का नाम नियामत उर्फ नीमा रखा। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों को पता चला तो उनका दाव लग गया। उन्होंने तुरन्त ही ब्राह्मणों की पंचायत बुलाई तथा फैसला कर दिया कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं अब इनका ब्राह्मण समाज से कोई नाता नहीं रहा है। इनका गंगा में स्नान करने, मन्दिर में जाने तथा हिन्दू ग्रन्थों को पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

गौरीशंकर (नीरू) जी कुछ दिन तो बहुत परेशान रहे। जो कथा करके धन आता था उसी से घर का निर्वाह चलता था। उसके बन्द होने से रोटी के भी लाले पड़ गए। नीरू ने विचार करके अपने निर्वाह के लिए कपड़ा बुनने का कार्य प्रारम्भ किया। जिस कारण से जुलाहा कहलाया। कपड़ा बुनने से जो मजदूरी मिलती थी उसे अपना तथा अपनी पत्नी का पेट पालता था। जिस समय धन अधिक आ जाता तो उसको धर्म में लगा देता था। विवाह को कई वर्ष बीत गए थे। उनको कोई सन्तान नहीं हुई। दोनों पति-पत्नी ने बच्चे होने के लिए बहुत अनुष्ठान किए। साधु सन्तों का आशीर्वाद भी लिया परन्तु कोई सन्तान नहीं हुई। हिन्दुओं द्वारा उन दोनों का गंगा नदी में स्नान करना बन्द कर दिया गया था। उनके निवास स्थान से लगभग चार कि.मी. दूर एक लहर तारा नामक सरोवर था जिस में गंगा नदी का ही जल लहरों के द्वारा नीची पटरी के ऊपर से उछल कर आता था। इसलिए उस सरोवर का नाम लहरतारा पड़ा। उस तालाब में बड़े-2 कमल के फूल उगे हुए थे। मुसलमानों ने गौरीशंकर का नाम नूर अली रखा जो उर्फ नाम से नीरू कहलाया तथा पत्नी का नाम नियामत रखा जो उर्फ नाम से नीमा कहलाई। नीरू-नीमा भले ही मुसलमान बन गए थे परन्तु अपने हृदय से साधना भगवान शंकर जी की ही करते थे तथा प्रतिदिन सवेरे सूर्योदय से पूर्व लहरतारा तालाब में स्नान करने जाते थे।

ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) सोमवार को भी ब्रह्म मुहूर्त (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पहले होता है) में स्नान करने के लिए जा रहे थे। नीमा रास्ते में भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही थी कि हे दीनानाथ! आप अपने दासों को भी एक बच्चा-बालक दे दो आप के घर में क्या कमी है प्रभु ! हमारा भी जीवन सफल हो जाएगा। दुनिया के व्यंग्य सुन-2 कर आत्मा दुःखी हो जाती है। मुझ पापिन से ऐसी कौन सी गलती किस जन्म में हुई है जिस कारण मुझे बच्चे का मुख देखने को तरसना पड़ रहा है। हमारे पापों को क्षमा करो प्रभु! हमें भी एक बालक दे दो।

यह कह कर नीमा फूट-2 कर रोने लगी तब नीरू ने धैर्य दिलाते हुए कहा हे नीमा! हमारे भाग्य में सन्तान नहीं है यदि भाग्य में सन्तान होती तो प्रभु शिव अवश्य प्रदान कर देते। आप रो-2 कर आँखे खराब कर लोगी। बालक भाग्य में है नहीं जो वृद्ध अवस्था में ऊंगली पकड़ लेता। आप मत रोओ आप का बार-2 रोना मेरे से देखा नहीं जाता। यह कह कर नीरू की आँखे भी भर आई। इसी तरह प्रभु की चर्चा व बालक प्राप्ति की याचना करते हुए उसी लहरतारा तालाब पर पहुँच गए। प्रथम नीमा ने प्रवेश किया, पश्चात् नीरू ने स्नान करने को तालाब में प्रवेश किया। सुबह का अंधेरा शीघ्र ही उजाले में बदल जाता है। जिस समय नीमा ने स्नान किया था उस समय तक तो अंधेरा था। जब कपड़े बदल कर पुनः तालाब पर उस कपड़े को धोने के लिए गई, जिसे पहन कर स्नान किया था, उस समय नीरू तालाब में प्रवेश करके गोते लगा-2 कर मल मल कर स्नान कर रहा था।

नीमा की दृष्टि एक कमल के फूल पर पड़ी जिस पर कोई वस्तु हिल रही थी। प्रथम नीमा ने जाना कोई सर्प है जो कमल के फूल पर बैठा अपने फन को उठा कर हिला रहा है। उसने सोचा कहीं यह सर्प मेरे पति को न डस ले नीमा ने उसको ध्यानपूर्वक देखा वह सर्प नहीं है कोई बालक है जिसने एक पैर अपने मुख में ले रखा है तथा दूसरे को हिला रहा है। नीमा ने अपने पति से ऊँची आवाज में कहा देखियो जी! एक छोटा बच्चा कमल के फूल पर लेटा है। वह जल में डूब न जाए। नीरू स्नान करते-2 उस की ओर न देख कर बोला नीमा! बच्चों की चाह ने तुझे पागल बना दिया है। अब तुझे जल में भी बच्चे दिखाई देने लगे हैं। नीमा ने अधिक तेज आवाज में कहा मैं सच कह रही हूँ, देखो सचमुच एक बच्चा कमल के फूल पर, वह रहा, देखो! देखो! नीमा की आवाज में परिवर्तन व अधिक कसक देखकर नीरू ने उस ओर देखा जिस ओर नीमा हाथ से संकेत कर रही

थी। कमल के फूल पर नवजात शिशु को देखकर नीरू ने आव देखा न ताव झपट कर कमल के फूल सहित बच्चा उठाकर अपनी पत्नी को दे दिया।

नीमा ने परमेश्वर कबीर जी को सीने से लगाया, मुख चूमा, पुत्रवत् प्यार किया जिस परमेश्वर की खोज में ऋषि-मुनियों ने जीवन भर शास्त्रविधि विरूद्ध साधना की उन्हें नहीं मिला। वही परमेश्वर भक्तमती नीमा की गोद में खेल रहा था। जिस शान्तिदायक परमेश्वर को आनंद की प्राप्ति के लिए प्राप्त करने की इच्छा से साधना की जाती है वही परमेश्वर नीमा के हाथों में सीने से लगा हुआ था। उस समय जो शीतलता व आनन्द का अनुभव भक्तमती नीमा को हो रहा होगा उस की कल्पना ही की जा सकती है। नीरू स्नान करके जल से बाहर आया। नीरू ने सोचा यदि हम इस बच्चे को नगर में ले जाएँगे तो शहर वासी हम पर शक करेंगे सोचेंगे कि ये किसी के बच्चे को चुरा कर लाए हैं। कहीं हमें नगर से निकाल दें। इस डर से नीरू ने अपनी पत्नी से कहा नीमा! इस बच्चे को यहीं छोड़ दे इसी में अपना हित है। नीमा बोली हे पति देव ! यह भगवान शंकर का दिया खिलौना है। इस बच्चे ने पता नहीं मुझ पर क्या जादू कर दिया है कि मेरा मन इस बच्चे के वश हो गया है। मैं इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। नीरू ने नीमा को अपने मन की बात से अवगत करवाया। बताया कि यह बच्चा नगर वासी हम से छीन लेगें, पूछेंगे कहाँ से लाए हो? हम कहेंगे लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर मिला है। हमारी बात पर कोई भी विश्वास नहीं करेगा। हो सकता है वे हमें नगर से भी निकाल दें। तब नीमा ने कहा मैं इस बालक के साथ देश निकाला भी स्वीकार कर लूँगी। परन्तु इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। मैं अपनी मृत्यु को भी स्वीकार कर लूँगी। परन्तु इस बच्चे से भिन्न नहीं रह सकूँगी।

नीमा का हठ देख कर नीरू को क्रोध आ गया तथा अपने हाथ को थप्पड़ मारने की स्थिति में उठा कर आँखों में आँसू भरकर करूणाभरी आवाज में बोला नीमा मैंने आज तक तेरी किसी भी बात को नहीं ठुकराया। यह जान कर कि हमारे कोई बच्चा नहीं है मैंने तुझे पति तथा पिता दोनों का प्यार दिया है। तू मेरे नम्र स्वभाव का अनुचित लाभ उठा रही है। आज मेरी स्थिति को न समझ कर अपने हठी स्वभाव से मुझे कष्ट दे रही है। विवाहित जीवन में नीरू ने प्रथम बार अपनी पत्नी की ओर थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया था तथा कहा कि या तो इस बच्चे को यहीं रख दे वरना आज मैं तेरी बहुत पिटाई करूँगा।

उसी समय नीमा के सीने से चिपके बालक रूपधारी परमेश्वर बोले हे नीरू! आप मुझे अपने घर ले चलो आप पर कोई आपत्ति नहीं आएगी। मैं सतलोक से चलकर तुम्हारे हित के लिए यहाँ आया हूँ। नवजात शिशु के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर नीरू (नूर अली) डर गया कहीं यह कोई देव या पित्तर या कोई सिद्ध पुरूष न हो और मुझे शाप न दे दे। इस डर से नीरू कुछ नहीं बोला घर की ओर चल पड़ा। पीछे-2 उसकी पत्नी परमेश्वर को प्यार करती हुई चल पड़ी।

प्रतिदिन की तरह ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (1398 ई.) सोमवार को भी एक अष्टानन्द नामक ऋषि, जो स्वामी रामानन्द ऋषि जी के शिष्य थे काशी शहर से बाहर बने लहरतारा तालाब के स्वच्छ जल में स्नान करने के लिए प्रतिदिन की तरह गए। ब्रह्म मुहूर्त का समय था (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पूर्व का होता है) ऋषि अष्टानन्द जी ने लहरतारा तालाब में स्नान किया। वे प्रतिदिन वहीं बैठ कर कुछ समय अपनी पाठ पूजा किया करते थे। ऋषि अष्टानन्द जी ध्यान मग्न होने की चेष्टा कर ही रहे थे उसी समय उन्होंने देखा कि आकाश से एक प्रकाश पुंज नीचे की ओर आता दिखाई दिया। वह इतना तेज प्रकाश था उसे ऋषि जी की चर्म दृष्टि सहन नहीं कर सकी। जिस प्रकार आँखे सूर्य की रोशनी को सहन नहीं कर पाती। सूर्य के प्रकाश को देखने के पश्चात् आँखे बन्द करने पर सूर्य का आकार दिखाई देता है उसमें प्रकाश अधिक नहीं होता।

इसी प्रकार प्रथम बार परमेश्वर के प्रकाश को देखने से ऋषि जी की आँखे बन्द हो गई बन्द आँखों में शिशु को देख कर फिर से आँखे खोली। ऋषि अष्टानन्द जी ने देखा कि वह प्रकाश लहरतारा तालाब पर उतर गया। जिससे पूरा सरोवर प्रकाश मान हो गया तथा देखते ही देखते वह प्रकाश जलाश्य के एक कोने में सिमट गया। ऋषि अष्टानन्द जी ने सोचा यह कैसा दृश्य मैंने देखा? यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरा दृष्टिदोष है? इस के विषय में गुरूदेव, स्वामी रामानन्द जी से पूछूँगा। यह विचार करके ऋषि अष्टानन्द जी अपनी शेष साधना को

छोड़ कर अपने पूज्य गुरूदेव के पास गए। स्वामी रामानन्द जी को सर्व घटनाक्रम बताकर पूछा हे गुरूदेव! यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरी भ्रमणा है? मैंने प्रकाश आकाश से नीचे की ओर आते देखा जिसे मेरी आँखे सहन नहीं कर सकी। आँखे बन्द हुई तो नवजात शिशु दिखाई दिया। पुनः आँखें खोली तो उस प्रकाश से पूरा जलाश्य ही जगमगा गया, पश्चात् वह प्रकाश उस तालाब के एक कोने में सिमट गया। मैं आप से कारण जानने की इच्छा से अपनी साधना बीच में ही छोड़ कर आया हूँ। कृपया मेरी शंका का समाधान कीजिए।

ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द से कहा हे ब्राह्मण! यह न तो तेरी भक्ति की उपलब्धि है न आप का दृष्टिदोष ही है। इस प्रकार की घटनाएँ उस समय होती हैं। जिस समय ऊपर के लोकों से कोई देव पृथ्वी पर अवतार धारण करने के लिए आते हैं। वह किसी स्त्री के गर्भ में निवास करता है। फिर बालक रूप धारण करके नर लीला करके अपना अपेक्षित कार्य पूर्ण करता है। कोई देव ऊपर के लोकों से आया है। वह काशी नगर में किसी के घर जन्म लेकर अपना प्रारब्ध पूरा करेगा। उपरोक्त वचनों द्वारा ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द की शंका का समाधान किया। उन ऋषियों की यही धारणा थी की सर्व अवतार गण माता के गर्भ से ही जन्म लेते हैं।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 385-391 :-

गरीब, कोई कहै वरूण धर्मराय है, कोई कोई कहते ईश। सोलह कला सुभान गति, कोई कहै जगदीश।।385।।
गरीब, भक्ति मुक्ति ले उतरे, मेटन तीनूं ताप। मोमिन के डेरा लिया, कहै कबीरा बाप।।386।।
गरीब, दूध न पीवै न अन्न भखै, नहीं पलने झूलंत। अधर अमान ध्यान में, कमल कला फूलंत।।387।।
गरीब, कोई कहै छल ईश्वर नहीं, कोई किन्नर कहलाय। कोई कहै गण ईश का, ज्यूं ज्यूं नीमा मात रिसाय।।388।।
गरीब, काशी में अचरज भया, गई जगत की नींद। ऐसे दुल्हे ऊतरे, ज्यूं कन्या वर बींद।।389।।
गरीब, खलक मुलक देखन गया, राजा प्रजा रीत। जंबुद्वीप जिहान में, उतरे शब्द अतीत।।390।।
गरीब, दुनि कहै यौह देव है, देव कहत हैं ईश। ईश कहै पारब्रह्म है, ये पूर्ण बिसवे बीस।।391।।

❖ सरलार्थ :- बालक को लेकर नीरू तथा नीमा अपने घर जुलाहा मोहल्ला (कॉलोनी) में आए। जिस भी नर व नारी ने नवजात शिशु रूप में परमेश्वर कबीर जी को देखा वह देखता ही रह गया। परमेश्वर का शरीर अति सुन्दर था। आँख जैसे कमल का फूल हो, घुँघराले बाल, लम्बे हाथ। लम्बी-लम्बी उंगलियां शरीर से मानो नूर झलक रहा हो। पूरी काशी नगरी में ऐसा अद्भुत बालक नहीं था।

जो भी देखता वहीं अन्य को बताता कि नूर अली को एक बालक तालाब पर मिला है आज ही उत्पन्न हुआ शिशु है। डर के मारे लोक लाज के कारण किसी विधवा ने डाला होगा। बालक को देखने के पश्चात् उसके चेहरे से दृष्टि हटाने को दिल नहीं करता, आत्मा अपने आप खींची जाती है। पता नहीं बालक के मुख पर कैसा जादू है? पूरी काशी परमेश्वर के बालक रूप को देखने को उमड़ पड़ी। स्त्री-पुरूष झुण्ड के झुण्ड बना कर मंगल गान गाते हुए, नीरू के घर बच्चे को देखने को आए।

बच्चे (कबीर परमेश्वर) को देखकर कोई कह रहा था, यह बालक तो कोई देवता का अवतार है, कोई कह रहा था। यह तो साक्षात् विष्णु जी ही आए लगते हैं। कोई कह रहा था यह भगवान शिव ही अपनी काशी नगरी को कृत्तार्थ करने को उत्पन्न हुए हैं। कोई कह रहा था। यह तो किन्नर का अवतार है, कोई कह रहा था। यह पित्तर नगरी से आया है। यह सर्व वार्ता सुनकर नीमा अप्रसन्न हो कर कहती थी कि मेरे बच्चे के विषय में कुछ मत कहो। हे अल्लाह! मेरे बच्चे की इनकी नजर से रक्षा करना। तुमने कभी बच्चा देखा भी है कि नहीं। ऐसे समूह के समूह मेरे बालक को देखने आ रहे हो। आने वाले स्त्री-पुरूष बोले हे नीमा। हमने बालक तो बहुत देखे हैं परन्तु आप के बालक जैसा नहीं देखा। इसीलिए हम इसे देखने आए हैं। ऊपर अपने-2 लोकों से श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी भी झांक कर देखने लगे। काशी के वासियों के मुख से अपने में से (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा शिव में से) एक यह बालक होने की बात सुनकर बोले कि यह बालक तो किसी अन्य लोक से आया है। इस के मूल स्थान से हम भी अपरिचित हैं परन्तु है बहुत शक्ति युक्त कोई सिद्ध पुरूष है।

शिशु कबीर परमेश्वर का नामांकन

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 392-393 :-**

गरीब, काजी गये कुर्आन ले, धर लड़के का नाम। अक्षर अक्षर में फुरया, धन्य कबीर बलिजाऊँ मैं।।392।।
गरीब, सकल कुर्आन कबीर हैं, हरफ लिखे जो लेख। काशी के काजी कहैं, गई दीन की टेक।।393।।

❖ **सरलार्थ :- नीरू (नूर अली) तथा नीमा पहले हिन्दू ब्राह्मण-ब्राह्मणी थे। इस कारण लालच वश ब्राह्मण लड़के का नाम रखने आए। उसी समय काजी मुसलमान अपनी पुस्तक कुरआन शरीफ को लेकर लड़के का नाम रखने के लिए आ गए। उस समय दिल्ली में मुगल बादशाहों का शासन था जो पूरे भारतवर्ष पर शासन करते थे। जिस कारण हिन्दू समाज मुसलमानों से दबता था। काजियों ने कहा लड़के का नामकरण हम मुसलमान विधि से करेंगे अब ये मुसलमान हो चुके हैं। यह कहकर काजियों में मुख्य काजी ने कुरआन शरीफ पुस्तक को कहीं से खोला। उस पृष्ठ पर प्रथम पंक्ति में प्रथम नाम ''कबीरन्'' लिखा था। काजियों ने सोचा ''कबीर'' नाम का अर्थ बड़ा होता है। इस छोटे जाति (जुलाहे अर्थात् धाणक) के बालक का नाम कबीर रखना शोभा नहीं देगा। यह तो उच्च घरानों के बच्चों के नाम रखने योग्य है। शिशु रूपधारी परमेश्वर काजियों के मन के दोष को जानते थे। काजियों ने पुनः पवित्र कुरआन शरीफ को नाम रखने के उद्देश्य से खोला। उन दोनों पृष्ठों पर कबीर-कबीर-कबीर अखर लिखे थे अन्य लेख नहीं था। काजियों ने फिर कुरआन शरीफ को खोला उन पृष्ठों पर भी कबीर-कबीर-कबीर अक्षर ही लिखा था। काजियों ने पूरी कुरआन का निरीक्षण किया तो उनके द्वारा लाई गई कुरआन शरीफ में सर्व अक्षर कबीर-कबीर-कबीर-कबीर हो गए काजी बोले इस बालक ने कोई जादू मन्त्र करके हमारी कुरआन शरीफ को ही बदल डाला। तब कबीर परमेश्वर शिशु रूप में बोले हे काशी के काजियों। मैं कबीर अल्लाह अर्थात् अल्लाहुअकबर, हूँ। मेरा नाम ''कबीर'' ही रखो। काजियों ने अपने साथ लाई कुरआन को वहीं पटक दिया तथा चले गए। बोले इस बच्चे में कोई प्रेत आत्मा बोलती है।**

शिशु कबीर देव द्वारा कुँवारी गाय का दूध पीना

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 394-397 :-**

गरीब, शिव उतरे शिवपुरी से, अबिगत बदन बिनोद। महके कमल खुसी भये, लिया ईश कूँ गोद।।394।।
गरीब, नजर नजर से मिल गई, किया ईश प्रणाम। धन्य नीरू मोमिन धन्य नीमा, धन्य काशी निःकाम।।395।।
गरीब, सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैन। शिव कूँ कर मस्तक धर्या, ल्या मोमिन एक धैन।।396।।
गरीब, अनब्यावर कूँ दूहत है, दूध दिया तत्काल। पीवै बालक ब्रह्म गति, तहां शिव भये दयाल।।397।।

सरलार्थ :- बालक कबीर को दूध पिलाने की कोशिश नीमा ने की तो परमेश्वर ने मुख बन्द कर लिया। सर्व प्रयत्न करने पर भी नीमा तथा नीरू बालक को दूध पिलाने में असफल रहे। 25 दिन जब बालक को निराहार बीत गए तो माता-पिता अति चिन्तित हो गए। 24 दिन से नीमा तो रो-2 कर विलाप कर रही थी। सोच रही थी यह बच्चा कुछ भी नहीं खा रहा है। यह मरेगा, मेरे बेटे को किसी की नजर लगी है। 24 दिन से लगातार नजर उतारने की विधि भिन्न भिन्न-2 स्त्री-पुरूषों द्वारा बताई प्रयोग करके थक गई। कोई लाभ नहीं हुआ। आज पच्चीसवाँ दिन उदय हुआ। माता नीमा रात्रि भर जागती रही तथा रोती रही कि पता नहीं यह बच्चा कब मर जाएगा। मैं भी साथ ही फाँसी पर लटक जाऊँगी। मैं इस बच्चे के बिना जीवित नहीं रह सकती बालक कबीर का शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ था तथा ऐसे लग रहा था जैसे बच्चा प्रतिदिन एक किलो ग्राम (एक सेर) दूध पीता हो। परन्तु नीमा को डर था कि बिना कुछ खाए पीए यह बालक जीवित रह ही नहीं सकता। यह कभी भी मृत्यु को प्राप्त हो सकता है। यह विचार करके चिंतित थी। भगवान शंकर के साथ-साथ निराकार प्रभु की भी उपासना तथा उससे की गई प्रार्थना जब व्यर्थ रही तो अति व्याकुल होकर रोने लगी।

भगवान शिव, एक ब्राह्मण (ऋषि) का रूप बना कर नीरू की झोंपड़ी के सामने खड़े हुए तथा नीमा से रोने का कारण जानना चाहा। नीमा रोती रही हिचकियाँ लेती रही। सन्त रूप में खड़े भगवान शिव जी के अति आग्रह करने पर नीमा रोती-2 कहने लगी हे ब्राह्मण! मेरे दुःख से परिचित होकर आप भी दुःखी हो जाओगे। फकीर वेशधारी शिव भगवान बोले हे माई! कहते है अपने मन का दुःख दूसरे के समक्ष कहने से मन हल्का हो जाता

है। हो सकता है आप के कष्ट को निवारण करने की विधि भी प्राप्त हो जाए। आँखों में आँसू जिव्हा लड़खड़ाते हुए गहरे साँस लेते हुए नीमा ने बताया हे महात्मा जी! हम निःसन्तान थे। पच्चीस दिन पूर्व हम दोनों प्रतिदिन की तरह काशी में लहरतारा तालाब पर स्नान करने जा रहे थे। उस दिन ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी की सुबह थी। रास्ते में मैंने अपने इष्ट भगवान शंकर से पुत्र प्राप्ति की हृदय से प्रार्थना की थी मेरी पुकार सुनकर दीनदयाल भगवान शंकर जी ने उसी दिन एक बालक लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर हमें दिया। बच्चे को प्राप्त करके हमारे हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहा। यह हर्ष अधिक समय तक नहीं रहा। इस बच्चे ने दूध नहीं पीया। सर्व प्रयत्न करके हम थक चुके हैं। आज इस बच्चे को पच्चीसवां दिन है कुछ भी आहार नहीं किया है। यह बालक मरेगा। इसके साथ ही मैं आत्महत्या करूँगी। मैं इसकी मृत्यु की प्रतिक्षा कर रही हूँ। सर्व रात्रि बैठ कर तथा रो-रोकर व्यतीत की है। मैं भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही हूँ कि हे भगवन्! इससे अच्छा तो यह बालक न देते। अब इस बच्चे में इतनी ममता हो गई है कि मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकूंगी।

नीमा के मुख से सर्वकथा सुनकर साधु रूपधारी भगवान शंकर ने कहा। आप का बालक मुझे दिखाईए। नीमा ने बालक को पालने से उठाकर ऋषि के समक्ष प्रस्तुत किया। नीमा ने बालक को साधु के चरणों में डालना चाहा। बालक हवा में उठा। दोनों प्रभुओं की आपस में दृष्टि मिली। भगवान शंकर जी ने शिशु कबीर जी को अपने हाथों में ग्रहण किया तथा मस्तिष्क की रेखाएँ व हस्त रेखाएँ देख कर बोले नीमा! आप के बेटे की लम्बी आयु है यह मरने वाला नहीं है। देख कितना स्वस्थ है। कमल जैसा चेहरा खिला है। नीमा ने कहा हे विप्रवर! बनावटी सांत्वना से मुझे सन्तोष होने वाला नहीं है। बच्चा दूध पीएगा तो मुझे सुख की साँस आएगी। पच्चीस दिन के बालक का रूप धारण किए परमेश्वर कबीर जी ने भगवान शिव जी से कहा हे भगवन्! आप इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाएँ। आप उस कंवारी गाय पर अपना आशीर्वाद भरा हस्त रखना, वह दूध देना प्रारम्भ कर देगी। मैं उस कुँवारी गाय का दूध पीऊँगा। वह गाय आजीवन बिना ब्याए (अर्थात् कुँवारी रह कर ही) दूध दिया करेगी उस दूध से मेरी परवरिश होगी। परमेश्वर कबीर जी तथा भगवान शंकर (शिव) जी की सात बार चर्चा हुई।

शिवजी ने नीमा से कहा आप का पति कहाँ है? नीमा ने अपने पति को पुकारा वह भीगी आँखों से उपस्थित हुआ तथा ब्राह्मण को प्रणाम किया। ब्राह्मण ने कहा नीरू! आप एक कुँवारी गाय लाओ। वह दूध देगी। उस दूध को यह बालक पीएगा। नीरू कुँवारी गाय ले आया तथा साथ में कुम्हार के घर से एक ताजा छोटा घड़ा (चार कि.ग्रा. क्षमता का मिट्टी का पात्र) भी ले आया। परमेश्वर कबीर जी के आदेशानुसार विप्ररूपधारी शिव जी ने उस कंवारी गाय की पीठ पर हाथ मारा जैसे थपकी लगाते हैं। गऊ माता के थन लम्बे-2 हो गए तथा थनों से दूध की धार बह चली। नीरू को पहले ही वह पात्र थनों के नीचे रखने का आदेश दे रखा था। दूध का पात्र भरते ही थनों से दूध निकलना बन्द हो गया। वह दूध शिशु रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने पीया।

नीरू नीमा ने ब्राह्मण रूपधारी भगवान शिव के चरण लिए तथा कहा आप तो साक्षात् भगवान शिव के रूप हो। आपको भगवान शिव ने ही हमारी पुकार सुनकर भेजा है। हम निर्धन व्यक्ति आपको क्या दक्षिणा दे सकते हैं? हे विप्र! 24 दिनों से हमने कोई कपड़ा भी नहीं बुना है। विप्र रूपधारी भगवान शंकर बोले! साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहीं। जो है भूखा धन का, वह तो साधु नाहीं। यह कहकर विप्र रूपधारी शिवजी ने वहाँ से प्रस्थान किया।

यही प्रमाण वेदों में है कि परमात्मा शिशु रूप में प्रकट होकर लीला करता है। तब उनकी परवरिश कंवारी गायों के दूध से होती है।

प्रमाण :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुखदायक सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर की (पातवे) वृद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हों अर्थात् कुँवारी गायों द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआ बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है सुख-सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर वृद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति कुँवारी गायों द्वारा की जाती है अर्थात् उस समय (अध्नि धेनु) कुँवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

नीरू को धन की प्राप्ति

बालक की प्राप्ति से पूर्व दोनों जने (पति-पत्नी) मिलकर कपड़ा बुनते थे। 25 दिन बच्चे की चिन्ता में कपड़ा बुनने का कोई कार्य न कर सके। जिस कारण से कुछ कर्ज नीरू को हो गया। कर्ज मांगने वाले भी उसी पच्चीसवें दिन आ गए तथा बुरी भली कह कर चले गए। कुछ दिन तक कर्ज न चुकाने पर यातना देने की धमकी सेठ ने दे डाली। दोनों पति -पत्नी अति चिन्तित हो गए। अपने बुरे कर्मों को कोसने लगे। एक चिन्ता का समाधान होता है, दूसरी तैयार हो जाती है। माता-पिता को चिन्तित देख बालक बोला हे माता-पिता! आप चिन्ता न करो। आपको प्रतिदिन एक सोने की मोहर (दस ग्राम स्वर्ण) पालने के बिछौने के नीचे मिलेगी। आप अपना कर्ज उतार कर अपना तथा गऊ का खर्च निकाल कर शेष बचे धन को धर्म कर्म में लगाना। उस दिन के पश्चात् दस ग्राम स्वर्ण प्रतिदिन नीरू के घर परमेश्वर कबीर जी की कृपा से मिलने लगा। यह क्रिया एक वर्ष तक चलती रही।

परमेश्वर कबीर जी ने मोहर (सोने का सिक्का) मिलने वाली लीला को गुप्त रखने को कहा था एक दिन नीमा की प्रिय सखी उसी समय नीरू के घर पर आई जिस समय वह कबीर जी को जगाने का प्रयत्न कर रही थी। नीमा की सखी ने वह स्वर्ण मोहर देख ली तथा बोली इतना सोना आपके पास कैसे आया। नीमा ने अपनी प्रिय सखी से सर्व गुप्त भेद कह सुनाया कि हमें तो एक वर्ष से यह मोहर प्रतिदिन प्राप्त हो रही है। हमारे घर पर भाग्यशाली लड़का कबीर जब से आया है। हम तो आनन्द से रहते हैं। अगले दिन ही सोना मिलना बंद हो गया। नीरू तथा नीमा दोनों मिलकर कपड़ा बुनकर अपने परिवार का पालन पोषण करने लगे। बड़ा होकर बालक कबीर भी पिता के काम में हाथ बंटाने लगा। थोड़े ही समय में अधिक बुनाई करने लगा।

शिशु कबीर की सुन्नत करने का असफल प्रयत्न

शिशु रूपधारी कबीर देव की सुन्नत करने का समय आया तो पूरा जन समूह सम्बन्धियों का इकट्ठा हो गया। नाई जब शिशु कबीर जी के लिंग को सुन्नत करने के लिए कैंची लेकर गया तो परमेश्वर ने अपने लिंग के साथ एक लिंग और बना लिया। फिर उस सुन्नत करने को तैयार व्यक्ति की आँखों के सामने तीन लिंग और बढ़ते दिखाए कुल पाँच लिंग एक बालक के देखकर वह सुन्नत करने वाला आश्चर्य में पड़ गया। तब कबीर जी शिशु रूप में बोले भईया एक ही लिंग की सुन्नत करने का विधान है ना मुसलमान धर्म में। बोल शेष चार की सुन्नत कहाँ करानी है? जल्दी बोल! शिशु को ऐसे बोलते सुनकर तथा पाँच लिंग बालक के देख कर नाई ने अन्य उपस्थित व्यक्तियों को बुलाकर वह अद्भुत दृश्य दिखाया।

सर्व उपस्थित जन समूह यह देखकर अचम्भित हो गया। आपस में चर्चा करने लगे यह अल्लाह का कैसा कमाल है एक बच्चे को पाँच पुरूष लिंग। यह देखकर बिना सुन्नत किए ही चला गया। बच्चे के पाँच लिंग होने की बात जब नीरू व नीमा को पता चला तो कहने लगे आप क्या कह रहे हो? यह नहीं हो सकता। दोनों बालक के पास गए तो शिशु को केवल एक ही पुरूष लिंग था, पाँच नहीं थे। तब उन दोनों ने उन उपस्थित व्यक्तियों से कहा आप क्या कह रहे थे देखो कहाँ हैं? बच्चे के पाँच लिंग केवल एक ही है। उपस्थित सर्व व्यक्तियों ने पहले आँखों देखे थे पांच पुरूष लिंग तथा उस समय केवल एक ही लिंग (पेशाब इन्द्री) को देखकर आश्चर्य चकित हो गए।

तब शिशु रूप धारी परमेश्वर बोले, हे भोले लोगो! आप लड़के का लिंग किसलिए काटते हो? क्या लड़के को बनाने में अल्लाह (परमेश्वर) से चूक रह गई जिसे आप ठीक करते हो। क्या आप परमेश्वर से भी बढ़कर हो? यदि आप लड़के के लिंग की चमड़ी आगे से काट कर (सुन्नत करके) उसे मुसलमान बनाते हो तो लड़की को मुसलमान कैसे बनाओगे। यदि मुसलमान धर्म के व्यक्ति अन्य धर्मों के व्यक्तियों से भिन्न होते तो परमात्मा ही सुन्नत करके लड़के को जन्म देता। हे भोले इन्सानों! परमेश्वर के सर्व प्राणी हैं। कोई वर्तमान में मुसलमान समुदाय में जन्मा है तो वह मृत्यु उपरान्त हिन्दू या ईसाई धर्म में भी जन्म ले सकता है। इसी प्रकार अन्य धर्मों में जन्में व्यक्ति भी मुसलमान धर्म व अन्य धर्म में जन्म लेते हैं। ये धर्म की दीवारें खड़ी करके आपसी भाई चारा नष्ट

मत करो। यह सर्व काल ब्रह्म की चाल है। कलयुग से पहले अन्य धर्म नहीं थे। केवल एक मानव धर्म (मानवता धर्म) ही था। अब कलयुग में काल ब्रह्म ने भिन्न-2 धर्मों में बांट कर मानव की शान्ति समाप्त कर दी है।

सुन्नत के समय उपस्थित व्यक्ति बालक मुख से सद्उपदेश सुनकर सर्व दंग रह गए। माता-नीमा ने बालक के मुख पर कपड़ा ढक दिया तथा बोली घना मत बोल। काजी सुन लेंगे तो तुझे मार डालेंगे वो बेरहम हैं बेटा। परमेश्वर कबीर जी माता के हृदय के कष्ट से परिचित होकर सोने का बहाना बना कर खर्राटे भरने लगे। तब नीमा ने सुख की सांस ली तथा अपने सर्व सम्बन्धियों से प्रार्थना की आप किसी को मत बताना कि कबीर ने कुछ बोला है। कहीं मुझे बेटे से हाथ धोने पड़ें।

ऋषि रामानन्द, सेऊ, सम्मन तथा नेकी व कमाली के पूर्व जन्मों का ज्ञान

ऋषि रामानन्द जी का जीव सत्ययुग में विद्याधर ब्राह्मण था जिसे परमेश्वर सत सुकृत नाम से मिले थे। त्रेता युग में वह वेदविज्ञ नामक ऋषि था जिसको परमेश्वर मुनिन्द्र नाम से शिशु रूप में प्राप्त हुए थे तथा कमाली वाली आत्मा सत्य युग में विद्याधर की पत्नी दीपिका थी। त्रेता युग में सूर्या नाम की वेदविज्ञ ऋषि की पत्नी थी। उस समय इन्होनें परमेश्वर को पुत्रवत् पाला तथा प्यार किया था। उसी पुण्य के कारण ये आत्माएँ परमात्मा को चाहने वाली थी। कलयुग में भी इनका परमेश्वर के प्रति अटूट विश्वास था। ऋषि रामानन्द व कमाली वाली आत्माएँ ही सत्ययुग में ब्राह्मण विद्याधर तथा ब्राह्मणी दीपिका वाली आत्माएँ थी जिन्हें ससुराल से आते समय कबीर परमेश्वर एक तालाब में कमल के फूल पर शिशु रूप में मिले थे। यही आत्माएँ त्रेता युग में (वेदविज्ञ तथा सूर्या) ऋषि दम्पति थे। जिन्हें परमेश्वर शिशु रूप में प्राप्त हुए थे। सम्मन तथा नेकी वाली आत्माएँ द्वापर युग में कालू वाल्मीकि तथा उसकी पत्नी गोदावरी थी। जिन्होंने द्वापर युग में परमेश्वर कबीर जी का शिशु रूप में लालन-पालन किया था। उसी पुण्य के फल स्वरूप परमेश्वर ने उन्हें अपनी शरण में लिया था। सेऊ (शिव) वाली आत्मा द्वापर में ही एक गंगेश्वर नामक ब्राह्मण का पुत्र गणेश था। जिसने अपने पिता के घोर विरोध के पश्चात् भी मेरे उपदेश को नहीं त्यागा था तथा गंगेश्वर ब्राह्मण वाली आत्मा कलयुग में शेखतकी बना। वह द्वापर युग से ही परमेश्वर का विरोधी था। गंगेश्वर वाली आत्मा शेख तकी को काल ब्रह्म ने फिर से प्रेरित किया। जिस कारण से शेख तकी (गंगेश्वर) परमेश्वर कबीर जी का शत्रु बना। भक्त श्री कालू तथा गोदावरी का गणेश माता-पिता तुल्य सम्मान करता था। रो-2 कर कहता था काश आज मेरा जन्म आप (वाल्मीकि) के घर होता। मेरे (पालक) माता-पिता (कालू तथा गोदावरी) भी गणेश से पुत्रवत् प्यार करते थे। उनका मोह भी उस बालक में अत्यधिक हो गया था। इसी कारण से वे फिर से उसी गणेश वाली आत्मा अर्थात् सेऊ के माता-पिता (नेकी तथा सम्मन) बने। सम्मन की आत्मा ही नौशेरवाँ शहर में नौशेरखाँ राजा बना। फिर बलख बुखारे का बादशाह अब्राहिम अधम सुलतान हुआ तब उसको पुनः भक्ति पर लगाया। {सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम की सम्पूर्ण कथा इसी पुस्तक के पृष्ठ 153 पर लिखी है।}

❖ सतगुरू रामपाल जी से निवेदन है कि जब हम मुसलमान भाईयों से ज्ञान चर्चा करते हैं। उनके प्रश्नों का उत्तर हम नहीं दे पाते। कृपया इनका जवाब कैसे दें? प्रश्न यह है :-

प्रश्न :- कुरआन ज्ञान उतारने वाला अल्लाह (प्रभु) कादिर नहीं है। यह कैसे माना जाए क्योंकि कुरआन मजीद में सूरः साद-38 आयत नं. 41-42 में प्रमाण है कि ''अल्लाह ने बंदे अय्यूब की पुकार सुनकर उसे कहा कि जमीन पर लात मारो। पीने के पानी का चश्मा निकलेगा। अय्यूब ने वैसा ही किया और लात मारते ही पीने के ठंडे पानी का चश्मा बहने लगा।''

(रामपाल दास) उत्तर इस प्रकार दो :-

उत्तर :- आप जी इसी पुस्तक में सृष्टि रचना अध्याय में पढ़ें। उससे पता चलेगा कि कुरआन का ज्ञान उतारने वाला किस स्तर का खुदा है?

अल्लाह की परिभाषा समझें। 'खुदा' अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है स्वामी, प्रभु, मालिक।

उदाहरण से समझते हैं :- जैसे भारत देश में प्रांत (State) में मंत्री जी, मुख्यमंत्री जी के पद हैं। मंत्री जी केवल एक या अधिक विभाग का स्वामी (प्रभु) होता है। मुख्यमंत्री पूरे राज्य (प्रांत) का प्रभु (मालिक) होता है।

प्रांत में अन्य राज अधिकारी भी होते हैं। जैसे पुलिस विभाग में डॉयरेक्टर जनरल (DG) होता है जो पूरे प्रांत की पुलिस का प्रभु (मालिक) है।

उससे नीचे अन्य पद भी होते हैं, इंस्पैक्टर जनरल (I.G.), सुप्रीटेंडेंट ऑफ पुलिस (S.P.), डिप्टी सुप्रीटेंडेंट ऑफ पुलिस (D.S.P.), फिर थानेदार (S.H.O.) तथा अन्य पुलिस मुलाजिम होते हैं। पूरे भारत देश का मालिक (प्रभु/स्वामी) राष्ट्रपति जी हैं। दूसरे नंबर पर प्रधानमंत्री जी पूरे भारत के मालिक (प्रभु) हैं। इनके बाद अन्य विभागीय मंत्रीगण अपने-अपने विभागों के प्रभु (मालिक) होते हैं। परंतु प्रधानमंत्री जी सब मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों से अधिक शक्तिमान (Powerful) होते हैं। सूक्ष्मवेद में लिखा है कि (जो कादिर अल्लाह का बताया हुआ सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान है, उसमें कहा है कि) :-

कबीर, जो जा की शरणां बसै, ताको ताकी लाज।
जल सौंही मछली चढ़ै, बह जाते गज राज।।

अर्थात् जो व्यक्ति जिस प्रभु (सहाब) का मित्र है, वह सहाब अपने स्तर का लाभ अपने मित्र को तुरंत सम्मान के साथ दे देता है जो जन साधारण को नहीं मिल सकता। जैसे किसी का दोस्त थानेदार (Station Headquarter officer) है, वह थाने में किसी के काम के लिए जाता है तो उसका दोस्त दरोगा उसको सम्मान के साथ कुर्सी पर बैठाता है। चाय पिलाता है और अपने स्तर का काम तुरंत कर देता है। सामान्य जनताजन थाने में प्रवेश करते हुए भी डरता है। काम होना तो दूर की बात है।

इसी प्रकार यदि किसी की दोस्ती पुलिस के डी.जी. से है तो उसके लिए पूरे प्रांत में पुलिस के स्तर का कार्य तुरंत हो जाता है। जो कार्य S.P., D.S.P., थानेदार भी नहीं कर सकते, वह भी डी.जी. के मित्र का हो जाता है।

इसी प्रकार प्रांत में मंत्री जी भी राहत दे सकता है, परंतु मुख्यमंत्री के समान लाभ नहीं दे सकता।

इसी प्रकार भारत के प्रधानमंत्री जी सब मुख्यमंत्रियों व केन्द्रीय मंत्रियों से अधिक लाभ दे सकते हैं। जिनकी दोस्ती प्रधानमंत्री से है, उसके काम देश में किसी भी स्तर के सहाब के पास हों, निर्बाध (बिना रोक-टोक के) हो जाते हैं।

वाणी का अर्थ है कि जैसे मछली की जल से सच्ची दोस्ती है। जल की दरिया (River) बह रही हो। उसमें चाहे पचास फुट का एकदम निचान (Fall) है। ऐसे फॉल (पानी नीचे गिरने वाले स्थान) पर पानी बहुत तेजी से नीचे गिरता है। उसके सामने यदि (गजराज) हाथियों में सबसे ताकतवर हाथी भी आ जाए तो वह जल प्रवाह उस हाथी को भी बहा ले जाता है। परंतु मछली उस फॉल के नीचे वाले स्तर पर बह रहे जल से ऊपर वाले स्तर पर यानि पचास फुट ऊपर सम्मुख सीधे चढ़ जाती है यानि जल ने अपनी दोस्त मछली को अपने स्तर की सुविधा दे रखी है जिसे हाथी प्राप्त नहीं कर सकता।

अब आसानी से समझ सकेंगे कि कुरआन मजीद की सूरः साद-38 आयत नं. 41-42 में जो चश्मा लात मारने से अय्यूब के अल्लाह ने जमीन से निकाल दिया। कारण यह है कि प्रत्येक प्रभु में अपने स्तर की शक्ति है। कुरआन मजीद (शरीफ) का ज्ञान देने वाला काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) है। इसकी सत्ता इक्कीस ब्रह्माण्डों पर है। उनमें से एक ब्रह्मंड के सब लोकों में जीव हैं। जिस ब्रह्मंड में हम हैं, इसका प्रभु भी यह काल ब्रह्म है। इसके स्तर की साधना करने से यह चमत्कार करता है। इसके द्वारा बताई भक्ति क्रियाओं से जन्नत (स्वर्ग) में सदा नहीं रहा जा सकता। जन्म तथा मृत्यु का चक्र सदा बना रहेगा। कुत्ते, गधे, सूअर आदि पशुओं व पक्षियों, जीव-जंतुओं के शरीरों में कष्ट प्रत्येक जीव को उठाना पड़ता है। चाहे कोई भक्ति (इबादत) करे, चाहे ना करे। इबादत न करने वाले सीधे नरक में जाते हैं। फिर पशु, पक्षी आदि के जीवन भोगते हैं। इबादत करने वालों को कुछ समय स्वर्ग का सुख मिल जाता है। उनको भी नरक (जहन्नुम) में गिरना पड़ता है। अन्य जीवों के शरीरों में भी कष्ट भोगना पड़ता है।

केवल सृष्टि उत्पन्न करने वाले कादिर अल्लाह {जिसे गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में परम अक्षर ब्रह्म कहा है तथा उसी की जानकारी इसी अध्याय के श्लोक 8-10 तथा 20-22 में तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 17, गीता अध्याय 18 श्लोक 46, 61-62 में तथा अनेकों अन्य स्थानों पर गीता में है तथा कुरआन मजीद की सूरः फुरकान-25 आयत नं. 52-59, सूरः बकरा-2 आयत नं. 255 तथा अन्य अनेकों सूरों में जिसको सम्पूर्ण जगत का उत्पत्तिकर्ता,

परवरदिगार व शाशवत् (अविनाशी) बताया है} की इबादत करने से साधक सदा रहने वाले सुख स्थान सतलोक को प्राप्त करता है। वहाँ जाने के पश्चात् फिर कभी काल लोक में जन्म नहीं लेता।

जिस खुदा का भक्त अय्यूब था, उसी का भक्त भीम था। महाभारत ग्रंथ में प्रकरण है कि भीम अपनी माता तथा पत्नी द्रोपदी तथा अन्य चारों भाइयों के साथ हिमालय पर्वत पर गए। जल का अभाव था। सब प्यास से व्याकुल हो गए। भीम ने पैर को मोड़कर गोडा (Knee) जमीन पर मारा। पत्थरों से मीठे जल का चश्मा बह चला। उस स्थान को भीम गोडा कहते हैं जो भारत के उत्तराखंड राज्य में हरिद्वार शहर के पास है।

केवल ऐसे चमत्कारों के होने से कादिर खुदा नहीं माना जा सकता।

कादिर खुदा कबीर जी ने अपने भक्त बीरदेव सिंह बघेल काशी के नरेश के लिए जंगल में ऊँची सूखी पहाड़ी के ऊपर मीठे जल का तालाब बना दिया। उसके चारों ओर फलदार वृक्षों का बाग लगा दिया क्योंकि राजा तथा उसके साथ सैंकड़ों सैनिक शिकार के लिए जंगल में बहुत आगे तक चले गए थे। वे सब भूख तथा प्यास से मरने लगे थे। प्राण जाने को हो गए थे। उनके जीवन की रक्षा की।

इस करिश्मे के साथ-साथ पूर्ण मोक्ष भी कबीर अल्लाह अपने भक्त को पूर्ण मोक्ष भी प्रदान करता है। भक्त को सदा सर्वश्रेष्ठ जन्नत में रहने के लिए स्थान देता है।

जो जितना प्रभु (खुदा) है, वह अपनी (लाज) इज्जत रखने के लिए अपने भक्त को अपने स्तर का लाभ देता है।

{कबीर अल्लाह ताला की समर्थता की अधिक जानकारी के लिए अध्याय ''हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक'' में पढ़ें ढ़ेर सारे प्रमाण।}

प्रश्न :- कुरआन मजीद की सूरः साद-38 आयत नं. 45-51 में हमारे (मुसलमानों के) अल्लाह ने बताया है कि जो हमारे बंदों इब्राही और इस्हाक और याकूब, इस्माईल और अल् यसअ् तथा जुलकिफ्ल जैसे नेक व परहेजगार होंगे। उनके लिए जन्नत के दरवाजे खुले होंगे। वे वहाँ पर तकिये लगाकर बैठेंगे। उनके खाने के लिए बहुत सारे मेवे व फल होंगे तथा पीने के लिए शराब होगी तथा उनके पास नीची निगाह रखने वाली (शर्मीली) हमउम्र बीवियाँ (पत्नियाँ) होंगी। क्या इस जन्नत में भक्त सदा सुख से नहीं रहेंगे?

(रामपाल दास) उत्तर इस प्रकार बताओ :-

उत्तर :- जहाँ पर शराब पीने को मिलती हो तो वहाँ कोई कैसे सुखी रह सकता है तथा कैसे सदा रह सकता है? आप जी इसी पुस्तक ''मुसलमान नहीं समझे ज्ञान कुरआन'' में पृष्ठ 62 पर पढ़ें ''सर्वनाश के लिए शराब पीना पर्याप्त है।''

पुराणों में कथा है :- स्वर्ग (जन्नत) में नल तथा कुबर नाम के दो देवता थे जो कुबेर देवता के पुत्र थे। एक दिन दोनों ने शराब पी ली और एक दरिया के किनारे नंगे होकर उत्पात मचाने लगे। उस दरिया में उसी स्थान पर देवताओं (फरिश्तों) की पत्नियाँ, बेटियाँ स्नान कर रही थी जो शर्म के मारे मुख फेरकर दरिया के जल में गहरे पानी में खड़ी थी। ऋषि नारद जी वहाँ से गुजर रहे थे। नल तथा कुबर ने ऋषि नारद जी की भी शर्म नहीं की। उसी प्रकार औरतों की ओर अभद्र संकेत करते रहे। ऋषि जी ने उनको समझाया परंतु शराब जो सिर में चढ़ी थी, नहीं माने। तो नारद ऋषि जी ने श्राप दे दिया कि तुम स्वर्ग (जन्नत) में रहने योग्य नहीं हो। पृथ्वी के ऊपर जड़ जूनी में वृक्षों के रूप में उत्पन्न होओ। दोनों की मृत्यु स्वर्ग में हो गई। दोनों पृथ्वी के ऊपर अर्जुन तथा जुमला के वृक्ष कालीदह नामक झील के किनारे उगे।

जहाँ शराब पीने को मिलती है और जो अल्लाह शराब का लोभ देकर अपनी इबादत में लगाता है, वह कादिर अल्लाह नहीं है। वह काल ज्योति निरंजन है। सतलोक के अतिरिक्त किसी भी लोक की जन्नत (स्वर्ग) तथा महास्वर्ग यानि ब्रह्म लोक (बड़ी जन्नत) में कोई व्यक्ति सदा नहीं रह सकता। यह शत प्रतिशत सत्य है।

विशेष :- कुरआन मजीद की उपरोक्त सूरः साद-38 की आयत नं. 45-51 में यह भी लिखा है कि जन्नत (बहिश्त) में जाने वालों को हमउम्र (अपनी आयु के समान आयु वाली) बीवियाँ (पत्नियाँ) मिलेंगी जो नीची निगाहों वाली यानि बड़ी शर्मीली होंगी।

इस काल ज्योति निरंजन अल्लाह (कुरआन का ज्ञान देने वाले अल्लाह) ने कहा कि (जैसा मुसलमान भाई

बताते हैं कि) सब मानव कयामत तक मरते रहेंगे। उनको कब्रों में जमीन में दफनाते (दबाते) रहेंगे। जब कयामत (प्रलय) आएगी, सब जिंदा किए जाएँगे यानि जीवित किए जाएँगे। जो मुसलमान (आज्ञाकारी, अल्लाह के आदेशानुसार चलने वाले) हैं, उनको जन्नत में तथा काफिर (अवज्ञाकारी, बदी करने वाले) हैं, उनको जहन्नुम (नरक) में रखा जाएगा।

विचार करो :- कोई तो दो वर्ष का मर जाता है, कोई दस वर्ष का, कोई जवान, कोई वृद्ध अस्सी-पचासी वर्ष का मरता है। उनकी हमउम्र बीवियाँ भी उसी आयु की मिलेंगी। साठ वर्ष के पुरूष की साठ वर्ष की बीवी होगी। सत्तर वर्ष के पुरूष की सत्तर वर्ष की बीवी होगी। ऐसे ही अन्य आयु वालों की दशा होगी। वे चाहे नीची निगाह वाली हों, चाहे ऊँची निगाह वाली हों। उनको जन्नत में खाक सुख मिलेगा?

यह काल ज्योति निरंजन का जाल है। इसके द्वारा भ्रमित ज्ञान दिया जाता है ताकि सब मानव पाप करके यहीं जन्मते-मरते रहें। नरक, स्वर्ग व अन्य पशु-पक्षियों के शरीरों में भटकते रहें।

प्रश्न :- यह कैसे माना जाए कि कुरआन मजीद का ज्ञान देने वाला काल ज्योति निरंजन है?

(रामपाल दास) उत्तर :- प्रमाण पवित्र पुस्तक कुरआन मजीद में ही पर्याप्त हैं। आप जी को यह तो ज्ञान है कि हजरत आदम से लेकर हजरत मुहम्मद तक का खुदा एक ही है। हजरत मूसा जी को भी पवित्र पुस्तक तोरात उसी ने प्रदान (नाजिल) की थी।

कुरआन मजीद सूरः अल-कसस-28 आयत नं. 29-32 में तथा सूरः ता.हा.-20 आयत नं. 9-23 में लिखा है कि हजरत मूसा ने तुर (कातुर) पर्वत के ऊपर आग जलती (ज्योति) देखी। उसने अपने परिवार के लोगों से कहा ''तुम सब यहीं ठहरो। मैं उस आग से तुम्हारे लिए अँगार ले आता हूँ।'' जब मूसा उस आग के निकट पहुँचा तो देखा कि वह लकड़ी से जलने वाली आग नहीं है। वह तो अलौकिक प्रकाश है। उस रोशनी से आवाज आई कि हे मूसा! मैं तेरा रब हूँ। तू जूती उतारकर नंगे पैरों से इस पर्वत पर चढ़। जब मूसा कुछ दूरी पर रह गया तो उस ज्योति में से आवाज फिर आई कि मूसा! तू अपनी लाठी मेरी ओर फैंक दो। मूसा ने लाठी फैंक दी जो एक साँप बनकर चलने लगी। फिर कहा कि मैं तुझे अपना रसूल बनाता हूँ। तुझे किताब की निशानी देता हूँ, आदि-आदि कहा।

इससे सिद्ध हुआ कि ज्योति निरंजन जिसे काल कहा जाता है, उसी ने मूसा को तोरात किताब उतारी (नाजिल की)। वही हजरत आदम से हरजत मुहम्मद तक का रब है।

इसने प्रतिज्ञा कर रखी (कसम खा रखी) है कि मैं अपने वास्तविक स्वरूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। सब कार्य करूँगा। कसम किसलिए खा रखी है? यह आप इसी पुस्तक के पृष्ठ 183 से 228 तक अध्याय ''सृष्टि रचना'' में पढ़ें।

श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान भी इसी ज्योति निरंजन यानि काल ब्रह्म ने श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके अर्जुन को बताया था। गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में काल ब्रह्म ने कहा है कि :-

श्लोक 24 :- बुद्धिहीन व्यक्ति मेरे (अनुत्तम) घटिया (अव्ययम्) अटल नियम को नहीं जानते। इसलिए मुझे (श्री कृष्ण) व्यक्ति रूप में आया (कृष्ण) मानते हैं।

श्लोक 25 :- मैं अपनी योग माया से (शक्ति से) छिपा रहता हूँ। किसी के प्रत्यक्ष नहीं होता। यह अज्ञानी जन समुदाय कभी मनुष्य की तरह जन्म न लेने वाले को नहीं जानता।

अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) ने स्पष्ट कर दिया कि मेरा अटल नियम है कि मैं छिपा रहता हूँ। सबके सामने कभी भी प्रत्यक्ष नहीं होता। सब कार्य छुपकर करता रहता हूँ।

गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में स्पष्ट किया है कि ''मैं काल हूँ।'' सबका नाश करने के लिए अब (श्री कृष्ण में) आया हूँ यानि कृष्ण के शरीर में प्रवेश हुआ हूँ। श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान बोला था।

ऐसे ही चारों किताबों (जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन) का ज्ञान गुप्त रहकर बताया है। यह कादिर सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला अल्लाह नहीं है। कबीर खुदा ने इसको काल कराल (शैतान) कहा है।

☛ अन्य प्रमाण :- कुरआन मजीद की सूरः अल बकरा-2 आयत नं. 35-38 तक कुरआन का ज्ञान देने वाला अल्लाह कह रहा है कि :-

आयत नं. 35 :- फिर हमने आदम से कहा ''तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत (स्वर्ग) में रहो और यहाँ जी भरकर जो चाहो खाओ, किन्तु इस पेड़ के निकट न जाना नहीं तो जालिमों में गिने जाओगे।''

आयत नं. 36 :- अन्ततः शैतान ने उन दोनों को उस पेड़ की ओर प्रेरित करके हमारे आदेश की अवहेलना करवा दी। हमने हुकम दिया कि अब तुम सब यहाँ से उतर जाओ। एक-दूसरे के दुश्मन बन जाओ। (साँप और इंसान एक-दूसरे के शत्रु हो गए) और तुम्हें एक समय तक धरती पर ठहरना है। वहीं गुजर-बसर करना है।

आयत नं. 37 :- उस समय आदम ने अपने रब से कुछ शब्द सीखकर तौबा (क्षमा याचना) की जिसको उसके रब ने स्वीकार कर लिया क्योंकि वह बड़ा क्षमा करने वाला और दया करने वाला है।

आयत नं. 38 :- हमने कहा कि ''तुम अब यहाँ से उतर जाओ।'' फिर मेरी ओर से जो मार्गदर्शन तुम्हारे पास पहुँचे, उस अनुसार (चलना)। जो मेरे मार्गदर्शन के अनुसार चलेंगे, उनके लिए किसी भय और दुःख का मौका न होगा। (कुरआन मजीद से लेख समाप्त)।

पवित्र बाइबल में (तोरात किताब में) लिखा है कि परमेश्वर ने छः दिन में सृष्टि की जिसमें छठे दिन मनुष्यों को अपने जैसे रूप का उत्पन्न किया। आदम तथा हव्वा आदि को उत्पन्न करके सातवें दिन आसमान में तख्त पर जा बैठा। उसके पश्चात् ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) ने बागडोर संभाल ली। अपने पुत्रों ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माध्यम से सब कार्य करने लगा।

उपरोक्त कुरआन मजीद वाला प्रकरण बाइबल ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक है जो इस प्रकार है :-

काल (ज्योति निरंजन) ने अपने तीन पुत्रों द्वारा अपनी व्यवस्था करवा रखी है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ये तीन पुत्र काल के हैं। आदम जी ब्रह्मा के लोक से आई आत्मा हैं। इसलिए ब्रह्मा ने आदम को वाटिका में संभाला।

प्रभु काल के पुत्र ब्रह्मा ने हजरत आदम तथा हजरत हव्वा (जो श्री आदम जी की पत्नी थी) को कहा कि इस वाटिका में लगे हुए पेड़ों के फलों को तुम खा सकते हो। लेकिन ये जो बीच वाले पेड़ों के फल नहीं खाना, अगर खाओगे तो मर जाओगे। परमेश्वर ऐसा कह कर चला गया।

उसके बाद सर्प आया और कहा कि तुम ये बीच वाले पेड़ों के फल क्यों नहीं खा रहे हो? हव्वा जी ने कहा कि भगवान (अल्लाह) ने हमें मना किया है कि अगर तुम इनको खाओगे तो मर जाओगे, इन्हें मत खाना। सर्प ने फिर कहा कि भगवान ने आपको बहकाया हुआ है। वह नहीं चाहता है कि तुम प्रभु के सदृश ज्ञानवान हो जाओ। यदि तुम इन फलों को खा लोगे तो तुम्हें अच्छे और बुरे का ज्ञान हो जाएगा। आपकी आँखों पर से अज्ञानता का पर्दा हट जाएगा जो प्रभु ने आपके ऊपर डाल रखा है। यह बात सर्प ने आदम की पत्नी हव्वा से कही थी। हव्वा ने अपने पति हजरत आदम से कहा कि हम ये फल खायेंगे तो हमें भले-बुरे का ज्ञान हो जाएगा। ऐसा ही हुआ। उन्होंने वह फल खा लिया तो उनकी आँखें खुल गई तथा वह अंधेरा हट गया जो भगवान ने उनके ऊपर अज्ञानता का पर्दा डाल रखा था। जब उन्होंने देखा कि हम दोनों निर्वस्त्र हैं तो शर्म आई और अंजीर के पत्तों को तोड़कर लंगोट बनाकर गुप्तांगों पर बांधा।

यह उपरोक्त प्रकरण पवित्र बाइबल से उत्पत्ति अध्याय से लिया है। सृष्टि रचने वाला कादिर अल्लाह तो ऊपर आसमान में तख्त पर जा बैठा और जो आदम तथा हव्वा को जन्नत में रखता है। उनको एक पेड़ के फल खाने से मना करता है। शैतान के बहकावे में आकर आदम जी तथा हव्वा जी उस भले-बुरे का ज्ञान करवाने वाले पेड़ का फल खा लेते हैं। फिर अल्लाह आया और पता चला तो कहा कि आदम तथा हव्वा ने भले-बुरे का ज्ञान करवाने वाले पेड़ का फल खा लिया है। जिस कारण से मनुष्य हममें से एक के समान हो गए हैं। इसलिए ऐसा न हो कि यह जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे। इसलिए जन्नत (**Heaven**) से निकाल दिया।

सृष्टि रचने वाला अल्लाह ताला है। वह तो ऊपर चला गया है। आदम व हव्वा के साथ अल्लाह ताला नहीं था। अन्य अल्लाह सिद्ध हुआ। वह उपरोक्त कुरआन मजीद की सूरः अल बकरा-2 की आयत 35-38 में कुरआन मजीद का ज्ञान देने वाला स्वीकार कर रहा है कि मैंने आदम व हव्वा को जन्नत में रखा और गलती करने पर जन्नत (स्वर्ग) से निकाल दिया। धरती पर छोड़ दिया। इससे सिद्ध हुआ कि कुरआन मजीद का ज्ञान देने वाला

यानि हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक का रब कादिर अल्लाह सृष्टि रचने वाला नहीं है। वे एक से अधिक हैं। यह सब प्रपंच ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) का है। यह स्वयं किसी के सामने नहीं आता। कहीं स्वयं आग रूप में प्रकट होकर मानव को भ्रमित करता है, कभी अपने तीनों पुत्रों द्वारा भ्रमित करता है। कभी अपने तीनों पुत्रों में से एक में प्रवेश करके ज्ञान बताता है। कभी सीधा मानव में प्रवेश करके बोलता है। कुछ सत्य ज्ञान, कुछ असत्य तथा अधूरा ज्ञान बताकर अपने जाल में फँसाकर रखता है।

असत्य कथन का प्रमाण :- पवित्र कुरआन मजीद में सूरः अल बकरा-2 आयत नं. 38 में (ज्योति निरंजन) कुरआन मजीद का ज्ञान देने वाले ने कहा है कि हे आदम तथा हव्वा! तुम धरती पर उतर जाओ। मैं तुम्हें मार्गदर्शन करूँगा यानि किताब नाजिल करूँगा। उसमें धर्म-कर्म की जानकारी बताऊँगा तथा परहेज (मर्यादा) बताऊँगा। जो मेरे मार्गदर्शन के अनुसार चलेंगे, उनके लिए किसी भय और दुःख का मौका नहीं होगा। जब हम हजरत मुहम्मद जी की जीवनी पढ़ते हैं तो रोना आता है कि जिस महान आत्मा ने कुरआन मजीद का ज्ञान देने वाले अल्लाह की प्रत्येक आज्ञा का पालन तन-मन-धन से किया। उसी के मार्गदर्शन में अंतिम श्वांस तक चले। फिर भी हजरत मुहम्मद (सल्ल. वसल्लम) जी का जीवन दुःखों से भरा था जिसको उसी अल्लाह ने अपना रसूल बनाकर भेजा था।

जब नबी मुहम्मद जी माता के गर्भ में थे तो पिता जी का देहांत हो गया। जब छः वर्ष के हुए तो माता जी मर गई। जब आठ वर्ष के हुए तो दादा जी चल बसे जो बालक मुहम्मद की परवरिश कर रहे थे। फिर चाचा ने पाला। यतीमी का जीवन जीया।

यदि विचार किया जाए तो पता चलता है कि जिस बच्चे के माता-पिता मर जाते हैं, उसकी क्या दशा होती है? कोई माता-पिता जैसा प्यार नहीं देगा, कोई धमकाएगा। किसी के बच्चे अच्छे वस्त्र पहनते हैं। यतीम को फटे-पुराने वस्त्र दिए जाते हैं। अधिक कार्य लिया जाता है। अपनी समस्या किसके आगे कहे? अन्य बच्चे मेले में रूपये लेकर जाते हैं। यतीम उनको देखकर किस्मत को कोसता है। त्यौहार के दिन सब अच्छा भोजन खाते हैं। यतीम को लूखा-सूखा, बासी भोजन खाने को दिया जाता है, आदि-आदि घोर कष्ट भोगता है।

पच्चीस वर्ष की आयु तक विवाह नहीं हुआ। फिर चालीस वर्षीय खदीजा नाम की विधवा से विवाह हुआ। खदीजा पहले दो बार विधवा हो चुकी थी। हजरत खदीजा जी से आप जी को तीन पुत्र तथा चार पुत्री संतान उत्पन्न हुई। आपकी आँखों के सामने तीनों पुत्र आँखों के तारे मृत्यु को प्राप्त हुए। काल यानि ज्योति निरंजन के बताए कुरआन मजीद के ज्ञान का प्रचार करने में घोर संकट का सामना करना पड़ा। अनेकों लड़ाई लड़ी। विरोधियों द्वारा तीन वर्ष बहिष्कार किया गया। उस दौरान आप (वसल्लम) का सारा खानदान महादुःखी रहा। बच्चों ने पत्ते खाकर बिलख-बिलखकर जीवन जीया। हजरत मुहम्मद जी का तिरेसठ वर्ष की आयु में महाकष्ट भोगकर इंतकाल (देहांत) हुआ।

कुरआन ज्ञान दाता ने ऊपर सूरः अल बकरा-2 की आयत नं. 38 में कहा है कि जो मेरे बताए अनुसार कार्य करेगा, उसको कोई दुःख नहीं होगा। यह खरा नहीं उतरा। कादिर अल्लाह कबीर है। वह अपने भक्त/भक्तमति व रसूल को कोई कष्ट नहीं आने देता तथा पूर्ण मोक्ष प्रदान करता है। सीधा सतलोक ले जाता है। समर्थ परमेश्वर का डर काल ज्योति निरंजन को भी है। इसलिए काल ब्रह्म अपना बचाव करते हुए उस कादिर खुदा जो कबीर है, की इबादत बिना किसी के शरीक करने को कहता है। फिर अपनी इबादत करने को भी अधिक जोर देता है। उसमें भी कहता है कि मेरे अतिरिक्त किसी को शिर्क (मेरे समान न मानकर) न करके मेरी पूजा (इबादत) करो।

इसी प्रकार इसी काल ब्रह्म ने गीता का ज्ञान दिया। उसमें अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! आपने गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में जो तत् ब्रह्म बताया है, वह कौन है?

इसका उत्तर काल ब्रह्म ने गीता अध्याय 8 के श्लोक 3 में दिया है। बताया है कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म है।''

फिर अध्याय 8 के श्लोक 5 तथा 7 में अपनी पूजा करने को कहा है तथा श्लोक 8-9-10 में अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की पूजा करने को कहा है। स्पष्ट किया है कि मेरी भक्ति करेगा तो मेरे पास मेरे लोक में रहेगा। यदि उस परम अक्षर ब्रह्म (समर्थ परमेश्वर) की भक्ति करेगा तो उसको प्राप्त हो जाएगा। उसके सतलोक में जाएगा।

अपने विषय में गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट किया है कि

जन्म तथा मृत्यु तेरी भी होती रहेगी तथा मेरी भी।

गीता अध्याय 18 श्लोक 46, 61 में उस समर्थ परमेश्वर के विषय में कहा है कि:- परम अक्षर ब्रह्म (कादिर सृष्टि की उत्पत्ति व पालनकर्ता परमेश्वर) वह है जिसने इस संसार की रचना की है। वही इसको सहारा देकर अपनी शक्ति से रोके हुए है तथा सब जीवों को उनके कर्मों अनुसार अन्य प्राणियों के शरीरों में स्वर्ग, नरक व फिर मानव के शरीरों में भ्रमण करवाता है यानि समर्थ परमेश्वर ने विधान बना रखा है कि जो जैसे कर्म करेगा, उसका फल अवश्य मिलेगा।

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (अमर लोक) को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वज्ञान (बाखबर) तत्त्वदर्शी संत से प्राप्त करके उसके पश्चात् उस (उपरोक्त) परमेश्वर के उस परम पद (सतलोक) की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आता। उसकी पूजा करो।

गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में बताया है कि क्षर पुरूष (काल ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष ये दो प्रभु इस नाशवान लोक में हैं। ये दोनों तथा इनके अंतर्गत जितने प्राणी हैं, सब नाशवान हैं। आत्मा सबकी अमर हैं।

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम प्रभु यानि पुरूषोत्तम तो उपरोक्त दोनों से भिन्न है जो वास्तव में परमात्मा कहा जाता है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह अविनाशी परमेश्वर है।

गीता में यह भी स्पष्ट किया है कि उस परमेश्वर की भक्ति अनन्य भाव से करो यानि उसके अतिरिक्त किसी अन्य देव को उसके साथ न पूजो। अपने विषय में भी यही कहा है कि मेरी भक्ति करो। किसी अन्य देवता को मेरे समान मानकर न पूजो।

इसी प्रकार कुरआन ज्ञान देने वाले ने सूरः अंबिया-21 आयत नं. 92, 30, 31, 32 में अपनी इबादत करने को कहा है तथा अपनी महिमा बताई है। सूरः बकरा-2 आयत नं. 255 में अपने से अन्य परमेश्वर की महिमा बताई है तथा सूरः फातिर-1 आयत नं. 1-7 में समर्थ रहमान की इबादत करने को कहा है।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि कुरआन मजीद (शरीफ) का ज्ञान देने वाला काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) है जो सबको धोखा देकर रखता है। अधूरा ज्ञान बताकर अपने जाल में फँसाकर रखता है। पाप कर्म करने की भी प्रेरणा करता है। युद्ध (लड़ाई-झगड़े) करवाता रहता है ताकि सब जीव दुःखी रहें, भक्ति न करें। करें तो गलत भक्ति (इबादत) करें।

☛ अन्य प्रमाण :- कुरआन मजीद सूरः सजदा-32 आयत नं. 13 :- कुरआन का ज्ञान देने वाले अल्लाह ने कहा है कि मेरी ओर से यह बात करार पा चुकी है कि मैं जिन्नों और मनुष्यों से दोजख को भर दूँगा। हम चाहते तो हर शख्स को हिदायत दे देते, लेकिन मैंने जिन्नों तथा मनुष्यों से दोजख (नरक) को भरना है। साधना अधूरी बताता है। माँस खाने की छूट देता है। जिस कारण से नरक ही भरेगा, जन्नत में तो जा ही नहीं सकते। कुरआन का ज्ञान देने वाला लड़ाई करने के लिए प्रेरित करता है।

प्रमाण के लिए सूरः अन् निशा-4 आयत नं. 71-84 तक :-

आयत नं. 71 :- ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, मुकाबले के लिए हर समय तैयार रहो। फिर जैसा अवसर हो, अलग-अलग टुकड़ियों के रूप में निकलो या इकठ्ठे होकर।

आयत नं. 72 :- हाँ, तुम में कोई-कोई आदमी ऐसा भी है जो लड़ाई से जी चुराता है।

आयत नं. 74-84 :- अतः ऐ नबी! तुम अल्लाह की राह में लड़ो।

इस प्रकार की वह्य (संदेश) भेज-भेजकर हजरत मुहम्मद जी को आजीवन लड़ाई करने में लगाए रखा। उनका जीवन नरक बना रहा। परिवार के अंदर मृत्यु का कहर, दुश्मनों से लड़ा-लड़ाकर कर्म खराब करवाए और उस भक्त आत्मा को यथार्थ ज्ञान भी नहीं बताया, न यथार्थ भक्ति की विधि बताई। इसका प्रमाण इस बात से है कि सूरःफुरकान-25 आयत नं. 52-59 में कहा है कि कादिर अल्लाह कबीर है जिसने सब रचना की है। उसकी खबर किसी बाखबर से जानों। इससे स्वसिद्ध है कि कुरआन का ज्ञान अधूरा है।

सूरः अश् शूरा-42 आयत नं. 1-2 में सांकेतिक शब्द (Code words) बताए हैं :- 1. हा. मीम. 2. अैन, सीन, काफ। ये मोक्ष मंत्र हैं। परंतु अधूरे हैं। इनका ज्ञान न हजरत मुहम्मद जी को था, न किसी मुसलमान श्रद्धालु को। फिर मुक्ति कैसे मिलेगी? यदि कोई यह कहे कि नबी मुहम्मद जी को तो इनका ज्ञान होगा? यदि नबी जी को ज्ञान होता तो क्या अपने साथियों को नहीं बताता? एक-एक शब्द मुसलमानों से बताया करते।

इसी अल्लाह ने हजरत मूसा जी को तोरात किताब का ज्ञान दिया था जो एक ही बार में उतारी थी। उस ''तोरात'' पुस्तक के ज्ञान के आधार से मूसा जी सत्संग फरमा रहे थे। एक सत्संगी ने पूछा हे मूसा! वर्तमान में सबसे बड़ा इल्मी (विद्वान) कौन है? हजरत मूसा ने कहा कि मैं विश्व में सबसे बड़ा इल्मी हूँ। इस बात से नाराज होकर अल्लाह ने मूसा से कहा कि तेरा ज्ञान तो अल-खिज्र के ज्ञान के सामने कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को प्राप्त करने मूसा अल-खिज्र के पास जाता है। बिना ज्ञान लिए वापिस आ जाता है। मूसा जी को तो यह विश्वास था कि मुझे ज्ञान कादिर अल्लाह का दिया हुआ है। इसलिए अपने को सबसे विद्वान कहा। फिर वह अल्लाह (ज्योति निरंजन काल) कहता है कि तेरा ज्ञान कुछ भी नहीं है। यदि तोरात का ज्ञान यथार्थ ज्ञान के (जो अल-खिज्र के पास था, उसके) सामने कुछ भी नहीं था। तो उसे हजरत मूसा को किसलिए बताया? जब मूसा जी अल-खिज्र के पास ज्ञान लेने गया और खाली लौट आया तो उसे वह यथार्थ ज्ञान बता देना चाहिए था। वह ज्ञान हजरत मुहम्मद जी को भी नहीं बताया। उसे भी कह दिया कि कादिर सृष्टि की उत्पत्ति करने वाले कादिर अल्लाह के विषय में यथार्थ ज्ञान किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी संत) से पूछो।

इससे स्पष्ट है कि हजरत आदम से हजरत मुहम्मद जी तक को अधूरा ज्ञान देने वाला तथा माँस खाने व लड़ने की प्रेरणा करके पाप करवाने वाला ज्योति निरंजन काल है। इसी काल ब्रह्म ने श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान अर्जुन को दिया। जिस समय चचेरे व ताऊ के भाईयों कौरवों तथा पांडवों के बीच राज्य के बंटवारे के लिए युद्ध होने वाला था। दोनों की सेनाएँ लड़ने के लिए आमने-सामने खड़ी थी। पांडव योद्धा अर्जुन ने अपने चचेरे भाईयों व भतीजों को देखा जो लड़ने के लिए मैदान में खड़े थे। तब दया उत्पन्न हो गई कि जिन भाईयों के बच्चों को गोद में लेकर प्यार किया करते, आज उनको मारने के लिए तैयार हूँ। विचार किया कि लड़ाई में अनेकों सैनिक मारे जाएँगे, उनकी पत्नियाँ विधवा होंगी। अनेकों बच्चे यतीम हो जाएँगे। मुझे घोर पाप लगेगा। इसलिए युद्ध न करने का निर्णय लेकर हथियार डालकर रथ के पिछले भाग में बैठ गया। अर्जुन के युद्ध से मना कर देने पर युद्ध नहीं होना था।

जब काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने देखा कि युद्ध नहीं होगा। तब अपने पुत्र श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण के (जिसको अपना नबी बनाकर उस समय भेज रखा था, उसके) शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके गीता पुस्तक का ज्ञान दिया तथा कहा कि अर्जुन तू युद्ध कर। तुझे तो केवल निमित मात्र बनना है। इन सबको मैंने मार रखा है। परंतु अर्जुन मानने को तैयार नहीं था। कह रहा था कि हे कृष्ण! भाईयों/रिश्तेदारों को मारकर राज प्राप्त करने से अच्छा तो हम भिक्षा का अन्न खाना पंसद करेंगे। मैं युद्ध नहीं करूँगा।

काल ने गीता अध्याय 2 के श्लोक 37 में अर्जुन को बहकाया कि हे अर्जुन! तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। यदि तू युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग (जन्नत) प्राप्त करेगा। यदि युद्ध जीत गया तो पृथ्वी का राज प्राप्त करके राज का सुख भोगेगा।

गीता अध्याय 2 के श्लोक 38 में कहा कि जय और पराजय, लाभ और हानि और सुख-दुःख को समान समझकर युद्ध के लिए तैयार हो जा। इस प्रकार युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नहीं होगा।

जब अर्जुन युद्ध करने के लिए तैयार नहीं हुआ तो अर्जुन को डराने के लिए अपना विराट विकराल काल रूप दिखाया। उसे देखकर अर्जुन डरकर काँपने लगा और युद्ध के लिए मान गया। महाभारत नाम से युद्ध हुआ जो एक प्रकार का विश्व युद्ध था। उसमें लाखों सैनिक मारे गए। पांडव जीत गए। पांडवों में से बड़े युधिष्ठिर थे जो राजा बने। युधिष्ठिर को स्वप्न में बिन सिर के मानव के धड़ दिखाई देने लेगे। युद्ध में विधवा हुई सैनिकों की पत्नियाँ विलाप करती दिखाई देने लगी। युधिष्ठिर भयभीत होकर जाग जाता। फिर नींद नहीं आती थी। खाना-पीना भी छूट गया। आँखें फटी-फटी रहने लगी। युधिष्ठिर के अन्य चारों भाईयों (अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव) ने भाई की यह दशा देखी। युधिष्ठिर से कारण जाना तो बताया मुझे रात्रि में नींद नहीं आती। नींद आती

है तो भयंकर स्वप्न देखकर डरकर बैठ जाता हूँ। पांडवों के गुरू श्री कृष्ण जी थे जिसके शरीर में प्रवेश करके काल प्रभु ने गीता का ज्ञान अर्जुन पर उतारा था। अर्जुन मान रहा था कि गीता पुस्तक का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने बताया है। अपने गुरू जी के पास पाँचों भाई गए तथा युधिष्ठिर की समस्या बताई। तब श्री कृष्ण ने कहा कि तुमने युद्ध में बंधुओं (भाईयों, भतीजों आदि) को मारा है। उस पाप के कारण यह संकट राजा पद पर विराजमान होने से युधिष्ठिर को हुआ है। इसके समाधान के लिए एक अश्वमेघ यज्ञ करो। उसमें पूरी पृथ्वी के साधु, संत, ऋषि-मुनि व रिश्तेदार तथा स्वर्ग के देवता आदि-आदि को उस यज्ञ में भोजन खाने के लिए निमंत्रण दो।

यह बात श्री कृष्ण के मुख से सुनकर अर्जुन पांडव को ध्यान आया कि जब दोनों सेनाएं युद्ध के लिए खड़ी थी। मैं युद्ध न करने के लिए कह रहा था। श्री कृष्ण ने कहा था कि युद्ध कर ले, तुझे पाप नहीं लगेगा। मेरे लाख बार मना करने पर भी नहीं माना। युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। कितने मानव मारे। अब कह रहा है कि तुमको युद्ध में मानव मारने के पाप के कारण यह संकट आया है। जिसके समाधान में उस समय के अरबों रूपये खर्च होने थे। भाई की जान संकट में थी। इसलिए सब्र किया। यज्ञ की गई, युधिष्ठिर स्वस्थ हुआ।

फिर श्री कृष्ण जी के पूरे कुल का (सब बालक, वृद्ध, युवा, कृष्ण समेत सब परिजन व भाई-बंधुओं का) दुर्वासा द्वारा श्राप दिलाकर काल ज्योति निरंजन ने नाश करवाया। छप्पन करोड़ यादव (श्री कृष्ण जी के कुल के व्यक्ति) थे। आपस में लड़कर मर गए। श्री कृष्ण को भी एक शिकारी ने मारा। काल ने अपने नबी श्री कृष्ण को भी नहीं बख्शा। उनकी आँखों के सामने उनका सर्वनाश हो गया। पांडवों को राज्य भी पूरी आयु नहीं करने दिया। जब श्री कृष्ण जी मरने लगे तो पाँचों पांडवों से कहा कि तुम्हारे सिर पर युद्ध किए पापों का दंड बहुत अधिक है। तुम पाँचों हिमालय पर्वत के ऊपर जाकर तप करो, वहीं मरो। युद्ध में किए पाप समाप्त हो जाएँगे। पाँचों पांडव राज्य त्यागकर हिमालय पर्वत में बर्फ में गलकर मरे। फिर उन्हें युद्ध के पापों के कारण नरक में डाला गया।

नरक में पापों को भोगकर पुण्यों का फल स्वर्ग में प्राप्त करते हैं। यह इसका भयंकर जाल है। काल ज्योति निरंजन झूठ बोलकर जीव को भ्रमित करके अपने जाल में फँसाकर रखता है। कोई सुख इसके लोक में जीव को नहीं हो सकता। इसी प्रकार हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक की दुर्गति इसी ने की थी, जिसे कादिर अल्लाह कबीर जी ने कसाई की संज्ञा दी है जो सब जीवों को भ्रमित करके अपने जाल में फँसाकर रखे हुए हैं। इसके जाल से निकलने के लिए समर्थ कबीर अल्लाह की शरण में सबको आना पड़ेगा।

वर्तमान में मुझ दास (रामपाल दास) को उस कबीर अल्लाह ने अपना अंतिम नबी बनाकर भेजा है। मेरे पास यथार्थ भक्ति विधि तथा यथार्थ ज्ञान है। आप विश्व के सब मानव मेरे द्वारा बताई इबादत करके करो जिससे कादिर अल्लाह कबीर जी के सतलोक चले जाओगे। वहाँ सदा सुखी रहोगे। कभी मृत्यु नहीं होगी। जब तक काल के लोक में जीवन है, सुख से जीओगे। अकाल मृत्यु नहीं होगी। रोग, शोक से पूर्ण बचाव होगा।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध है कि जिसने बाइबल, कुरआन, गीता का ज्ञान दिया, वह काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) है। कादिर अल्लाह कबीर है। वह सच्चा ज्ञान बताता है।

प्रश्न :- चलने-फिरने में, खाना खाने-बनाने में, खेती करने में आदि-आदि में भी जीव मरते हैं तो भक्त कैसे मोक्ष पा सकते हैं? उनसे भी पाप लगता है। पापी जन्नत में नहीं जा सकते तो वे कैसे जाएँगे? गाय, बकरी, मुर्गी तथा मानव व अन्य सूक्ष्म जीवों में आत्मा तो एक ही जैसी है।

उत्तर :- कादिर अल्लाह ने विधान बनाया है। बताया है कि :-

कबीर इच्छा कर मारे नहीं, बिन इच्छा मर जाय। कह कबीर तास का पाप नहीं लगाय।।

अर्थात् पैदल चलते समय, खेती-मजदूरी करते समय जमीन खोदने में, खाना पकाने आदि में जीव मारना उद्देश्य नहीं होता। वे जिस कारण से उनके मरने का पाप नहीं लगता। यह पाप उसको तो लगता है जिसने कबीर अल्लाह की शरण नहीं ले रखी यानि उसके द्वारा भेजे नबी (संत) से जिसने दीक्षा नहीं ले रखी। कबीर जी की शरण में नाम-दीक्षा लेने वाले को अनजाने में हुए पाप नहीं लगते। अन्य को लगेंगे चाहे वे किसी संत से उपदेश भी लिए हुए हैं। कबीर जी के भक्त को पूर्ण ज्ञान होता है। वह जान-बूझकर पाप नहीं कर सकता। अनजाने में हुए पाप का उसे दंड नहीं भोगना पड़ता।

उदाहरण :- जैसे ड्राइविंग (चालक) लाइसेंस (प्रमाण पत्र) उसी को मिलता है जो गाड़ी चलाना

पूर्ण रूप से जानता है। फिर यदि उससे दुर्घटना हो जाती है और उसमें कोई मर जाता है तो उसम. ` उसे हत्या का दोषी नहीं माना जाता क्योंकि उसके पास चालक प्रमाण पत्र है। इसी प्रकार जिसने दास (रामपाल दास) से दीक्षा ले रखी है, उसको अनजाने में हुए पाप का दंड भोगना नहीं पड़ता।

प्रश्न :- मोक्ष की परिभाषा क्या है तथा मोक्ष प्राप्ति कैसे होती है?

उत्तर :- मोक्ष का अर्थ है ''मुक्ति''। किसी बंधन से छुटकारा पाना मोक्ष प्राप्त करना कहा जाता है। जैसे तोते पक्षी को पिंजरे में बंद कर रखा था। तब वह बंधन में था। तोते को पिंजरे से निकालकर स्वतंत्र कर दिया तो वह बंधन मुक्त हो गया।

अध्यात्म मार्ग में मोक्ष तथा बंधन इस प्रकार हैं :-

कर्मों के बंधन में जीव बंधा है। जिस कारण से जन्म तथा मृत्यु के चक्रव्यहू में फँसकर कष्ट उठा रहा है। यह बंधन है। इस कर्मों के बंधन से छुटकारा मिलना मोक्ष प्राप्ति है। सब जीव जो काल ज्योति निरंजन के लोक में हैं, ये सब कर्मों के बंधन में बंधे हैं। जैसा कर्म अच्छा या बुरा प्राणी करेगा, उसका फल भी उसे अवश्य मिलेगा। जो काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) के रसूलों (संदेशवाहकों) द्वारा बताए ज्ञान के आधार से भक्ति कर्म करते हैं, उनको गुरू बनाना अनिवार्य है। गुरू जी के बताए अनुसार भक्ति करने से वे काल ब्रह्म के साधक स्वर्ग (जन्नत) तथा नरक (जहन्नुम) में अवश्य जाएँगे क्योंकि काल ब्रह्म के लोक में दोनों प्रकार के कर्म (पाप कर्म तथा पुण्य कर्म) भोगकर ही समाप्त करने पड़ते हैं। गुरू अपने शिष्य/शिष्या को पाप कर्मों से बचने की तथा पुण्य कर्म करने की प्रेरणा करता है। जिस कारण से गुरू जी का अनुयाई पुण्य अधिक प्राप्त कर लेता है। इसलिए जब वह संसार छोड़कर जाएगा तो स्वर्ग (जन्नत) में रहने का समय अधिक मिलता जाता है जो पुण्यों का प्रतिफल होता है। स्वर्ग समय समाप्त होने के पश्चात् वह साधक (दोजख) नरक में भी जाता है तथा पृथ्वी के ऊपर अन्य प्राणियों के शरीरों में कर्म का दंड भोगता है। फिर एक मानव (स्त्री-पुरूष का) जन्म उसे मिलता है। उस मानव जीवन में जैसे कर्म करेगा, उसको फिर उपरोक्त कर्मफल मिलेगा। यह सिलसिला सदा चलता रहेगा।

ये काल ब्रह्म के भक्त स्वर्ग (जन्नत) के निवास के समय को मोक्ष मानते हैं जो सीमित है। यह मोक्ष समय चाहे चार युग (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग तथा कलयुग) जितना यानि तैंतालीस लाख बीस हजार वर्ष का होता है। ये चारों युगों का समय है, इसे चतुर्युग भी कहते हैं। यह मोक्ष समय एक हजार चतुर्युग का होता है जो ब्रह्मा जी (रजगुण देवता) का एक दिन का समय है।

कुछ ऋषियों ने ब्रह्मलोक (काल लोक की महाजन्नत) यानि महास्वर्ग को भी प्राप्त किया है। उन्होंने कई हजार चतुर्युग तक उसमें निवास किया। अधिक समय का मोक्ष प्राप्त किया है। वे भी पुनः जन्म-मृत्यु के चक्र में आए हैं। पशु-पक्षियों के जीवन भी भोगे हैं। नरक (जहन्नुम) में भी कष्ट भोगा है। इन ऋषियों ने वेदों में वर्णित भक्ति की थी। गीता में भी वही वेदों वाला ज्ञान है। वेदों में पाँच यज्ञ करने का प्रावधान है तथा ओम् (ॐ) नाम का जाप करने को कहा है। किसी ऋषि ने पाँचों यज्ञ की, किसी ने चार की, किसी ने दो या एक की। ओम् नाम का जाप जपा। उस आधार से उनको मोक्ष का समय न्यून व अधिक मिला।

तप, हठयोग करके भी स्वर्ग का राज्य प्राप्त किया जाता है। तप करने वाले को तप का फल राज पद से मिलता है। स्वर्ग का राजा इंद्र तप करके बनता है। सौ मन (एक मन में 40 किलोग्राम होते हैं) देसी घी एक यज्ञ में लगना होता है, ऐसी-ऐसी सौ यज्ञ करके भी इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है, परंतु समय सीमित है। उसके पश्चात् वहाँ भी मृत्यु होती है। फिर जन्म-मृत्यु का चक्र चलता है। यह अस्थाई मोक्ष है। जिनको सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है, वे स्वर्ग में जाने को मोक्ष मानते हैं। यह अस्थाई मोक्ष है।

सतलोक स्थान जो सतपुरूष (कादिर अल्लाह) का निवास स्थान है, जहाँ उसका तख्त है। वह सतलोक अमर स्थान है। सतपुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) कबीर जी भी अविनाशी हैं। जो सतपुरूष कबीर जी की सत्य साधना करते हैं, वे उस अमर स्थान (सत्यलोक) में चले जाते हैं। वे फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। वहाँ सदा सुखी रहते हैं। उनको अमर शरीर मिलता है। यह पूर्ण मोक्ष है। यही सही मायनों में मुक्ति है।

बाइबल तथा कुरआन का ज्ञान देने वाला भी ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) है। इनमें भक्ति विधि गीता तथा वेदों से भी अधूरी है। इनमें बताई इबादत से भी पूर्ण मोक्ष नहीं हो सकता।

प्रश्न :- क्या कब्रों में शव के अंदर जीवात्मा रहती है?

उत्तर :- हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक सब अनुयाई कहते हैं कि मरने के पश्चात् सबको कब्रों में दबाया जाएगा। जब कयामत आएगी, तब सबको जिलाया (जीवित किया) जाएगा। फिर वे अच्छे कर्मी जन्नत में तथा पाप कर्मी जहन्नुम में सदा रहेंगे। यह सिद्धांत हजरत मुहम्मद जी की आसमानों की यात्रा (मेराज) से ही खंडित हो जाता है जब वे बाबा आदम से लेकर हजरत ईसा तक को जन्नत में देखते हैं। वास्तव में वह पित्तर लोक है जो जन्नत तथा जहन्नुम के मध्य में है। वहाँ पर पृथ्वी जैसा ही सुख तथा दुःख है।

वास्तविकता यह है :- शिव पुराण में एक प्रसंग आता है कि एक समय शिव जी अपनी पत्नी पार्वती को नाम-दीक्षा देने के लिए एकांत स्थान पर ले जाता है। एक सूखे वृक्ष के पास बैठ जाते हैं। नाम-दीक्षा मंत्र अधिकारी को सुनाना होता है। शिव जी ने हाथों से तीन बार ताली बजाई। उसकी भयंकर आवाज हुई जिसके भय से सब पशु व पक्षी दूर चले गए। उस सूखे वृक्ष के तने में बिलनुमा सुराख बने थे जो अधिक आयु के पेड़ों के तने में अमूमन हो जाते हैं जो दीमक आदि के लगने से होते हैं। उस वृक्ष के तने की खोगर (सुराख) में एक मादा तोते ने अंडे पैदा कर रखे थे। जो अंडे स्वस्थ थे, उनमें तोते पक्षी बनकर उड़ गए।

एक अंडा गंदा हो गया था, वह वहीं रह गया। प्रत्येक अंडे में जीव थे। गंदे अंडे वाला जीव उसी में था। जब शिव जी को विश्वास हो गया कि आस-पास कोई प्राणी हमारी बातें सुनने वाला नहीं है, तब अपनी पत्नी पार्वती को पूर्ण परमात्मा की महिमा सुनानी प्रारंभ की तथा कमलों के (जो शरीर में बने कमल चक्र हैं, उनके) विषय में बताने लगे। प्रत्येक कमल को खोलने का मंत्र जाप भी बताने लगे। पार्वती जी मंत्र सुन-सुनकर प्रत्येक बात को स्वीकार करने का संकेत हाँ-हूँ करके करती थी। कुछ समय पश्चात् पार्वती जी को निंद्रा की झपकी आई। उस समय वृक्ष के बिल से हाँ-हूँ की आवाज आने लगी क्योंकि परमात्मा की कथा अधिकारी से सुनने से अधिक प्रभाव करती है। जिस कारण से तोते का गंदा अंडा स्वस्थ होकर उसमें पक्षी बन गया। तोता पक्षी हुँकारा भरने लगा था। शिव जी ने देखा पार्वती नहीं बोल रही। फिर हाँ-हूँ कौन कर रहा है? किसी ने मेरा अमर मंत्र सुन लिया। इसे मार देना चाहिए। शिव जी को उठते देख तोता पक्षी उड़ गया जो तोते का शरीर त्यागकर ऋषि वेद व्यास जी की पत्नी के पेट में चला गया। उस समय व्यास जी की पत्नी ने जम्हाई (उबासी) लेने के लिए मुख खोला था। मुख मार्ग से तोते का जीव पेट में गया था। बारह वर्ष गर्भ में रहा। फिर सुखदेव ऋषि रूप में जन्मा। यह लंबी कथा है। अब प्रसंग पर आता हूँ। बात ''कब्रों में जीव रहता है या नहीं'' चल रही है।

जिसको मानव (स्त्री-पुरूष) का शरीर मिला है। यदि वह सतगुरू की शरण में जाकर धर्म-कर्म भक्ति करता है, नेक काम करता है तो वह मृत्यु के पश्चात् शरीर त्यागकर कर्मों के अनुसार ऊपर के लोकों में चला जाता है। कबीर जी का भक्त व भक्तमति सतलोक चला जाता है। अन्य जो भक्ति नहीं करते हैं या गलत भक्ति करते हैं, मृत्यु के पश्चात् वे भी अपने कर्मों अनुसार नरक में या अन्य प्राणियों के शरीरों में चले जाते हैं। कुछ जीव ऐसे कर्महीन (खराब कर्मों वाले) होते हैं जिनको शीघ्र कोई शरीर नहीं मिलता। वे प्रेत योनि को प्राप्त करते हैं। जिन प्राणियों को अगला शरीर नहीं मिलता, वे अपने पुराने शरीर के मोह में फंसकर उसी के पास रहते हैं। जैसे जिस शरीर में जीव रहता है, उसको वह बहुत प्यारा लगता है। इस भाव से वे प्राणी कब्रों में दबे शरीर के साथ रहते हैं। उस कब्र के ऊपर रहते हैं। यदि कोई सुराख चींटी कर देती है तो उसमें से शरीर के साथ चिपक जाते हैं। कभी बाहर निकल आते हैं। जब तक उनको नया शरीर नहीं मिलता, तब तक पुराने शरीर के मोहवश उसी से चिपके रहते हैं।

हिन्दू धर्म में शव (मृत शरीर को) जलाने के पश्चात् बचे हुए हड्डियों के टुकड़ों को (जिसको फूल उठाना कहते हैं) उठाकर दरिया के गहरे जल में प्रवाह कर देते हैं कि जो घर का सदस्य मरा है, वह यदि प्रेत बना होगा तो उस शरीर के टुकड़ों (हड्डियों के अवशेषों) के साथ चिपका दूर चला जाएगा। हमको परेशान नहीं करेगा। विषय कब्रों में जीव रहता है या नहीं, चला था। उसको स्पष्ट किया है कि कब्रों में केवल वही जीव रहते हैं जिनको प्रेत या जिन्न योनि मिली है। जिस कारण से आगे शरीर नहीं मिला है। प्रमाण के लिए तोते का जीव गंदे अंडे से चिपका था। उसे अपना मान रहा था। यही दशा कब्रों वाले जीवों की है। प्रेत योनि में कब्रों पर रहते हैं। नया शरीर मिलने के पश्चात् कब्रों में उस शव वाला जीव नहीं रहता।

(अध्याय नं. 3)

हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक

हजरत आदम जी से लेकर हजरत मुहम्मद जी तक एक लाख अस्सी हजार नबी (पैगम्बर) हुए हैं। इन सब नबियों तथा इनकी संतानों का बाबा आदम बाप माना जाता है।

प्रमाण :- कुरआन मजीद की सूरः यासीन-36 आयत नं. 60 :- आदम के बच्चो! क्या मैंने तुम्हें ताकीद न की थी कि शैतान की बंदगी न करो। वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

हजरत मुहम्मद जी ने मक्का में अंतिम प्रवचन दिए। कहा कि ''मुसलमान आपस में कैसे रहें। फिर बताया कि लोगो! तुम्हारा रब एक है। तुम्हारा बाप एक है। तुम सब आदम के बेटे हो और आदम मिट्टी से बने हैं। और खुदा के नजदीक तुम में से बेहतर वह है जो खुदा से सबसे ज्यादा डरने वाला हो।''

बाबा आदम का संक्षिप्त परिचय

बाबा आदम की उत्पत्ति

पवित्र बाइबल के उत्पत्ति अध्याय से कहा कि परमेश्वर ने छः दिन में सृष्टि रची तथा सातवें दिन विश्राम किया, प्रभु ने पाँच दिन तक अन्य रचना की, फिर छटवें दिन ईश्वर ने कहा कि हम मनुष्य को अपना ही स्वरूप बनाएँगे।

फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपना ही स्वरूप जैसा बनाया, नर-नारी करके उसकी सृष्टि की। फिर ईश्वर ने मनुष्यों के खाने के लिए केवल फलदार वृक्ष तथा बीजदार पौधे दिए। जो तुम्हारे भोजन के लिए हैं। छः दिन में पूरा कार्य करके परमेश्वर ऊपर तख्त पर जा विराजा अर्थात् विश्राम किया।

ईश्वर ने प्रथम आदम बनाया फिर उसकी पसली निकाल कर नारी हव्वा बनाई तथा दोनों को एक वाटिका में छोड़कर तख्त पर जा बैठे।

विशेष :- बाइबल ग्रंथ में सृष्टि की उत्पत्ति का ज्ञान ज्योति निरंजन (काल) द्वारा बताया गया है। यह सृष्टि की रचना की अधूरी जानकारी है। कुरआन मजीद में सूरः फुरकान-25 आयत 59 में इसी खुदा ने हजरत मुहम्मद जी से कहा है कि जिसने छः दिन में संसार की रचना की और सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, वह समर्थ परमेश्वर (कादिर अल्लाह) है। उसकी (खबर) जानकारी किसी (बाखबर) तत्त्वदर्शी संत से पूछो। इससे स्पष्ट हुआ कि कुरआन मजीद का ज्ञान देने वाला पूर्ण ज्ञान नहीं बताता। यह जनता को भ्रमित करके रखता है। इसी अल्लाह ने बाइबल का ज्ञान दिया है। बाइबल तीन पुस्तकों को इकट्ठा करके बनाया है। इसमें तोरात, जबूर तथा इंजिल का ज्ञान है। सृष्टि उत्पत्ति तोरात पुस्तक में लिखी है जो बाइबल में प्रथम है। तोरात का ज्ञान इसी अल्लाह ने हजरत मूसा जी को दिया है। एक दिन मूसा जी सत्संग फरमा रहे थे। एक सत्संगी ने कहा कि मूसा आज के दिन सबसे विद्वान कौन है? मूसा ने कहा मैं सबसे ज्यादा इल्मी हूँ। अल्लाह ने कहा कि मूसा! तूने गलत कहा है। तेरा ज्ञान (तोरात का ज्ञान) तो एक शख्स (अल-खिज्र) के ज्ञान के सामने कुछ भी नहीं है। मूसा अल-खिज्र के पास पूर्ण ज्ञान जानने जाता है। सब्र पर खरा न उतरने से खाली आता है।

इससे सिद्ध है कि सृष्टि रचना अधूरी है। सृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान स्वयं अल्लाह अकबर (कबीर) जी ने सही-सही बताया है। वह इसी पुस्तक के अंत में लिखे अध्याय ''सृष्टि रचना'' में पढ़ें। (अब अपने विषय को आगे बढ़ाता हूँ।) बाबा आदम से नबी मुहम्मद तक के अनुयाई खुदा को (बेचून) निराकार मानते हैं। जबकि इनके ग्रन्थों में अल्लाह साकार मनुष्य (आदमी) जैसा बताया है। ये अपने ग्रन्थों को भी ठीक से नहीं समझे हैं।

प्रमाण :-

परमेश्वर (अल्लाह) मनुष्य जैसा (नराकार) है

भगवान ने मनुष्य को अपने स्वरूप के समान उत्पन्न किया यानि प्रभु ने मनुष्य को अपना प्रति रूप बनाया। इससे स्वसिद्ध है कि भगवान (अल्लाह) आकार में है और वह मनुष्य जैसा है। वह पूर्ण परमात्मा तो यहाँ तक रचना छः दिन में करके सातवें दिन अपने सत्यलोक में तख्त पर विराजमान हो गया। इसके बाद प्रभु काल अर्थात् ज्योति निरंजन की भूल-भुलैया प्रारम्भ हो गई।

बाइबल ग्रंथ में ही अन्य प्रमाण भी है कि परमेश्वर मनुष्य के समान स्वरूप वाला है, दर्शन देता है। (प्रमाण पृष्ठ 17 पर उत्पत्ति 17:1-2 में ''वाचा का चिन्ह खतना।'')

1-2 :- जब अब्राहिम निनानवें वर्ष का हो गया, तब यहोवा (प्रभु) ने उसको दर्शन देकर कहा, ''मैं सर्वशक्तिमान हूँ। मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।

उत्पत्ति 26:1-3 (पृष्ठ 17) :- यहोवा (प्रभु) ने इसहाक को दर्शन देकर कहा कि ''मिस्र में मत जा। जो देश मैं तुझे बताऊँ, उसी में रह। मैं तेरे संग रहूँगा।''

उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ कि खुदा आदमी के आकार का है, साकार है। प्रसंग हजरत आदम का चला है :-

ब्रह्मा ने आदम व हव्वा को स्वर्ग में रखा

काल (ज्योति निरंजन) ने अपने तीनों पुत्रों द्वारा अपनी व्यवस्था करवा रखी है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ये तीन पुत्र काल के हैं। आदम जी ब्रह्मा के लोक से आई पवित्र आत्मा थे। इसलिए ब्रह्मा ने आदम को वाटिका में संभाला। (काल ब्रह्म अपने पुत्र ब्रह्मा के रूप में था।)

प्रभु ने हजरत आदम तथा हजरत हव्वा (आदम जी की पत्नी) को कहा कि इस वाटिका में लगे हुए पेड़ों के फलों को तुम खा सकते हो। लेकिन ये जो बीच वाले पेड़ों के फल नहीं खाना, अगर खाओगे तो मर जाओगे। परमेश्वर ऐसा कह कर चला गया।

उसके बाद सर्प आया और कहा कि तुम ये बीच वाले पेड़ों के फल क्यों नहीं खा रहे हो? हव्वा जी ने कहा कि भगवान (अल्लाह) ने हमें मना किया है कि अगर तुम इनको खाओगे तो मर जाओगे, इन्हें मत खाना। सर्प ने फिर कहा कि भगवान ने आपको बहकाया हुआ है। वह नहीं चाहता है कि तुम प्रभु के सदृश ज्ञानवान हो जाओ। यदि तुम इन फलों को खा लोगे तो तुम्हें अच्छे और बुरे का ज्ञान हो जाएगा। आपकी आँखों पर से अज्ञानता का पर्दा हट जाएगा जो प्रभु ने आपके ऊपर डाल रखा है। यह बात सर्प ने आदम की पत्नी हव्वा से कही थी। हव्वा ने अपने पति हजरत आदम से कहा कि हम ये फल खायेंगे तो हमें भले-बुरे का ज्ञान हो जाएगा। ऐसा ही हुआ। उन्होंने वह फल खा लिया तो उनकी आँखें खुल गई तथा वह अंधेरा हट गया जो भगवान ने उनके ऊपर अज्ञानता का पर्दा डाल रखा था। जब उन्होंने देखा कि हम दोनों निर्वस्त्र हैं तो शर्म आई और अंजीर के पत्तों को तोड़कर लंगोट बनाकर गुप्तांगों पर बांधा।

{जिसे आदम से लेकर मुहम्मद तक अपना खुदा मानते हैं, वह भी मानव जैसा साकार है।}

कुछ दिनों के बाद जब घूमने के लिए प्रभु शाम के समय आया तो आदम तथा हव्वा से पूछा कि तुम कहाँ हो? आदम तथा हव्वा ने कहा कि आपकी आवाज सुनकर हम छुपे हुए हैं क्योंकि हम निर्वस्त्र हैं। भगवान ने कहा कि क्या तुमने उस बीच वाले पेड़ों के फल को खा लिया? आदम ने कहा कि हाँ जी और उसके खाने के बाद हमें महसूस हुआ कि हम निवस्त्र हैं। प्रभु ने पूछा कि तुम्हें किसने बताया कि ये फल खाओ। आदम ने कहा कि हमारे को सर्प ने बताया और हमने वह खा लिया। उसने मेरी पत्नी हव्वा को बहका दिया और हमने उसके बहकावे में आकर ये फल खा लिया।

21. फिर यहोवा प्रभु ने आदम तथा उसकी पत्नी को चमड़े के अंगरखे (वस्त्र) पहना दिए।

विशेष :- हजरत आदम का खुदा समर्थ (कादिर) नहीं है। उसे यह भी नहीं पता कि आदम तथा हव्वा कहाँ हैं? न यह पता कि उनको किसने बताया कि बीच वाले पेड़ों का फल खा लो, तुम्हें भले-बुरे का ज्ञान हो जाएगा। यहाँ पर बताना अनिवार्य है कि कुरआन मजीद की सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 35-38 में कुरआन का ज्ञान उतारने वाले ने कहा है कि हमने आदम तथा हव्वा को जन्नत में एक वाटिका में रखा। जब उन्होंने शैतान के बहकावे में आकर गलती की तो उनको जन्नत (स्वर्ग) से नीचे जमीन पर उतार दिया।

प्रभु एक से अधिक हैं का प्रमाण

22. फिर यहोवा प्रभु ने कहा मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिए ऐसा न हो कि यह जीवन के वृक्ष वाला फल भी तोड़ कर खा ले और सदा जीवित रहे।

23. व 24. इसलिए प्रभु ने आदम व उसकी पत्नी को अदन के उद्यान से निकाल दिया।

प्रभु ने उनको उस वाटिका से निकाल दिया और कहा कि अब तुम्हें यहाँ नहीं रहने दूँगा और तुझे अपना पेट भरने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा और औरत को श्राप दिया कि तू हमेशा आदमी के पराधीन रहेगी।

{विशेष :- जैन धर्म की पुस्तक ''आओ जैन धर्म को जाने'' पृष्ठ 154 पर लिखा है। श्री मनु जी के पुत्र इक्ष्वाकु हुए तथा इसी वंश में राजा नाभीराज हुए। राजा नाभीराज के पुत्र श्री ऋषभदेव जी (आदि नाथ) हुए जो पवित्र जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर माने जाते हैं। यही श्री ऋषभदेव जी का जीवात्मा ही बाबा आदम हुए।}

बाबा आदम व उनकी पत्नी हव्वा के संयोग से दो पुत्र उत्पन्न हुए। एक का नाम काईन तथा दूसरे का नाम हाबिल रखा। काईन खेती करता था। हाबिल भेड़-बकरियाँ चराया करता था। काईन कुछ धूर्त था परन्तु हाबिल ईश्वर पर विश्वास करने वाला था। काईन ने अपनी फसल का कुछ अंश प्रभु को भेंट किया। प्रभु ने अस्वीकार कर दिया। फिर हाबिल ने अपने भेड़ के पहले मैमने को प्रभु को भेंट किया, प्रभु ने स्वीकार किया। {यदि बाबा आदम को कादिर अल्लाह निर्देश कर रहा होता तो कहता कि बेटा हाबिल मैं तेरे से प्रसन्न हूँ। आप ने जो मेंमना भेंट किया यह आप की प्रभु के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। यह आप ही ले जाईये और इसे बेच कर धर्म (भण्डारा) कीजिए और अपनी भेड़ों की ऊन उतार कर रोजी-रोटी चलाईये तथा प्रभु में विश्वास रखिये। बाबा आदम को कोई फरिश्ता माँस खाने की प्रेरणा करता था। अल्लाह (यहोवा) ने तो सृष्टि रचना के समय केवल शाकाहार भोजन का आदेश मानव को दिया था। पवित्र बाइबल में माँस खाने का प्रावधान पित्तरों तथा फरिश्तों ने किसी-किसी में बोल कर करवाया है। एक पुस्तक में लिखा है कि हाबिल ने भेड़ का पहला मेंमना (बच्चा) प्रभु को भेंट किया। प्रभु ने स्वीकार किया। स्वीकार व अस्वीकार इस प्रकार होता था :- यदि प्रभु भेंट स्वीकार करता था तो ऊपर से आग आती थी। भेंट को जलाकर चली जाती थी। हाबिल का मेंमना आग ने जला दिया। यह भेंट स्वीकार हुई मानी गई। काईन (काबिल) ने जो फसल भेंट की थी, वह आग ने नहीं जलाई। वह अस्वीकार मानी गई। भूत-प्रेत, जिन्न भी आग लगा देते हैं। बहुत सारी घटनाएँ सुनी हैं कि किसी के घर में लोहे की बंद संदूक (Box) में रखे कपड़े जल जाते थे। एक भूत-प्रेत की विद्या जानने वाले से जंत्र-मंत्र करवाए। तब अग्नि लगना बंद हुआ। इस प्रकार के कौतुक प्रेत-पित्तर भी कर देते हैं। यदि कहें कि यह अग्नि खुदा की तरफ से आती थी तो अग्नि रूप खुदा खुद काल ब्रह्म है जिसने मूसा अलैही सलाम को दर्शन दिए थे। यह सब प्रपंच काल ब्रह्म (ज्योति स्वरूप निरंजन) का है। यह कादिर कबीर अल्लाह के लिए शैतान का काम करता है। ज्योति निरंजन (अग्नि रूपी खुदा) के लिए ''इबलिस'' शैतान का काम करता है जिसने हजरत आदम को सजदा (प्रणाम) नहीं किया था।}

एक पुस्तक में लिखा है कि हजरत हव्वा (पत्नी हजरत आदम) को लड़का तथा लड़की जुड़वां संतान होती थी। बड़े काईन (काबिल) के साथ जो लड़की उत्पन्न हुई थी, वह सुंदर थी। जो हाबिल के साथ लड़की उत्पन्न हुई, वह कुरूप थी। उस समय विवाह परंपरा यह थी कि जोड़े में उत्पन्न लड़का-लड़की, भाई-बहन माने जाते थे। एक की बहन का विवाह दूसरे की बहन के साथ करना तय होता था। इस नियम के तहत काईन का विवाह कुरूप लड़की से होना तय था। काईन उस कुरूप लड़की से विवाह नहीं करना चाहता था। हाबिल को मार देने से उसका विवाह अपने जोड़े वाली से होना था। इस कारण से काईन ने अपने छोटे भाई को मार दिया। काईन को देश से निकाल दिया गया। कुछ समय के बाद आदम व हव्वा से एक पुत्र हुआ उसका नाम सेत रखा। सेत को फिर पुत्र हुआ, उसका नाम एनोस रखा। उस समय से लोग प्रभु का नाम लेने लगे।

आगे चलकर इसी परंपरा में नबी मूसा जी, नबी दाऊद जी तथा ईसा मसीह जी का जन्म हुआ। {ईसा जी की पूज्य माता जी का नाम मरियम तथा पिता जी का नाम यूसुफ था। परन्तु मरियम को गर्भ एक देवता से रहा था। इस पर यूसुफ ने आपत्ति की तथा मरियम को त्यागना चाहा तो स्वप्न में (फरिश्ते) देवदूत ने ऐसा न करने को कहा तथा यूसुफ ने डर के मारे मरियम का त्याग न करके उसे अपने साथ रखा। देवता से गर्भवती हुई मरियम ने हजरत ईसा को जन्म दिया।} हजरत ईसा से पवित्र ईसाई धर्म की स्थापना हुई। ईसा मसीह के नियमों पर चलने वाले भक्त आत्मा ईसाई कहलाए तथा पवित्र ईसाई धर्म का उत्थान हुआ।

{प्रमाण के लिए कुरआन शरीफ में सूरः मर्यम-19 में तथा पवित्र बाइबल में मती रचित सुसमाचार मती=1:25 पृष्ठ नं. 1-2 पर।}

ईसा के द्वारा काल चमत्कार करवाता था

{कबीर सागर यानि कलाम-ए-कबीर (सूक्ष्मवेद) में लिखा है कि जब कबीर प्रभु सत्ययुग में इस काल ब्रह्म के लोक में जोगजीत का रूप धारण करके आए थे। काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने (जो इक्कीस ब्रह्मंडों का प्रभु है) कबीर जी से विवाद किया था। परंतु कबीर परमेश्वर की शक्ति के सामने टिक नहीं सका। चरण पकड़कर क्षमा याचना की। जब क्षमा कर दिया, फिर बोला कि हे जोगजीत! आप किसलिए आए हो? परमेश्वर जी ने कहा कि तूने सब जीवों को अधूरा ज्ञान देकर भ्रमित कर रखा है। मैं यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताने आया हूँ। जब कलयुग आएगा, तब मैं आऊँगा। यथार्थ कबीर पंथ चलाऊँगा। तब काल ने कहा था कि कलयुग में आपके आने से पहले मैं सबको अधूरा ज्ञान देकर भ्रमित कर दूँगा। मेरे द्वारा भेजे (नबियों) संदेशवाहकों द्वारा अधूरा ज्ञान प्रचार करवा दूँगा। आपकी बात को कोई नहीं सुनेगा। इसी उद्देश्य से काल ब्रह्म ने श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण जी आदि अवतार तथा हजरत आदम से हजरत मुहम्मद तक नबी भेजे थे।}

हजरत यीशु का जन्म तथा मृत्यु व जो जो भी चमत्कार किए, वे पहले ब्रह्म (ज्योति निरंजन) के द्वारा निर्धारित थे। यह प्रमाण पवित्र बाइबल में यूहन्ना ग्रन्थ अध्याय 9 श्लोक 1 से 34 में है। लिखा है कि एक व्यक्ति जन्म से अंधा था। वह हजरत यीशु मसीह के पास आया। तथा हजरत यीशु जी के आशीर्वाद से स्वस्थ हो गया उसे आँखों से दिखाई देने लगा। शिष्यों ने पूछा हे मसीह जी इस व्यक्ति ने या इसके माता-पिता ने कौन-सा ऐसा पाप किया था जिस कारण से यह अंधा हुआ तथा माता-पिता को अंधा पुत्र प्राप्त हुआ। यीशु जी ने कहा कि इसका कोई पाप नहीं है जिसके कारण यह अंधा हुआ है तथा न ही इसके माता-पिता का कोई पाप है जिस कारण उन्हें अंधा पुत्र प्राप्त हुआ। यह तो इसलिए हुआ है कि प्रभु की महिमा प्रकट करनी है। भावार्थ यह है कि यदि पाप होता तो हजरत यीशु आँखे ठीक नहीं कर सकते थे। तथा काल रूपी ब्रह्म ने यीशु जी की महिमा बनाने के लिए अपनी शक्ति से किसी प्रेत द्वारा अन्धा करा रखा था। जो यीशु जी के पास आते ही प्रेत निकल गया और व्यक्ति को दिखाई देने लगा था। यह सर्व काल ज्योति निरंजन (ब्रह्म) का सुनियोजित जाल है। जिस कारण उसके द्वारा भेजे अवतारों की महिमा बन जाए तथा सर्व आस पास के प्राणी उस पर आसक्त होकर उसके द्वारा बताई ब्रह्म काल की साधना पर अटल हो जाएँ। जब परमेश्वर का संदेशवाहक आए तो कोई विश्वास न करें। जैसे हजरत ईसा मसीह के चमत्कारों में लिखा है कि एक प्रेतात्मा से पीड़ित व्यक्ति को ठीक कर दिया। यह काल स्वयं ही किसी प्रेत तथा पित्तर को प्रेरित करके किसी के शरीर में प्रवेश करवा देता है। फिर उसको किसी के माध्यम से अपने भेजे नबी के पास भेजकर किसी फरिश्ते को नबी के शरीर में प्रवेश करके उसके द्वारा प्रेत को भगा देता है। उसके अवतार (मसीह/नबी) की महिमा बन जाती है। या कोई साधक पहले का भक्ति युक्त होता है। उससे भी ऐसे चमत्कार उसी की कमाई से करवा देता है तथा उस साधक की महिमा करवा कर हजारों को उसका अनुयाई बनवा कर काल जाल में फंसा देता है तथा उस पूर्व भक्ति कमाई युक्त सन्त साधक की कमाई को समाप्त करवा कर उस सन्त को नरक में डाल देता है।

इसी तरह का उदाहरण पवित्र बाइबल 'शमूएल' नामक अध्याय 16:14-23 में है कि शाऊल नामक व्यक्ति को एक प्रेत दुःखी करता था। उसके लिए बालक दाऊद को बुलाया जिससे उसको कुछ राहत मिलती थी।

☛ हजरत ईसा मसीह की मृत्यु पूर्व ही निर्धारित थी। स्वयं ईसा जी ने कहा कि मेरी मृत्यु निकट है तथा तुम (मेरे बारह शिष्यों) में से ही एक मुझे विरोधियों को पकड़ाएगा। उसी रात्रि में सर्व शिष्यों सहित ईसा जी एक पर्वत पर चले गए। वहाँ उनका दिल घबराने लगा। अपने शिष्यों से कहा कि आप जागते रहना। मेरा दिल घबरा रहा है। मेरी जान निकली जा रही है। तुम भी परमात्मा से मेरे जीवन की रक्षा के लिए, प्रार्थना करो, ऐसा कह कर हजरत यीशु जी ने कुछ दूरी पर जाकर मुँह के बल पृथ्वी पर गिरकर प्रार्थना की (38,39)। वापिस चेलों के पास लौटे तो वे सो रहे थे। यीशु ने कहा क्या तुम मेरे साथ एक पल भी नहीं जाग सकते। जागते रहो, प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम परीक्षा में असफल न हो जाओ। मेरी आत्मा तो मरने को तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है। इसी प्रकार यीशु मसीह ने तीन बार कुछ दूरी पर जाकर प्रार्थना की तथा फिर वापिस आए तो सर्व शिष्यों को तीनों बार सोते पाया। ईसा मसीह के प्राण जाने को थे, परन्तु चेला राम मस्ती में सोए पड़े हैं। गुरु जी की आपत्ति

का कोई गम नहीं था।

तीसरी बार भी सोए पाया तब कहा मेरा समय आ गया है, तुम अब भी सोए पड़े हो। इतने में तलवार तथा लाठी लेकर बहुत बड़ी भीड़ आई तथा उनके साथ एक ईसा मसीह का खास शिष्य था, जिसने तीस रूपये के लालच में अपने गुरु जी को विरोधियों के हवाले कर दिया।(मत्ती 26:24-55 पृष्ठ 42-44)

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुण्यात्मा ईसा मसीह जी को केवल अपना पूर्व का निर्धारित जीवन काल ही प्राप्त हुआ जो उनके विषय में पहले ही पूर्व धर्म शास्त्रों में लिखा था। ''मत्ती रचित समाचार'' पृष्ठ 1 पर लिखा है कि याकुब का पुत्र युसूफ था। युसूफ ही संसार की दृष्टि में ईसा का पिता था, परंतु मरियम को एक फरिश्ते से गर्भ रहा था।(मत्ती 1:1-18)

ईसा मसीह में फरिश्ते प्रवेश करके चमत्कार करते थे

एक स्थान पर हजरत ईसा जी ने कहा है कि मैं याकुब से भी पहले था। संसार की दृष्टि में ईसा मसीह का दादा जी याकुब था। यदि ईसा जी वाली आत्मा बोल रही होती तो ईसा जी नहीं कहते कि मैं याकुब अर्थात् अपने दादा जी से भी पहले था। यदि इस कथन को सत्य मानें तो बार-बार जन्म-मृत्यु सिद्ध होता है। परंतु हजरत आदम की संतान यह नहीं मानती कि जन्म-मृत्यु बार-बार होता है। ईसा जी में कोई अन्य फरिश्ता बोल रहा था जो प्रेतवत प्रवेश कर जाता था, भविष्यवाणी कर जाता था तथा वही चमत्कार करता था। बाइबल में लिखा है कि ईसा को परमात्मा ने अपने पास से भेजा था। ईसा जी प्रभु के पुत्र थे।

एक और अनोखा उदाहरण ग्रन्थ बाइबल 2 कुरिन्थियों 2:12-18 पृष्ठ 259-260 में स्पष्ट लिखा है कि एक आत्मा किसी में प्रवेश करके पत्र द्वारा लिखकर संदेश दे रही है। कहा है कि 2:14 = परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में सदा हम को जय उत्सव में लिए फिरता है और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। 2:17 = हम उन लोगों में से नहीं हैं जो परमेश्वर के वचनों में मिलावट करते हैं। हम तो मन की सच्चाई और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर की उपस्थिति जान कर मसीह में बोलते हैं।

(उपरोक्त विवरण पवित्र बाइबल के अध्याय कुरिन्थियों 2:12 से 18 पृष्ठ 259-260 से ज्यों का त्यों लिखा है।) इससे दो बातें स्पष्ट होती हैं 1. मसीहा (नबी अर्थात् अवतार) में कोई अन्य फरिश्ता बोलकर किताबें लिखाता है। जो प्रभु का भेजा हुआ होता है वह तो प्रभु का संदेश ज्यों का त्यों बिना परिवर्तन किए सुनाता है। 2. दूसरी बात यह भी सिद्ध हुई कि मसीह (नबी) में अन्य आत्मा भी बोलते हैं जो अपनी तरफ से मिलावट करके भी बोलते हैं। यही कारण है कि कुरआन मजीद तथा बाइबल आदि में माँस खाने का आदेश अन्य आत्माओं का है, प्रभु का नहीं है।

उपरोक्त विवरण से यह भी स्पष्ट है कि फरिश्ता कह रहा है कि प्रभु महिमा रूपी सुगंध फैलाने के लिए प्रेत की तरह प्रवेश करके प्रभु हमारा ही प्रयोग मसीह (अवतार/नबी) में करता है। चमत्कार करते हैं फरिश्ते, नाम होता है नबी का तथा भोली आत्माऐं उस नबी को पूर्ण शक्ति युक्त मानकर उसी के अनुयाई बन जाते हैं। उसी के द्वारा बताए भक्ति मार्ग पर दृढ़ हो जाते हैं। जिस समय पूर्ण परमात्मा का संदेशवाहक आता है तो उसकी बातों पर अविश्वास करते हैं। यह सब ब्रह्म काल (ज्योति निरंजन) का जाल है।

ईसा मसीह की मृत्यु :-

एक पर्वत पर ईसा जी 30 वर्ष की आयु में प्रभु से प्राण रक्षा के लिए घबराए हुए बार-बार प्रार्थना कर रहे थे। उनके साथ कुछ शिष्य भी थे। उसी समय उन्हीं का एक शिष्य 30 रूपये के लालच में अपने गुरु जी के विरोधियों को साथ लेकर उसी पर्वत पर आया वे तलवार तथा लाठियां लिए हुए थे। विरोधियों की भीड़ ने उस गुप्त स्थान से ईसा जी को पकड़ा जहाँ वह छुप कर रात्री बिताया करता था। क्योंकि हजरत मूसा जी के अनुयाई यहूदी ईसा जी के जानी दुश्मन हो गए थे। उस समय के महन्तों तथा संतों व मन्दिरों के पूजारियों को डर हो गया था कि यदि हमारे अनुयाई हजरत ईसा मसीह के पास चले जायेंगे तो हमारी पूजा का धन कम हो जाएगा। ईसा मसही जी को पकड़ कर राज्यपाल के पास ले गए तथा कहा कि यह पाखण्डी है। झूठा नबी बन कर दुनिया को ठगता है। इसने बहुतों के घर उजाड़ दिए हैं। इसे रौंद(क्रस) दिया जाए। पीलातुस नाम के राज्यपाल ने

पहले मना किया कि संत, साधु को दुःखी नहीं करते, पाप लगता है। परन्तु भीड़ अधिक थी, नारे लगाने लगी, इसे रौंद (क्रस कर) दो। तब राज्यपाल ने कहा जैसे उचित समझो करो। तीस वर्ष की आयु में ईसा जी को दीवार के साथ लगे अंग्रेजी के अक्षर T (टी) के आकार की लकड़ी के साथ खड़ा करके दोनों पैरों के पंजों में तथा हाथों की हथेलियों में लोहे की मोटी कील (मेख) गाड़ दी। ईसा जी की मृत्यु असहनीय पीड़ा से हो गई।

मृत्यु से पहले हजरत ईसा जी ने उच्चे स्वर में कहा - हे मेरे प्रभु! आपने मुझे क्यों त्याग दिया? कुछ दिनों के बाद हजरत ईसा जी फिर दिखाई दिए। (पवित्र बाइबल मती 27 तथा 28/20 पृष्ठ 45 से 48)

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि यह ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) अपने अवतार को भी समय पर धोखा दे जाता है। पूर्ण परमात्मा ही भक्ति की आस्था बनाए रखने के लिए स्वयं प्रकट होता है। पूर्ण परमात्मा ने ही ईसा जी की मृत्यु के पश्चात् ईसा जी का रूप धारण करके प्रकट होकर ईसाईयों के विश्वास को प्रभु भक्ति पर दृढ़ रखा, नहीं तो ईसा जी के पूर्व चमत्कारों को देखते हुए ईसा जी का अंत देखकर कोई भी व्यक्ति भक्ति साधना नहीं करता, नास्तिक हो जाते। (प्रमाण पवित्र बाइबल में यूहन्ना ग्रन्थ अध्याय 16 श्लोक 4 से 15) ब्रह्म(काल) यही चाहता है। काल (ब्रह्म) पुण्यात्माओं को अपना अवतार (रसूल) बना कर भेजता है। फिर चमत्कारों द्वारा उसको भक्ति कमाई रहित करवा देता है। उसी में कुछ फरिश्तों (देवताओं) को भी प्रवेश करके कुछ चमत्कार फरिश्तों द्वारा उनकी पूर्व भक्ति धन से करवाता है। उनको भी शक्ति हीन कर देता है। इस प्रकार ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) के द्वारा भेजे नबियों (अवतारों) की महिमा हो जाती है। अनजान साधक उनसे प्रभावित होकर उसी साधना पर अडिग हो जाते हैं।

जब पूर्ण परमात्मा या उसका संदेशवाहक वास्तविक भक्ति ज्ञान व साधना समझाने की कोशिश करता है तो कोई नहीं सुनता तथा अविश्वास व्यक्त करते हैं। यह जाल काल प्रभु का है। जिसे केवल पूर्ण परमात्मा ही बताता है तथा सत्य भक्ति प्रदान करके आजीवन साधक की रक्षा करता है। सत्य भक्ति करके साधक पूर्ण मोक्ष को प्राप्त करता है।

अध्याय मोहम्मद बोध का सारांश (मुसलमान धर्म की जानकारी)

कबीर सागर में ''मोहम्मद बोध'' 14वां अध्याय पृष्ठ 6 पर है।

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से मुसलमान धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद को ज्ञान समझाने के बारे में प्रश्न किया कि हे बन्दी छोड़! क्या आप नबी मोहम्मद से भी मिले थे? उसने आपकी शरण ली या नहीं? यह जानने की मेरी इच्छा है। आप सबके मालिक हैं, जानीजान हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को मोहम्मद धर्म (मुसलमान धर्म) की जानकारी इस प्रकार दी :- (लेखक रामपाल दास के शब्दों में।)

कबीर परमेश्वर जी ने अपनी प्यारी आत्मा धर्मदास जी को मुसलमान धर्म की जानकारी बताई जो इस प्रकार है। {पाठकों से निवेदन है कि कबीर सागर से बहुत सा प्रकरण कबीर पंथियों ने निकाल रखा है। कारण यह रहा है कि वे उस विवरण को समझ नहीं सके। उसको अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार गलत मानकर निकाल दिया। मेरे पास एक बहुत पुराना कबीर सागर है। उसके आधार से तथा परमेश्वर कबीर जी ने अपने ज्ञान को संत गरीबदास जी को सन् 1727 (विक्रमी संवत् 1784) में प्रदान किया। संत गरीबदास जी उस समय 10 वर्ष के बालक थे। उनको कबीर परमेश्वर जी सत्यलोक लेकर गए। फिर वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् संत गरीबदास जी ने आँखों देखा वर्णन किया। फिर मैंने (रामपाल दास) ने सर्व धर्म ग्रन्थों का इस दृष्टिकोण से अध्ययन किया कि क्या यह प्रकरण पुरातन धर्मग्रन्थों में भी है। यदि पुराने धर्मग्रन्थों (पवित्र वेदों, पवित्र गीता, पवित्र पुराण, पवित्र कुरआन तथा पवित्र बाइबल जो तीन पुस्तकों का योग है - तौरत, जबूर, इंजिल) में पवित्र कबीर सागर वाला प्रकरण है तो संसार की भोली-भाली और विभिन्न पंथों में धर्म के नाम से बँटी जनता को एक सूत्र में बाँधा जा सकता है। अध्ययन से पता चला कि सर्व धर्मग्रन्थ जहाँ तक यानि जिस मंजिल तक का ज्ञान उनमें है, वह कबीर सागर से मिलता है। कबीर सागर में उन ग्रन्थों से आगे का ज्ञान भी है।

कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को बताया कि हे धर्मदास! मुसलमानों का मानना है कि बाबा आदम से

मनुष्यों की उत्पत्ति हुई है। यह इनका अधूरा ज्ञान है। आदम जी वाला जीव पूर्व जन्म में ऋषभ देव राजा था जिसको जैन धर्म का प्रवर्तक व प्रथम तीर्थकंर माना जाता है। मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) नबी मोहम्मद को यही समझाया था कि आप बाबा आदम को अपना प्रथम पुरूष मानते हो, उसी की संतान आप अपने को मानते हो। जिस समय बाबा आदम नहीं था। उस समय परमात्मा तो था। यह ज्ञान पवित्र बाइबल में उत्पत्ति ग्रन्थ में लिखा है। नबी मोहम्मद जी से पूर्व बाबा आदम की संतान में लाखों पैगम्बर हुए माने जाते हैं जिनमें से 1. दाऊद 2. मूसा 3. ईसा जी। दाऊद जी को जबूर किताब मिली, मूसा जी को तोरात तथा ईसा जी को इंजिल पुस्तक मिली। प्रत्येक को एक ही बार में उपरोक्त पुस्तकें मिली। नबी मोहम्मद जी को कुरआन शरीफ किताब मिली जो कई चरणों में कई प्रकार से प्राप्त हुई है।

जब किसी पंथ की शुरूआत होती है, किसी समुदाय के व्यक्ति द्वारा उसी समुदाय से होती है। कारण यह होता है कि परमात्मा किसी महापुरूष को इसी उद्देश्य से संसार में भेजता है कि वह मनुष्यों में फैली बुराई, कुरीतियों, शास्त्र विरूद्ध साधना को छुड़वाकर स्वच्छ तथा शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करने वाले भक्त तैयार करे। जिस कारण से उसको अपने ही समुदाय से शुरूआत करनी होती है। रूढ़िवादी तथा स्वार्थी पंथी गुरू उस सच्चे संत का जनता को भ्रमित करके बहुत विरोध करवाते हैं। उसका जीना हराम कर देते हैं। परंतु वह प्रभु का भेजा हुआ अंश होता है। इस संसार में दो शक्ति अपना-अपना कार्य कर रही हैं। एक काल ब्रह्म है जिसको ज्योति निरंजन भी कहते हैं। वेदांती उसको ब्रह्म कहते हैं और निराकार मानते हैं। मुसलमान उसी को बेचून (निराकार) अल्लाह कहते हैं। दूसरी शक्ति सत्य पुरूष है जिसको गीता में परम अक्षर पुरूष, सच्चिदानंद घन ब्रह्म, दिव्य परमपुरूष, तत् ब्रह्म कहा है। (गीता अध्याय 7 श्लोक 29, अध्याय 8 श्लोक 3, अध्याय 8 श्लोक 8, 9, 10)

काल ब्रह्म का राज्य इक्कीस ब्रह्माण्ड का क्षेत्र है जिसको काल लोक कहते हैं। काल ब्रह्म को एक लाख मानव शरीरधारी जीव खाने का श्राप लगा है। जिस कारण से यह अधूरा अध्यात्मिक ज्ञान तथा साथ में बुराई जैसे-शराब, माँस, तम्बाकू का सेवन करने तथा धाम-तीर्थ आदि पूजने का भी ज्ञान देता है। जिस कारण से साधक साधना करते हुए अन्य विषय-विकार तथा शास्त्र विरूद्ध साधना करके अपना जीवन व्यर्थ करते हैं और काल ब्रह्म के जाल में ही रह जाते हैं। काल ब्रह्म की यही कोशिश है। दूसरी शक्ति सत्य पुरुष है। असँख्य ब्रह्माण्डों में जितने भी प्राणी हैं, ये सब सत्य पुरूष जी की आत्माऐं हैं जो सत्यलोक में रहते थे। वहाँ से अपनी अल्पबुद्धि के कारण काल ब्रह्म के साथ यहाँ आ गए। वहाँ पर सत्यलोक में प्रत्येक जीव का अपना घर-परिवार सर्व सामान था। प्रत्येक को काल ब्रह्म के देवताओं से भी अधिक सुविधाऐं थी। कोई वृद्ध नहीं होता था, कोई मरता नहीं था। सृष्टि ऐसी ही है। यह पाँच तत्त्व से बनी है। वहाँ एक नूर तत्त्व से बनी सृष्टि है। यह मिट्टी से निर्मित जानो, वहाँ की सोने से बनी मानो। यह नाशवान है। वह अविनाशी है। सत्य पुरूष स्वयं कबीर जी हैं। उनके शरीर का नाम कबीर है। वेदों में कविर्देव कहते हैं। कुरआन में अल्लाह अकबर, अल्लाह कबीर कहते हैं। परमेश्वर कबीर जी चाहते हैं कि सर्व जीव मेरे ज्ञान को समझें और मेरे द्वारा बताई भक्ति साधना करें। सर्व बुराई त्यागकर निर्मल होकर सत्यलोक में चले जाएंगे। वहाँ इनको कोई कष्ट नहीं है। न मरण है, न वृद्ध अवस्था। सर्व खाद्य पदार्थ सदा उपलब्ध हैं। कोई डाकू-बदमाश, चोर आदि नहीं है। स्त्री-बच्चे, पुरुष सब ऐसी ही सृष्टि है। काल ब्रह्म चाहता है कि सर्व प्राणी मेरे जाल में फंसे रहें। जन्मते-मरते रहें। बुराई करके पापग्रस्त होकर जन्मते-मरते रहें। किसी को सत्यलोक तथा सत्य पुरूष का ज्ञान न हो। मेरे तक ज्ञान को अंतिम मानें। इसलिए काल ब्रह्म परमेश्वर कबीर जी की आत्माओं में से अच्छी आत्मा को अपना पैगम्बर यानि संदेशवाहक ज्ञान देने के लिए भक्ति दूत बनाकर भेजता है। अपने काल जाल में रखने वाला ज्ञान देता है। उसी ने बाबा आदम, हजरत दाऊद, हजरत मूसा, हजरत ईसा, हजरत मोहम्मद को तथा अवतारों राम, कृष्ण, आदि शंकराचार्य, ऋषि-मुनियों द्वारा अपना प्रचार करवा रखा है। सत्य पुरूष प्रत्येक युग के प्रारम्भ में स्वयं आते हैं। अपनी लीला करते हैं। अपना यथार्थ ज्ञान स्वयं प्रचार करते हैं। उसकी पुस्तकें बन जाती हैं। फिर परमेश्वर अपना पैगम्बर यानि भक्ति प्रचारक दूत भेजते हैं। सत्य पुरूष के पैगम्बर से पहले काल ब्रह्म अपने पैगम्बर भेज देता है। उनके द्वारा जनता को असत्य ज्ञान तथा अन्य बुराइयों पर आरूढ़ कर देता है। सर्व मानव समाज अपनी-अपनी साधना तथा अध्यात्म ज्ञान तथा परंपरा को सर्वश्रेष्ठ मानकर अडिग हो जाता है।

जब सत्यपुरूष आप आते हैं या अपना अंश भेजते हैं, तब सब मानव उनके द्वारा बताए गए सत्य ज्ञान को असत्य मानकर उनका घोर विरोध करते हैं। हे धर्मदास! आप यह प्रत्यक्ष देख भी रहे हो। आप भी तो काल के ज्ञान तथा साधना के ऊपर अडिग थे। ऐसे ही अनेकों श्रद्धालु काल प्रभु को दयाल, कृपावान प्रभु मानकर भक्ति कर रहे होते हैं। काल ब्रह्म भी परमात्मा की अच्छी-सच्ची निष्ठावान आत्माओं को अपना पैगम्बर बनाता है। बाबा आदम की संतान में 1 लाख 80 हजार पैगम्बर, हिन्दू धर्म के 88 हजार ऋषि तथा अन्य प्रचारक, ये अच्छी तथा सच्ची निष्ठा वाले थे जिनको काल ब्रह्म ने अपना प्रचारक बनाया। ऋषियों ने पवित्र वेदों, पवित्र श्रीमद्भगवत गीता तथा पुराणों के आधार से स्वयं भी साधना की तथा अपने अनुयाइयों को भी वही साधना करने को कहा। वेदों तथा गीता में ज्ञान तो श्रेष्ठ है, परंतु अधूरा है। पुराण जो सँख्या में 18 हैं, ये ऋषियों का अपना अनुभव तथा कुछ-कुछ वेद ज्ञान है तथा देवी-देवताओं की जीवनी लिखी है। चारों वेदों का ज्ञान काल ब्रह्म ने दिया। चारों वेदों का सारांश अर्थात् संक्षिप्त रूप श्रीमद्भवगत गीता है। चारों वेदों का ज्ञान काल ब्रह्म ने सर्व प्रथम दिया था। उसके पश्चात् उसी काल ब्रह्म ने चार किताबों (जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन शरीफ) का ज्ञान दिया है। भक्ति का मार्ग वेदों तथा गीता में बताया गया है। उसके पश्चात् दाऊद जी को जबूर किताब वाला ज्ञान दिया। इसमें सृष्टि की उत्पत्ति का आंशिक ज्ञान दिया। इसके पश्चात् मूसा जी को तोरात पुस्तक वाला ज्ञान दिया तथा इसके पश्चात् ईसा जी को इंजिल पुस्तक वाला ज्ञान दिया। फिर बाद में कुरआन शरीफ वाला ज्ञान मोहम्मद जी को दिया। वेदों में भक्ति तथा भगवान का ज्ञान बताया है। वह ज्ञान अन्य पुस्तकों जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन शरीफ में दोहराना उचित न जानकर सामान्य ज्ञान दिया है। इनमें कुछ वेद ज्ञान है तथा कुरआन शरीफ में लगभग 40 प्रतिशत ज्ञान बाइबल वाला है। (बाइबल ग्रन्थ में तीन पुस्तक इकट्ठी की गई हैं, जबूर, तोरात तथा इंजिल) मूसा जी के अनुयाई यहूदी कहलाते हैं। ईसा जी के अनुयाई ईसाई कहे जाते हैं। मोहम्मद जी के अनुयाई मुसलमान कहे जाते हैं। ये सब बाबा आदम को अपना प्रथम पुरूष अर्थात् सब आदमियों का पिता मानते हैं। ये अब मानते हैं कि जब तक सृष्टि चलेगी, तब तक सर्व मानव मरते रहेंगे। उनको कब्र में दबाते चलो। जिस समय कयामत (प्रलय) आएगी, उस समय सब व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) कब्रों से निकालकर मुर्दे जीवित किए जाएंगे। उनके कर्मों का हिसाब होगा जिन्होंने चारों कतेबों (पुस्तकों) में लिखे अल्लाह के आदेशानुसार कर्म किए हैं। वे जन्नत (स्वर्ग) में रहेंगे। जिन्होंने चारों पुस्तकों (जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन शरीफ) के आदेश का पालन नहीं किया। वे सदा दोजख (नरक) की आग में जलेंगे। इसके पश्चात् यहाँ की सृष्टि सदा के लिए नष्ट हो जाएगी। मुसलमानों का मानना है कि कयामत से पहले केवल निराकार प्रभु था। वर्तमान में जन्नत में कोई नहीं है। न ही दोजख में कोई है। मुसलमान नहीं मानते कि पुनर्जन्म होता है। वे केवल एक बार जन्म, फिर मरण, उसके पश्चात् कब्र में, फिर जब सृष्टि का विनाश होगा, तब कब्र से निकालकर कर्मानुसार स्वर्ग तथा नरक, फिर Full stop यानि सृष्टि क्रम का पूर्ण विराम रहेगा। यदि उपरोक्त बात सत्य है तो हजरत मुहम्मद जी ने जन्नत में बाबा आदम, मूसा, ईसा, दाऊद आदि की मण्डली को देखा। उनको भी कब्र में रहना चाहिए था। इससे आप मुसलमानों का विधान गलत सिद्ध हुआ।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा कि हे धर्मदास! यह विचार तथा ज्ञान गलत है। वास्तविकता यह है कि जन्म-मरण, पुनर्जन्म उस समय तक चलता रहता है, जब तक जीव मेरी (कबीर जी की) शरण में नहीं आता। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मोहम्मद की जीवनी इस प्रकार है। ईसा मसीह के लगभग 600 वर्ष पश्चात् हजरत मोहम्मद जी का जन्म यहूदी समुदाय में हुआ। उस समय आध्यात्मिक अज्ञानता पूरी तरफ फैल चुकी थी। उस समुदाय के सब व्यक्ति मूर्ति पूजक थे। मोहम्मद जी के पिता का नाम अबदुल्ला था। दादा जी का नाम अब्दुल मुत्तलिब था। मोहम्मद का जन्म एक बिल्ला रहमान नामक फकीर (साधु) के सूक्ष्म मिलन से रहे गर्भ से हुआ था। इसको मोहम्मद की माता ने स्वप्न दोष माना था। {इसी प्रकार ईसा जी की माता मरियम को भी गर्भ एक फरिश्ते से रहा था। मरियम ने भी इसे स्वप्न दोष माना था, परंतु ईसा के पिता युसुफ ने इसे गलत कर्म मानकर मरियम को तलाक देना चाहा था। उसी समय एक फरिश्ता (देवता) प्रकट हुआ। उसने कहा कि मरियम को गर्भ मेरे से रहा है। इसको कुछ पता नहीं है। यह प्रभु की ओर से भेजा गया नबी है। संसार को भक्ति संदेश देने संसार में जन्म लेगा। युसुफ ने देवता की बात मानकर मरियम को आदर

के साथ रखा। महाभारत में भी प्रमाण है कि धृतराष्ट्र तथा पाण्डव दो भाई थे। राजा शान्तनु के पुत्र थे। पाण्डव छोटा था। वह रोगी था, संतानोत्पत्ति में असमर्थ था। उसकी दो पत्नियाँ थी। एक कुंती व दूसरी मादरी। कुंती ने तीन पुत्रों को जन्म दिया जो तीन फरिश्तों (देवताओं) से गर्भ रहा था। युधिष्ठर का जन्म धर्मराज द्वारा कुंती से मिलन से हुआ था। अर्जुन का जन्म कुंती से इन्द्र देवता के भोग-विलास से हुआ था। भीम का जन्म पवन देवता द्वारा कुंती से मिलन करने से हुआ था। नकुल का जन्म स्रत देवता से मादरी से मिलन से तथा सहदेव का जन्म नासत्य देवता से मादरी से मिलन से हुआ था। पुराणों में कथा है कि एक समय सूर्य देव की पत्नी घर छोड़कर जंगल में चली गई। कारण यह था कि सूर्य देव के अधिक भोग-विलास (Sex) से तंग आकर अपनी नौकरानी को अपने जैसे स्वरूप का आशीर्वाद दिया और उससे कहा कि तू मेरा भेद मत देना। मैं अपने पिता विश्वकर्मा के घर जाती हूँ। ऐसा कहकर उषा चली गई। नौकरानी का स्वरूप उषा जैसा हो गया। जब सूर्य देव को पता चला तो वह विश्वकर्मा के घर गए। विश्वकर्मा ने अपनी पुत्री को वापिस घर जाने पर जोर दिया तो उषा जंगल में घोड़ी का रूप बनाकर तप करने लगी। उसने सोचा था कि यदि स्त्री रूप में तप करूँगी तो कोई इज्जत का दुश्मन हो जाएगा। सूर्य को पता चला कि उषा तो यहाँ से भी चली गई है तो ध्यान से दिव्य दृष्टि से देखा तो उषा घोड़ी रूप में तप कर रही है। सूर्य देव ने घोड़े का रूप धारण किया और उषा से भोग करने की तड़फ हुई। घोड़ी रूप में उषा ने घोड़े को गलत नीयत से अपनी ओर आता देख अपने पृष्ठ भाग (इन्द्री) को बचाने के लिए घोड़े की तरफ मुख करके साथ-साथ घूमती रही। वासनावश सूर्य रूपी घोड़ा मुख में ही भोग करने लगा। उसकी बीज शक्ति पृथ्वी के ऊपर गिर गई। उससे दो लड़के उत्पन्न हुए। वे अश्वनी (घोड़ी) कुमार कहलाए। उनका नाम स्रत तथा नासत्य रखा। वे अश्वनी कुमार देवता कहे जाते हैं।} अबदुल्ला जी अपनी पत्नी को ससुराल से लेकर आए।

{**सूक्ष्मवेद में लिखा है कि :-**

बिलैमान विस्तार बिलाका, नौज उदर घर संगम ताका।
जाके भोग मुहम्मद आया, नौज उदर घर मुहम्मद जाया।।

कुछ महीने बाद अबदुल्ला जी कुछ व्यापारियों के साथ रोजगार के लिए गए तो बीमार होकर मृत्यु को प्राप्त हो गए। उस समय मोहम्मद जी माता के गर्भ में थे। बाद में मोहम्मद जी का जन्म हुआ। छः वर्ष के हुए तो माता जी अपने पति की कब्र देखने के लिए गाँव के कुछ स्त्री-पुरूषों के साथ गई थी तो उनकी मृत्यु भी रास्ते में हो गई। नबी मोहम्मद अनाथ हो गए। दादा पालन-पोषण करने लगा। जब आठ वर्ष के हुए तो दादा की भी मृत्यु हो गई। पूर्ण रूप से अनाथ हो गए। जैसे-तैसे 25 वर्ष के हुए, तब एक 40 वर्ष की खदीजा नामक विधवा से विवाह हुआ। {खदीजा का दो बार बड़े धनवान घरानों में विवाह हुआ था। दोनों की मृत्यु हो जाने के कारण उनकी सब संपत्ति खदीजा के पास ही थी। वह बहुत रईस थी।}

खदीजा से मोहम्मद जी के तीन पुत्र (कासिम, तयब, ताहिर) तथा चार पुत्री हुई। जिस समय मोहम्मद जी 40 वर्ष के हुए तो उनको जिब्राइल नामक फरिश्ता मिला और कुरआन शरीफ का ज्ञान देना प्रारम्भ किया। वे नबी बने। मुसलमानों का मानना है कि हजरत मोहम्मद जी को कुरआन शरीफ का ज्ञान सीधा बेचून (निराकार) अल्लाह की ओर से भेजा गया है। उसमें बिना किसी मिलावट किए जिब्राइल फरिश्ते ने मोहम्मद जी को बताया है। कभी-कभी फरिश्ता मोहम्मद के शरीर में प्रवेश करके बोलता था। मोहम्मद जी चाद्दर मुख पर ढ़ककर लेट जाते थे। ऊपर से अल्लाह के पास से वयह (संदेश) आती थी। उस ज्ञान को मोहम्मद जी मुख ढ़के-ढ़के बोलते थे, लिखी जाती थी। इस तरह आने वाला संदेश बहुत दुःखदायी होता था। मोहम्मद जी का सारा शरीर कांपता था। वास्तव में फरिश्ता अंदर प्रवेश करके बोलता था। कभी-कभी काल ब्रह्म भी स्वयं प्रवेश करके बोलता था। (काल ब्रह्म ने कृष्ण के शरीर में प्रवेश करके गीता वाला ज्ञान बोला था।) एक दिन हजरत मोहम्मद जी ने अपनी ऊपर (स्वर्ग) की यात्रा का वर्णन बताया। एक गधे जैसा जानवर (जिसे बुराक नाम दिया) लेकर जिब्राइल देवता आया और मोहम्मद जी को बैठाकर ऊपर के सातों आसमानों की सैर कराई। ऊपर जाकर एक मैराज यानि सीढ़ी ऊपर से नीचे की ओर खुली, उसके ऊपर बुराक चढ़ा। मोहम्मद जी भी उस पर बैठे थे। जिब्राइल नीचे रहा। फिर एक पक्षी आया। उस पर बैठकर मोहम्मद जी अल्लाह के पास गए। पक्षी भी चला गया। मोहम्मद जी

ने अल्लाह से सीधी वार्ता की। अल्लाह पर्दे के पीछे से बोला और 50 नमाज प्रतिदिन करने को कहा। फिर मूसा जी के कहने से वापिस जाकर 5 नमाज करने की आज्ञा अल्लाह से लेकर आए जो वर्तमान में मुसलमान करते हैं। हजरत मोहम्मद जी ने बताया कि मैंने जन्नत (स्वर्ग) में सब आदमियों के पिता बाबा आदम जी को देखा व उनके दांई ओर स्वर्ग था। स्वर्ग में उसकी नेक संतान थी जिन्होंने अल्लाह के आदेशानुसार भक्ति की थी। वे स्वर्ग (जन्नत) में सुखी थे। बाबा आदम के बांई ओर दोजख (नरक) था। उसमें बाबा आदम की निकम्मी संतान कष्ट भोग रही थी जिन्होंने अल्लाह की कतेबों के आदेशानुसार भक्ति न करके जीवन व्यर्थ किया था। हजरत मोहम्मद जी ने बताया कि बाबा आदम बांई ओर नरक में अपनी संतान को नरक में कष्ट उठाते देखकर रो रहे थे और दांई ओर स्वर्ग में नेक संतान को देखकर हँस रहे थे। जिब्राइल देवता ने बताया कि ये बाबा आदम हैं। मोहम्मद साहब ने बताया कि ऊपर के लोकों में मुझे हजरत दाऊद, हजरत मूसा तथा हजरत ईसा जी तथा अन्य नबियों की जमात (मण्डली) मिली। मैंने उनको नमाज पढ़ाई। फिर नीचे लाकर बुराक छोड़कर चला गया।

हजरत मुहम्मद जी के इस आँखों देखे प्रकरण को मुसलमान सत्य मानते हैं। इसलिए आपका वह सिद्धांत गलत सिद्ध हुआ कि मृत्यु के पश्चात् प्रलय (कयामत) तक बाबा आदम, हजरत दाऊद, मूसा, ईसा आदि-आदि को जन्नत की बजाय कब्रों में होना चाहिए था जिनको हजरत मुहम्मद जी ने जन्नत में देखा तथा बाबा आदम की संतान भी कब्रों में रहनी चाहिए थी जो ऊपर स्वर्ग (जन्नत) तथा नरक (दोजख) में हजरत मुहम्मद जी ने देखी थी। आपका सिद्धांत गलत है। हजरत मोहम्मद जी को खदीजा जी से तीन पुत्र तथा चार बेटी प्राप्त हुई थी। तीनों बेटे मोहम्मद जी की आँखों के सामने अल्लाह को प्यारे हुए।

कादिर (समर्थ) अल्लाह कबीर

{अल्लाह कबीर कहा करते कि हिन्दू तथा मुसलमान, यहूदी तथा ईसाई सब एक प्रभु के बच्चे हो। तुम्हारे को काल शैतान ने भ्रमित करके बाँट रखा है।}

एक बार दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोधी मुसलमान को जलन का रोग हो गया। जलन का रोग ऐसा होता है जैसे किसी का आग में हाथ जल जाए उसमें पीड़ा बहुत होती है। जलन के रोग में कहीं से शरीर जला दिखाई नहीं देता है परन्तु पीड़ा अत्यधिक होती है। उसको जलन का रोग कहते हैं। जब प्राणी के पाप बढ़ जाते हैं तो औषधि भी बेअसर हो जाती हैं। दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लौधी के साथ भी वही हुआ। सभी प्रकार की औषधी सेवन की। बड़े-बड़े वैद्य बुला लिए और मुँह बोला इनाम रख दिया कि मुझे ठीक कर दो, जो माँगोगे वही दूँगा। दुःख में व्यक्ति पता नहीं क्या संकल्प कर लेता है ? सर्व उपाय निष्फल हुए। उसके बाद अपने धार्मिक काजी, मुल्ला, संतों आदि सबसे अपना आध्यात्मिक इलाज करवाया। परन्तु सब असफल रहा। {जब हम दुःखी हो जाते हैं तो हिन्दू और मुसलमान नहीं रहते। फिर तो कहीं पर रोग कट जाए, वही पर चले जाते हैं। वैसे तो हिन्दू कहते हैं कि मुसलमान बुरे और मुसलमान कहते हैं कि हिन्दू बुरे और बीमारी हो जाए तो फिर हिन्दू व मुसलमान नहीं देखते। जब कष्ट आए तब तो कोई बुरा नहीं। जो मुसलमान बुरे हैं, वे बुरे हैं और जो हिन्दू बुरे हैं, वे बुरे भी हैं और दोनों में अच्छे भी हैं। हर मज़हब में अच्छे और बुरे व्यक्ति होते हैं। लेकिन हम जीव हैं। हमारी जीव जाति है हमारा धर्म मानव है-परमात्मा को पाना उद्देश्य है।} हिन्दू वैद्य तथा आध्यात्मिक संत भी बुलाए, स्वयं भी उनसे जाकर मिला और सबसे आशीर्वाद व जंत्र-मंत्र करवाऐं परन्तु सर्व चेष्टा निष्फल रही। किसी ने बताया कि काशी शहर में एक कबीर नाम का महापुरूष है। यदि वह कृपा कर दे तो आपका दुःख निवारण अवश्य हो जाएगा।

जब बादशाह सिकंदर ने सुना कि एक काशी के अन्दर महापुरूष रहता है तो उसको कुछ-कुछ याद आया कि वह तो नहीं है जिसने गाय को भी जीवित कर दिया था। हजारों अंगरक्षकों सहित दिल्ली से काशी के लिए चल पड़ा। बीरसिंह बघेला काशी नरेश पहले ही कबीर साहेब की महिमा और ज्ञान सुनकर कबीर साहेब के शिष्य हो चुके थे और पूर्ण रूप से अपने गुरुदेव में आस्था रखते थे। उनको कबीर साहेब की समर्थता का ज्ञान था क्योंकि कबीर परमेश्वर वहाँ पर बहुत लीलाएँ कर चुके थे।

जब सिकंदर लोधी बनारस (काशी) गया तथा बीरसिंह से कहा बीरसिंह मैं बहुत दुःखी हो गया हूँ। अब

तो मरना ही शेष रह गया है। यहाँ काशी में कोई कबीर नाम का संत है? आप तो जानते होंगे कि वह कैसा है? इतनी बात सिकंदर बादशाह के मुख से सुनी थी। काशी नरेश बीरसिंह की आँखों में पानी भर आया और कहा कि अब आप ठीक स्थान पर आ गए हो। अब आपके दुःख का अंत हो जाएगा। बादशाह सिकंदर ने पूछा कि ऐसी क्या बात है? बीरसिंह ने कहा कि वह कबीर जी स्वयं भगवान आए हुए हैं। परमेश्वर स्वरूप हैं। यदि उनकी दयादृष्टि हो गई तो आपका रोग ठीक हो जाएगा। राजा सिकंदर ने कहा कि जल्दी बुला दो। काशी नरेश बीरदेवसिंह बघेल ने विनम्रता से प्रार्थना की कि आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, आदेश भिजवा देता हूँ। लेकिन ऐसा सुना है कि संतो को बुलाया नहीं करते। यदि वे आ भी गए और रजा नहीं बख्शी तो भी आने का कोई लाभ नहीं। बाकी आपकी इच्छा। सिकंदर ने कहा कि ठीक है मैं स्वयं ही चलता हूँ। इतनी दूर आ गया हूँ वहाँ पर भी अवश्य चलूँगा।

सिकंदर लोधी बादशाह का असाध्य रोग ठीक करना

शाम का समय हो गया था। बीरसिंह को पता था कि इस समय साहेब कबीर जी अपने औपचारिक गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में ही होते हैं। यह समय परमेश्वर कबीर जी का वहाँ मिलने का है। बीरदेव सिंह बघेल काशी नरेश तथा सिकंदर लोधी दिल्ली के बादशाह दोनों, स्वामी रामानन्द जी के आश्रम के सामने खड़े हो गए। वहाँ जाकर पता चला कि कबीर साहेब अभी नहीं आए हैं, आने ही वाले हैं। बीरसिंह अन्दर नहीं गए। बाहर सेवक खड़ा था उससे ही पूछा। सिकंदर ने कहा कि ''तब तक आश्रम में विश्राम कर लेते हैं।'' राजा बीरसिंह ने स्वामी रामानन्द जी के द्वारपाल सेवक से कहा कि स्वामी रामानन्द जी से प्रार्थना करो कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आपके दर्शन भी करना चाहते हैं और साहेब कबीर का इन्तजार भी आपके आश्रम में ही करना चाहते है। सेवक ने अन्दर जाकर रामानन्द जी को बताया कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आए हैं। रामानन्द जी मुसलमानों से घृणा करते थे। रामानन्द जी ने कहा कि मैं इन मलेच्छों की शक्ल भी नहीं देखता। कह दो कि बाहर बैठ जाएगा। जब सिकंदर लोधी ने यह सुना तो क्रोध में भरकर (क्योंकि राजा में अहंकार बहुत होता है और वह दिल्ली का सम्राट) कहा कि यह दो कोड़ी का महात्मा दिल्ली के बादशाह का अनादर कर सकता है तो साधारण मुसलमान के साथ यह कैसा व्यवहार करता होगा? इसको मज़ा चखा दूँ। स्वामी रामानन्द जी अलग आसन पर बैठे थे। सिकंदर लोधी ने जाकर रामानन्द जी की गर्दन तलवार से काट दी। वापिस चल पड़ा और फिर उसको याद आया कि मैं जिस कार्य के लिए आया था, वह काम अब पूरा नहीं होगा। कहा कि बीर सिंह देख! मैं क्या जुल्म कर बैठा? मेरे बहुत बुरे दिन हैं। चाहता हूँ अच्छा करना और होता है बुरा। कबीर साहेब के गुरुदेव की हत्या कर दी। अब वे कभी भी मेरे ऊपर दयादृष्टि नहीं करेंगे। मुझे तो यह दुःख भोग कर ही मरना पड़ेगा। मैं बहुत पापी जीव हूँ। यह कहता हुआ आश्रम से बाहर की ओर चल पड़ा। बीरसिंह अपने बादशाह के आगे क्या बोलता।

ज्यों ही आश्रम से बाहर आए, कबीर साहेब आते दिखाई दिए। बीर सिंह ने कहा कि हे राजन! मेरे गुरुदेव कबीर साहेब आ गए। ज्यों ही कबीर साहेब थोड़ी दूर रह गए बीरसिंह ने जमीन पर लेटकर उनको दण्डवत् प्रणाम किया। सिकंदर बहुत घबराया हुआ था। {अगर उसने यह जुल्म नहीं किया होता तो वह दण्डवत् नहीं करता और दण्डवत् नहीं करता तो साहेब उस पर रजा भी नहीं बख्श पाते। क्योंकि यह नियम होता है।

अति आधीन दीन हो प्राणी, ताते कहिए ये अकथ कहानी।
उच्चे पात्र जल ना जाई, ताते नीचा हुजै भाई।
आधीनी के पास हैं पूर्ण ब्रह्म दयाल। मान बड़ाई मारिए बे अदबी सिर काल।।

कबीर परमेश्वर ने यहाँ पर एक तीर से दो शिकार किए। स्वामी रामानंद जी में धर्म भेद-भाव की भावना शेष थी, वह भी निकालनी थी। रामानंद जी मुसलमानों को हिन्दुओं से अभी भी भिन्न तथा हेय मानते थे। सिकंदर में अहंकार की भावना थी। यदि वह नम्र नहीं होता तो कबीर साहेब कृपा नहीं करते तथा सिकंदर स्वस्थ नहीं होता} बीरसिंह को दंडवत करते देखकर तथा डरते हुए सिकंदर लोधी ने भी दण्डवत् प्रणाम किया। {मुसलमान कहते हैं कि हमारा सिर केवल अल्लाह के आगे झुकता है। अन्य के सामने मुसलमान का सिर नहीं झुकेगा। सामने

अल्लाह अकबर खड़ा था। सिर अपने आप झुक गया।} कबीर परमेश्वर जी ने दोनों के सिर पर हाथ रखा और कहा कि दो-दो नरेश आज मुझ गरीब के पास कैसे आए हैं? मुझ गरीब को कैसे दर्शन दिए? परमेश्वर कबीर जी ने अपना हाथ उठाया भी नहीं था कि सिकंदर का जलन का रोग समाप्त हो गया। सिकंदर लोधी की आँखों में पानी आ गया। (संत के सामने मन भाग जाता है और आत्मा ऊपर आ जाती है। क्योंकि परमात्मा आत्मा का साथी है। ''अंतर्यामी एक तू आत्म के आधार।'' आत्मा का आधार कबीर भगवान है।) सिकंदर लोधी ने पैर पकड़कर छोड़े नहीं और रोता ही रहा। जानीजान होते हुए भी कबीर साहेब ने सिकन्दर लोधी दिल्ली के बादशाह से पूछा क्या बात है?। सिकंदर ने कहा कि अल्लाह की जात! मैंने घोर अपराध कर दिया। आप मुझे क्षमा नहीं कर सकते। जिस काम के लिए मैं आया था वह असाध्य रोग तो आपके आशीर्वाद मात्र से ठीक हो गया। इस पापी को क्षमा कर दो। कबीर साहेब ने कहा क्षमा कर दिया। यह तो बता कि क्या हुआ? सिकंदर ने कहा कि आप क्षमा कर नहीं सकते। मैंने ऐसा पाप किया है। कबीर साहेब ने कहा कि क्षमा कर दिया। सिकंदर ने फिर कहा कि सच में माफ कर दिया? कबीर साहेब ने कहा कि हाँ क्षमा कर दिया। अब बता क्या कष्ट है? सिकंदर ने कहा कि दाता मुझ पापी ने गुस्से में आकर आपके गुरुदेव का कत्ल कर दिया और फिर सारी कहानी बताई। कबीर साहेब बोले कोई बात नहीं। जो हुआ प्रभु इच्छा से ही हुआ है आप स्वामी रामानन्द जी का अन्तिम संस्कार करवा कर जाना नहीं तो आप निंदा के पात्र बनोगे। परमेश्वर कबीर साहेब जी नाराज नहीं हुए। सिकंदर लोधी ने बीरसिंह के मुख की ओर देखा और कहा कि बीरसिंह यह तो वास्तव में अल्लाह है। देखिए मैंने इनके गुरुदेव का सिर काट दिया और कबीर जी को क्रोध भी नहीं आया। बीरसिंह चुप रहा और साथ-साथ हो लिया और मन ही मन में सोचता है कि अभी क्या है, अभी तो और देखना। यह तो शुरूआत है।

स्वामी रामानन्द जी को जीवित करना

परमेश्वर कबीर जी ने अन्दर जाकर देखा रामानंद जी का धड़ कहीं पर और सिर कहीं पर पड़ा था। शरीर पर चादर डाल रखी थी। कबीर साहेब ने अपने गुरुदेव के मृत शरीर को दण्डवत् प्रणाम किया और चरण छुए तथा कहा कि गुरुदेव उठो। दिल्ली के बादशाह आपके दर्शनार्थ आए हैं। एक बार उठना। दूसरी बार ही कहा था, सिर अपने आप उठकर धड़ पर लग गया और रामानन्द जी जीवित हो गए "बोलो सतगुरु देव की जय!"

सर्व मनुष्य एक प्रभु के बच्चे हैं, जो दो मानता है, वह अज्ञानी है

रामानंद जी के शरीर से आधा खून और आधा दूध निकला हुआ था। जब साहेब कबीर से स्वामी रामानन्द जी ने कारण पूछा, हे कबीर प्रभु! मेरे शरीर से आधा रक्त और आधा दूध कैसे निकला है? कबीर साहेब ने बताया कि स्वामी जी आपके अन्दर यह थोड़ी-सी कसर और रह रही है कि अभी तक आप हिन्दू और मुसलमान को दो समझते हो। इसलिए आधा खून और आधा दूध निकला है। आप अन्य जाति वालों को अपना साथी समझ चुके हो। परंतु हिन्दू तथा मुसलमान एक ही परमेश्वर के बच्चे हैं। जीव सभी एक हैं। आप तो जानीजान हो। आप तो लीला कर रहे हो अर्थात् गोल-मोल बात करके सब समझा गए।

कबीर–अलख इलाही एक है, नाम धराया दोय। कहै कबीर दो नाम सुनि, भरम परो मति कोय।।1।।
कबीर–राम रहीमा एक है, नाम धराया दोय। कहै कबीर दो नाम सुनि, भरम परो मति कोय।।2।।
कबीर–कृष्ण करीमा एक है, नाम धराया दोय। कहै कबीर दो नाम सुनि, भरम परो मति कोय।।3।।
कबीर–काशी काबा एक है, एकै राम रहीम। मैदा एक पकवान बहु, बैठि कबीरा जीम।।4।।
कबीर–एक वस्तु के नाम बहु, लीजै वस्तु पहिचान। नाम पक्ष नहीं कीजिये, सार तत्व ले जान।।5।।
कबीर–सब काहूका लीजिये, सांचा शब्द निहार। पक्षपात ना कीजिये, कहै कबीर विचार।।6।।
कबीर–राम कबीरा एक है, दूजा कबहू ना होय। अंतर टाटी कपट की, तातै दीखे दोय।।7।।
कबीर–राम कबीर एक है, कहन सुनन को दोय। दो करि सोई जानई, सतगुरु मिला न होय।।8।।

रामानंद जी ने सिकंदर को सीने से लगाया तथा उसके बाद हिन्दू तथा मुसलमान को तथा सर्व जाति व धर्मों के व्यक्तियों को प्रभु के बच्चे जानकर प्यार देने लगे तथा अपने औपचारिक शिष्य वास्तव में परमेश्वर कबीर साहेब जी का धन्यवाद किया कि आपने मेरा अज्ञान पूर्ण रूप से दूर कर दिया। हम एक पिता प्रभु की संतान हैं,

मुझे दृढ़ विश्वास हो गया। {दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के साथ उनका धार्मिक गुरु शेखतकी भी बनारस गया था। वह रैस्ट हाऊस (विश्राम गृह) में ही रूका था। क्योंकि शेखतकी हिन्दू संतों से बहुत ईर्ष्या करता था तथा उन्हें व उनके शिष्यों को काफिर कहता था। इसलिए स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में जाने से इंकार कर दिया था। राजा सिकंदर लोधी के साथ स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में नहीं गया था।}

शेखतकी पीर ने अल्लाह को नहीं पहचाना :- भारत के सम्राट सिकंदर ने विश्राम गृह में आकर परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा अपने असाध्य रोग का निवारण केवल आशीर्वाद मात्र से करने तथा स्वामी रामानन्द जी को पुनर् जीवित करने की अद्भुत करिश्मे की बात खुशी के साथ अपने धार्मिक पीर शेखतकी को बताई तथा कहा कि पीर जी मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मुझे कोई पीड़ा किसी अंग में नहीं है। {शाम का समय था। प्रभु कबीर साहेब जी सुबह आने की कहकर अपनी कुटिया पर चले गये थे।}

शेखतकी ने बादशाह के मुख से अन्य पीर की भूरि-भूरि प्रशंसा सुनी तो अंदर ही अंदर जल-भुन गया। रात भर करवटें बदलता रहा। परमेश्वर कबीर साहेब जी को नीचा दिखाने की योजना बनाता रहा।

पवित्र मुसलमान धर्म का संक्षिप्त परिचय

अगले दिन पूज्य कबीर परमेश्वर राज दरबार में पहुँचे। काशी नरेश बीरदेव सिंह बघेल तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने दण्डवत् प्रणाम (जमीन पर लम्बा लेटकर) किया तथा कविर्देव को आसन पर बैठाया तथा दोनों राजा स्वयं नीचे जमीन पर बिछे गलीचे पर विराजमान हो गए। बादशाह सिकंदर ने प्रार्थना की कि हे परवरदीगार ! मेरा रोग न तो हिन्दू संतों से शांत हुआ तथा न ही मुसलमान पीरों, काजी तथा मुल्लाओं से। क्या कारण था दीन दयाल आपके आशीर्वाद मात्र से ही मेरा जान लेवा रोग छू मंत्र हो गया। कल रात्री में मैंने पेट भर कर खाना खाया। वर्षों से यह कष्ट मुझे सता रहा था। आपकी कृप्या से मैं स्वस्थ हो गया हूँ।

परमेश्वर कबीर साहेब जी ने बताया कि राजन् पूर्ण परमात्मा अल्लाहु अकबर (अल्लाहु कबीरू) ही सर्व पाप नाश (क्षमा) कर सकता है। अन्य प्रभु तो केवल किए कर्म का फल ही दे सकते हैं। जैसे प्राणी को दुःख तो पाप से होता है तथा सुख पुण्य से। आप को पाप कर्म के कारण कष्ट था। यह आपके प्रारब्ध में लिखा था। यह किसी भी अन्य देव या भगवान से ठीक नहीं हो सकता था क्योंकि पाप नाशक (क्षमा करने वाले) पूर्ण परमात्मा (अल्लाहु कबीरू) के वास्तविक ज्ञान व भक्ति विधि को न तो हिन्दू संत, गुरुजन जानते हैं तथा न ही मुसलमान पीर, काजी तथा मुल्ला ही परिचित हैं। उस सर्व शक्तिमान परमेश्वर की पूजा विधि तथा पूर्ण ज्ञान केवल यह दास (कबीर परमेश्वर) जानता है। न श्री राम तथा श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी जानते तथा न ही श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी, न ब्रह्म (जिसे आप निराकार प्रभु कहते हो) जानता। न हजरत मुहम्मद जानता था, न ही अन्य मुसलमान पीर व काजी तथा मुल्ला ही जानते हैं। उस कादिर अल्लाह की इबादत (पूजा) के बिना कोई भी भाग्य में लिखा कष्ट समाप्त नहीं हो सकता। यही कारण है कि कोई भी हिन्दू या मुसलमान पीर आपको स्वस्थ नहीं कर सका।

शेखतकी नामक मुसलमान पीर से वार्ता

परमेश्वर कबीर साहेब जी के मुख कमल से उपरोक्त वचन सुनकर शेखतकी व्यंगात्मक तरीके से बोला कि तू ही जानता है सारे ज्ञान को। हमारे हजरत मुहम्मद जी को भी अज्ञानी कह रहा है। बीच बचाव करते हुए बीरदेव सिंह बघेल काशी नरेश ने कहा पीर जी इसमें नाराज होने की कौन-सी बात है, प्रेम पूर्वक शंका का समाधान करवाओ। काशी नरेश जानता था कि सर्व ज्ञान सम्पन्न पूज्य कबीर साहेब जी ज्ञान गोष्ठी करके पीर जी का भ्रम निवारण करना चाहते हैं। काशी नरेश ने शेखतकी से कहा कबीर जी ने किस कारण से हजरत मुहम्मद जी को पूर्ण ज्ञान से वंचित कहा है आप कारण पूछो। शेखतकी ने कहा प्रश्न ही तो पूछ रहा हूँ। कबीर जी कारण बताए किस आधार से हमारे हजरत मुहम्मद नबी जी को अज्ञानी कहा है?

पवित्र कुरआन मजीद में प्रभु के विषय में क्या बताया है?

परम पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहना प्रारम्भ किया। पवित्र कुरआन शरीफ (सुरत फुर्कानि स. 25 आयत 52,58, 59) में जिस कबीर अल्लाह का विवरण है वह कादिर खुदा है। जिसे अल्लाहु अकबर (अकबीरू) कहते

हो। कुरआन शरीफ का ज्ञान दाता ने अपने से अन्य कबीर नामक अल्लाह की महिमा का गुणगान किया है। (आयत सं. 52 से 58 तथा 59 में) हजरत मुहम्मद जी को कुरआन शरीफ के ज्ञान दाता खुदा ने कहा है कि हे नबी मुहम्मद ! जो कबीर नामक अल्लाह है उसने सर्व ब्रह्माण्डो की रचना की है। वही सर्व पाप नाश (क्षमा) करने वाला है तथा सर्व के पूजा करने योग्य है। उसी ने जमीन तथा आसमान के मध्य जो कुछ भी है सर्व की रचना छः दिन में की है तथा सातवें दिन आसमान में तख्त पर जा विराजा। उस सर्व शक्तिमान, सर्व ब्रह्माण्डों के रचनहार, सर्व पाप नाशक, परमात्मा कबीर (अल्लाहु अकबर) की भक्ति विधि तथा उसके विषय में पूर्ण ज्ञान किसी तत्त्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो। कबीर परमेश्वर ने कहा शेखतकी जी आपके अल्लाह को ही ज्ञान नहीं है तो आप के हजरत मुहम्मद जी को कैसे पूर्ण ज्ञान हो सकता है? तथा अन्य काजी, मुल्ला तथा पीर भी सत्य साधना तथा तत्वज्ञान से वंचित हैं। जिस कारण से अधूरे ज्ञान के आधार से इबादत करने वाले साधक के कष्ट का निवारण नहीं होता। अन्य साधना जैसे पाँच समय नमाज करना, रोजे (व्रत) रखना तथा बंग (अजान) देना आदि पूजा विधि से मोक्ष तथा कष्ट निवारण नहीं होता। जन्म-मृत्यु तथा स्वर्ग में बने पित्तर लोक में तथा नरक में तथा अन्य प्राणियों के शरीरों में भी कर्मों के आधार से कष्ट भोगने पड़ते हैं।

उपरोक्त वार्ता सुनकर शेखतकी ने तुरंत कुरआन शरीफ को खोला तथा सूरत फुर्कानि-25 आयत 52-59 को पढ़ा जिसमें उपरोक्त विवरण सही था। वास्तविकता को आँखों देखकर भी मान हानी के भय से कहा कि ऐसा कहीं नही ंलिखा है। यह काफिर झूठ बोल रहा है। उस समय शिक्षा का अभाव था। बादशाह सिकंदर को भी शंका हो गई कि परमेश्वर कबीर साहेब जी भले ही शक्ति युक्त हैं, परंतु अशिक्षित होने के कारण कुरआन के विषय में नहीं जान सकते।

शेखतकी ने जले-भुने वचन बोले क्या तू ही है वह बाखबर? फिर बता दे वह अल्लाहु अकबर कैसा है? यदि परमात्मा को साकार कहता है तो कौन है? कहाँ रहता है?

परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा :- वह कबीर अल्लाह जिसे आप अल्लाहू अकबर कहते हो, वह मैं ही हूँ। मैं ऊपर सतलोक में रहता हूँ। मैंने ही सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की है। मैं हजरत मुहम्मद जी को भी जिन्दा संत का रूप धारण करके मिला था तथा उस प्यारी आत्मा को सतलोक दिखाकर वापिस छोड़ा था। हजरत मुहम्मद से कहा था कि आप अब मेरी महिमा सर्व अनुयाइयों को सुनाओ। मेरे द्वारा दी अन्य पुस्तक 'कलाम-ए-कबीर' अपने अनुयाईयों को दो। परन्तु मुहम्मद ने तत्त्वज्ञान का प्रचार नहीं किया तथा न मेरी बातों पर विश्वास किया।

हजरत मुहम्मद जी जिस साधना को करता था वही साधना अन्य मुसलमान समाज भी कर रहा है। वर्तमान में सर्व मुसलमान श्रद्धालु माँस भी खा रहे हैं। परन्तु नबी मुहम्मद जी ने कभी माँस नहीं खाया तथा न ही उनके अनुयाईयों ने जो लाखों की सँख्या में थे तथा न एक लाख अस्सी हजार नबियों ने माँस खाया। केवल रोजा व बंग (अजान) तथा नमाज किया करते थे। गाय आदि को बिस्मिल (हत्या) नहीं करते थे।

नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया। एक लाख अस्सी कूँ सौगंध, जिन नहीं कर्द चलाया।।
अर्श कुर्श में अल्लाह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली। वै पैगंबर पाख पुरुष थे, साहिब के अबदाली।।

भावार्थ :- नबी मोहम्मद तो आदरणीय है जो प्रभु के अवतार कहलाए हैं। कसम है एक लाख अस्सी हजार को जो उनके अनुयाई थे, उन्होंने भी कभी बकरे, मुर्गे तथा गाय आदि पर करद नहीं चलाया अर्थात् कभी जीव हिंसा नहीं की तथा माँस भक्षण नहीं किया। वे हजरत मोहम्मद, हजरत मूसा, हरजत ईसा आदि पैगम्बर(संदेशवाहक) तो पवित्र व्यक्ति थे तथा ब्रह्म(ज्योति निरंजन/काल) के कृपा पात्र थे, परन्तु जो आसमान के अंतिम छोर (सतलोक) में पूर्ण परमात्मा(अल्लाहू अकबर अर्थात् अल्लाह कबीर) है। उस सृष्टि के मालिक की नजर से कोई नहीं बचा।

ऐसा जान मुहम्मद पीरं, जिन मारी गऊ शब्द के तीरं।
शब्दै फेर जिवाई, जिन गोसत नहीं भाख्या। हंसा राख्या, ऐसा पीर मुहम्मद भाई।।

भावार्थ : एक समय नबी मुहम्मद ने एक गाय को शब्द(वचन सिद्धि) से मार कर सर्व के सामने जीवित कर दिया था। उन्होंने गाय का माँस नहीं खाया। अब मुसलमान समाज वास्तविकता से परिचित नहीं है। जिस दिन

गाय जीवित की थी उस दिन की याद बनाए रखने के लिए गऊ मार देते हो। आप जीवित नहीं कर सकते तो मारने के भी अधिकारी नहीं हो। आप माँस को प्रसाद रूप जान कर खाते तथा खिलाते हो। आप स्वयं भी पाप के भागी बनते हो तथा अनुयाइयों को भी गुमराह कर रहे हो। आप दोजख (नरक) के पात्र बन रहे हो।

कबीर परमेश्वर ने कहा :-

हम मुहम्मद को सतलोक ले गयो। इच्छा रूप वहाँ नहीं रहयो।।
उलट मुहम्मद महल पठाया। गुझ बीरज एक कलमा लाया।।
रोजा बंग निमाज दई रे। बिसमिल की नहीं बात कही रे।।

भावार्थ :- नबी मुहम्मद को मैं (कबीर परमेश्वर) सतलोक ले कर गया था परन्तु वहाँ न रहने की इच्छा व्यक्त की, वापिस मुहम्मद जी को शरीर में भेज दिया। पहले जिब्राइल फरिश्ता काल ब्रह्म के पास हजरत मुहम्मद को लेकर गया था। उसने भी नबी मुहम्मद जी को रोजा(व्रत) बंग(ऊँची आवाज में प्रभु स्तुति करना) तथा पाँच समय की नमाज करना तो कहा था परन्तु गाय आदि प्राणियों को बिस्मिल करने(मारने) को नहीं कहा।

उपरोक्त वार्ता सुनकर शेखतकी पीर ने क्रोध करते हुए कहा कि तू क्या जाने कुरआन शरीफ तथा हमारे नबी के विषय में तू तो अशिक्षित है। हमारे धर्म के विषय में झूठा प्रचार करके भ्रम फैला रहा है। मैं बताता हूँ पवित्र कुरआन मजीद (शरीफ) की अमृत वाणी कैसे प्राप्त हुई। शेखतकी ने (जो दिल्ली के महाराजा सिकंदर लोधी का धार्मिक गुरु तथा पूरे भारत के मुसलमान शेखतकी की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे) कहा कि सुन हे कबीर! हमारे मुहम्मद नबी का जीवन वृतांत।

हजरत मुहम्मद जी का जीवन चरित्र

हजरत मुहम्मद के बारे में श्री मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी के विचार

जीवनी हजरत मुहम्मद(सल्लाहु अलैहि वसल्लम)

लेखक हैं – मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी,

मूल किताब – मुहम्मदे(अर्बी) से,

अनुवादक – नसीम गाजी फलाही,

प्रकाशक – इस्लामी साहित्य ट्रस्ट प्रकाशन नं. 81 के आदेश से प्रकाशन कार्य किया है।

मर्कजी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स, डी–307, दावत नगर, अबुल फज्ल इन्कलेव जामिया नगर, नई दिल्ली–1110025,

(निम्न प्रकरण उपरोक्त लेखक व प्रकाशन की पुस्तक से लिया है।)

श्री हाशिम के पुत्र शौबा थे। उन्हीं का नाम अब्दुल मुत्तलिब पड़ा। जब मुत्तलिब अपने भतीजे शौबा को अपने गाँव लाया तो लोगों ने सोचा कि मुत्तलिब कोई दास लाया है। इसलिए श्री शौबा को श्री अब्दुल मुतलिब के उर्फ नाम से अधिक जाना जाने लगा। श्री अब्दुल मुत्तलिब को दस पुत्र प्राप्त हुए। किसी कारण से अब्दुल मुत्तलिब ने अपने दस बेटों में से एक बेटे की कुर्बानी अल्लाह के निमित्त देने का प्रण लिया।

देवता को दस बेटों में से कौन सा बेटा कुर्बानी के लिए पसंद है। इस के लिए एक मन्दिर (काबा) में रखी मूर्तियों में से बड़े देव की मूर्ति के सामने दस तीर रख दिए तथा प्रत्येक पर एक पुत्र का नाम लिख दिया। जिस तीर पर सबसे छोटे पुत्र अब्दुल्ला का नाम लिखा था वह तीर मूर्ति की तरफ हो गया। माना गया कि देवता को यही पुत्र कुर्बानी के लिए स्वीकार है। श्री अब्दुल्ला(नबी मुहम्मद के पिता) की कुर्बानी देने की तैयारी होने लगी। पूरे क्षेत्र के धार्मिक लोगों ने अब्दुल मुत्तल्लिब से कहा ऐसा न करो। हा-हा कार मच गया। एक पुजारी में कोई अन्य आत्मा बोली। उसने कहा कि ऊंटों की कुर्बानी देने से भी काम चलेगा। इससे राहत की स्वांस मिली। उसी शक्ति ने उसके लिए एक अन्य गाँव में एक औरत जो अन्य मन्दिरों के पुजारियों की दलाल थी के विषय में बताया कि वह फैसला करेगी कि कितने ऊंटों की कुर्बानी से अब्दुल्ला की जान अल्लाह क्षमा करेगा। उस औरत ने कहा कि जितने ऊंट एक जान की रक्षा के लिए देते हो अन्य दस और जोड़ कर तथा अब्दुल्ला के नाम की पर्ची तथा दस ऊंटों की पर्ची डाल कर जाँच करते रहो। जब तक ऊंटों वाली पर्ची न निकले, तब तक करते रहो। इस प्रकार दस-2 ऊंटों की संख्या बढ़ाते रहे तब सौ ऊंटों के बाद ऊंटों की

पर्ची निकली, उस से पहले अब्दुल्ला की पर्ची निकलती रही। इस प्रकार सौ ऊटों की कुर्बानी(हत्या) करके बेटे अब्दुल्ला की जान बचाई। जवान होने पर श्री अब्दुल्ला का विवाह भक्तमति आमिनी देवी से हुआ। जब हजरत मुहम्मद माता आमिनी जी के गृभ में थे पिता श्री अब्दुल्ला जी की मृत्यु किसी दूर स्थान पर हो गई। वहीं पर उनकी कब्र बनवा दी। जिस समय बालक मुहम्मद की आयु छः वर्ष हुई तो माता आमिनी देवी अपने पति की कब्र देखने गई थी। उसकी भी मृत्यु रास्ते में हो गई। छः वर्षीय बालक मुहम्मद जी यतीम (अनाथ) हो गए। (उपरोक्त विवरण पूर्वोक्त पुस्तक 'जीवनी हजरत मुहम्मद' पृष्ठ 21 से 29 तथा 33-34 पर लिखा है)।

हजरत मुहम्मद जी जब 25 वर्ष के हुए तो एक चालीस वर्षीया विधवा खदीजा नामक स्त्री से विवाह हुआ। खदीजा पहले दो बार विधवा हो चुकी थी। दोनों पूर्व पतियों की अच्छी-खासी सम्पत्ति थी जो खदीजा के पास थी। तीसरी बार हजरत मुहम्मद से विवाह हुआ। वह बहुत बड़े धनवान घराने की औरत थी। (यह विवरण पूर्वोक्त पुस्तक के पृष्ठ 46, 51-52 पर लिखा है।)

हजरत मुहम्मद जी को संतान रूप में खदीजा जी से तीन पुत्र तथा चार बेटियाँ प्राप्त हुई। परंतु ये मुबारक घड़ी ज्यादा समय नहीं रही। आँखों के तारे तीनों पुत्र 1. कासिम, 2. तय्यब 3. ताहिर आप (हजरत मुहम्मद जी) की आँखों के सामने मृत्यु को प्राप्त हुए। केवल चार लड़कियां (जैनब, रूकय्या, उम्मे कुसूम और फातिमा) शेष रहीं। (पूर्वोक्त पुस्तक के पृष्ठ 64 पर यह उपरोक्त विवरण लिखा है)।

एक समय प्रभु प्राप्ति की तड़फ में हजरत मुहम्मद जी नगर से बाहर एक गुफा में साधना कर रहे थे। एक जिबराईल नामक फरिश्ते ने हजरत मुहम्मद जी का गला घोंट-2 कर बलात् कुरआन शरीफ का ज्ञान समझाया। (हजरत मुहम्मद जी को डरा धमका कर अव्यक्त माना जाने वाले प्रभु का ज्ञान दिया गया।) उस जिबराईल देवता के डर से हजरत मुहम्मद जी ने वह ज्ञान याद किया। इस प्रकार मुहम्मद साहेब जी को फरिश्ते ने कुरआन मजीद का ज्ञान दिया। हजरत मुहम्मद जी ने अपनी पत्नी खदीजा जी को बताया कि मैं जब गुफा में बैठा था तो एक फरिश्ता आया। उसके हाथ में एक रेशम का रूमाल था। उस पर कुछ लिखा था। फरिश्ते ने मेरा गला घोंट कर कहा इसे पढ़ो। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे प्राण निकलने वाले हैं। पूरे शरीर को भींच कर जबरदस्ती मुझे पढ़ाना चाहा। ऐसा दो बार किया। तीसरी बार फिर कहा पढ़ो, मैं अशिक्षित होने के कारण नहीं पढ़ पाया। अब की बार मुझे लगा कि यह और ज्यादा पीड़ा देगा। मैंने कहा क्या पढूं। तब उसने मुझे कुरआन की एक आयत पढ़ाई। (यह विवरण पूर्वोक्त पुस्तक के पृष्ठ 67 से 75 तक लिखा है तथा पृष्ठ 157 से 165 तक लिखा है)।

फरिश्ते जिबराईल ने नबी मुहम्मद जी का सीना चाक किया उसमें शक्ति उड़ेल दी और फिर सील दिया तथा एक खच्चर जैसे जानवर (बुराक) पर बैठा कर ऊपर ले गया। वहाँ नबियों की जमात आई, उनमें हजरत मूसा जी, ईसा जी और इब्राहिम जी आदि भी थे। जिनको हजरत मुहम्मद जी ने नमाज पढ़ाई।

वहाँ हजरत आदम जी भी थे जो कभी हँस रहे थे और कभी रो रहे थे। फरिश्ते जिबराईल ने हजरत मुहम्मद जी को बताया यह बाबा आदम जी हैं। रोने तथा हँसने का कारण था कि दाई ओर स्वर्ग में नेक संतान थी जो सुखी थी जिसे देख कर बाबा आदम हँस रहे थे तथा बाई ओर निकम्मी संतान नरक में कष्ट भोग रही थी, जिसे देखकर रो रहे थे।

{यहाँ पर कुछ तथ्य छुपाए हैं लेखक ने। लिखा है कि हजरत आदम दायीं ओर मुख करके इसलिए हँस रहे थे क्योंकि दायीं ओर उसकी नेक संतान के कर्म थे। उनको देखकर हँस रहे थे। बायीं ओर निकम्मी संतान के कर्म थे। उन्हें देखकर रो रहे थे। विचार करें पाठकजन! क्या वे कर्म जन्नत में किसी दीवार पर लिखे थे जबकि बाबा आदम तो अशिक्षित थे। वास्तविकता जो है, वह ऊपर लिखी है।}

फिर सातवें आसमान पर गए। पर्दे के पीछे से आवाज आई की प्रति दिन पचास नमाज किया करे। नबी मूसा के कहने पर पचास नमाजों से कम करवाकर केवल पाँच नमाज ही अल्लाह से प्राप्त करके नबी मुहम्मद वापिस आ गए।

(पृष्ठ नं. 307 से 315) हजरत मुहम्मद जी द्वारा मुसलमानों को कहा कि खून-खराबा मत करना, ब्याज तक भी नहीं लेना तथा 63 वर्ष की आयु में सख्त बीमार होकर तड़पते-2 भी नमाज की तथा घर पर आकर असहनीय पीड़ा में सारी रात तड़फ कर प्राण त्याग दिए।

(पृष्ठ नं. 319) बाद में उत्तराधिकारी का झगड़ा पड़ा। फिर हजरत अबू बक्र को खलीफा चुना गया।
❖ शेखतकी से उपरोक्त वर्णन सुनकर परमेश्वर कबीर जी ने तर्क दिए :- शेख तकी पीर जी! आपने बताया कि अल्लाह तो सातवें आसमान पर रहता है वह तो निराकार है। कबीर जी ने कहा शेख जी एक ओर तो आप भगवान को निराकार कह रहे हो। दूसरी ओर प्रभु को सातवें आसमान पर एक देशीय सिद्ध कर रहे हो। जब परमात्मा सातवें आसमान पर रहता है तो वह साकार हुआ।

परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा शेखतकी जी आपने बताया कि हजरत मुहम्मद जी जब माता के गर्भ में थे उस समय उनके पिता श्री अब्दुल्ला जी की मृत्यु हो गई, छः वर्ष के हुए तो माता जी की मृत्यु। आठ वर्ष के हुए तो दादा अब्दुल मुत्तलिब चल बसा। यतीमी का जीवन जीते हुए हजरत मुहम्मद जी की 25 वर्ष की आयु में शादी दो बार पहले विधवा हो चुकी 40 वर्षिय खदीजा से हुई। तीन पुत्र तथा चार पुत्रियाँ संतान रूप में हुई। हजरत मुहम्मद जी को जिबराईल नामक फरिश्ते ने गला घोंट-घोंट कर जबरदस्ती डरा धमका कर कुरआन शरीफ (मजीद) का ज्ञान तथा भक्ति विधि (नमाज आदि) बताई जो तुम्हारे अल्लाह द्वारा बताई गई थी। हजरत मुहम्मद जी ने जी-जान से वह साधना की। फिर भी हजरत मुहम्मद जी के आँखों के तारे तीनों पुत्र (कासिम, तय्यब तथा ताहिर) चल बसे। विचार करें जिस अल्लाह के भेजे रसूल (नबी) के जीवन में कहर ही कहर (महान कष्ट) रहा। तो अन्य अनुयाइयों को कुरआन शरीफ व मजीद में वर्णित साधना से क्या लाभ हो सकता है? हजरत मुहम्मद 63 वर्ष की आयु में दो दिन असहाय पीड़ा के कारण दर्द से बेहाल होकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। जिस पिता के सामने तीनों पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो जाऐं, उस पिता को आजीवन सुख नहीं होता। प्रभु की भक्ति इसीलिए करते हैं कि परिवार में सुख रहे तथा कोई पाप कर्म दण्ड भोग्य हो, वह भी टल जाए। आप के अल्लाह द्वारा दिया भक्ति ज्ञान अधूरा है। इसीलिए सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 तक में कहा है कि जो गुनाहों को क्षमा करने वाला कबीर नामक अल्लाह है उसकी पूजा विधि किसी तत्त्वदर्शी (बाखबर) से पूछ देखो। कबीर परमेश्वर ने कहा शेखतकी मैं स्वयं वही कबीर अल्लाह हूँ। मेरे पास पूर्ण मोक्ष दायक, सर्व पाप नाशक भक्ति विधि है। इसीलिए आप के समक्ष बादशाह सिकंदर लोधी जी पाप के कारण भोग रहे कष्ट से मुक्त होकर सुख की सांस ले रहे हैं। जो आपकी भक्ति पद्धति से नहीं हो पाया।

जैसा कि शेखतकी जी आपने बताया कि सब मनुष्यों का पिता हजरत आदम ऊपर आसमान पर (जहाँ जिस लोक में जिबराईल फरिश्ता हजरत मुहम्मद को लेकर गया था) कभी रो रहा था, कभी हंस रहा था। क्योंकि उसकी निकम्मी संतान नरक में कष्ट उठा रही थी। उन्हें देखकर रो रहा था तथा अच्छी संतान जो स्वर्ग में सुखी थी, उन्हें देखकर जोर-जोर से हंस रहा था।

विचारणीय विषय है कि ईसाई धर्म तथा मुसलमान धर्म के प्रमुख बाबा आदम ने जो साधना की उसके प्रतिफल में जिस लोक में पहुँचा है वहाँ पर भी चैन से नहीं रह रहा। इस लोक में भी बाबा आदम जैसे नेक नबी के दोनों पुत्रों में राग-द्वेष भरा था जिस कारण बड़े भाई ने छोटे की हत्या कर दी। यहाँ पृथ्वी पर भी बाबा आदम महादुःखी ही रहे क्योंकि बड़े भाई ने छोटे को मार दिया, बड़ा घर त्याग कर चला गया। सैंकड़ों वर्षों पश्चात् बाबा आदम को एक सेत नाम का पुत्र हुआ। सेत का पुत्र एनोश हुआ जिससे भक्ति मार्ग चला है। जिस किसी के दोनों पुत्र ही बिछुड़ जाए, वह पिता सुखी नहीं हो सकता। यही दशा बाबा आदम जी की हुई थी। सैकड़ों वर्ष दुःख झेलने के पश्चात् एक नेक पुत्र प्राप्त हुआ। फिर बाबा आदम उस लोक में भी इसी कष्ट को झेल रहे हैं।

सर्व नबी जो पहले पृथ्वी पर अल्लाह के भेजे आए थे, वे (हजरत ईसा, हजरत अब्राहिम, हजरत मूसा आदि) भी उसी स्थान (लोक) में अपनी साधना से पहुँचे। वास्तव में वह पित्तर लोक है। उसमें अपने-अपने पूर्वजों के पास चले जाते हैं। इसी प्रकार हिन्दुओं का भी ऊपर वही पित्तर लोक है। जिनका संस्कार पित्तर बनने का होता है वह पित्तर योनिधारण करके उस पित्तर लोक में रहता है। फिर पित्तर वाला जीवन भोग कर फिर भूत तथा अन्य पशु व पक्षियों की योनियों को भी भोगता है। यह तो पूर्ण मोक्ष तथा सुख प्राप्ति नहीं हुई। वही भक्ति करने वाले साधकों को क्या उपलब्धि होगी?

पवित्र कबीर सागर ग्रन्थ से हजरत मुहम्मद जी के विषय में उल्लेख

कृपया पढ़ें कबीर सागर के अध्याय ''मुहम्मद बोध'' से वाणी :-

धर्मदास वचन

साखी – धर्मदास बीनती करे, कृपा करो गुरूदेव।
नबी मुहम्मद जस भये, सोसब कहियों भेव।।

कबीर वचन

धर्मदास तुम पूछो भल बानी। सो सब कथा कहूँ सहिदानी।।
मिले हम मुहम्मद कूँ जाई। सलाम वालेकम कह सुनाई।।
मुहम्मद बोले वालेकम सलामा। हमें बताओ गाम रूनामा।।
साखी – कहाँ ते आये पीर तुम, क्यों कर किया पयान।
कौन शक्सका हुक्म है, किसका है फरमान।।

मुहम्मद वचन

रमैनी

पीर मुहम्मद सखुन जो खोला। अल्ला हमसे परदै बोला।।
हम अहदी अल्ला फरमाना। वतन लाहूत मोर अस्थाना।।
उन भेजे रूह बारह हजारा। उम्मत के हम हैं सरदारा।।
तिस कारण जो हम चलि आये। सोवत थे सब जीव जगाये।।
जीव ख्वाब में परो भुलाये। तिस कारन फरमान ले आये।।
तमु बूझो सो कौन हो भाई। अपनो इस्म कहो समुझाई।।
साखी – दूर की बाते जो करौ, करते रोजा नमाज।।
सो पहुँचे लाहूत को, खोवे कुल की लाज।।

कबीर वचन

कहैं कबीर सुनो हो पीर। तुम लाहूत करो तागीरा।।
तुम भूले सो मरम न पाया। दे फरमान तुम्हें भरमाया।।
फिर फिर आव फिर फिर जाई। बद अमली किसने फरमाई।।
लाहूत मुकाम बीच को भाई। बिन तहकीक असल ठहराई।।
तुम जैसे उनके बहुतेरे। लै फरमान जाव तुम डेरे।।
साखी – खोजत खोजत खोजियाँ, हुवा सो गूना गून।
खोजत खोजत ना मिला, तब हार कहा बेचून।।
बेचूँन जग राँचिया, साई नूर निनार।
आखिर करे वक्त में, किसकी करो दिदार।।

रमैनी

तुम लाहूत रचे हो भाई। अगम गम्य तुम कैसे पाई।।
यह तो एक आदि विसरामा। आगे पाँच आदि निज धामा।।
तहाँ ते हम फरमान ले आये। सब बदफेल को अमल मिटाये।।
उन फरमान जो हमको दीना। तिनका नाम बेचून तुम लीना।।
साखी – साहब का घर दूर है, जासु असल फरमान।
उनको कहो जो पीर तुम, सोइ अमर अस्थान।।

मुहम्मद वचन

कहै मुहम्मद सुनो कबीरा। तुम कैसे पायो अस्थीरा।।
लाहूत मेटि जो अगम बतायो। खुद खुदाय हमहूँ नहिं पायो।।

हम जानैं खुद आपै आही। तुम कुदरत कर थापो ताही।।
हम तो अर्श हाजिरी आयो। तुम तो कुदरत से ठहराये।।
तुम्हरे कहे भरम मोहि आयो। खुद खुदाय तुम दूर बतायो।।
आप सुनाओ खुदकी बानी। आलम दुनियाँ कहो बखानी।।
लाहूत मुकाम हम निजकर जाना। सो तो तुम कुदरत कर ठाना।।
हलकी मुलकी बासरी भाई। तीन हुक्म अल्ला फरमाई।।
साखी – साई मुरशिद पीर है, साँचा जिस फरमान।
हलकी मुलकी बासरी, तीन हुकुम कर मान।।

कबीर वचन

सुन मुहम्मद कहूं खुदवाणी। खुद खोदाय की कहूँ निशानी।।
कादिर थे तब कुदरत नाहीं। कुदरत थी कादिर के माहीं।।
ख्वार सभी को चीन्हो भाई। असल रूह को देउँ बताई।।
असल रूह की दीदार जो पावे। पावे निज मुसलमान कहावे।।
हो आवाज जहां परदा पोशी। है वह मर्द कि है वह जोशी।।
जब लग तख्त नजर नहीं आवे। दिल विश्वास कौन विधि पावे।।
जब खुद की खबर न पावे। तब लग कुदरत भ्रम ठहरावे।।
हाल माशूक नजर जो आवै। एक निगाह दीदार जो पावै।।
जो तुम कहा हमारा मानो। तो हम तुमते निर्णय ठानो।।
साखी – यह प्रपंच बेचून का, तुमते कहा न भेव।।
आप गुप्त होइ बैठा, तुम चार करत हो सेव।।

मुहम्मद बोध

कहैं मुहम्मद सुन खुद अहदी। इल्म लद्दुनी कहु बुनियादी।।
जब नहिं पिण्ड ब्रह्माण्ड अस्थूला। तब ना हतो सृष्टि को मूला।।
तादिन की कहिय उपतानी। आदि अंत और मध्य निशानी।।
साखी – बुजरूग हकीकत सब कहो, किस विधि भया प्रकाश।
जब हम जाने आदि को, तो हमहूँ बाँधे आश।।

कबीर वचन

सुनो मुहम्मद सांचे पीरा। समरथ हुकुम खुद आदि कबीरा।।
अब हम कहें सुनो चितलायी। आदि अन्त सब कहों बुझायी।।
प्रथम समरथ आदि अकेला। उनके संग हता नहिं चेला।।
साखी – वाहिदन थे तब आप में, सकल हतो तेहि माँह।
ज्यौं तरूवर के बीज में, पुष्प पात फल छाँह।।

चौपाई

निरंजन भये राज अधिकारी। तिनके चार अंश सेवकारी।।
चार ज्ञानते चारो वेदा। तिनते चारो भये कतेबा।।
मूल कुरान वेद की वानी। सो कुरान तुम जग में आनी।।
हक्क कुरान जो तुमको दीना। हद हुक्म तुम आपन कीना।।
चार कतेब के चारों अंशा। तिनते कहो भिन्न–भिन्न बंशा।।
वेद पढावत ब्रह्मा आये। ऋग वेद को नाम लखाये।।
दूसर यजुरवेद की वानी। भक्ति ज्ञान सो कीन बखानी।।
तीसर सामवेद की वानी। यज्ञ होम तिन कीन बखानी।।

चौथ अथर्बन गुप्त छपाये। तौन हुक्म तुम जगमें आये।।
ऐकै मूल कुरान में चारी। चार बीर तुम हो सरदारी।।
जब्बूर किताब दाऊद ने पाई। नासूत मोकाम रहै ठहराई।।
तौरेत कीताब मूसाने पाई। मलकूत मोकाम रहै ठहराई।।
इंजील किताब ईशा ने पाई। जबरूत मोकाम रहै ठहराई।।
फुरकान किताब नबी तुम पाई। लाहूत मोकाम रहै लौलाई।।
कुरान बेहद को मरम न पावै। बिन देखे विश्वास क्या आवै।।
चार मोकाम किताब है चारी। पंचयें नाम अचिंत सँवारी।।
तहँते आइ रूह बारह हजारी। तहां अचिंत गुप्त व्योहारी।।
साखी – पीर औलिया थाकिया, यह सब उरले पीर।।
समरथ का घर दूर है, तिनको खोजो बीर।।

मारफत

चौपाई

ओवल मोकाम नासूत ठेकाना। दूजा मोकाम मलकूत जो जाना।।
सेउम मोकाम जबरूत ठेकाना। चहारुम मोकाम लाहूत बखाना।।
पंचये मोकाम हाहूत अस्थाना। छठे मोकाम सोहं जो माना।।
हफतुम मोकाम बानी अस्थाना। अठयें मोकाम अंकूर ठेकाना।।
नवयें मुकाम आहूत निशानी। दसयें मोकाम पुरूष रजधानी।।

बेतुक

औवल शरी अत्।१। तरीकत् २। हकीकत् ३। मरफत् ४। मरौवत् ५। ध्यान दोरहिअत् ६। जुलफकार चन्द्र गेटा ७। हुकुममुरतद ८। देयना कासो यही अंत् ६। सच पावे समरथ काय १०। अंकार ओंकार कलिमा नवी सचुपावै देखा हद बैहद

मुहम्मद वचन

तुम कबीर भेद अधिकाये। खुद समरथ की खबरि जो ल्याये।।
अब तुमको हम बूझैं अंतू। सो कहिये खुद अहदी संतू।।
को तुम आहु कहांते आये। क्यों तुम अपना बर्ण छिपाये।।
सात सुरति समरथ निमाई। यह अस्थान रहो की जाई।।
यती मारफत कहु दुरवेशा। हम मानैं तुमरो उपदेशा।।
सात सुरति केहि माहि समाई। जिव बोधे सो कह चलि जाई।।
समरथ गम तुमु साँच कबीरा। समरथ भेद कहो मति धीरा।।
साखी – मेरे शंका बाढिया, थाके वेद कुरान।
वाहिद कैसे पाइये, समरथ को मक्कान।।

सत्य कबीर वचन

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई। जो खुद आदि अस्थान है भाई।।
जो जो हुकुम समरथ फरमाई। सो सो हुकुम हम आनि चलाई।।
सुर नर मुनि को टेरि सुनाये। तुमको बहुत बार समुझाये।।
तुम पर मोह क्षर ने डारा। तेहि कारण आये संसारा।।
सोलह असंख जुग जबै सिराई। सोलह असंख उत्पत्ति मिटि जाई।।
सात सुरति तब लोकहि जाई। जिव बोधो तेहि माह समाई।।
सात सुन्य तजि ते अस्थाना। ते सब मिटे होय घमसाना।।
वेद कतेब कि छोड़ो आशा। वेद कतेब में क्षर प्रकाशा।।

तीन बार तुम जग में आये। फिर फिर क्षर ने भरमाये।।
क्षर चीन्हिके छोडो भाई। तीन अंश क्षर निरमाई।।
ब्रह्मादिका सृष्टि आपको कीना। जीव वृष्टि तीरथ व्रत दीना।।
माया वृष्टि ईश्वरी जानो। सबमें आतम एक समानो।।
साखी—खोजो खुद समरत्थको, जिन किया सब फरमान।
पीर मुहम्मद तहँ चलो, सोई अमर अस्थान।।

मुहम्मद वचन

पीर मुहम्मद मुख तब मोरा। कछु नहिं चलै तुम्हारी जोरा।।
क्षर हुक्म को मेटनहारा। चार वेद जिन कीन पसारा।।

कबीर वचन

सुनिये सखुन मुहम्मद पीरा। हम खुद अहदी आदि कबीरा।।
मेटों क्षर को बिस्तारा। मेटो निरंजन सकल पसारा।।
मेटो अचिंत की रजधानी। मेटो ब्रह्मा वेद निशानी।।
चौदह जम को बांधि नचावों। मृतु अंधा मगहर ले आवों।।
धर्मरायते झगर पसारा। निरंजन बांधि रसातल डारा।।
बेद कतेब को अमल मिटावों। घर घर सार शब्द फैलावों।।
समरथ हुक्म चलै सब माही। ब्यापै सत्य असत्य उठि जाही।।

मुहम्मद वचन

पीर मुहम्मद बोले बानी। अगम भेद काहू नहिं जानी।।
सुनाकान नहिं आखिन देखा। बिन देखे को करे विवेखा।।
जो नहिं देखो अपने नैना। कैसे मानो गुरूको बैना।।
जो तुम खुद अहदी है आये। हुक्म हजूर फरमान ले आये।।
जौन राह से तुम चलि आवो। सोई राह मोकहँ बतलावो।।
हँसन को अस्थान चिन्हावो। समरथ को मोहि लोक देखावो।।
साखी – हंसन को अस्थान लखि, तब मानुँ फरमान।।
जो समरथ को हुक्म है, सो मेरे परवान्।।

कबीर वचन

सुनो मुहम्मद कहों बुझाई। साहेब तुमको देउँ बताई।।
चलै सैल को दोनों पीरा। एक मुहम्मद एक कबीरा।।

(नासूत) मोकाम १

भूमि से चले जहाँ पहुँचे जाई। मानसरोवर तहां कहाई।।
तहँ नासूत आहि मोकामा। नबी कबीर पहुँच तेहि धामा।।
तहँ दाऊद पयंबर होई। जब्बूर किताब पढे तहँ सोई।।
तहाँ सलामालेक सोई कीना। दस्तावोस उनहु उठि लीना।।

(मलकूत) मोकाम २

तहवाँते पुनि कीन पयाना। दूसरा मुकाम वैकुंठ प्रमाना।।
तहवाँ पहुँच बैठे ऋषि दुर्बासा। देव सबै बैठे तेहि पासा।।
वह वैकुंठ इन्द्र अस्थाना। मलकूत मोकाम मूसाको जाना।।
मूसा पैगम्बर पढै किताबा। उसका नाम तौरेत किताबा।।
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठि लीना।।

(जबरूत) मोकाम ३

वैकुण्ठ ते आगे लायो डोरी। सुमेरते सुन्य अठारह करोरी।।
येतो अधर सुन्य अस्थाना। जबरूत मोकाम ईसाको जाना।।
ईसा पैगम्बर पढै किताबा। उसका नाम इंजील किताबा।।
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ता बोस उनहु उठि लीना।।
तहँवा बैठि विस्वंभर राई। वही पीर तो वही खुदाई।।
यह विष्णुपुरी है भाई। यामें भी एक बैकुण्ठ बनाई।।
विष्णु है यहाँ का प्रधाना। सुन मुहम्मद ज्ञान विज्ञाना।।
उहँते अधर सून्य है भाई। ताकी शोभा कही न जाई।।

(लाहूत) मोकाम ४

महाशून्य को लागी डोरी। ग्यारह पालँग तहाँ ते सोरी।।
लाहूत मोकाम कहावै सोई। जो देखे बहुतै सुख होई।।
रह महादेव पार्बति संगा। लाहुत मुकाम देख मन चंगा।।
यह मुहम्मद तुम्हरो डेरा। गण गंधर्व सब यहाँ चेरा।।
मुस्तफा पैगंबर बैठे तहाँ। फुरकान किताब पढत थे जहाँ।।
सलामालेक तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठि लीना।।
देखत हौ मुहम्मद अस्थाना। तुम बेचून कहो यही ठेकाना।।
सब फिरिश्ते सलामालेक कीना। तब हम आगे का पग दीना।।

(हाहूत) मोकाम ५

तहँते चले अचिंत ठेकाना। एक असंख्य सुन्य परमाना।।
ब्रह्मापुरी है हाहूत मोकामा। आदम का यहाँ विश्रामा।।
हाहूत मोकाम को वही ठेकाना। आगे है सोहं बंधाना।।

(बाहूत) मोकाम ६

तीन असंख्य शून्य परमानी। बाहूत मोकाम सो कहो बखानी।।
यह देवी का अस्थाना। गुप्तभेद कोई ना जाना।।
नबी कबीर चले तेहि आगे। मूल सुरति बैठे अनुरागे।।

(फाहूत) मोकाम ७

पांच असंख सुन्न विचआही। सप्तम मोकाम कहत है ताही।।
संगम धाम दुर्गा के आगे। यको तुम फाहूत अनुरागे।।
फाहूत मोकाम तोहे बताया। भिन्न भेद कह समझाया।।

(राहूत) मोकाम ८

इच्छा सुरति के पहुँचे द्वीपा। चार असंख है लोक समीपा।।
सतगुरू रूप काल दयाला। एक बुगा और एक काला।।
ताको नाम राहूत मोकामा। नबी कबीर पहुँचे तेहि ठामा।।

(आहूत) मोकाम ६

तहाँते सहज द्वीप परमाना। दोय असंख तहाँते जाना।।
आहूत मुकाम निरंजन धामा। आप गुप्त ज्योति प्रगटाना।।
ताहि मोकाम नाम आहूता। सोभा ताकी देख बहूता।।

(जाहूत) मोकाम १०

साखी – पहुँचे जायके लोक जहँ, सन्त असंख दस लाख।।
अक्षर धाम जाहूत मुकामा। सप्त शंख लोक अकाना।।
सो मोकाम जाहूत का, दस मोकाम यह भाख।।

चौपाई

सलामवालेकम तहाँ हम कीना। दस्ताबोस उनहु उठिलीना।।
तहँते अमरलोक को छोरा। नबी कवीर पहुँच तेहि ठौरा।।
अमरलोक के हंस सब आये। तिनकी सोभा कही न जाये।।
भरि भरि अंक मिले तहँ आये। देखि मुहम्मद रहे भुलाये।।
सब मिलि हंस गये पुनि तहँवा। साहेब तखत पै बैठे जहँवा।।
जगर मगर छतर उजियारा। आम धनी का कहो बिहारा।।
असंख भानु पुरूष उजियारा। अमरलोक को कहो विस्तारा।।
सकल हंस तहँ दरशन पाई। तिनकी सोभा बरनि न जाई।।
तहँवा जाय बंदगी कीना। नबी भये जो बहुत अधीना।।

मुहम्मद वचन

चूक हमार बकस कर दीजै। जो तुम कहो सोई हम कीजै।।

हजरत मुहम्मद जी को कुरआन पुस्तक का ज्ञान कैसे मिला

कुरआन शरीफ अर्थात् कुरआन मजीद की प्राप्ति कैसे हुई? (कुरआन शरीफ वाला ज्यों का त्यों विवरण कुरआन मजीद में है)।

कुरआन मजीद - तर्जुमा, फतेह मुहम्मद खां साहब जालंधरी, प्रकाशक : महमूद एण्ड कम्पनी, मरोल पाईप लाईन, बम्बई–59, सोल एजेंट, फरीद बुक डिपो, देहली–6

उपरोक्त पुस्तक के : मुकदमा के पृष्ठ 6-7 पर लिखा है :-

''कुरआन मजीद के उतरने और संग्रह व संकलन करने के हालात''

उपरोक्त पुस्तक कुरआन मजीद के मुकदमा पृष्ठ 6-7 पर लिखें लेखक के लेख का निष्कर्ष :-

कुरआन मजीद (शरीफ) 23 वर्षों में पूरी लिखी गई। जब हजरत मुहम्मद जी की आयु 40 वर्ष थी उस समय से प्रारम्भ हुई तथा अन्तिम समय 63 वर्ष की आयु तक 23 वर्ष लगातार कभी एक आयत, कभी आधी, कभी दो आयत, कभी 10 आयत, कभी पूरी सूरतें उतरी हैं। इसी को शरीअत में ''बह्य'' कहते हैं।

विद्वानों ने लिखा है ''वह्य (वह्य)'' उतरने के भिन्न-भिन्न तरीके हदीसों में पेश किए हैं।

1. फरिश्ता ''वह्य(वह्य)'' ले कर आता था तो घंटियाँ सी बजती थी। नबी मुहम्मद जी की जान निकलने को हो जाती थी। यह तरीका ज्यादा कष्ट दायक नबी मुहम्मद जी के लिए होता था।

यह भी लिखा है कि हजरत मुहम्मद जी नुबूबत के बाद (चालीस वर्ष की आयु से नबी बनने के बाद) रमजान के दिनों में पूरा कुरआन मजीद (शरीफ) अल्लाह के पास से उस आसमान से जिसे हम देख नहीं सकते हैं अल्लाह (प्रभु) के हुकम (आज्ञा) से उतारा गया अर्थात् उसी अल्लाह के द्वारा बोला गया। इसके बाद हजरत जिबराईल को जिस समय, जिस कदर हुकम (आज्ञा) हुआ, उन्होंने पवित्र कलाम को बिल्कुल वैसा ही बिना किसी परिवर्तन के नबी मुहम्मद जी तक पहुँचाया।

2. कभी फरिश्ता दिल में कोई बात डाल दे।

3. फरिश्ता आदमी के रूप में आकर बात करे।

{नोट - हजरत मुहम्मद जी की जीवनी में लिखा है कि जिस समय जिब्राईल फरिश्ता प्रथम बार वह्य (वह्य) लेकर आया मनुष्य रूप में दिखाई दिया, तो उसने मुहम्मद जी का गला घोंट कर कहा इसे पढ़ो। हजरत मुहम्मद जी ने बताया कि मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे, वह मेरा गला घोंट रहा हो। मेरे शरीर को दबा रहा हो। ऐसा दो बार किया फिर तीसरी बार फिर कहा पढ़ो। मुझे ऐसा लगा कि वह फिर गला घोटेंगा, इस बार और जोर से भींचेगा, मैं बोला क्या पढ़ूं ? कुरआन की प्रथम आयत पढ़ाई, वह मुझे याद हो गई। फिर फरिश्ता चला गया, मैं घबरा गया। दिल बैठता जा रहा था। पूरा शरीर थर-थर कांपने लगा। गुफा के बाहर आकर सोचा यह कौन था। फिर वही फरिश्ता आदमी की सूरत में दिखाई दिया, जहाँ देखूं वही दिखाई देने लगा। ऊपर, नीचे, दांए, बांए सब ओर। घर आकर चादर ओढ़कर लेट गया। सारा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। मुझे डर है कि खदीजा कहीं मर न जाऊँ। फिर

हजरत मुहम्मद जी ने अपनी पत्नी खदीजा को सारी बात बताई, फिर एक 'बरका' नामक व्यक्ति ने हजरत मुहम्मद जी से सारी बातें सुन कर कहा आप 'नबी' बनोगे। यही फरिश्ता मूसा जी के पास भी आता था। उपरोक्त विवरण से तो सिद्ध होता है कि फरिश्ता आदमी रूप में वह्य लाता था तो भी हजरत मुहम्मद जी को बहुत कष्ट हुआ करता।}

4. अल्लाह तआला जागते में नबी मुहम्मद (सल्ल) से कलाम फरमाए। भावार्थ है कि आकाश वाणी करके ब्रह्म स्वयं बोलता था।

5. अल्लाह तआला सपने की हालत में कलाम फरमाए।

6. फरिश्ता सपने की हालत में आकर कलाम करे(इस छठी व पाँचवी प्रकार पर विवाद है, शेष उपरोक्त कुरआन मजीद(शरीफ) के उतरने की 4 सही हैं।) पृष्ठ 29 पर लिखा है कि कभी स्वयं ''वह्य(वह्य)'' आती थी। भावार्थ है कि जैसे कोई प्रेत प्रवेश करके बोलता है। कभी नबी मुहम्मद चादर लपेट कर लेट जाते थे, फिर चादर के अन्दर से बोलते थे।

पवित्र कुरआन मजीद(शरीफ) के मुकदमा के पृष्ठ 6-7 के लिखे लेख से स्पष्ट है कि कुरआन का ज्ञान पर्दे के पीछे रहने वाले अल्लाह ने दिया है। जिबराईल नामक फरिश्ते ने तो केवल संदेश वाहक का कार्य किया है। कुरआन ज्ञान देने वाला अपने से अन्य कादिर सृष्टि की रचना करने वाले अल्लाह की महिमा बताता है। अपनी भी बताता है।

पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्मों के अनुयाईयों को कर्माधार से लाभ-हानि करने वाले भी (श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) तीन ही देवता

हजरत आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा तथा अन्य प्राणियों व सर्व ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति करके कुरआन व बाइबल बोलने वाले प्रभु को सौंप गया। बाइबल के उत्पत्ति ग्रंथ से भी सिद्ध होता है कि परमात्मा मनुष्य जैसा है। क्योंकि प्रभु ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया तथा सात दिन के बाद का वर्णन कुरआन शरीफ व बाइबल ज्ञान दाता(काल/ज्योति निरंजन) की लीला का है। पवित्र बाइबल में लिखा है कि 'फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है। इसलिए अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ा कर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़ कर खा ले और सदा जीवित रहे। परमेश्वर ने उसे अदन के उ़द्यान से निकाल दिया।

उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध होता है कि जो आदम का प्रभु है ऐसा कोई और भी है तथा साकार है। इसीलिए तो कहा है कि मनुष्य को भले-बुरे का ज्ञान करवाने वाले वृक्ष के फल को खाकर हम में से एक के समान हो गया है। क्योंकि बाइबल के उत्पत्ति ग्रन्थ में ही लिखा है कि आदम ने भले-बुरे के ज्ञान वाला फल तोड़ कर खा लिया तो उसे पता चला वह नंगा है। यहोवा परमेश्वर टहलते हुए आ गया। उसने आदम को पुकारा तू कहाँ है? तब आदम ने कहा मैं तेरी आवाज सुनकर छुप गया हूँ, क्योंकि मैं नंगा हूँ। फिर परमेश्वर ने आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा के चमड़े के अंगरखे (वस्त्र) बनवाए।

विचार करें उपरोक्त विवरण स्वयं सिद्ध कर रहा है कि पूर्ण परमात्मा (Complete God) भी सशरीर मनुष्य जैसे आकार का है तथा अन्य छोटे प्रभु (Small gods) भी मनुष्य जैसे आकार के हैं, जिसे पवित्र ईसाई तथा मुसलमान धर्म के व्यक्ति निराकार मानते हैं। वास्तव में परमेश्वर तथा अन्य देव नराकार में साकार हैं तथा प्रभु एक से अधिक भी हैं। यह बाइबल से भी प्रमाणित हुआ।

क्योंकि काल ब्रह्म स्वयं सामने नहीं आता, उसने अपने तीनों पुत्रों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) के द्वारा एक ब्रह्माण्ड का कार्य चला रखा है। हजरत आदम जी भगवान ब्रह्मा के अवतार हैं। हजरत आदम को श्री ब्रह्मा जी ने बहका कर रखा था, उसी ने उसको वहाँ से निकाला था। इसीलिए कहा है कि भले बुरे के ज्ञान वाला फल खाकर आदम हम में से एक के समान हो गया है। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु व महेश तीनों देव हैं, हजरत ईसा के अवतार धारण करने के विषय में पवित्र बाइबल में लिखा है कि प्रभु ईश्वर ने पृथ्वी पर बढ़ रहे पाप के अंत के लिए अपने पुत्र को भेजा था क्योंकि हजरत ईसा जी भगवान विष्णु के अवतार हैं। विष्णु लोक से कोई देव आत्मा का जन्म मरियम के गर्भ से फरिस्ते (देव) द्वारा हुआ था।

मामरे पर तीनों देवताओं के देखने का प्रमाण
(इसहाक के जन्म की प्रतिज्ञा)

इसहाक के जन्म की प्रतिज्ञा नामक अध्याय नं. 18 श्लोक नं. 1-5 में लिखा है कि अब्राहिम मम्रे (मामरे) के बांजों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया और उसने आँख उठाकर देखा तो तीन पुरुष उसके सामने खड़े हैं। उन्होंने अब्राहम की प्रार्थना पर खाना खाया तथा वृद्ध अवस्था में पुत्र होने का आशीर्वाद देकर चले गए तथा जाते समय कहा कि हम सदोम आदि नगरों का नाश करने जा रहे हैं। वहाँ के लोग अधर्मी हो गए हैं। अब्राहिम ने पूछा क्या आप अधर्मियों के साथ धर्मियों को भी मार डालोगे। प्रभु ने कहा यदि 100 व्यक्ति भी धर्मी होंगे तो भी हम उस नगरी का नाश नहीं करेंगे। ''सदोम आदि नगरों का विनाश'' नामक विषय में लिखा है कि उनमें से दो दूत ''सदोम'' में पहुँचे। सदोम में लूत (लोट) नामक व्यक्ति रहता था। उस गाँव के व्यक्ति बहुत निकम्मे थे। लूत (लोट) ने उन्हें आदर पूर्वक रोका। गाँव वालों ने उन फरिश्तों को आम व्यक्ति जान कर उनके साथ कुकर्म (नर से नर बलात्कार करना) करने के लिए बाहर निकलने को कहा। परन्तु लूत(लोट) ने कहा यह मेरे अतिथि हैं, मैं इन्हें आपको नहीं दे सकता। आप मेरी दो लड़कियाँ हैं, उनको ले लो। इस बात से प्रसन्न फरिश्तों ने सभी निकम्मे व्यक्तियों को अंधा कर दिया तथा लूत(लोट) को उसके परिवार सहित उस गाँव से निकाल कर पूरे गाँव को नष्ट कर दिया। इससे सिद्ध हुआ कि तीनों देवता हैं, जो ब्रह्म के आदेश से सबको किए कर्म का फल देते हैं।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि तीन देवता हैं। उनमें से कभी दो कभी एक अपने-अपने साधक के पास जाते हैं। यदि कोई तीनों का साधक है तो तीनों भी एक साथ जाते हैं, यदि कोई दो का साधक है तो दो भी दर्शन देते हैं। उपरोक्त प्रमाण से भी सिद्ध होता है कि तीनों देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) ही अपने पिता ब्रह्म के आदेशानुसार एक ब्रह्माण्ड में सर्व कार्य करते हैं। भक्ति भाव के व्यक्तियों की कर्म अनुसार रक्षा तथा दुष्कर्म करने वालों का कर्म अनुसार नाश करते हैं। ब्रह्म (अव्यक्त कभी सामने दर्शन न देने वाला) उपरोक्त तीनों फरिश्तों (देवताओं) द्वारा अपना आदेश नबियों के पास भिजवाता है तथा आकाशवाणी द्वारा या प्रेतवत प्रवेश करके स्वयं भी आदेश देता है। फरिश्ते तो उसका ज्यों का त्यों आदेश सुनाते हैं। आदेश में कोई परिवर्तन नहीं करते। इससे स्पष्ट हुआ कि पवित्र बाइबल तथा पवित्र कुरआन सहित चारों कतेबों का ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है।

विशेष :- कुरआन शरीफ (मजीद) शूरः अल् बकरा 2 आयत 21 से 33 तक उस पूर्ण परमात्मा की महिमा के विषय में वर्णन है तथा आयत 34 से अंत तक कुरआन का ज्ञान देने वाले ने अपनी महिमा बताई है तथा अपने ज्ञान अनुसार पूजा विधि बताई है। यह भी स्पष्ट किया है कि मैंने (कुरआन ज्ञान दाता ने) आदम तथा उसकी पत्नी हव्वा को स्वर्ग की वाटिका में ठहराया तथा उनको बीच वाले वृक्षों के फल छोड़ कर शेष वृक्षों के फल खाने को कहा। परन्तु उन्होंने सर्प के बहकाने से बीच वाले वृक्षों के फल खा लिये। मैंने उनको जमीन पर दुःखी होने के लिये भेज दिया। (सूरः अल बकरा-2 आयत 35 से 39 तक।)

कुरआन ज्ञान दाता अल्लाह ने स्पष्ट किया है कि मैंने ही हजरत मूसा को ''तौरत'' किताब उतारी थी तथा मूसा के लिए पत्थर से पानी के झरने निकाले थे।(सूरः अल् बकरा-2 आयत 41, 53, 60)। हम ही मूसा के बाद एक के बाद दूसरा पैगम्बर भेजते रहे तथा ईसा बिन मरियम को खुली निशानियाँ बख्शी तथा रूहुल कुदस(यानि जिब्रील) से उनको मदद दी। (सूरः अल् बकरा-2 आयत 87)

सार विचार :- उपरोक्त पवित्र कुरआन शरीफ के विवरण से स्पष्ट हुआ कि बाबा आदम से लेकर हजरत ईसा, हजरत अब्राहम, हजरत दाऊद, हजरत मूसा, हजरत मुहम्मद साहेब तक को पैगम्बर बना कर भेजने वाला खुदा(अल्लाह/प्रभु) एक ही है। उसी ने कुरआन शरीफ अर्थात् मजीद का ज्ञान वह्य के द्वारा स्वयं प्रेतवत प्रवेश करके या आकाशवाणी करके कहा है या फरिश्तों के माध्यम से हजरत मुहम्मद तक ज्यों का त्यों पहुँचाया है। वही खुदा सूरत फुर्कानि-25 आयत 52 से 58 तथा 59 में कह रहा है कि हे पैगम्बर (हजरत मुहम्मद) पूर्ण परमात्मा कबीर है, परन्तु काफिर लोग मेरी इस बात पर विश्वास नहीं करते। आप उनकी कही बातों को मत मानना मेरे द्वारा दिया

यह कुरआन शरीफ वाले ज्ञान की दलीलों पर विश्वास करना की कबीर अल्लाह उसी को अल्लाह अक्बरू कहते हैं। इस ज्ञान के समर्थन में काफिरों के साथ संघर्ष करना भावार्थ है कि काफिर लोग कहते हैं कि कबीर अल्लाह नहीं है। आप (हजरत मुहम्मद) कहना कि कबीर अल्लाह है। लड़ना नहीं है। उनकी बातों में नहीं आना है।(आयत 52) वह कबीर अल्लाह वही है जिसने छः दिन में सर्व ब्रह्माण्डों को रचा तथा सातवें दिन तख्त पर विराजा। वास्तव में वह अल्लाह कबीर रहमान(क्षमा शील) है। उसके विषय में मैं (कुरआन शरीफ/मजीद का ज्ञान दाता) नहीं जानता। उसकी खबर अर्थात् पूर्ण ज्ञान व भक्ति की विधि किसी बाखबर(तत्वदर्शी संत) से पूछो। (आयत 59)

उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध हुआ कि प्रभु एक नहीं अनेक हैं तथा तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) ही तीनों लोकों के प्राणियों को संस्कारवश लाभ व हानि तथा उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार के कारण हैं तथा ब्रह्म(काल) सर्व को धोखा देकर रखता है। पूर्ण परमात्मा कबीर ही सर्व सुखदायक, सर्व के पूजा के योग्य तथा पूर्ण मोक्ष दायक है।

पूज्य कबीर परमेश्वर बता रहे हैं कि मैंने उस मुल्ला जी से कहा कि जिस बाखबर (तत्त्वदृष्टा) संत के लिये आपका अल्लाह संकेत कर रहा है। उस तत्वदृष्टा संत द्वारा दिया ज्ञान ही पूर्ण मोक्ष दायक है। वह वास्तविक भक्ति मार्ग न तो हजरत मुहम्मद जी को प्राप्त हुआ, न आप मुल्ला, काजियों व पीरों को। इसलिए आज तक जो भी साधना आप कर रहे हो वह अधूरी है। केवल ब्रह्म (काल/ज्योति निरंजन) का फैलाया भ्रम जाल है। यह नहीं चाहता कि साधक मेरे जाल से निकल जाए। पूज्य कबीर परमेश्वर ने बताया वह बाखबर (अर्थात् तत्वदर्शी संत) मैं हूँ। आप मेरे से उपदेश लो तथा यह तत्व ज्ञान जो मैं आपको बताऊंगा अन्य भक्ति चाहने वालों को भी समझाओ। यह तो काल है जिसे वेदों में ब्रह्म (क्षर पुरुष/ज्योति निरंजन) कहा जाता है। पूर्ण परमात्मा कोई और है जिसे वेदों में कविर्देव कहा है तथा कुरआन शरीफ(मजीद) में कबीरन्, कबीरा आदि कहा है तथा जिसे हजरत मुहम्मद जी ने अल्लाहु अकबर कहा है। वह कबीर अल्लाह मैं हूँ। आप सर्व मेरी आत्मा हो। आपको काल (ब्रह्म) ने भ्रमित किया है।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर ने आगे बताया - यह वार्ता सुनकर वह मुल्ला मुझसे अति नाराज हो गया तथा आगे से उसकी कथा में न आने को कहा। पूज्य कबीर परमेश्वर से उपरोक्त विवरण जानकर बादशाह सिंकदर लोधी मुसलमान ने अपने धार्मिक गुरू शेखतकी से कहा ''पीर जी, क्या कुरआन शरीफ में महाराज कबीर साहेब जी द्वारा बताया विवरण है?'' शेखतकी ने कुरआन शरीफ में सूरत फुरकानी 25 आयत 52 से 59 को ध्यान से पढ़ा तथा सत्य को जाना परन्तु मान वश कह दिया कि कबीर जी तो झूठा है। यह क्या जाने पवित्र कुरआन शरीफ के गूढ रहस्य को। यह तो अनपढ़ है। यह कहकर अति नाराजगी व्यक्त करता हुआ उठ कर अपने कमरे में चला गया। बादशाह सिकंदर लोधी भी कुरआन शरीफ को सुना करता था तो उसे याद आया कि ऐसा वर्णन अवश्य आता है। फिर भी भक्ति मार्ग तथा अरबी भाषा का ज्ञान न होने के कारण पूर्ण विश्वास नहीं हुआ। परन्तु हजरत मुहम्मद जी के जीवन चरित्र से पूर्ण परिचित था। उससे बहुत प्रभावित हुआ तथा कहा कि सच-मुच हजरत मुहम्मद जी के जीवन में कष्ट ही कष्ट रहे हैं।

बादशाह सिकंदर की शंकाओं का समाधान

प्रश्न - बादशाह सिकंदर लोधी ने कबीर अल्लाह से पूछा, हे परवरदिगार! (क). यह ब्रह्म(काल) कौन शक्ति है? (ख). यह सभी के सामने क्यों नहीं आता?

उत्तर - परमेश्वर कबीर साहेब जी ने सिकंदर लोधी बादशाह के प्रश्न 'क-ख' के उत्तर में सृष्टि रचना सुनाई। (कृपया देखें इसी पुस्तक के पृष्ठ 183 से 228 पर)

(ग). क्या बाबा आदम जैसे महापुरुष भी इसी के जाल में फंसे थे?

ग के उत्तर में बताया कि पवित्र बाइबल में उत्पत्ति विषय में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा मनुष्यों तथा अन्य प्राणियों की रचना छः दिन में करके तख्त अर्थात् सिंहासन पर चला गया। उसके बाद इस लोक की बागडोर ब्रह्म ने संभाल ली। इसने कसम खाई है कि मैं सब के सामने कभी नहीं आऊँगा। इसलिए सभी कार्य अपने तीनों पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) के द्वारा करवाता रहता है या स्वयं किसी के शरीर में प्रवेश करके प्रेत की तरह

बोलता है या आकाशवाणी करके आदेश देता है। प्रेत, पित्तर तथा अन्य देवों (फरिश्तों) की आत्माऐं भी किसी के शरीर में प्रवेश करके अपना आदेश करती हैं। परन्तु श्रद्धालुओं को पता नहीं चलता कि यह कौन शक्ति बोल रही है। पूर्ण परमात्मा ने माँस खाने का आदेश नहीं दिया। पवित्र बाइबल उत्पत्ति विषय में सर्व प्राणियों के खाने के विषय में पूर्ण परमात्मा का प्रथम तथा अन्तिम आदेश है कि मनुष्यों के लिए फलदार वृक्ष तथा बीजदार पौधे दिए हैं जो तुम्हारे खाने के लिए हैं तथा अन्य प्राणियों को जिनमें जीवन के प्राण हैं उनके लिए छोटे-छोटे पेड़ अर्थात् घास, झाड़ियाँ आदि खाने को दिए हैं। इसके बाद पूर्ण प्रभु का आदेश न पवित्र बाइबल में है तथा न किसी कतेब (तौरत, इंजिल, जबूर तथा कुरआन शरीफ) में है। इन कतेबों में ब्रह्म तथा उसके फरिश्तों तथा पित्तरों व प्रेतों का मिला-जुला आदेश रूप ज्ञान है।

(घ). क्या बाबा आदम से पहले भी सृष्टि थी?

उत्तर - सूर्यवंश में राजा नाभिराज हुआ। उसका पुत्र राजा ऋषभदेव हुआ जो जैन धर्म का प्रवर्तक तथा प्रथम तीर्थंकर माना जाता है। वही ऋषभदेव ही बाबा आदम हुआ।(यह विवरण जैन धर्म की पुस्तक ''आओ जैन धर्म को जानें'' के पृष्ठ 154 पर लिखा है।)

इससे स्पष्ट है कि बाबा आदम से भी पूर्व सृष्टि थी। पृथ्वी का अधिक क्षेत्र निर्जन था। एक दूसरे क्षेत्र के व्यक्ति भी आपस में नहीं जानते थे कि कौन कहाँ रहता है। ऐसे स्थान पर ब्रह्म ने फिर से मनुष्य आदि की सृष्टि की। उत्पत्ति ऐसे स्थान पर की जो अन्य व्यक्तियों से कटा हुआ था। काल के पुत्र ब्रह्मा के लोक से यह पुण्यात्मा (बाबा आदम) अपना कर्म संस्कार भोगने आया था। फिर शास्त्र अनुकूल साधना न मिलने के कारण पित्तर योनि को प्राप्त होकर पित्तर लोक में चला गया। बाबा आदम से पूर्व फरिश्ते थे। पवित्र बाइबल ग्रन्थ में लिखा है।

(ङ). यदि अल्लाह का आदेश मनुष्यों को माँस न खाने का है तो बाइबल तथा कुरआन शरीफ में कैसे लिखा गया?

उत्तर - पवित्र बाइबल में उत्पत्ति विषय में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा ने छः दिन में सृष्टि रचकर सातवें दिन विश्राम किया। उसके बाद बाबा आदम तथा अन्य नबियों को अव्यक्त अल्लाह (काल) के फरिश्ते तथा पित्तर आदि ने अपने आदेश दिए हैं। जो बाद में कुरआन शरीफ तथा बाइबल में लिखे गए हैं।

(च). अव्यक्त प्रभु काल ने यह सर्व वास्तविक ज्ञान छुपाया है तो पूर्ण परमात्मा का संकेत किसलिए किया?

उत्तर - ज्योति निरंजन (अव्यक्त माना जाने वाला प्रभु) पूर्ण परमात्मा के डर से यह नहीं छुपा सकता कि पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है। यह पूर्ण प्रभु की वास्तविक पूजा की विधि से अपरिचित है। इसलिए यह केवल अपनी साधना का ज्ञान ही प्रदान करता है तथा महिमा गाता है पूर्ण प्रभु की भी।

दिल्ली के सम्राट सिकंदर ने सोचा कि ऐसे भगवान को दिल्ली में ले चलता हूँ और हो सकता है वहाँ के व्यक्ति भी इस परमात्मा के चरणों में आकर एक हो जाऐं। यह हिन्दू और मुसलमान का झगड़ा समाप्त हो जाएँ। कबीर साहेब के विचार कोई सुनेगा तो उसका भी उद्धार होगा। बादशाह सिकंदर लोधी ने प्रार्थना की कि ''हे अल्लाह की जात! हे परवरदिगार! एक बार हमारे साथ दिल्ली चलने की कृपा करो।'' कबीर साहेब ने सिकंदर लोधी से कहा कि पहले आप मेरे से उपदेश लो फिर आपके साथ चल सकता हूँ। ऐसे नहीं जाऊँगा। सिकंदर ने कहा कि दाता जैसे आप कहोगे वैसे ही करूँगा। कबीर साहेब ने कहा कि एक तो हिन्दू से मुसलमान नहीं बनाएगा। सिकंदर ने कहा कि नहीं बनाऊँगा। कोई जीव हिंसा नहीं करवाएगा। सिकंदर ने कहा प्रभु मैं जीव हिंसा नहीं करूंगा तथा न किसी को जीव हिंसा करने के लिए कहूँगा। परन्तु ये मुल्ला तथा काजी मेरे बस से बाहर हैं। कबीर साहेब ने कहा ठीक है आप अपने मुँख से नहीं कहोगे। सिकंदर ने कहा कि ठीक है दाता अर्थात् सारे नियम बता दिए और सिकंदर ने सारे स्वीकार कर लिए। परमश्ेवर कबीर साहेब जी से दीक्षा ग्रहण कर ली तथा सर्व नियमों को आजीवन पालन करने का प्रण किया।

तब सतगुरुदेव सिकंदर लोधी को प्रथम मंत्र प्रदान करके वहाँ से उसके साथ दिल्ली को रवाना हुए। बादशाह सिकंदर ने परमेश्वर कबीर साहेब को अपने साथ हाथी पर अम्बारी में बैठाया। उसमें राजा के अतिरिक्त कोई बैठ नहीं सकता था। परन्तु सिकंदर को अल्लाह दिखाई दिया जिसने उसकी असाध्य बीमारी से रक्षा की। उसके सामने मुर्दा (स्वामी रामानन्द) जीवित कर दिया।

जब सिकंदर लौधी के धार्मिक गुरु शेखतकी को पता चला कि राजा स्वस्थ हो गया और इसके सामने कबीर परमेश्वर ने स्वामी रामानन्द जी का कटा शीश जोड़ कर जीवित कर दिया। उसने सोचा कि अब मेरे नम्बर कटेंगे अर्थात् मेरी महिमा कम हो जाएगी। मेरी कमाई तथा प्रभुता गई। शेखतकी को साहेब कबीर से ईर्ष्या हो गई। वह विचार करने लगा कि किसी प्रकार इसको नीचा दिखाऊँ ताकि सिकंदर के हृदय से यह उतर जाए। मेरी प्रभुता बनी रह जाए। राजा के साथ सभी वहाँ से दिल्ली के लिए चल पड़े। रास्ते में रात्री में एक दरिया के किनारे रूक गए। सोचा कि रात्रि में विश्राम करेंगे। सुबह चलने का इरादा करके वहाँ पर पड़ाव लगा दिया।

मृत लड़के कमाल को जीवित करना

शेखतकी महाराजा सिकंदर से मुख चढ़ाए फिर रहा था। सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है पीर जी? शेखतकी ने कहा कि क्या तुझे बात नहीं मालूम? सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है? शेखतकी ने कहा कि यह तेरे साथ कौन है? सिकंदर ने कहा कि ये तो भगवान (अल्लाह) है। शेखतकी ने कहा कि अच्छा अल्लाह अब आकार में धरती पर आने लग गया। अल्लाह कैसे है? सिकंदर ने कहा कि पहले तो अल्लाह ऐसे कि मेरा रोग ऐसा था कि किसी से भी ठीक नहीं हो पा रहा था। इस कबीर प्रभु ने हाथ ही लगाया था, मैं स्वस्थ हो गया। शेखतकी ने कहा कि ये जादूगर होते हैं। सिकंदर ने फिर कहा दूसरे अल्लाह ऐसे हैं कि मैंने उनके गुरुदेव का सिर काट दिया था और उन्होंने उसे मेरी आँखों के सामने तुरंत जीवित कर दिया।

शेखतकी ने कहा कि अगर यह कबीर अल्लाह है तो मैं इसकी परीक्षा लूँगा। यदि कबीर जी मेरे सामने कोई मुर्दा जीवित करे तो इसे अल्लाह मान लूँगा। नहीं तो दिल्ली जाकर मैं पूरे मुसलमान समाज को कह दूँगा कि यह राजा काफिर हो गया है।

सिकंदर लोधी डर गया कि कहीं ऐसा न हो कि यह जाते ही राज पलट दे। (राज को देने वाला पास बैठा है और उस मूर्ख से डर लगता है।) राजा ने शेखतकी से कहा कि आप कैसे प्रसन्न होंगे? शेखतकी ने कहा कि मैं तब प्रसन्न होऊँगा जब मेरे सामने यह कबीर कोई मुर्दा जीवित कर दे। राजा ने अपनी समस्या कबीर जी को बताई कि मेरे पीर ने कहा है कि यदि कबीर मेरे सामने मुर्दा जीवित करे तो मैं इनकी सब बातें मानने को तैयार हूँ। अन्यथा सब मुसलमानों को मेरे विरूद्ध कर देगा। मेरे राज को भी खतरा पैदा कर देगा।

कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। (कबीर साहेब ने सोचा कि यह शेखतकी अनाड़ी आत्मा है। अगर यह मेरी बात मान गया तो आधे से ज्यादा मुसलमान इसकी बात स्वीकार करते हैं क्योंकि यह दिल्ली के बादशाह का पीर है और अगर यह सही ढ़ंग से मुसलमानों को बता देगा तो भोली आत्माए. सत्य साधना करके कल्याण करवा लेंगी क्योंकि अपने पीर की बात पर शीघ्र विश्वास कर लेते हैं।

इसलिए कहा कि शेखतकी! ढूँढ़ ले कोई मुर्दा। सुबह एक 10-12 वर्ष की आयु के लड़के का शव पानी में तैरता हुआ आ रहा था। शेखतकी ने कहा कि वह आ रहा है मुर्दा, इसे जिन्दा कर दो। कबीर साहेब ने कहा पहले आप प्रयत्न करो, कहीं फिर पीछे नम्बर बनाओ। उपस्थित मन्त्रियों तथा सैनिकों ने कहा कि पीर जी आप कोशिश करके देख लो।

शेखतकी जन्त्र-मन्त्र करता रहा। इतने में वह मुर्दा तीन फर्लांग आगे चला गया। शेखतकी ने कहा कि यह कबीर चाहता था कि यह बला सिर से टल जाए। कहीं मुर्दे जीवित होते हैं? मुर्दे तो कयामत के समय ही जीवित होते हैं। कबीर साहेब बोले शेख जी! आप बैठ जाओ, शांति करो। कबीर साहेब ने उस मुर्दे को हाथ से वापिस आने का संकेत किया। बारह वर्षीय बच्चे का मृत शरीर दरिया के पानी के बहाव के विपरीत चलकर कबीर जी के सामने आकर रूक गया। पानी की लहर नीचे-नीचे जा रही और शव ऊपर रूका था। कबीर साहेब ने कहा कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर हुक्म से मुर्दे में प्रवेश कर और बाहर आ। कबीर साहेब ने इतना कहा ही था कि शव में कम्पन हुई तथा जीवित हो कर बाहर आ गया। कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। "बोलो कबीर परमेश्वर की जय"

सर्व उपस्थित जनों ने कहा कि कबीर साहेब ने तो कमाल कर दिया। उस लड़के का नाम कमाल रख दिया। लड़के को अपने साथ रखा। अपने बच्चे की तरह पालन-पोषण किया और नाम दिया। उसके बाद दिल्ली

में आ गए। सभी को पता चला कि यह लड़का जो इनके साथ है यह परमेश्वर कबीर साहेब ने जीवित किया है। दूर तक बात फैल गई। शेखतकी की तो माँ सी मर गई सोचा यह कबीर अच्छा दुश्मन हुआ। इसकी तो और ज्यादा महिमा हो गई।

शेखतकी की ईर्ष्या बढ़ती ही चली गई। उसकी तेरह वर्षीय लड़की को मृत्यु पश्चात् कब्र में जमीन में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा यदि कबीर मेरी लड़की को जो कब्र में दफना रखी है। जीवित करेगा तो मैं इसे अल्लाह मान लूँगा।

शेख तकी द्वारा कबीर जी की अन्य परीक्षाएँ

कमाली के पहले के जन्म

(पूर्ण मुक्ति पूर्ण संत बिना असंभव)

सतयुग में कमाली वाला जीव विद्याधर पण्डित की पत्नी दीपिका थी। फिर त्रेतायुग में ऋषि वेदविज्ञ (जो विद्याधार वाली ही आत्मा थी) की पत्नी सूर्या थी। सत्ययुग तथा त्रेता में परमात्मा कबीर जी बालक रूप में इन्हीं को प्राप्त हुए थे। तत्पश्चात् अन्य जीवन धारण किए तथा कलयुग में मुसलमान धर्म में राबी लड़की का जन्म हुआ। फिर बंसुरी नामक लड़की का जन्म हुआ। उसके पश्चात् एक जीवन वेश्या रूप में जीया। फिर कमाली नामक शेखतकी की लड़की हुई। राबिया के प्रमाण में साखियाँ संत गरीबदास साहेब द्वारा रचित ग्रंथ साहेब से पारख के अंग की वाणी नं. 56 से 59 :-

गरीब, सुल्तानी मक्के गया, मक्का नहीं मुकाम। गया रांड के लेन कूँ, कहै अधम सुल्तान।।56।।
गरीब, राबिया परसी रब्ब स्यौं, मक्के की असवार। तीन मंजिल मक्का गया, बीबी के दीदार।।57।।
गरीब, फिर राबिया बंसरी बनी, मक्के चढ़ाया शीश। पूर्बले संस्कार कुछ, धन्य सतगुरु जगदीश।।58।।
गरीब, बंसरी से वेश्या बनी, शब्द सुनाया राग। बहुर कमाली पुत्री, युग युग त्याग बैराग।।59।।

प्रमाण के लिए संत गरीबदास साहेब द्वारा रचित ग्रंथ साहेब से अचला के अंग की वाणी नं. 363 से 368 तक :-

गरीब, राबी कूँ सतगुरु मिले, दीना अपना तेज। ब्याही एक सहाब से, बीबी चढ़ी न सेज।।363।।
गरीब, राबी मक्के कूँ चली, धर्या अलह का ध्यान। कुत्ती एक प्यासी खड़ी, छूटे जात हैं प्राण।।364।।
गरीब, केश उपारे शीश के, बाटी रस्सी बीन। जाकै वस्त्र बांध कर, जल काढ्या प्रवीन।।365।।
गरीब, सुनही कूँ पानी पिया, उतरी अर्श आवाज। तीन मंजिल मक्का गया, बीबी तुम्हरे काज।।366।।
गरीब, बीबी मक्के पर चढ़ी, राबी रंग अपार। एक लाख अस्सी जहां, देखै सब संसार।।367।।
गरीब, राबी पाटड़ा घाल कर, किया जहां अस्नान। एक लाख अस्सी बहे, मंगर मल्या सुलतान।।368।।

{उपरोक्त वाणियों में निम्न कथा का संक्षिप्त वर्णन है।}

एक राबी नाम की लड़की मुसलमान धर्म में उत्पन्न हुई। जब उसकी आयु 16 वर्ष की थी तो उसे पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब मिले। प्रभु में बहुत प्रेम था। रोजा रखना, नमाज करना, ईद मनाना जो परम्परागत साधना धर्म अनुसार थी, वह पूरी लगन से किया करती थी।

तब कबीर साहेब ने बताया बेटी यह साधना प्रभु पाने की नहीं है। सारी सृष्टि रचना सुनाई तथा सत भक्ति का मार्ग बताया। उस लड़की राबिया ने उपदेश ले लिया। फिर चार वर्ष सत साधना करके समाज के दबाव से लोक-लाज के कारण सतमार्ग छोड़ दिया तथा वही परम्परागत साधना पुनः शुरू कर दी। उस लड़की की आस्था प्रभु में इतनी प्रबल थी कि शादी से मना कर दिया। माता-पिता रोने लग गए कि जवान लड़की को घर पर कैसे रखें? माता-पिता को आवश्यकता से अधिक परेशान देखकर राबिया ने शादी की स्वीकृति दे दी। उस लड़की राबिया की शादी एक बहुत बड़े साहेब (अधिकारी) से हुई। परन्तु अपने पति से स्पष्ट कह दिया कि मैं सन्तान उत्पत्ति नहीं करूँगी। मैंने तो मेरे माता-पिता के विशेष दबाव तथा समाज शर्म के कारण शादी की है। यदि आप मेरी बात स्वीकार नहीं करोगे तो मैं आत्महत्या कर लूंगी। यह मेरा अन्तिम फैसला समझो। मैं केवल प्रभु भक्ति करके आत्म कल्याण चाहती हूँ।

राबिया के पति ने सोचा क्यों मैं इस भक्तात्मा को दुःखी करूं और पाप का भागी बनूं। सोच विचार करके

कहा कि राबिया जिस प्रकार आपको समाज से डर था ऐसे ही मेरा भी अपना एक समाज है। आपको समाज की दृष्टि में मेरी पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा। मेरी दृष्टि में आप मेरी बहन होंगी। तुझे घर से बाहर नहीं जाने दूँगा। आप भजन(भक्ति) करो। कहो तो आपके लिए दो नौकरानी छोड़ देता हूँ। राबिया बहुत प्रसन्न हुई तथा कहा कि हे प्रभु ! आपने मेरी बड़ी सुनी। उस दिन के बाद राबिया मुसलमान धर्म में प्रचलित साधना करती रही।

मुसलमान धर्म में जन्म था। ईद और बकरीद, रोजे आदि श्रद्धा से करती थी। जब पचास वर्ष से ऊपर की आयु हो गई, तब अपने पति से कहा कि कहते हैं कि मक्का में जाना अति आवश्यक होता है। अब न जाने प्राण कब निकल जाऐं। एक बार मैं हज करना चाहती हूँ। उसके पति ने कहा कि आप जा सकती हो। कहो तो आपके लिए कोई ऊँट की व्यवस्था करवा देता हूँ। राबिया ने कहा कि मैं पैदल यात्रा करूँगी। अन्य भी बहुत यात्री जा रहे हैं। उसके पति ने कहा कि आप जा सकती हो।

राबिया ने मक्के में हज के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में देखा एक कुतिया बहुत प्यासी थी। वह कुतिया कभी राबिया के पैरों की ओर दौड़ कर आ रही थी, कभी कुएँ की ओर जा रही थी। राबिया समझ गई कि यह कुतिया बहुत प्यासी है। साथ में इसके छोटे-छोटे बच्चे भी नजर आ रहे थे। इसको जल प्राप्त नहीं हुआ तो ये प्राण त्याग जाएगी, इसके बच्चे भी मर जाएँगे। भक्तात्मा में दया बहुत होती है। राबिया कुएँ पर गई। वहाँ देखा न वहाँ बाल्टी थी और न ही कोई रस्सा था। आसपास कोई गाँव भी नजर नहीं आ रहा था।

राबिया ने आव देखा न ताव, अपने सिर के बालों को उखाड़ कर एक लम्बी रस्सी बनाई। अपने ही कपड़े (क्योंकि उस समय मोटे खादी के कपड़े पहना करते थे।) उतार कर रस्सी से बाँध कर कुएँ में जल से भिगोकर बाहर निकाले और एक मटके का टूटा हुआ आधा हिस्सा वही पर रखा था उसको भर दिया।

कुतिया ने बहुत शीघ्रता से पानी पीया। राबिया का सारा शरीर लहु-लुहान हो गया। अपने कपड़ों से सारे शरीर को पोंछ कर और उन कपड़ों को धोकर कर पहन लिया तथा जैसे ही चलने के लिए तैयार हुई, इतने में वह मक्का ज्यों का त्यों मकान (पवित्र मस्जिद) वहाँ से उठकर राबिया के लिए उस कुएँ के पास आ गया। आकाश वाणी हुई कि ''हे भक्तमति तेरे लिए वह मक्का तीन मंजिल अर्थात् 60 मील से उड़ कर आया है। आप इस में प्रवेश करो। राबिया ने उसमें प्रवेश किया। मक्का वहाँ से उठा। वायुयान की तरह उड़ कर वापिस यथा स्थान पर आ गया। इस लीला को देख कर समाज में एक विशेष चर्चा हो गई कि भक्ति हो तो राबिया जैसी मुसलमान समाज में (मीरा बाई की तरह) राबिया का नाम आदर के साथ लिया जाने लगा। सभी उसका विशेष सत्कार करने लगे।

कुछ समय पश्चात् राबिया ने प्राण त्याग दिए। दूसरा जन्म मुसलमान धर्म में एक बंसुरी नाम की लड़की का हुआ। क्योंकि जहाँ जीव के संस्कार होते हैं वहीं उसकी उत्पत्ति होती रहती है। इतनी अच्छी धार्मिक वृत्ति की लड़की बहुत अच्छे प्रभु के गुण-गान करती थी और अपनी धार्मिक पूजा मुसलमान धर्म के अनुसार पूरी आयु करती रही। उस लड़की ने भी लोकवेद के आधार से यही सुना था कि यदि मक्का में प्राण निकल जाएँ तो उसके लिए जन्नत का द्वार खुल जाता है यानि वह जीव सीधा स्वर्ग (बहिश्त) जाता है।

वृद्ध होने पर हज करने मक्का में गई। सोचा कि इससे अच्छा सुअवसर और क्या होगा? यदि मक्का में प्राण निकल जाएं और स्वर्ग प्राप्ति हो जाए। लड़की ने अपना सिर काट कर मक्के में चढ़ा दिया। सारे मुसलमान समाज में इस बात की विशेष चर्चा हो गई कि कुर्बानी प्रभु के नाम पर ऐसे होती है। बंसुरी तो जन्नत में जाएगी।

(अब यहाँ नादान व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि कुर्बानी अपनी करनी चाहिए। प्रभु के नाम पर बकरे और गाय या मुर्गे की नहीं। वास्तव में कुर्बानी प्रभु चरणों में समर्पण तथा सत्य भक्ति होती है। शीश काट देने तथा अविधि पूर्वक साधना करने से मुक्ति नहीं होती। यह तो काल की भूल–भुलैया है। कुर्बानी गर्दन काटने से नहीं होती, समर्पण से होती है। प्रभु के निमित्त हृदय से समर्पण कर दे कि हे प्रभु तन भी तेरा, धन भी तेरा, यह दास या दासी भी तेरी, यह कुर्बानी प्रभु को पसंद है। हिंसा, हत्या प्रभु कभी पसंद नहीं करता।)

उसके बाद उसी लड़की राबिया का तीसरा जन्म अन्य समाज में हुआ। कर्म आधार पर वैश्या बनी। पूर्ण परमेश्वर (सतपुरूष कबीर साहेब) ही जीव के पाप कर्म काट सकता है अन्य नहीं काट सकते। जैसे हिन्दुस्तान का राष्ट्रपति फांसी की सजा को भी क्षमा कर सकता है, अन्य सजाएं तो कहना ही क्या है? अन्य कोई भी फांसी

की सजा को क्षमा नहीं कर सकता। इसी प्रकार (पूर्ण परमात्मा) परम शक्तियुक्त कबीर साहेब हमारे सर्व दुःखों का निवारण कर सकते हैं। अन्य कोई खुदा किस्मत में लिखे कष्ट को समाप्त नहीं कर सकता।

(शेष कथा)

राबिया वाली आत्मा ने वैश्या का जीवन पूर्ण करके प्राण त्याग दिए। उसी राबिया का चौथा मानव जन्म शेखतकी, पीर के यहाँ लड़की के रूप में हुआ। जो सिकंदर लोधी का धार्मिक गुरु दिल्ली में था बारह वर्ष की आयु पूरी करके वह लड़की शरीर त्याग गई। उसको कब्र में दबा दिया गया। कबीर साहेब कहते हैं कि :-

गरीब, जो जन हमरी शरण है, ताका हूँ मैं दास। गैल–गैल लाग्या फिरूँ, जब तक धरणी आकाश।।

गरीब, ज्यौं बच्छा गऊ की नजर में, यौं साईं को संत। भक्तों के पीछै फिरै, भक्त वत्सल भगवंत।।

उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति अर्थात् कविर्देव अपनी भक्ति जो स्वयं सन्त रूप में आकर बताता है उस सतगुरु रूप में प्रकट कबीर साहेब के बताए अनुसार सत भक्ति इस लड़की ने चार-पाँच वर्ष की थी। उसके बाद त्याग दी थी। उस भक्ति के परिणाम स्वरूप इसको लगातार तीन मनुष्य शरीर प्राप्त हुए। उसका आगे मनुष्य जीवन का संस्कार शेष नहीं था। अब इस आत्मा ने चौरासी लाख योनियों में कष्ट पर कष्ट उठाना था। कबीर प्रभु दयालु हैं। कारण बनाया, उस लड़की को वहाँ कब्र से जीवित करके अपनी शरण में ले करके कमाली नाम रखा और इस प्यारी बिटिया को उपदेश दिया और मुक्ति प्रदान की। इसी प्रकार हमने यह सोचना होगा कि हम जड़ों में पानी डालेंगे तो पौधा हरा-भरा होगा। हम पत्ते और टहनियों की पूजा कर रहे हैं ये गलत है।

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष है। इसकी ऊपर को जड़ें परम अक्षर पुरुष सतपुरूष पूर्ण ब्रह्म हैं और जमीन से बाहर जो तना दिखाई देता है वह अक्षर पुरूष (परब्रह्म) समझो। उसके बाद तने के एक मोटी डार होती है। उस डाल को ज्योति निरंजन (ब्रह्म) समझो। उस डार की फिर तीन शाखाएँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश समझो और फिर इनके ये टहनियाँ देवी देवता और पत्ते संसार समझो। ऐसा कबीर साहेब ने पूरी सृष्टि रचना को एक ही दोहे में सुना दिया।

शेखतकी की मृत लड़की कमाली को जीवित करना

शेखतकी ने देखा कि यह कबीर तो किसी प्रकार भी काबू नहीं आ रहा है। तब शेखतकी ने जनता से कहा कि यह कबीर तो जादूगर है। ऐसे ही जन्त्र-मन्त्र दिखाकर इसने बादशाह सिकंदर की बुद्धि भ्रष्ट कर रखी है। सारे मुसलमानों से कहा कि तुम मेरा साथ दो, वरना बात बिगड़ जाएगी। भोले मुसलमानों ने कहा पीर जी हम तेरे साथ हैं, जैसे तू कहेगा ऐसे ही करेंगे। शेखतकी ने कहा इस कबीर को तब प्रभु मानेंगे जब मेरी लड़की को जीवित कर देगा जो कब्र में दबी हुई है।

पूज्य कबीर साहेब से प्रार्थना हुई। कबीर साहेब ने सोचा यह नादान आत्मा ऐसे ही मान जाए। {क्योंकि ये सभी जीवात्माऐं कबीर साहेब के बच्चे हैं। यह तो काल ने (मजहब) धर्म का हमारे ऊपर कवर चढ़ा रखा है। एक-दूसरे के दुश्मन बना रखे हैं।} शेखतकी की लड़की का शव कब्र में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा कि यदि मेरी लड़की को जीवित कर दे तो हम इस कबीर को अल्लाह स्वीकार कर लेंगे और सभी जगह ढिंढ़ोरा पिटवा दूँगा कि यह कबीर जी भगवान है। कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। वह दिन निश्चित हुआ। कबीर साहेब ने कहा कि सभी जगह सूचना दे दो, कहीं फिर किसी को शंका न रह जाए। हजारों की संख्या में वहाँ पर भक्त आत्मा दर्शनार्थ एकत्रित हुई। कबीर साहेब ने कब्र खुदवाई। उसमें एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की का शव रखा हुआ था। कबीर साहेब ने शेखतकी से कहा कि पहले आप जीवित कर लो। सभी उपस्थित जनों ने कहा है कि महाराज जी यदि इसके पास कोई ऐसी शक्ति होती तो अपने बच्चे को कौन मरने देता है? अपने बच्चे की जान के लिए व्यक्ति अपना तन-मन-धन लगा देता है। हे दीन दयाल आप कृपा करो। पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहा कि हे शेखतकी की लड़की जीवित हो जा। तीन बार कहा लेकिन लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी ने तो भंगड़ा पा दिया। नाचे-कूदे कि देखा न पाखण्डी का पाखंड पकड़ा गया। कबीर साहेब उसको नचाना चाहते थे कि इसको नाचने दे।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना ये।।

मान-बड़ाई, ईर्ष्या की बीमारी बहुत भयानक है। अपनी लड़की के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर साहेब की पराजय की खुशी मना रहा था। कबीर साहेब ने कहा कि बैठ जाओ महात्मा जी, शान्ति रखो। कबीर साहेब ने आदेश दिया कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर आदेश से इस शव में प्रवेश करो और बाहर आओ। कबीर साहेब का कहना ही था कि इतनी देर में शव में कम्पन हुआ और वह लड़की जीवित होकर बाहर आई, कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। (बोलो सतगुरु देव की जय।)

उस लड़की ने डेढ घण्टे तक कबीर साहेब की कृपा से प्रवचन किए। कहा हे भोली जनता ये भगवान आए हुए हैं। पूर्ण ब्रह्म अन्नत कोटि ब्रह्माण्ड के परमेश्वर हैं। क्या तुम इसको एक मामूली जुलाहा(धाणक) मान रहे हो। हे भूले-भटके प्राणियों ये आपके सामने स्वयं परमेश्वर आए हैं। इनके चरणों में गिरकर अपने जन्म-मरण का दीर्घ रोग कटवाओ और सत्यलोक चलो। जहाँ पर जाने के बाद जीवात्मा जन्म-मरण के चक्कर से बच जाती है। कमाली ने बताया कि इस काल के जाल से बन्दी छोड़ कबीर साहेब के बिना कोई नहीं छुटवा सकता। चाहे हिन्दू पद्धति से तीर्थ-व्रत, गीता-भागवत, रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद्ध, वेदों का पाठ करना, राम, कृष्ण, ब्रह्मा-विष्णु-शिव, शेराँवाली(आदि माया, आदि भवानी, प्रकृति देवी), ज्योति निरंजन की उपासना भी क्यों न करें, जीव चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में कष्ट से नहीं बच सकता और मुसलमान पद्धति से भी जीव काल के जाल से नहीं छूट सकता। जैसे रोजे रखना, ईद-बकरीद मनाना, पाँच वक्त नमाज करना, मक्का-मदीना में जाना, मस्जिद में बंग देना आदि सर्व व्यर्थ है। कमाली ने सर्व उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए अपने पिछले जन्मों की कथा सुनाई जो उसे कबीर साहेब की कृपा से याद हो आई थी। जो कि आप पूर्व पढ़ चुके हो।

कबीर साहेब ने कहा कि बेटी अपने पिता के साथ जाओ। वह लड़की बोली मेरे वास्तविक पिता तो आप हैं। यह तो नकली पिता है। इसने तो मैं मिट्टी में दबा दी थी। मेरा और इसका हिसाब बराबर हो चुका है। सभी उपस्थित व्यक्तियों ने कहा कि कबीर परमेश्वर ने कमाल कर दिया। कबीर साहेब ने लड़की का नाम कमाली रख दिया और अपनी बेटी की तरह रखा और नाम उपदेश दिया। उपस्थित व्यक्तियों ने हजारों की संख्या में कबीर परमेश्वर से उपदेश ग्रहण किया। अब शेखतकी ने सोचा कि यह तो और भी बात बिगड़ गई। मेरी तो सारी प्रभुता गई।

कबीर साहेब को सरसों के गर्म तेल के कड़ाहे में डालना

अब शेखतकी ने देखा कि कबीर साहेब जी की तो और अधिक महिमा हो गई। वह फिर साहेब को किसी न किसी प्रकार नीचा दिखाने की योजना बनाने लगा। इतनी लीला देखकर भी शेख तकी नीच की आँखें नहीं खुली। परमात्मा सामने थे, परन्तु मान-बड़ाई वश स्वीकार नहीं कर रहा था।

कुछ दिनों पश्चात् फिर शेख तकी ने मुसलमानों को इकट्ठा किया और कहा कि यह कबीर कोई जादूगर है। हम इसकी एक और परीक्षा लेंगे। हजारों की संख्या में मुसलमान शेखतकी के साथ राजा सिकंदर के पास गए तथा कहा कि हम इस कबीर को उबलते सरसों के तेल के कड़ाहे में डालेंगे। यदि यह नहीं मरा तो हम इसको भगवान मान लेंगे। सिकंदर लोधी घबरा गया कि कहीं ये मेरे राज को न पलट दें। कबीर साहेब के पास गया और प्रार्थना की कि महाराज जी मैं आपको यहाँ पर लाया तो था सेवा करने के लिए। लेकिन मैंने तो आपको दुःखी कर दिया दाता। कबीर साहेब ने पूछा कि क्या बात है राजन्? सिकंदर लौधी ने कहा कि साहेब आप तो जानीजान हो, शेखतकी ऐसे-ऐसे कह रहा है। कबीर साहेब जी बोले राजन् कोई बात नहीं, इन्होंने तो मुझे खत्म करना ही है। आज नहीं तो कल करेंगे। आज ही टंटा कट जाए तो बहुत अच्छा। कबीर साहेब ने कहा कि कह दे उनको कि तेल गर्म कर लेंगे। कबीर साहेब जी सोचते थे कि यह नादान शेखतकी ऐसे ही मान जाए। सिकंदर लोधी ने शेखतकी से कहा कि कर लो तेल गर्म।

शेखतकी ने बहुत मोटी-मोटी लकड़ी लगा कर तेल के कड़ाहे को बहुत उबाल दिया और कहा इस कबीर को उठा कर इसमें डाल दो। कबीर साहेब बोले कि शेख जी यह कष्ट भी क्यों कर रहे हो, मैं स्वयं ही बैठ जाऊँगा। पूज्य कबीर साहेब जी उस उबलते तेल के कड़ाहे में प्रवेश कर गए। केवल गर्दन बाहर दिखाई दे रही थी। शेष शरीर उस उबलते हुए तेल में था। कबीर साहेब जी आराम से बैठे थे जैसे ठण्डे पानी में बैठे हों। शेखतकी ने

कहा कि यह जंत्र-मंत्र जानता है। इसने इस तेल को ठंडा कर दिया है। यह वैसे उबलता हुआ दिखाई दे रहा है। सिकंदर लोधी ने सोचा कि कहीं सचमुच यह ठण्डा हो गया हो। सिकंदर ने परीक्षण के लिए उस उबलते हुए तेल के कड़ाहे में ऊँगली देनी चाही। कबीर साहेब ने कहा कि राजा इसमें ऊँगली मत देना, कहीं इस बावली बूच के चक्कर में आकर हाथ नष्ट करवा ले। यह इतना गर्म है कि ऊँगली ढूंढी नहीं मिलेगी। सिकंदर ने सोचा कि जब कबीर साहेब जी तेल में बैठे हैं तो तुझे क्या होगा? यह सोचकर मना करते-करते उस उबलते हुए तेल के कड़ाहे में ऊँगली दे दी। जितनी ऊँगली तेल में गई थी उतनी कट कर अलग हो गई और राजा दर्द के मारे बेहोश हो गया। कबीर साहेब ने सोचा कि यह नादान बादशाह इस ईर्ष्यालु शेखतकी के चक्कर में मरेगा। कबीर साहेब तेल के कड़ाहे से बाहर आए। सिकंदर को होश में लाया गया। इतनी पीड़ा थी कि फिर बेहोश हो गया। कबीर साहेब ने ऊँगली को पकड़ कर पूरा कर दिया। बादशाह सिकंदर सचेत हो गया। सिकंदर ने क्षमा याचना करते हुए कहा कि मुझे माफ कर दो दाता, मेरे से गलती हो गई। कबीर साहेब ने कहा कि राजन् आपका दोष नहीं है। काल नहीं चाहता कि मेरे बच्चे मुझे पहचान लें।

शेखतकी द्वारा कबीर साहेब को गहरे कुएँ (झेरे) में डालना

शेखतकी ने देखा कि यह तो ऐसे भी नहीं मरा। मुसलमानों को पुनः इकट्ठा किया और कहा कि अब की बार इस कबीर को कुएँ में डालकर ऊपर से मिट्‌टी, ईटें और रोड़े डाल देंगे। तब देखेंगे यह कैसे बचेगा? भोली जनता तो जैसे पीर जी कहे वैसे ही करने को तैयार थी।

शेखतकी ने सिकंदर लौधी से कहा कि हम इसकी एक परीक्षा और लेंगे। सिकंदर ने पूछा कि क्या परीक्षा लोगे? शेखतकी ने कहा कि हम इसको झेरे कुएँ में डालेंगे और फिर देखेंगे कि वहाँ से कैसे जीवित होगा?

{अब इतनी लीला देखकर भी राजा का अपने मालिक पर विश्वास नहीं बना। नहीं तो धमका देता कि जा करले तूने जो करना है। मैं नहीं दुःखी करूं अपने भगवान को। फिर देखता उसका राज्य जाता या और मौज हो जाती।} राजा ने सोचा कहीं मेरा राज्य न चला जाए। सिकंदर लौधी राजा ने साहेब से प्रार्थना की कि यह शेखतकी तो नहीं मानता और आज ऐसे-ऐसे जिद्द किए हुए है। पूज्य कबीर साहेब जी ने कहा ठीक है। कर लेने दे इसको जो यह करे। मेरा भी टंटा कटे। मैं भी दुःखी हो लिया। कह दे कि तुने जो करना है कर ले।

शेखतकी कबीर साहेब जी को बाँध-जूड़ कर ले गया और जाकर गहरे झेरे कुएँ में डलवा दिया। वहाँ पर हजारों व्यक्तियों को इकट्ठा किए हुए था। बहुत गहरा अंधा कुआँ जिसमें पानी गंदा और थोड़ा-सा पड़ा था और ऊपर से मिट्‌टी, कांटेदार छड़ी, गोबर, ईंट आदि से डेढ़ सौ फुट ऊँचा पूरा भर दिया। फिर शेखतकी हाथ-मुँह धोकर सिकंदर लौधी के पास गया तथा कहा कि राजा कर दिया तेरे शेर को समाप्त। उसके ऊपर इतनी मिट्‌टी डाल दी है कि अब किसी भी प्रकार बाहर नहीं आ सकता। सिकंदर लौधी ने पूछा पीर जी आप किसकी बात कर रहे हो? शेखतकी बोला कि तेरे गुरुदेव कबीर की। उसको आज हमने समाप्त कर दिया है। सिकंदर ने कहा कि पीर जी पूज्य कबीर साहेब जी तो अंदर कमरे में बैठे हैं, वे तो कहीं पर गये ही नहीं। शेखतकी ने अंदर जाकर देखा तो पूज्य कबीर साहेब अंदर कमरे में आसन पर आराम से बैठे थे। शेखतकी को तो और ज्यादा ईर्ष्या हो गई कि यह कबीर तो मारे से मर नहीं रहा। अब क्या किया जाए? अन्य समझदार व्यक्ति तो मान गये, हजारों ने उपदेश लिया, प्रभु कबीर जी के शिष्य बने, परन्तु वह शेखतकी दुष्ट नहीं माना।

शाहतकी नहीं लखी, निरंजन चाल रे। इस परचे तै आगे माँगे जवाल रे।।

शेखतकी बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर की महिमा को नहीं समझ पाया। उसको चाहिए था भगवान के चरणों में गिरकर क्षमा याचना करता तथा अपना आत्म कल्याण करवाता, परन्तु मान-बड़ाई वश होकर साहेब का दुश्मन बन गया। शेखतकी ने और भी बहुत से जुल्म किए। कबीर साहेब काशी लौट गए।

शेखतकी द्वारा कबीर साहेब को गुंडों से मरवाने की निष्फल कुचेष्टा

कबीर साहेब के काशी आने के बाद शेखतकी ने सोचा कि यह कबीर तो किसी भी प्रकार नहीं मर रहा। वह कबीर साहेब को मारने के लिए रात्री के समय कुछ गुंडों को साथ लेकर कबीर साहेब की झोपड़ी पर गया। कबीर साहेब सो रहे थे। शेखतकी ने गुंडों से कहा कि इसके टुकड़े-टुकड़े कर दो। गुंडों ने तलवार से

पूज्य कबीर साहेब जी के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और अपनी तरफ से मरा हुआ जानकर चल पड़े। जब वे झोपड़ी से बाहर निकले तो पीछे से कबीर साहेब ने उठकर कहा कि पीर जी, दूध पीकर जाना। ऐसे थोड़े ही जाते हैं। शेखतकी व उसके गुंडों ने सोचा कि यह भूत है। वहाँ से भाग गये। उन गुंडों को तो बुखार हो गया। कई दिन तक बुखार नहीं उतरा। कबीर साहेब उनके पास गये और उनको ठीक किया तथा कहा कि यह पीर तुम्हें मरवा कर छोड़ेगा, यह तुम्हें गुमराह कर रहा है। तब उन्होंने कबीर साहेब से क्षमा याचना की।

(सूक्ष्मवेद में हजरत मुहम्मद जी का संक्षिप्त जीवन परिचय)

हजरत मुहम्मद जी के बारे में संत गरीबदास जी के विचार

{संत गरीबदास जी रचित सद्ग्रन्थ साहेब से कुछ वाणियाँ (मुहम्मद बोध)}

ऐसा जान मुहम्मद पीरं, जिन मारी गऊ शब्द के तीरं।
शब्दै फेर जिवाई, जिन गोसत नहीं भाख्या। हंसा राख्या, ऐसा पीर मुहम्मद भाई।।2।।
पीर मुहम्मद नहीं बहिश्त सिधाना, पीछे भूल्या है तुर्काना।।3।।
गोसत खांहि नमाज गुजारै, सो कहो क्यूँ कर बहिश्त सिधारैं।।4।।
एक ही गूद, एक ही गोस्त। सूर गऊ की एकै जाती, एकै जीव साहिब कूँ भेज्या, दोहूँ में एकै राती।।5।।
एकै चाम एक ही चोला, गूद हाड की काया। भूल्या काजी कर्द चलावै, कद रब्ब कूँ फुरमाया।।6।।
काजी कौन कतेब तुम्हारी, ना तूं काजी ना तूं मुल्लां। झूठा है व्योपारी।।7।।
काजी सो जो कजा नबेड़ै, हक्क हलाल पिछानै। न्याय करै दरहाल दुनि का, नीर क्षीर कूँ छानैं।।8।।
मुल्ला सो जो मूल मिलावै, दिल महरम दिल बीच दिखावै।।9।।
सो मुल्ला मसताखी, सो तो मुल्ला बहिश्त सिधारे। और मुल्लां सब खाखी।।10।।
मुसलिम कहें हिन्दु काफिर, पूजे आन अनीत। उनको कहो क्या कहिए, जो पूजें घोर मसीत।।11।।
कलमा रोजा बंग नमाजा, आप अल्लाह फरमाया। रोजे रह कर मुर्गी मारी, यौह क्या पंथ चलाया।।12।।
है रोजे से राह निराला, कलमां काल गिरासा। कूकै बंगी बुद्धि भ्रिष्ट है, करो नमाज अकासा।।13।।

जिस समय चालीस वर्ष की आयु में हजरत मुहम्मद जी को नबूवत मिली, उस समय मूसा वाले यहूदी धर्म में तथा ईसाई धर्म में त्रुटियाँ आ गई थी। मूर्ति पूजा भी काफी चल रही थी। हजरत मुहम्मद जी ने भी मूर्ति पुजा का खण्डन किया। मानव को एक ईश्वर पर आधारित करने की कोशिश की। हजरत मुहम्मद साहेब ने अलग से एक और भक्ति मार्ग बताया और उस भक्ति मार्ग को मानने वालों को मुसलमान कहने लगे। बाद में धर्म का रूप धारण कर लिया।

मुसलमान का अर्थ है आज्ञाकारी यानि वह पवित्र आत्मा जो किसी को दुःखी न करे, तम्बाकू, शराब व मांस को पीना व खाना तो दूर छुए भी नहीं, ब्याज भी न ले। उन्होंने सतमार्ग दर्शन किया और हर मानव को एक परमात्मा पर आधारित करने की चेष्टा की। उसके लिए उन्होंने अपना अलग से प्रचार शुरु किया। मुहम्मद साहेब भगवान शिव के अवतार थे। शिव के लोक से आए शक्तियुक्त संस्कारी पाक आत्मा पैगम्बर थे। इनके शब्द में शक्ति थी। जो भी इनके विचारों को सुन लेते थे। इनके अनुयायी बन जाते थे।

हजरत मुहम्मद साहेब सबको कहा करते थे कि जो किसी को मारे-काटे दुःखी करे वह मुसलमान नहीं होता। जो मांस खाएगा, शराब व तम्बाकू पीयेगा, वह दुष्ट आत्मा होगा। जिन्होंने इस आदेश का पालन किया, वह मुसलमान कहलाया। चारों किताबों (जबूर, तौरत, इंजिल तथा कुरआन) का ज्योति निरंजन यानि काल ब्रह्म की तरफ से उनको आदेश हुआ और मुहम्मद जी ने कुरआन को धार्मिकता के आधार पर अपने अनुयाइयों को दिया।

एक दिन पूर्ण परमात्मा (अल्लाह) का मुहम्मद साहेब को साक्षात्कार हुआ। पूर्ण परमात्मा ने उसे स्वसम (सूक्ष्म) वेद (पाँचवीं किताब) दिया तथा समझाया कि पूर्ण ब्रह्म कबीर है, वह मैं स्वयं हूँ। जो पूजा तुम कर तथा करवा रहे हो वह काल अल्लाह तक की है। जिससे आप जन्म-मरण में ही रहते हो। आप सर्व प्राणी मेरी आत्मा हो। मैं आप सर्व का पिता कुल का मालिक हूँ। मेरा ज्ञान बताओ! मैं ही अल्लाह कबीर हूँ। आप अपने अनुयाइयों

को यह स्वसम (सूक्ष्म) वेद वाला ज्ञान बताओ तथा काल जाल से छुड़वाओ। आप को बहुत पुण्य होगा। इतना कह कर पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब अंतर्ध्यान हो गए। उस समय मुहम्मद साहेब कुरआने किताब के रंग में अपने अनुयाइयों को रंग चुके थे। वे कहते थे कि निराकार अल्लाह ही परम शक्ति है जिसने कुरआन का ज्ञान बताया है। इससे आगे कोई ईश्वर नहीं है। वही कुल मालिक एक अल्लाह है। मुहम्मद साहेब ने पाँचवे कुरआन अर्थात् पाँचवे स्वसम वेद को भी पढ़ा। उस समय यह कैसे कहे कि अपना ज्ञान (कुरआन वाला) पूर्ण नहीं है। इस शर्म के कारण किसी मुसलमान को सूक्ष्मवेद वाला ज्ञान नहीं बताया।

जब स्वयं पूर्ण परमात्मा उनसे पुनः आकर मिले तो कहा कि मुहम्मद आप एक बहुत अच्छी आत्मा हो। जो भक्ति आपने भक्त समाज को दी है यह पूर्ण नहीं है। एक पाँचवी कुरआन अर्थात् कतेब (सूक्ष्म वेद) आपको मैंने दी है। इसके आधार पर आप ने क्या सोचा? मुहम्मद साहेब ने कहा कि मैं आपके ऊपर कैसे विश्वास करूँ कि आप अल्लाह हो तथा उस अव्यक्त (बेचून अर्थात् निराकार अल्लाह) से भी ऊपर हो? आँखों देखूँ तो विश्वास करूँ। पूर्ण परमात्मा ने कहा कि विश्वास तो मैं करा सकता हूँ यदि आप मेरे विचारो को सुनोगे व मुझे सहयोग दोगे। मुहम्मद साहेब ने कहा कि मैं तैयार हूँ।

पूर्ण परमात्मा (अल्लाह) ने मुहम्मद से कहा कि आप मेरे साथ सत्यलोक चलो। मुहम्मद साहेब की आत्मा को पूर्ण परमात्मा (अल्लाह कबीर) अपने यथा स्थान सत्यलोक में ले गए। जहाँ पर जाने के बाद जीव का फिर पुनःजन्म नहीं होता। उसको सतलोक कहते हैं। मुहम्मद साहेब को यह मालूम हुआ कि यहाँ पर आने के बाद जीव का फिर जन्म नहीं होता। फिर भी अपने उस पुराने ज्ञान के आधार पर और पृथ्वी पर उनके लाखों की संख्या में अनुयायी हो चुके थे। उनसे मुहम्मद साहेब की प्रभुता बहुत बनी हुई थी, उनका महत्त्व हो गया था। इस अपनी महिमा के कारण सतलोक नहीं रहे। पूर्ण अल्लाह पर विश्वास नहीं किया। वहाँ पर रहना स्वीकार नहीं किया और वापिस पृथ्वी पर ही आ गए। अल्लाह कबीर ने उनको पाँच कलमे जाप के बताए। उनमें से एक कलमा ही संगत को बताया ''अल्लाहू अकबर'', अन्य नहीं बताए जो कुरआन में सांकेतिक (Code Words) शब्दों में लिखे हैं।

गरीबदास जी महाराज की वाणी के आधार पर :-

हम मुहम्मद को वहाँ(सतलोक) ले गयो, इच्छा रूपी वहाँ नहीं रहो।
उलट मुहम्मद महल (शरीर में) पठाया, गुझ बीरज एक कलमा लाया।
रोजा बंग निमाज दई रे। बिसमिल की नहीं बात कही रे।।
मुहम्मद ने नहीं ईद मनाई, गऊ न बिसमल किती।
एक बार कहा मोमिन मुहम्मद, तापर ऐसी बीती।

पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की कृपा से मुहम्मद जी कुछ सिद्धि शक्ति युक्त हो गया। एक दिन नबी मुहम्मद जी के सामने अचानक एक बकरा मर गया। हजरत मुहम्मद ने हमदर्दी जताते हुए व कलमा पढते हुए ज्यों ही अपना हाथ उस मृत बकरे के शरीर से लगाया वह मृत बकरा जीवित हो गया। नबी मुहम्मद आश्चर्यचकित रह गए तथा समझ गए कि उस अल्लाह की कृप्या से शक्ति युक्त हो गया हूँ।

एक दिन कुछ अनुयाई हजरत मुहम्मद जी के पास बैठे थे तथा उनकी भेड़-बकरियाँ वहाँ घास चर रही थी। एक तगड़ा बकरा दूसरे कमजोर बकरे को मार रहा था। उस समय नबी मुहम्मद जी ने अपने मुख से कलमा (मन्त्र) पढ़ा जिस से वह तगड़ा बकरा मर गया। सर्व उपस्थित मुसलमानों ने देखा कि नबी मुहम्मद जी ने अपनी शब्द शक्ति (वचन) से बकरा मार दिया। फिर वह गरीब व्यक्ति जिसका वह बकरा था रोने लगा कि मुझ निर्धन के पास दो बकरियाँ तथा यह एक ही बकरा था। तब हजरत मुहम्मद जी ने कहा कि ऐ खुदा के बन्दे मुसलमान रो मत, अभी तेरे बकरे को जीवित करता हूँ। मुहम्मद जी उठे तथा बकरे के पास जाकर कलमा पढ़ा तथा हाथ से स्पर्श किया। उसी समय वह बकरा जीवित हो गया।

सर्व मुसलमानों ने वह दिन तथा समय नोट कर लिया तथा सर्व मुसलमान समाज में हजरत मुहम्मद जी की बड़ाई होने लगी। कुछ लोग कहने लगे कि यह झूठ है। कभी मरा हुआ जीव जीवित होता है? इस बात का पता मुहम्मद जी को लगा। तब नबी मुहम्मद जी ने कहा कि अब की बार गाय को शब्द (वचन) से मार कर जीवित करूँगा। जिस

किसी को भी अविश्वास हो तो देख लेना। उस के लिए एक दिन निश्चित हुआ। भारी संख्या में दर्शक एकत्रित हो गए। हजरत मुहम्मद जी ने एक गाय को शब्द (वचन) से मार दिया। {एक पुस्तक में लिखा है कि ईमान न लाने वाले विरोधियों ने कहा कि हम गाय को कत्ल करेंगे। तब जीवित करे तो मानें। ''चार यार मिल मसलित भीनी। गऊ पकड़ कर बिसमिल कीन्हीं।।'' यानि कुछ व्यक्तियों ने सभा करके निर्णय लेकर गाय को कत्ल कर दिया तथा कहा कि नबी जी इसे जीवित कर।} सर्व उपस्थित दर्शकों ने देखा की गाय वास्तव में मर चुकी है। तब नबी मुहम्मद ने गाय को जीवित करने के लिए कलमा पढ़ा तथा हाथ से स्पर्श भी किया परन्तु गाय जीवित नहीं हुई। फिर अपनी इज्जत की रक्षा के लिए अपने निराकार अल्लाह तथा जबराईल आदि फरिश्तों से प्रार्थना की परन्तु गाय जीवित नहीं हुई।

अंत में पूर्ण परमात्मा कबीर से (याह अल्लाह -अल्लाहु कबीर कहकर) ऊपर को मुख करके कभी जमीन में मस्तक रखकर बार-बार याचना करने लगा। फिर उसी पूर्ण परमात्मा को हृदय से पुकारा कि हे कुल मालिक अल्लाह कबीर (इसी को अल्लाहु अकबरू कहते हैं) मेरी लज्जा रखो। उस समय वही पूर्ण परमात्मा गुप्त रूप में (शब्द रूप में) आए। केवल मुहम्मद साहेब को दिखाई दिए, अन्य को नहीं। अल्लाह कबीर ने अपनी शक्ति से उस गऊ को जीवित कर दिया। मुहम्मद साहेब ने देखा तथा अन्य दर्शकों को पूर्ण परमात्मा (सत्यपुरुष) दिखाई नहीं दिए। वह गऊ जीवित हो गई। दर्शक सोच रहे हैं कि यह गाय मुहम्मद साहेब ने जीवित की है। परन्तु मुहम्मद साहेब को यह विश्वास हो गया कि यह तेरे बस से बाहर की बात थी। लेकिन किसी को नहीं बताया। स्वयं बहुत प्रभावित हुए। पूर्ण परमात्मा (हक्का कबीर) अंतर्ध्यान हो गए।

मुहम्मद साहेब बहुत प्रार्थना करते हैं कि हे पूर्ण परमात्मा मुझे एक बार फिर दर्शन दो। परन्तु पूर्ण परमात्मा ने उन्हें फिर दर्शन नहीं दिए क्योंकि वे प्रभु की आज्ञा की अवहेलना कर चुके थे तथा यह भी स्वीकार नहीं किया था कि मैं इस पाँचवी किताब (स्वसम-सूक्ष्म वेद) का भक्त समाज में प्रचार कर दूँगा। वह मुहम्मद जी ने अपने पास गुप्त रखा।

ऐसा ही मुहम्मद जीवन परिचय में प्रमाण मिलता है कि मुहम्मद साहेब कई दिनों तक अपने मकान (मस्जिद) में अंदर ही रहे। नमाज के लिए बाहर नहीं आए। जब अनुयाईयों ने आवाज दी तो मुहम्मद साहेब ने कहा कि तुम नमाज करो। मैं तुम पर पाँचवा कलाम (प्रभु की वाणी) नहीं थोपना चाहता, इसको मैं स्वयं रखूंगा। मुझे अल्लाह का हुक्म हुआ है। एक पाँचवीं किताब और मुझे मिली है, लेकिन यह तुम्हें नहीं दूँगा। इसका आप पर वजन नहीं डालूंगा। ऐसा कहकर वह सूक्ष्म वेद का ज्ञान नहीं दिया।

उसके बाद मुहम्मद साहेब के अनुयाइयों ने उनके शरीर छोड़ जाने के बाद वह दिन हजरत मुहम्मद की समर्थता के प्रतीक में मनाना शुरू किया जिस दिन मुहम्मद साहेब ने शब्द (वचन) से बकरे को मारा था और जीवित कर दिया था फिर शब्द से गऊ को मारा था और उसी गाय को पूर्ण परमात्मा (सत कबीर अर्थात् अल्लाहु कबीर) ने स्वयं आकर जीवित किया था। लेकिन पूर्ण परमात्मा अन्य को दिखाई नहीं दिए। इसलिए हजरत मुहम्मद के अनुयाइयों ने सोचा कि यह गाय हजरत मुहम्मद जी ने ही जीवित की है। वे तिथियाँ जिस दिन गाय व बकरे को मारकर जीवित किया था, मुसलमानों ने याद रखा। मुहम्मद साहेब के शरीर त्याग जाने के बाद उस दिन की याद ताजा रखने के लिए उन दिनों में गाय तथा बकरे को बिस्मिल (हत्या) किया जाने लगा। बिस्मिल तो करने लग गए लेकिन उसको जीवित नहीं कर पाए।

गरीबदास जी की वाणी से :-

ऐसा जान मुहम्मद पीरं, जिन मारी गऊ शब्द के तीरं।
शब्दै फेर जिवाई, जिन गोसत नहीं भाख्या। हंसा राख्या, ऐसा पीर मुहम्मद भाई।।

मुसलमान मान रहे हैं कि मुहम्मद साहेब ने गाय को शब्द से मार कर जीवित कर दिया। इसलिए समझाया है कि मुसलमानों के पीर मुहम्मद तो ऐसे महान थे। उन्होंने तो गाय को वचन से मारकर जीवित कर दिया था। यदि माँस खाना होता तो जीवित ही नहीं करते। लेकिन हजरत मुहम्मद जी ने (हंसा) गाय के जीव की रक्षा की। उसे जीवन दान दिया। माँस नहीं खाया। हे भाई मुसलमान! हजरत मुहम्मद ऐसे महान पीर थे। जब आप किसी को जीवन दान नहीं दे सकते तो उसका जीवन भी नहीं छीनना चाहिए। यह महापाप है। परंतु उपरोक्त परपंरा चल पड़ी। उस समय हर नगर में इस शुभ दिन को मनाने के लिए यह प्रक्रिया शुरू हो गई थी। निश्चित दिन

बकरे व गाय काटी जाने लगी। उन बकरे तथा गाय के कटे हुए शरीर को नगर से दूर जंगल में डाल दिया जाता था जिसे गिद्ध पक्षी या अन्य जंगली माँसभक्षी जानवर खाते थे। मुसलमान उनका माँस नहीं खाते थे। यह परंपरा प्रारंभ हो गई। कई वर्ष ठीक चलता रहा। जैसे आजकल हर जगह मस्जिद बनी हुई हैं और वहाँ पर मुल्ला लोग रहते हैं और वे धार्मिक शिक्षा दिया करते हैं। ऐसे ही उस समय बहुत-से मस्जिद स्थान-स्थान पर बन गए थे। जहाँ पर ये काजी या मुल्ला धार्मिक ज्ञान देने वाले रहा करते थे। उनको सामूहिक आदेश दिया गया था कि हर नगर व गाँव में इस खुशी को मनाओ। अपने अनुयाईयों को विधिवत् साधना बताओ। एक समय अकाल पड़ा। दुर्भिक्ष के कारण भूखे मर कर दुनिया प्राण त्याग रही थी।

कलमा पढ़ कर गाय को हलाल किया गया। उसकी गर्दन काट दी गई। मांस को जंगल में डाल दिया कि उसको जंगली पशु-पक्षी खा लेंगे, हम मुसलमान नहीं खायेंगे। क्योंकि जो मांस खाता था उसको पापी प्राणी गिना जाता था। बहुत भयंकर सजा दी जाती थी। शराब, मांस, तम्बाखु मुसलमान धर्म में बिल्कुल नहीं था। अकाल पड़ने से भूख के मारे दुनिया मर रही थी। उसी समय प्रत्येक गाँव में वह त्यौहार मनाया गया। गाय बिस्मिल करके जंगल में डाल दी गई। भूखे मरते हुए कुछेक मुसलमानों ने उस गऊ के मांस को खा लिया। उसको अन्य ने देखा और उन मांस खाने वालों की शिकायत की गई। गाँव में एक हलचल-सी मच गई कि ऐसा जुल्म कर दिया। मुसलमान ने माँस खा लिया। हद है, धिक्कार है, इसको सजा दो, गाँव से निकाल दो, खत्म कर दो। सभी लोग एकत्रित हुए और दोषियों को पकड़ा गया। मुल्ला और काजियों के पास ले जाया गया। इस प्रकार की घटना हर शहर और हर गाँव में हो गई। उनके दोष की सुनवाई का समय रखा गया। ताकि हम अन्य मुसलमानों से जो अन्य शहरों में मुख्य मुल्ला (काजी, पीर) हैं उनसे सलाह ले लें।

{तोरात पुस्तक में लिखा है कि वे लोग (जिनमें हजरत मूसा व अनुयाईयों के पूर्वज भी थे क्योंकि उसी समुदाय से मूसा जी के अनुयाई बने थे) गाय का विशेष सम्मान करते थे। गाय के बछड़े, बैल का माँस नहीं खाते थे। उनकी पूजा किया करते थे। मुहम्मद के समय प्रत्येक गाँव में यहूदियों की सँख्या भी खासी होती थी। (प्रमाण :- कुरआन सूरः अल् बकरा-2 आयत नं. 67-71)

नोट :- अनुवादकर्ताओं ने इन आयतों में टिप्पणी की है कि इस्राईल के वंशजों को मिस्र निवासियों और अपने पड़ोसी कौमों से गाय की महानता, पवित्रता और गौ पूजा का रोग लग गया था। उसी कारण उन्होंने मिस्र से निकलते ही बछड़े को पूज्य बना लिया था। इसलिए जब मूसा में प्रवेश काल के दूत ने अपनी कौम यानि मूसा की कौम (क्योंकि मूसा बोलता नजर आता था, बोलता फरिश्ता था) को गाय जब्ह करने को कहा कि यह अल्लाह का हुक्म है। तब उन्होंने कहा कि मूसा क्यों मजाक करता है? अल्लाह गाय को कत्ल करने को नहीं कह सकता।}

जो मुख्य मुल्ला या काजी थे, उनके पास चारों ओर से शिकायतें आई। हजारों की संख्या में लोग दोषी पाए गए। उस समय यह फैसला लिया गया कि इन सभी को सजाए मौत नहीं देनी चाहिए। (माँस खाने वाले को सजाए मौत का प्रावधान किया जाता था)। सलाह बनाई कि जाकर आदेश दे दो कि जो गाय का माँस था वह कलमा पढ़ने से पवित्र हो गया था और उसको खाने से वे दोषी नहीं हुए क्योंकि वह प्रसाद बन गया था। इसलिए उन्हें माफ किया जाए, सजा-ए-मौत नहीं देनी चाहिए। यदि वैसे कोई किसी प्राणी को स्वयं मार कर माँस को खाएगा, वह दोषी होगा। गाय जो बिस्मिल की गई थी, इस पर कलमा पढ़ा था जिससे इसका माँस पवित्र हो गया था और प्रसाद बन गया था। इसलिए इसको खाने का पाप नहीं लगा। वहाँ पर ये बचाव करना बहुत आवश्यक हो गया था। इसलिए उस समय के महापुरुषों ने (मुसलमानों के मुखियाओं ने) सोचा तो अच्छा था। लेकिन आगे चलकर यह बुराई का कारण बन गया। सभी जगह बात फैल गई कि कोई बिस्मिल की हुई गाय या बकरे का माँस खाता है तो वह प्रसाद रूप में खाया जाता है और उसका कोई पाप नहीं लगेगा। अब इस पाप कर्म ने धर्म का रूप धारण कर लिया। उसको वे मौलवी लोग भी मना नहीं कर पाए। इसी प्रकार वह बकरा हलाल करने का दिन भी उसी अकाल के दौरान आया जिसे बकरीद नाम से मनाया जाता है। उसमें भी यह घटना हुई तथा उसका भी उपरोक्त निर्णय लेकर दोषियों को दोष मुक्त कर दिया गया।

विशेष परिस्थितियों के कारण ऐसे पवित्र धर्म में यह भयंकर बुराई शुरू हो गई। {हजरत मुहम्मद तथा उनके

एक लाख अस्सी हजार अनुयाइयों ने कभी मांस-शराब, तम्बाकू सेवन नहीं किया और न ही ऐसा करने का आदेश दिया।} अब इसका अंत विशेष विवेक और विचार के साथ किया जा सकता है। शराब को तो आज भी मुसलमान लोग कहते हैं कि अगर शराब की कोई बूंद शरीर के किसी अंग पर भी गिर जाए तो वही से शरीर के मांस को भी काटकर फेंक दे। इतनी अपवित्र होती है। ऐसे ही ये तीनों की तीनों बुराई (मांस, शराब, तम्बाखु) इतनी ही भयंकर बताई गई थी लेकिन आने वाले समय में तम्बाखु का प्रयोग भी बहुत जोर-शोर से हुआ और मुसलमान समाज में मॉस तो प्रसाद रूप में खाया जाने लगा। परंतु शराब से अभी भी बचे हैं। वर्तमान में भी मुसलमान शराब प्रयोग नहीं करते।

कुर्बानी की वास्तविक परिभाषा

विशेष परंपरा हो गई कि बकरा व गाय की कुर्बानी प्रभु के नाम पर की जाती है। (अब यहाँ व्यक्तियों को सोचना चाहिए कि कुर्बानी अपनी करनी चाहिए। प्रभु के नाम पर बकरे और गाय या मुर्गे की नहीं। वास्तव में कुर्बानी प्रभु के चरणों में समर्पण तथा सत्य भक्ति होती है। शीश काट देने तथा अविधिपूर्वक साधना करने से मुक्ति नहीं होती। यह तो काल की भूल भुलैया है। कुर्बानी गर्दन काटने से नहीं होती, समर्पण होने से होती है। प्रभु के निमित हृदय से समर्पित हो जाए कि हे प्रभु! तन भी तेरा, धन भी तेरा, यह दास या दासी भी तेरे, यह कुर्बानी प्रभु को पसंद है। हिसां, हत्या खुदा कभी पसंद नहीं करता।)

सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान किसने बताया?

कलाम-ए-कबीर (सूक्ष्मवेद) में सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान है जो न चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) में है, न श्रीमद्भगवत गीता में, न पुराणों में, न उपनिषदों में, न श्रीमद्भागवत (सुधा सागर) में, न चारों पुस्तकों (जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन शरीफ) में। इन तीनों पुस्तकों (जबूर, तोरात तथा इंजिल) को इकट्ठा जिल्द करके बाइबल नाम दिया है, वह ज्ञान बाइबल में भी नहीं है। प्रमाण के लिए पहले पढ़ें :-

अल-खिज्र (अल कबीर) की विशेष जानकारी

Quaran Sharif Sura-Kafh 18:60-82 (कुरआन शरीफ सुरा-काफ 18 आयत 60-82) में जिक्र है, अल्लाह मूसा को उससे ज्यादा इल्म (तत्त्वज्ञान) रखने वाले एक शख्स से मिलने के लिए भेजता है। (हदीस में ये कहानी विस्तार से बताई गई है। 55 हदीसों में इस कहानी का जिक्र मिलता है।)

एक दिन हजरत मूसा सत्संग फरमा रहे थे। उनसे एक सत्संगी ने पूछा कि हे मूसा आज के दिन जमीन पर सबसे ज्यादा इल्म रखने वाला शख्स कौन है?

हजरत मूसा ने बड़े गर्व से उत्तर दिया ''मैं''।

अल्लाह को मूसा का ये अंदाज बिल्कुल पसंद ना आया और कहा कि मूसा तेरी यह बात सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। तूने अपने आपको सबसे बड़ा इल्मी कैसे मान लिया?

घुटनों के बल बैठे मूसा ने कहा कि मैं आपका भेजा हुआ रसूल हूँ और मुझे सारा इल्म आपसे हासिल है। इसलिए मैंने ये कह दिया कि आज जमीन पर मेरे से ज्यादा इल्म किसी के पास नहीं है।

अल्लाह ने कहा कि मूसा जमीन पर तेरे से ज्यादा इल्म रखने वाला शख्स मौजूद है और तेरा इल्म उसके इल्म के सामने कुछ भी नहीं।

मूसा ने कहा कि हे अल्लाह! मैं उस शख्स से मिलना चाहता हूँ ताकि मैं वो इल्म हासिल कर सकूँ जो मेरे पास नहीं है। वो शख्स कहाँ रहता है और कैसे मिलेगा? ये बताने की मेहरबानी कीजिए।

अल्लाह ने कहा कि वो ''मजमा-ए-बाहरेन'' में रहता है यानि जहाँ मीठे और खारे पानी के दो दरिया आपस में मिलते हैं।

मूसा बोला कि हे अल्लाह! मैं उसे पहचानूंगा कैसे?

अल्लाह ने बताया कि तू अपने साथ एक बर्तन में मरी हुई मछली ले जा। जहाँ वो मछली जिंदा होकर पानी में गोता लगा देगी, समझ लेना वो नजदीक है।

(हदीस पुष्टि करती है कि ये शख्स जो मूसा से ज्यादा इल्मी/**Intelligent** है और जिससे अल्लाह ने मूसा

को कुरआन शरीफ सुरा काफ 18 आयत 60-82 में मिलने के लिए कहा है। उसका नाम अल-खिज्र है और सारा मुस्लिम जगत इससे सहमत है।)

मूसा अपने एक शागिर्द/सेवक को लेकर अल-खिज्र की तलाश में निकल पड़ता है और कसम खाता है चाहे मुझे सदियों तक क्यों न चलना पड़े, मैं अल-खिज्र से इल्म हासिल करके ही चैन लूँगा।

काफी लंबा सफर तय करने के बाद मूसा व उसका शागिर्द ''मजमा-ए-बाहरेन'' के इलाके में पहुँच गए। मूसा लंबे सफर की थकान उतारने के लिए एक पत्थर का टेका लेकर सो गए। इस दौरान शागिर्द ने देखा कि वो मृतक मछली जिसे वो एक बर्तन में लेकर चले थे, झटपटाई और जिंदा होकर पानी में कूद गई।

शागिर्द मूसा को मछली की जिंदा होने वाली बात बताना भूल जाता है और मूसा अल-खिज्र की खोज में अपने सफर पर आगे चल पड़ते हैं।

पूरा दिन, पूरी रात चलने के बाद अगली सुबह मूसा शागिर्द से बोलता है कि मैं सफर की थकान से चूर-चूर हो गया हूँ। ला मुझे कुछ खाने को दे दे। तब शागिर्द को ध्यान आता है कि जो मछली हम अपने साथ लाए थे, वह तो कल जहाँ हमने टेका लिया था, वहीं जिंदा होकर पानी में कूद गई थी और शैतान के प्रभाव से मैं आपको बताना भूल गया। ये सुनकर मूसा बोले यही तो वो मुकाम था जहाँ हमें रूकना था। मूसा और शागिर्द अपने कदमों के निशानों को देखते हुए वापिस उसी जगह पहुँच जाते हैं और उन्हें सफेद चादर ओढ़े हुए सफेद दाढ़ी वाला एक शख्स मिलता है।

मूसा ने अपना परिचय दिया और कहा कि मुझे अल्लाह ने आपसे इल्म सीखने के लिए भेजा है। मैं आपकी पैरवी करता हूँ। आप मुझे वो नेक इल्म सिखा दें जो आपके पास है।

उत्तर में अल-खिज्र ने कहा कि मूसा! आप मेरे साथ हरगिज सब्र नहीं कर सकेंगे क्योंकि जिस चीज की हकीकत का आपको इल्म नहीं, उस पर आप सब्र कर भी कैसे सकते हैं?

मूसा ने कहा कि आप मुझे सब्र करने वाला पाएँगे और मैं किसी बात में आपकी ना-फरमानी नहीं करूँगा।

अल-खिज्र ने कहा कि अच्छा! अगर आप मेरे साथ चलना ही चाहते हो तो ध्यान रहे आप किसी चीज के बारे में मुझसे सवाल ना कीजिएगा, जब तक मैं खुद उसके बारे में ना बताऊँ।

इस मकाम से मूसा ने अपने शागिर्द को वापिस भेज दिया और अल-खिज्र के साथ अपना सफर शुरू किया।

रास्ते में कुछ मस्किन लोगों की एक कश्ती देखी। वो मेहनत करते और किराया लेकर लोगों को दरिया पार करवाया करते थे। अल-खिज्र और मूसा उस कश्ती पर सवार हो गए। सफर के दौरान अल-खिज्र ने उस कश्ती के तख्ते तोड़ दिए और कश्ती में पानी भरने लगा। लोग पानी बाहर फैंकने लगे और जैसे-तैसे डूबने से बचे। ये देख मूसा ने इसे नापसंद फरमाया और अल-खिज्र से बोले क्या लोगों को डुबाने का इरादा है? इस पर अल-खिज्र ने जवाब दिया कि मैंने पहले ही कह दिया था कि आप मेरे साथ सब्र नहीं कर सकेंगे। मूसा ने कहा कि मेरी अक्ल ने काम नहीं किया। मुझे क्षमा कर दीजिए, आगे ऐसी गलती नहीं होगी।

फिर वह दोनों आगे चले और एक लड़के से मिले। अल-खिज्र ने उस लड़के को मार डाला। ये देखकर मूसा बोले क्या आपने एक बेगुनाह की जान ली? और वो भी किसी के खून के बदले में नहीं। ये तो आपने बड़ी घटिया और बेहद नापसंदीदा हरकत की। इस पर अल-खिज्र बोले मैंने आपसे कहा था कि आप मेरे साथ रहकर हरगिज सब्र नहीं कर सकेंगे। मूसा ने जवाब दिया कि अब अगर मैं आपसे किसी चीज के बारे में सवाल करूँ तो बेशक मुझे अपने साथ ना रखिएगा यकीनन आप मेरी तरफ से हद्द ऊजुर को पहुँच चुके हैं।

एक बार फिर सफर शुरू हुआ। दोनों एक गाँव में पहुँचे और मूसा ने खाने के लिए पूछा। गाँव वालों ने उनकी मेहमान नवाजी करने से साफ इनकार कर दिया। उस गाँव में दोनों ने एक दीवार को देखा जो गिरने के करीब थी। अल-खिज्र ने उसे दुरूस्त कर दिया। ये देखकर मूसा बोल पड़े आप चाहते तो इसकी गुजरत/कीमत ले सकते थे जिसे देकर हम खाना खा सकते थे। अल-खिज्र ने मूसा से कहा, बस! अब आपके और मेरे दरम्यान जुदाई है, जाने से पहले मैं आपको उन बातों की हकीकत बताऊँगा जिन पर आप सब्र ना कर सके।

1. कश्ती कुछ गरीब मस्किन लोगों की थी जो दरिया में कामकाज करते थे। मैंने उसमें कुछ तोड़फोड़ करने का इरादा किया क्योंकि उनके आगे एक बादशाह था जो हर एक सही कश्ती को जबरन जब्त कर लेता, छेद

होने की वजह से वो बादशाह उनकी कश्ती को जब्त नहीं करेगा और वो मस्किन कुछ पैसे लगाकर उसे दुरूस्त कर लेंगे।

2. दूसरे वाकये के बारे में बताया कि उस लड़के के माँ-बाप अल्लाह को चाहने वाले थे। हमें खौफ हुआ कि कहीं ये लड़का उन्हें अपनी सरकशी और कुफ्र से आजिस और परेशान ना कर दे। इसलिए हमने चाहा कि उन्हें उनका परवरदिगार उससे बेहतर पाकीजगी वाला व उससे ज्यादा प्यार मोहब्बत वाला बच्चा इनायत फरमाए।

3. दीवार का किस्सा ये है कि उस गाँव में दो यतीम बच्चे हैं जिनका खजाना उस दीवार के नीचे दफन है। उनका बाप बहुत नेक था। रब की यह चाहत थी कि ये दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में आकर अपना ये खजाना उस रब की मेहरबानी और रहमत से निकालें।

इन तीनों किस्सों की मुहमलत करने के बाद अल-खिज्र एक अजीम अमल बयान करते हुए फरमाते हैं कि मूसा! ये थी असल हकीकत उन वाकियात की जिन पर आप सब्र ना कर सके।

सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान के विषय में प्रमाण

सूक्ष्मवेद (कलाम-ए-कबीर = कबीर वाणी) के अतिरिक्त किसी धर्म ग्रन्थ में सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

प्रमाण :- हिन्दू धर्म के मुख्य ग्रन्थ चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) हैं। उनका सार यानि संक्षिप्त में ज्ञान श्रीमद्भगवत गीता है। इनका ज्ञान भी उसी अल्लाह (प्रभु) ने दिया है जिसने चारों किताबों (जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन) का ज्ञान दिया है।

यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में वेद ज्ञान दाता ने कहा है कि कोई तो परमेश्वर को कभी न उत्पन्न होने वाला यानि निराकार बताता है। कोई उत्पन्न होने वाला साकार मानते हैं जैसे राम, कृष्ण का जन्म हुआ, इनको प्रभु मानते हैं। परमात्मा निराकार है या साकार है? उत्पन्न होता है या उत्पन्न नहीं होता है? अवतार धारण करता है या नहीं करता? इसके विषय में (धीराणाम्) तत्त्वदर्शी संत ठीक-ठीक बताते हैं, उनसे सुनो।

विशेष :- सिद्ध हुआ कि वेदों में सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

श्रीमद्भगवत गीता में भी सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

प्रमाण :- हिन्दू समाज के लिए चारों वेद महत्वपूर्ण व विश्वास के योग्य ग्रन्थ है। वेदों से अधिक गीता को पढ़ा जाता है। गीता का ज्ञान भी उसी प्रभु (अल्लाह) ने दिया है जिसने चारों वेदों तथा चारों किताबों (जबूर, तोरात, इंजिल तथा कुरआन) का ज्ञान दिया है। हिन्दू धर्माचार्य मानते हैं कि श्रीमद्भगवत गीता चारों वेदों का सार है। इसी गीता के अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण ब्रह्म (मुखे) अपने मुख कमल से वाणी बोलकर यथार्थ ज्ञान प्रचार करता है। उनकी उस वाणी में बताया ज्ञान ''तत्त्वज्ञान'' कहा जाता है। फिर गीता अध्याय 4 के ही श्लोक 34 में कहा है कि ''हे अर्जुन! उस तत्त्वज्ञान को (जो समर्थ परमेश्वर मुख से वाणी बोलकर बताता है) तू किसी तत्त्वदर्शी संतों से पूछो। दंडवत् प्रणाम करके नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्त्वज्ञान जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।'' {क्योंकि वही यथार्थ ज्ञान वही समर्थ प्रभु समय-समय पर अच्छी आत्माओं नेक बंदों को बताता रहता है, इसलिए कहा है। वह ज्ञान वर्तमान में मुझ दास (रामपाल दास) के पास है। विश्व में किसी को उसका ज्ञान नहीं है।}

विशेष :- इससे सिद्ध हुआ कि सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान श्रीमद्भगवत गीता में भी नहीं है।

बाइबल (जो जबूर, तोरात तथा इंजिल तीनों पुस्तकों का योग है। इस बाइबल) में तथा कुरआन में भी सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है।

प्रमाण :- ऊपर ''अल-खिज्र (अल-कबीर) की जानकारी'' शीर्षक में बताया है कि जिस अल्लाह ने पवित्र पुस्तक ''जबूर'' का, पवित्र पुस्तक तोरात तथा पवित्र पुस्तक इंजिल का ज्ञान दिया है। उसने हजरत मुहम्मद जी को भी बताया (जो पवित्र पुस्तक कुरआन की सूरः काफ-18, आयत 60-82 में अंकित है) कि मैंने मूसा को वह ज्ञान जानने के लिए एक शख्स के पास भेजा जो ज्ञान मूसा को नहीं था। उस ज्ञान के सामने मूसा को प्राप्त ज्ञान (पुस्तक तोरात) कुछ भी मायने नहीं रखता। मूसा जी उस ज्ञान को प्राप्त किए बिना ही खाली लौट आया था। इस प्रकरण से कई बातें निकलकर सामने आती हैं :-

नं. 1. :- वह ज्ञान तोरात पुस्तक में नहीं है। यदि होता तो अल-खिज्र के पास ज्ञान प्राप्ति के लिए भेजने की आवश्यकता ही नहीं थी।

नं. 2. :- पवित्र जबूर, पवित्र तोरात तथा पवित्र इंजिल का ज्ञान इसी अल्लाह ने क्रमशः हजरत दाऊद, हजरत मूसा तथा हजरत ईसा को एक ही बार में दिया था यानि कुरआन के ज्ञान की तरह थोड़ा-थोड़ा करके नहीं उतारा था।

हजरत मूसा जी तोरात के ज्ञान का प्रचार कर रहे थे। उसी ज्ञान का सत्संग कर रहे थे। सत्संग के दौरान किसी सत्संगी ने पूछा था कि हे मूसा! वर्तमान में संसार में सबसे विद्वान कौन है? मूसा ने अपने को संसार में सबसे विद्वान बताया था। जिससे मूसा जी के अल्लाह जी ने कहा था कि तेरा ज्ञान अल-खिज्र के ज्ञान के सामने कुछ भी मायने नहीं रखता। इससे सिद्ध हुआ कि तोरात का ज्ञान अधूरा है।

नं. 3 :- यदि जबूर पुस्तक में सम्पूर्ण ज्ञान होता तो अल्लाह कह देता कि जबूर वाला ज्ञान तेरे ज्ञान से उत्तम है। वह उस अध्याय में अंकित है। परंतु ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता। इससे सिद्ध हुआ कि जबूर का ज्ञान भी अल-खिज्र के ज्ञान के समान नहीं है।

नं. 4 :- यदि इंजिल में सम्पूर्ण ज्ञान होता तो हजरत मुहम्मद को अल्लाह कह देता कि अल-खिज्र वाला ज्ञान मरियम के बेटे ईसा को ''इंजिल'' में दे रखा है। परंतु यह भी कहीं प्रमाण नहीं है। इससे सिद्ध हुआ कि पवित्र पुस्तक ''इंजिल'' में भी अल-खिज्र (अल-कबीर) वाला ज्ञान नहीं है।

विशेष :- उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान पवित्र बाइबल में नहीं है। {पवित्र बाइबल ग्रन्थ में केवल तीन पुस्तकें इकट्ठी जिल्द की गई हैं :- 1. जबूर, 2. तोरात, 3. इंजिल। इन तीनों का योग बाइबल नाम से जाना जाता है।}

कुरआन शरीफ (मजीद) में भी सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान नहीं है

प्रमाण :- सूरत फुरकान 25 आयत नं. 52-59 में पवित्र कुरआन मजीद (शरीफ) का ज्ञान देने वाले अल्लाह ने अपने भेजे नबी मुहम्मद (अलैही वसल्लम) को इन आयतों में बताया है कि कबीर नामक अल्लाह अर्थात् अल्लाह अकबर (कादिर) समर्थ परमेश्वर है। इस बात पर काफिर इमान (विश्वास) नहीं लाते। आप उनकी बातों को न मानना। मेरे द्वारा दी गई कुरआन की दलीलों से उस कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना। उसी ने आदमी उत्पन्न किए। उसी ने मानव को ससुराल, बेटी, बहू आदि दी। उसी ने दो खारे तथा मीठे जल की दरियाएँ बहाई। उनके बीच में मजबूत रोक लगाई। हमने तुझे (हजरत मुहम्मद) को केवल उनको समझाने तथा अजाब से बचाने के लिए भेजा है। उनसे कह दो कि मैं तुमसे कोई पैसा नहीं लेता। कहीं यह समझो कि मैं स्वार्थ के लिए ऐसा कर रहा हूँ। और ऐ पैगंबर! वह कबीर अल्लाह अपने बंदों के गुनाहों को क्षमा करने वाला बड़ा रहमान (मेहरबान) है।

आयत नं. 59 :- और वह अल्लाहू अकबर वही है जिसने छः दिन में सृष्टि की उत्पत्ति की और फिर ऊपर तख्त (सिंहासन) पर जा बैठा। उसकी खबर (पूर्ण जानकारी) किसी बाखबर (तत्त्वज्ञानी) से पूछो।

विशेष :- इससे सिद्ध हुआ कि पवित्र कुरआन पुस्तक में भी संपूर्ण अध्यात्म ज्ञान नहीं है। परंतु लेखक का कहने का यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं कि उपरोक्त सब शास्त्रों (पवित्र वेदों, पवित्र श्रीमद्भगवत गीता, पवित्र बाइबल तथा पवित्र कुरआन) का ज्ञान गलत है। उपरोक्त शास्त्रों का ज्ञान गलत नहीं, परंतु अधूरा (Incomplete) है।

उदाहरण दें तो जैसे दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम (Syllabus) गलत नहीं है। परंतु बी.ए., बी.एस.सी, पी.एच.डी., इन्जीनियरिंग तथा डॉक्टरी आदि के लिए आगे की पढ़ाई पढ़नी पड़ती है। वह पाठ्यक्रम दसवीं से आगे का होता है जिससे पढ़ाई का उद्देश्य पूर्ण होता है। वह सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान अल्लाह कबीर स्वयं ही पृथ्वी पर प्रकट होकर बताता है। परमेश्वर कबीर माता से जन्म नहीं लेता। वह ऊपर सतलोक वाले अपने सिंहासन (तख्त) से सशरीर चलकर आता है।

जैसे बाइबल ग्रन्थ में भी प्रमाण है कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर का निज निवास ऊपर के लोक में है जो सर्वोच्च आकाश पर है। परमेश्वर ने वहीं से आकर सृष्टि की रचना छः दिन में सम्पूर्ण की और सातवें दिन ऊपर (तख्त)

सिंहासन पर जा विराजा। सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र वेदों में भी प्रमाण है कि परमेश्वर सबसे ऊपर के लोक में बैठा है। वहाँ से सशरीर चलकर पृथ्वी के ऊपर आता है। नेक बंदों को जो परमात्मा की खोज में लगे रहते हैं, उनको मिलता है। किसी संत या जिंदा बाबा के रूप में साधकों से आमने-सामने बात करता है। उसे पृथ्वी पर पहचानना कठिन होता है। वह पूर्ण ब्रह्म (कादिर अल्लाह कबीर) कुरआन, बाइबल, वेद, गीता आदि के ज्ञान देने वाले की तरह छुपकर काम नहीं करता। जो पर्दे के पीछे से यानि गुप्त रहकर बात करता है या किसी में प्रवेश करके बात करता है। वह ज्योति निरंजन काल (शैतान) है। इसने कभी भी किसी के सामने प्रत्यक्ष न होने की प्रतिज्ञा कर रखी है। पूर्ण ब्रह्म वेश बदलकर प्रत्यक्ष होकर ज्ञान देता है। अपना परिचय देने के लिए उनको ऊपर वाले लोक में ले जाकर वापिस पृथ्वी पर शरीर में छोड़ता है। फिर वे चस्मदीद गवाह (Eye Witness) आँखों देखा वर्णन उस कादिर अल्लाह कबीर का करते हैं। उससे प्राप्त ज्ञान का प्रचार करते हैं जिसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

☛ अब पढ़ें वेदमंत्रों में कि अल्लाह पृथ्वी पर आता है। यथार्थ ज्ञान भक्तों को बताता है। साधना के सच्चे नामों का ज्ञान भी बताता है :-

देखें फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मंत्र 3 की :-

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ॥३॥

पदार्थः—(सूर्यः, न) सूर्य के समान जगत्प्रेरक (अयम्) यह परमात्मा (सोमः, देवः) सौम्य स्वभाव वाला और जगत्प्रकाशक है और (विश्वानि, पुनानः) सब लोकों को पवित्र करता हुआ (भुवनोपरि, तिष्ठति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्वं भाग में भी वर्तमान है ॥३॥

विवेचनः- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 की फोटोकापी में आप देखें, इसका अनुवाद आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। उनके अनुवाद में भी स्पष्ट है कि वह परमात्मा (भूवनोपरि) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) विराजमान (ऊपर बैठा) है।

इसका यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है :-

(अयं) यह (सोमः देव) अमर परमेश्वर (सूर्यः) सूर्य (न) के समान (विश्वानि) सर्व को (पुनानः) पवित्र करता हुआ (भूवनोपरि) सर्व ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) बैठा है।

भावार्थ :- जैसे सूर्य ऊपर है और अपना प्रकाश तथा उष्णता से सर्व को लाभ दे रहा है। इसी प्रकार यह अमर परमेश्वर जिसका वेद के मन्त्रों में वर्णन किया है। सर्व ब्रह्माण्डों के ऊपर बैठकर अपनी निराकार शक्ति से सर्व प्राणियों को लाभ दे रहा है तथा सर्व ब्रह्माण्डों का संचालन कर रहा है।

☛ आगे वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर ऊपर के लोक से चलकर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान अपने मुख कमल से वाणी बोलकर बताता है। भक्ति करने की प्रेरणा करता है। साधना के यथार्थ मंत्रों का आविष्कार करता है। पृथ्वी पर कवि जैसा आचरण करता हुआ विचरण करके स्थान-स्थान पर जाता है। जो भक्ति पर लगे नेक बंदे होते हैं, उनको यथार्थ भक्ति मार्ग बताता है।

अब देखें वेदों की फोटोकॉपियाँ तथा लेखक द्वारा किया गया विवेचन :-

(देखें फोटोकॉपी वेदमन्त्रों की)

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27)

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(यज्वे) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिए परमात्मा (विश्वानि सुपथानि) सब रास्तों को (कृण्वन्) सुगम करता हुआ (मृधः) उनके विघ्नों को (अतिगाहते) मर्द्दन करता है और (पुनानः) उनको पवित्र करता हुआ और (निर्निजं) अपने रूप को (गाः कृण्वानः) सरल करता हुआ (हर्य्यतः) वह कान्तिमय परमात्मा (कविः) सर्वज्ञ (अत्योन) विद्युत् के समान (क्रीळन्) क्रीड़ा करता हुआ (वारं) वरणीय पुरुष को (पर्य्यर्षति) प्राप्त होता है ॥२६॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 की है जो आर्यसमाज के आचार्यों व महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित है जिसमें स्पष्ट है कि यज्ञ करने वाले अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करने वाले यजमानों अर्थात् भक्तों के लिए परमात्मा, सब रास्तों को सुगम करता हुआ अर्थात् जीवन रूपी सफर के मार्ग को दुःखों रहित करके सुगम बनाता हुआ। उनके विघ्नों अर्थात् संकटों का मर्दन करता है अर्थात् समाप्त करता है। भक्तों को पवित्र अर्थात् पाप रहित, विकार रहित करता है। जैसा की अगले मन्त्र 27 में कहा है कि ''जो परमात्मा द्यूलोक अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है, वहाँ पर परमात्मा के शरीर का प्रकाश बहुत अधिक है।'' उदाहरण के लिए परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक है। यदि वह परमात्मा उसी प्रकाश युक्त शरीर से पृथ्वी पर प्रकट हो जाए तो हमारी चर्म दृष्टि उन्हें देख नहीं सकती। जैसे उल्लू पक्षी दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण कुछ भी नहीं देख पाता है। यही दशा मनुष्यों की हो जाए। इसलिए वह परमात्मा अपने रूप अर्थात् शरीर के प्रकाश को सरल करता हुआ उस स्थान से (जहाँ परमात्मा ऊपर रहता है) गति करके बिजली के समान क्रीड़ा अर्थात् लीला करता हुआ यानि विद्युत जितनी गति से शीघ्रगामी होकर चलकर आता है, श्रेष्ठ पुरूषों को मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि आप कविः अर्थात् कविर्देव हैं। हम उन्हें कबीर साहेब कहते हैं। मुसलमान उसे अल्लाहू अकबर कहते हैं।

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(उदन्युवः) प्रेम की (ताः) वे (शतधाराः) सैंकड़ों धाराए (असश्चतः) जो नानारूपों में (अभिश्रियः) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (हरिं) परमात्मा को (अवनवन्ते) प्राप्त होती हैं। (गोभिरावृतं) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (क्षिपः) बुद्धिवृत्तियां (मृजन्ति) विषय करती हैं। जो परमात्मा (दिवस्तृतीये पृष्ठे) द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (रोचने) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 के मन्त्र 27 की है। इसमें स्पष्ट है कि ''परमात्मा द्यूलोक अर्थात् अमर लोक के तीसरे पृष्ठ अर्थात् भाग पर विराजमान है। सत्यलोक अर्थात् शाश्वत् स्थान के तीन भाग हैं। एक भाग में वन-पहाड़-झरने, बाग-बगीचे आदि हैं। यह बाह्य भाग है अर्थात् बाहरी भाग है। (जैसे भारत की राजधानी दिल्ली भी तीन भागों में बँटी है। बाहरी दिल्ली जिसमें गाँव खेत-खलिहान और नहरें हैं, दूसरा बाजार बना है। तीसरा संसद भवन तथा कार्यालय हैं।)

इसके पश्चात् द्यूलोक में बस्तियाँ हैं। सपरिवार मोक्ष प्राप्त हंसात्माऐं रहती हैं। (पृथ्वी पर जैसे भक्त को भक्तात्मा कहते हैं, इसी प्रकार सत्यलोक में रहने वाले हंसात्मा कहलाते हैं।) (3) सर्वोपरि तीसरे भाग में परमात्मा का सिंहासन है। उसके आस-पास केवल नर आत्माऐं रहती हैं, वहाँ स्त्री-पुरूष का जोड़ा नहीं है। वे यदि अपना

परिवार चाहते हैं तो शब्द (वचन) से केवल पुत्र उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक तीन भागों में परमात्मा ने बाँट रखा है। वहाँ यानि सत्यलोक में प्रत्येक स्थान पर रहने वालों में वृद्धावस्था नहीं है, वहाँ मृत्यु नहीं है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो जरा अर्थात् वृद्ध अवस्था तथा मरण अर्थात् मृत्यु से छूटने का प्रयत्न करते हैं, वे तत् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को जानते हैं। उनको यह भी ज्ञान होता है कि सत्यलोक में सत्यपुरूष रहता है, वहाँ पर जरा-मरण नहीं है, बच्चे युवा होकर सदा युवा रहते हैं।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2)

असांवि सोमों अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अंचिक्रदत् ।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदंम् ॥१॥

पदार्थः—(सोमः) जो सर्वोत्पादक प्रभु(अरुषः) प्रकाशस्वरूप (वृषा) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (हरिः) पापों के हरण करने वाला है, वह (राजेव) राजा के समान (दस्मः) दर्शनीय है। और वह (गाः) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (अभि अचिक्रदत्) शब्दायमान हो रहा है। वह (वारं) वर्णीय पुरुष को जो (अव्ययं) दृढ़भक्त है उसको (पुनानः) पवित्र करता हुआ (पर्येति) प्राप्त होता है। (न) जिस प्रकार (श्येनः) विद्युत् (घृतवन्तं) स्नेहवाले (आसदं) स्थानों को (योनिं) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (असावि) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोम मृलय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

पदार्थ—हे परमात्मन्! (वेधस्या) उपदेश करने की इच्छा से आप (माहिनं) महापुरुषों को (पर्येषि) प्राप्त होते हैं और आप (अत्यः) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (न) समान (अभिवाजं) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (अभ्यर्षसि) प्राप्त होते हैं। आप (कविः) सर्वज्ञ हैं (मृष्टः) शुद्ध स्वरूप हैं (दुरिता) हमारे पापों को (अपसेधन्) दूर करके (सोम) हे सोम! (मृलय) आप हमको सुख दें और (घृतं वसानः) प्रेमभाव को उत्पन्न करते हुए (निर्निजं) पवित्रता को (परियासि) उत्पन्न करें ॥२॥

विवेचन :- ऊपर ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1-2 की फोटोकापी हैं, यह अनुवाद महर्षि दयानन्द जी के दिशा-निर्देश से उन्हीं के चेलों ने किया है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित है।

इनमें स्पष्ट है कि :- मन्त्र 1 में कहा है ''सर्व की उत्पत्ति करने वाला प्रभु तेजोमय शरीर युक्त है, पापों को नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला अर्थात् सुखों की झड़ी लगाने वाला है, वह ऊपर सत्यलोक में सिंहासन (तख्त) पर बैठा है जो देखने में राजा के समान है।

यही प्रमाण सूक्ष्मवेद (कलाम-ए-कबीर) में है कि :-

अर्श कुर्श पर सफेद गुमट है, जहाँ परमेश्वर का डेरा। श्वेत छत्र सिर मुकुट विराजे, देखत न उस चेहरे नूं।।

यही प्रमाण बाइबल ग्रन्थ तथा कुरआन शरीफ में है कि परमात्मा ने छः दिन में सृष्टि रची और सातवें दिन ऊपर आकाश में तख्त अर्थात् सिंहासन पर जा विराजा। (बाइबल के उत्पत्ति ग्रन्थ 2/26-30 तथा कुरआन शरीफ की सूरः फुर्कानि-25 आयत 52 से 59 में है।)

वह परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पृथ्वी पर शब्द वाणी से ज्ञान सुनाता है। वह वर्णीय अर्थात् आदरणीय श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्त होता है, उनको मिलता है। {जैसे 1. सन्त धर्मदास जी बांधवगढ(मध्य प्रदेश वाले को मिले) 2. सन्त मलूक दास जी को मिले, 3. सन्त दादू दास जी को आमेर (राजस्थान) में मिले 4. सन्त नानक देव जी

को मिले 5. सन्त गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर हरियाणा वाले को मिले 6. सन्त घीसा दास जी गाँव खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) वाले को मिले 7. सन्त जम्भेश्वर जी (बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक) को गाँव समराथल राजस्थान वाले को मिले तथा हजरत मुहम्मद को मिले। ऐसे वह कादिर प्रभु अनेकों अच्छी आत्माओं को मिले हैं।}

वह परमात्मा अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। जो परमात्मा के दृढ़ भक्त होते हैं, उन पर परमात्मा का विशेष आकर्षण होता है। उदाहरण भी बताया है कि जैसे विद्युत अर्थात् आकाशीय बिजली स्नेह वाले स्थानों को आधार बनाकर गिरती है। जैसे कांसी धातु पर बिजली गिरती है, पहले कांसी धातु के कटोरे, गिलास-थाली, बेले आदि-आदि होते थे। वर्षा के समय तुरन्त उठाकर घर के अन्दर रखा करते थे। वृद्ध कहते थे कि कांसी के बर्तन पर बिजली अमूमन गिरती है, इसी प्रकार परमात्मा अपने प्रिय भक्तों पर आकर्षित होकर मिलते हैं।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 के मंत्र नं. 2 में तो यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा उन अच्छी आत्माओं को उपदेश करने की इच्छा से स्वयं महापुरूषों को मिलते हैं। उपदेश का भावार्थ है कि परमात्मा तत्वज्ञान बताकर उनको दीक्षा भी देते हैं। उनके सतगुरू भी स्वयं परमात्मा होते हैं। यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा अत्यन्त गतिशील पदार्थ अर्थात् बिजली के समान तीव्रगामी होकर हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में आप पहुँचते हैं। संत धर्मदास को परमात्मा ने यही कहा था कि मैं वहाँ पर अवश्य जाता हूँ जहाँ धार्मिक अनुष्ठान होते हैं क्योंकि मेरी अनुपस्थिति में काल कुछ भी उपद्रव कर देता है। जिससे साधकों की आस्था परमात्मा से टूट जाती है। मेरे रहते वह ऐसी गड़बड़ नहीं कर सकता। इसीलिए गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में कहा है कि वह अविनाशी परमात्मा जिसने ब्रह्म को भी उत्पन्न किया, सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में उसी को इष्ट रूप में मानकर आरती स्तुति करनी चाहिए।

इसी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि आप (कविर्वेधस्य) कविर्देव है जो सर्व को उपदेश देने की इच्छा से आते हो, आप पवित्र परमात्मा हैं। हमारे पापों को छुड़वाकर अर्थात् नाश करके हे अमर परमात्मा! आप हम को सुःख दें और (द्युतम् वसानः निर्निजम् परियसि) हम आप की सन्तान हैं। हमारे प्रति वह वात्सल्य वाला प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए उसी (निर्निजम्) सुन्दर रूप को (परियासि) धारण करें अर्थात् हमारे को अपने बच्चे जानकर जैसे पहले और जब चाहें तब आप अपनी प्यारी आत्माओं को प्रकट होकर मिलते हैं, उसी तरह हमें भी दर्शन दें।

अब ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 का अनुवाद :-

अनुवाद :- (शिशुम् जज्ञानम् हर्यन्तम्) परमेश्वर जान-बूझकर यानि परिस्थिति को समझकर तत्वज्ञान बताने के उद्देश्य से शिशु रूप में प्रकट होता है, आपके ज्ञान को सुनकर (मरूतो गणेन) भक्तों का बहुत बड़ा समूह उस परमात्मा का अनुयाई बन जाता है।

(मृजन्ति शुम्यन्ति वहिन्) आपका गूढ़ ज्ञान बुद्धिजीवी लोगों को समझ आता है। वे उस परमेश्वर की स्तुति-भक्ति तत्वज्ञान के आधार से करते हैं, वह भक्ति (वहिन्) शीघ्र लाभ देने वाली होती है व परमात्मा अपने तत्वज्ञान को (काव्येना) कवित्व से अर्थात् कवियों की तरह दोहों, शब्दों, लोकोक्तियों, चौपाईयों द्वारा (कविर् गीर्भिः) कविर् वाणी द्वारा अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (पवित्रम् अतिरेभन्) शुद्ध ज्ञान को ऊँचे स्वर में गर्ज-गर्जकर बोलता है। वह (कविः) कवि की तरह आचरण करने वाला कविर्देव, (सन्त्) संत या ऋषि रूप में प्रकट (सोम) अमर परमात्मा होता है। (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17)

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 18 :-

अनुवाद :- मन्त्र 17 में कहा कि ऋषि या सन्त रूप में प्रकट होकर परमात्मा अमृतवाणी अपने मुख कमल से बोलता है और उस ज्ञान को समझकर अनेकों अनुयाईयों का समूह बन जाता है। (य) जो वाणी परमात्मा तत्वज्ञान की सुनाता है। वे (ऋषिकृत्) ऋषि रूप में प्रकट परमात्मा कृत (सहंस्रणीथः) हजारों वाणियाँ अर्थात् कबीर वाणियाँ (ऋषिमना) ऋषि स्वभाव वाले भक्तों के लिए (स्वर्षाः) आनन्ददायक होती हैं। (कविनाम पदवीः) कवित्व से दोहों, चौपाईयों में वाणी बोलने के कारण वह परमात्मा कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि की पदवी भी प्राप्त करता है। वह (सोम) अमर परमात्मा (सिषासन्) सर्व की पालन की इच्छा करता हुआ प्रथम स्थिति में (महिषः) बड़ी पृथ्वी अर्थात् ऊपर के लोकों में (तृतीयम् धाम) तीसरे धाम अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर

(अनुराजति) तेजोमय शरीर युक्त (स्तुप) गुम्बज में (विराजम्) विराजमान है, वहाँ बैठा है। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 में है कि परमात्मा सर्व लोकों के ऊपर के लोक में (तिष्ठति) बैठा (विराजमान) है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19 से पुस्तक विस्तार के कारण केवल अपने मतलब की जानकारी प्राप्त करते हैं।

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥१९।

पदार्थः—(**अपामूर्मिम्**) प्रकृति की सूक्ष्म मे सू म शक्तियों के साथ (**सचमानः**) जो संगत है और (**समुद्रम्**) "सम्यक् द्रवन्ति भूतानि यस्मात् स समुद्रः" जिससे सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है। वह (**तुरीयम्**) चौथा (**धाम**) परमपद परमात्मा है। उसको (**महिषः**) मह्यते इति महिषः महिष इति महन्नामसु पठितम् नि० ३—१३। महापुरुष उक्त तुरीय परमात्मा का (**विवक्ति**) वर्णन करता है। वह परमात्मा (**चमूसत्**) जो प्रत्येक बल में स्थित है (**श्येनः**) सर्वोपरि प्रशंसनीय है और (**शकुनः**) सर्वशक्तिमान् है। (**गोविन्दुः**) यजमानों को तृप्त करके जो (**द्रप्सः**) शीघ्रगति वाला है (**आयुधानि, विभ्रत्**) अनन्त शक्तियों को धारण करता हुआ इस सम्पूर्ण संसार का उत्पादक है ॥१९॥

यह फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 19 की है। इसका अनुवाद महर्षि दयानंद के चेले आर्यसमा. जियों ने किया है जिसमें ''तुरीयम्'' का अर्थ चौथा किया है तथा ''धाम'' का अर्थ परमपद परमात्मा किया है। फिर अनुवादक ने स्पष्ट किया है कि तुरीयम् परमात्मा यानि चौथे परमात्मा का महापुरूष वर्णन करता है।

विचार करें :- तुरीयम् के मायने चौथा ठीक है, परंतु धाम का अर्थ परमात्मा गलत है। धाम का अर्थ स्थान है। वास्तव में चौथे धाम (अनामी लोक) के विषय में बताया है। उसे उदाहरण के तौर पर समुंद्र की संज्ञा दी है। जैसे समुंद्र से बारिश का जल अन्य स्थानों पर गिरता है। उस सारे जल का उद्गम स्थान समुंद्र है। इसी प्रकार चौथे अनामी लोक में विराजमान होकर कबीर परमेश्वर जी ने अन्य सब लोकों व ब्रह्माण्डों की तथा आत्माओं की रचना की है। इसलिए समुंद्र शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस मन्त्र में चौथे धाम का वर्णन है। आप जी सृष्टि रचना में पढ़ेंगे, उससे पूर्ण जानकारी होगी कि नीचे से चौथा धाम अकह (अनामी) लोक है। जिस धाम में विराजमान होकर परमेश्वर ने नीचे के सब धामों (लोकों) की उत्पत्ति की थी। उसका वर्णन इस वेद मंत्र में है।

परमात्मा ने ऊपर के चार लोक अजर-अमर रचे हैं। 1. अनामी लोक जो सबसे ऊपर है 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्य लोक।

हम पृथ्वी लोक पर हैं, यहाँ से ऊपर के लोकों की गिनती करेंगे तो 1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक तथा चौथा अनामी लोक उस चौथे धाम में बैठकर परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों की रचना की। शेष रचना सत्यलोक में बैठकर की थी। यह (तुरिया) चौथा धाम है। उसमें मूल पाठ मन्त्र 19 का भावार्थ है कि तत्वदर्शी सन्त चौथे धाम तथा चौथे परमात्मा का (विवक्ति) भिन्न-भिन्न वर्णन करता है। पाठकजन कृपया पढ़ें सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 183 पर जिससे आप जी को ज्ञान होगा कि लेखक (संत रामपाल दास) ही वह तत्वदर्शी संत है जो तत्वज्ञान से परिचित है।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 :-

मर्य न शुभ्रः तन्वा मृजानः अत्यः न सृत्वा सनये धनानाम्।
वृषेव यूथा परि कोशम अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः आविवेश।।(9:96:20)

अनुवाद :- (मर्यः) मनुष्य (न) के समान यानि जैसे मनुष्य सुन्दर वस्त्र धारण करता है, ऐसे परमात्मा (शुभ्रः तन्व) सुन्दर शरीर (मृजानः) धारण करके (अत्यः) अत्यन्त (सृत्वा) गति से चलता हुआ (धनानाम्) भक्ति धन के धनियों अर्थात् पुण्यात्माओं को (सनये) प्राप्ति के लिए आता है (यूथा वृषेव) जैसे एक समुदाय को उसका सेनापति प्राप्त होता है। ऐसे वह परमात्मा संत व ऋषि रूप में प्रकट होता है तो उसके बहुत सँख्या में अनुयाई बन जाते

हैं और परमात्मा उनका गुरू रूप में मुखिया होता है। वह परमात्मा (परि कोशम्) प्रथम ब्रह्माण्ड में (अर्षन्) प्राप्त होकर अर्थात् आकर (कनिक्रदत्) ऊँचे स्वर में सत्यज्ञान उच्चारण करता हुआ (चम्वौ) पृथ्वी खण्ड में (अविवेश) प्रविष्ट होता है।

भावार्थ :- जैसे पूर्व में वेद मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके पृथ्वी पर आता है, अपने रूप को अर्थात् शरीर के तेज को सरल करके आता है। इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 में उसी की पुष्टि की है। कहा है कि परमात्मा ऐसे अन्य शरीर धारण करके पृथ्वी पर आता है। जैसे मनुष्य वस्त्र धारण करता है और (धनानाम्) भक्ति के धनी दृढ़ भक्तों (अच्छी पुण्यात्माओं) को प्राप्त होता है, उनको वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान सुनाता है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 95 मन्त्र 2)

हरिः सृजानः पथ्यांमृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ॥२॥

पदार्थः—(हरिः) वह पूर्वोक्त परमात्मा (सृजानः) साक्षात्कार को प्राप्त हुआ (ऋतस्य पथ्यां) वाक् द्वारा मुक्ति मार्ग की (इयर्ति) प्रेरणा करता है । (अरितेव नावम्) जैसा कि नौका के पार लगाने के समय में नाविक प्रेरणा करता है और (देवानां देवः) सब देवों का देव (गुह्यानि) गुप्त (नामाविष्कृणोति) संज्ञाओं को प्रकट करता है (बर्हिषि प्रवाचे) वाणीरूप यज्ञ के लिए ॥२॥

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों ने किया है जो बहुत ठीक किया है। इसका भावार्थ है कि पूर्वोक्त परमात्मा अर्थात् जिस परमात्मा के विषय में पहले वाले मन्त्रों में ऊपर कहा गया है, वह (सृजानः) अपना सरल शरीर धारण करके (ऋतस्य पथ्यां) सत्यभक्ति का मार्ग अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अमृतमयी वाक् अर्थात् वाणी द्वारा मुक्ति मार्ग की प्रेरणा करता है। {गीता अध्याय 4 श्लोक 32 का समर्थन इस वेद मंत्र में है।}

वह मंत्र ऐसा है जैसे (अरितेव नावम्) नाविक नौका में बैठाकर पार कर देता है, ऐसे ही परमात्मा सत्यभक्ति मार्ग से नाम रूपी नौका के द्वारा साधक को संसार रूपी दरिया के पार करता है। वह (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सब प्रभुओं का प्रभु यानि परमेश्वर (बर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी ज्ञान यज्ञ के लिए (गुह्यानि) गुप्त (नामा आविष्कृणोति) नामों का अविष्कार करता है अर्थात् जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ऊँ तत् सत्'' में तत् तथा सत् ये गुप्त मन्त्र हैं जो उसी परमेश्वर ने मुझ (संत रामपाल दास) को बताऐ हैं। उनसे ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

सूक्ष्म वेद में परमेश्वर ने कहा है कि :-

''सोहं'' शब्द हम जग में लाए, सारशब्द हम गुप्त छिपाए।

भावार्थ :- परमेश्वर ने स्वयं ''सोहं'' शब्द भक्ति के लिए बताया है। यह सोहं मन्त्र किसी भी प्राचीन ग्रन्थ (वेद, गीता, कुरआन, पुराण तथा बाइबल) में नहीं है। फिर सूक्ष्म वेद में कहा है कि:-

गरीब, सोहं ऊपर और है, सत सुकृत एक नाम।
सब हंसों का बंस है, सुन्न बसती नहीं गाम।।

भावार्थ :- ''सोहं'' नाम तो परमात्मा ने प्रकट कर दिया, आविष्कार कर दिया परन्तु सार शब्द को गुप्त रखा था। अब मुझे (लेखक संत रामपाल को) बताया है जो साधकों को दीक्षा के समय बताया जाता है। इसका गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ''ऊँ तत् सत्'' से सम्बन्ध है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 94 मन्त्र 1)

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ।।१।।

पदार्थः—(सूर्य्ये) सूर्य के विषय में (न) जैसे (विशः) रश्मियां प्रकाशित करती हैं। उसी प्रकार (धियः) मनुष्यों की बुद्धियां (स्पर्धन्ते) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं। (अस्मिन् अधि) जिस परमात्मा में (वाजिनीव) सर्वोपरि बलों के समान (शुभः) शुभ बल है वह परमात्मा (अपोवृणानः) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (पवते) सबको पवित्र करता हैं। (कवीयन्) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (पशुवर्धनाय) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (व्रजं, न) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (मन्म) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा किया गया है।

विवेचन :- पुस्तक विस्तार को ध्यान में रखते हुए उन्हीं के अनुवाद से अपना मत सिद्ध करते हैं। जैसे पूर्व में लिखे वेदमन्त्रों में बताया गया है कि परमात्मा अपने मुख कमल से वाणी उच्चारण करके तत्वज्ञान बोलता है, लोकोक्तियों के माध्यम से, कवित्व से दोहों, शब्दों, साखियों, चौपाईयों के द्वारा वाणी बोलने से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक कवि की (पदवी) उपाधि प्राप्त करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर साहेब है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 में भी यही स्पष्ट है कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, वह (कवियन् व्रजम् न) कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरण करता है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 20 मन्त्र 1)

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति ।
साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ।।१।।

पदार्थः—वह परमात्मा (कविः) मेधावी है और (अव्यः) सबका रक्षक है (देववीतये) विद्वानों की तृप्ति के लिये (अर्षति) ज्ञान देता है (साह्वान्) सहनशील है (विश्वाः, स्पृधः) सम्पूर्ण दुष्टों को संग्रामों में (अभि) तिरस्कृत करता है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। इसका अनुवाद ठीक कम गलत अधिक है। इसमें मूल पाठ में लिखा हैः-

'प्र कविर्देव वीतये अव्यः वारेभिः अर्षति साह्वान् बिश्वाः अभि स्पृस्धः

सरलार्थ :- (प्र) वेद ज्ञान दाता से जो दूसरा (कविर्देव) कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर है, वह विद्वानों अर्थात् जिज्ञासुओं को, (वीतये) ज्ञान धन की तृप्ति के लिए (वारेभिः) श्रेष्ठ आत्माओं को (अर्षति) ज्ञान देता है। वह (अव्यः) अविनाशी तथा रक्षक है, (साह्वान्) सहनशील (विश्वाः) तत्वज्ञान हीन सर्व दुष्टों (झूठे गुरूओं) को (स्पृधः) अध्यात्म ज्ञान की स्पर्धा अर्थात् ज्ञान गोष्ठी रूपी वाक् युद्ध में (अभि) पूर्ण रूप से तिरस्कृत करता है, उनको फिट्टे मुँह कर देता है।

विशेष :- (क) इस मन्त्र के अनुवाद में आप फोटोकापी में देखेंगे तो पता चलेगा कि कई शब्दों के अर्थ आर्य विद्वानों ने छोड़ रखे हैं जैसे = ''प्र'' ''वारेभिः'' जिस कारण से वेदों का यथार्थ भाव सामने नहीं आ सका।

(ख) मेरे अनुवाद से स्पष्ट है कि वह परमात्मा अच्छी आत्माओं (दृढ़ भक्तों) को ज्ञान देता है, उसका नाम भी लिखा है :- ''कविर्देव''। हम कबीर परमेश्वर कहते हैं।

विवेचन :- उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि पूर्ण ब्रह्म (परमेश्वर) यानि सृजनहार कबीर अल्लाह है। वह

ही यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान सूक्ष्मवेद {जो उसकी बोली हुई कबीर बाणी (कलाम-ए-कबीर) है} में बताता है। वह सम्पूर्ण ज्ञान वर्तमान में दास (रामपाल दास) के अतिरिक्त विश्व में किसी के पास नहीं है। यह अभिमान की बात नहीं, सच्चाई है। सर्व धर्मों के मानव (स्त्री-पुरूष) उसी अल्लाह कबीर (परमेश्वर कबीर जी) की अपनी आत्मा है। सबका कल्याण करना उस परमेश्वर का उद्देश्य है। यहाँ पर शैतान (काल ब्रह्म) ने सबको भ्रमित कर रखा है। सच्ची राह वही आकर दिखाता है। अब आप जी और अधिक जानकारी पढ़ें उसी परमेश्वर के विषय में वह कैसे-कैसे वेश बनाकर अच्छी आत्माओं तक पहुँचता है।

☛ अल-खिज्र को आज अलग-अलग सभ्यताओं में विभिन्न नामों से जाना व पूजा जाता है, अल-खिज्र का 55 हदीसों में जिक्र मिलता है, कुछ वाकये निम्नलिखित हैं :-

1. मुहम्मद को अल-खिज्र का दिखाई देना व साथ घूमना।

Al-Zuhad में विवरण है। मुहम्मद कहते हैं कि अल-खिज्र व एल्लियाह/इलयास / Elijah हर साल रमजान का महीना जेरूसलम में एक साथ गुजारते हैं।

कुछ मुसलमान व ईसाई शास्त्रियों का ये मानना है कि अल-खिज्र व एल्लियाह एक ही शख्स है। एल्लियाह का बाइबल में 5 जगह (मत्ती/Matthew 17:1-8, 2 Chronicles 21:12, 1 राजा/King, 2 राजा/King, Malachi 3:1 & 4:5) और कुरआन शरीफ में 2 जगह (Sura Al-Saafat 37:123-132 & Sura an'am 6:85) जिक्र है।

Umar II में विवरण है, जो शख्स मुहम्मद के साथ टहल रहा था, वो अल-खिज्र था।

Abu Zura Al Razi में विवरण है, मुहम्मद अपने जीवन काल में अल-खिज्र से दो बार मिले थे। एक बार जवानी में और एक बार बुढ़ापे में पर अल-खिज्र की उम्र बिल्कुल नहीं बदली थी।

Ayun Akhbar Al-Rida में विवरण है, अली कहता है कि मदीना की एक गली से गुजरते वक्त अल-खिज्र ने हजरत मुहम्मद और मुझे दर्शन दिए और हमसे बात की।

2. (Al-Bayhaqi) अल-खिज्र का मुहम्मद के अंतिम संस्कार पर मौजूद होना व अली से मुलाकात।

मुहम्मद की मृत्यु के उपरांत उनके शव को अंतिम दर्शन के लिए मुसलमानों के बीच रखा गया था। तब एक ताकतवर दिखने वाला सुंदर नाक-नक्शे का और आकर्षित करने वाली हस्ती का सफेद दाढ़ी वाला एक आदमी वहाँ मौजूद मुसलमानों की भीड़ को चीरते हुए मुहम्मद के शव के पास पहुँचा और शोक व्यक्त करके चला गया। बाद में अली ने बताया कि वह शख्स अल-खिज्र था।

एक दूसरे व्याख्यान में अल-खिज्र अली को काबा के पास दिखाई दिए। वहाँ अली को अल-खिज्र ने एक दुआ (मंत्र) दी और कहा कि तुम इस दुआ को करना, ये दुआ तुम्हें अद्भुत लाभ देगी। तुम्हारे गुनाहों की गिनती आसमान के तारों या जमीन पर पड़ी कंकरों जितनी क्यों ना हो, ये दुआ उनका एक पल (Blink of an eye) में नाश कर देगी।

3. Lataif al Minan (1:84-98) में जिक्र है कि अल-खिज्र आज भी जिंदा है।

मुसलमानों का ये मानना है कि अल-खिज्र अमर (immortal) है और आज भी धरती पर जिंदा व मौजूद है और अल्लाह की राह पर जो उलझन में हैं, उनका मार्गदर्शन करता है।

4. अल-खिज्र के बारे में और कुछ प्रचलित कहानियाँ।

मुस्लिम शास्त्रियों का मानना है कि अल-खिज्र को लोगों के बीच उसके नरम हाथों से पहचाना जा सकता है। कुछ का मानना है कि अल-खिज्र के हाथों में हड्डियाँ नहीं हैं। सूफी इमामों का मानना है कि हम अपने जीवन काल में एक बार अल-खिज्र से जरूर मिलते हैं। जब आप किसी सफेद दाढ़ी वाले आदमी से हाथ मिलाओ और उसके हाथ में हड्डी ना हों तो समझ जाना वो अल-खिज्र है। अल-खिज्र को जिंदा पीर भी कहा गया है। मुस्लिम देशों में अल-खिज्र की अनगिनत यादगार मौजूद हैं।

हजरत मुहम्मद जी को अल्लाह कबीर मिले

जैसा कि वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर यानि कादिर अल्लाह सारी कायनात (सृष्टि) को पैदा करने वाला नेक आत्माओं को ऊपर आसमान वाले (तख्त) सिंहासन से पृथ्वी पर आकर मिलता है। उन्हीं नेक आत्माओं में

हजरत मुहम्मद जी हैं जिनको अल्लाह अकबर मिले। परंतु अल्लाह किसी ने देखा ही नहीं है। अन्य विद्वान गलत ज्ञान के आधार से अल्लाह को बेचून (निराकार) बताते हैं। जिस कारण से यह विश्वास होना कि जो अल-खिज्र रूप में मिला है, वह अल्लाह ताला ही है, कठिन है। इसी कारण से हजरत मुहम्मद जी अल-खिज्र रूप में मिले अल्लाह ताला को पहचान नहीं सके।

संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रांत-हरियाणा, देश-भारत) को भी दस वर्ष की उम्र में जिंदा बाबा यानि अल-खिज्र वाले वेश में अल्लाह ताला मिला था। जब बालक गरीबदास जी को विश्वास नहीं हुआ कि यह बाबा जिंदा रूप में परमेश्वर ही है तो संत गरीबदास जी को अल्लाह ताला ऊपर आसमान में बने अपने (तख्त) सिंहासन वाले सतलोक में लेकर गए। बालक गरीबदास जी को ऊपर के सब आसमानों (ब्रह्मंडों व लोकों) की सैर करवाई। वहाँ की सारी व्यवस्था दिखाई। तत्त्वज्ञान उनकी आत्मा में डाल दिया। संत गरीबदास जी को वापिस शरीर में पृथ्वी पर छोड़ा। बालक गरीबदास को मृत जानकर चिता के ऊपर लकड़ियों के ढ़ेर पर रखा गया। अग्नि लगाने की तैयारी थी। उसी समय बालक गरीबदास जी जीवित हो उठे। उठकर चल पड़े। संत गरीबदास को अल्लाह अकबीर (परमेश्वर कबीर) जी ने जो बताया, वह संत गरीबदास जी ने अपने मुख से उच्चारण करके वाणी (साखी) बोलकर बताया कि कबीर जी ने कहा था कि :-

गरीब खुरासान काबुल किला, बगदाद बनारस एक। बलख और विलायत (इंग्लैंड) तक हम ही धारें भेष।।

अर्थात् खुदा कबीर जी ने बताया है कि सारी पृथ्वी के ऊपर जितने भी देश-प्रदेश हैं, जहाँ-जहाँ अच्छी आत्माएँ जन्मी हैं, उनको यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताने तथा सच्ची साधना बताने के लिए मैं ही विभिन्न (भेष) वेश धारण करके जाता हूँ। अरब देशों में काबुल, खुरासान (रूम का एक शहर), बगदाद (इराक देश की राजधानी), बनारस (भारत का एक शहर) तथा (विलायत) इंग्लैंड देश आदि-आदि में मैं ही जाता हूँ। मेरे लिए सब देश, सब मानव एक समान हैं।

हजरत मुहम्मद जी को भी जिंदा वेश धारण करके मक्का शहर में खुदा कबीर मिले थे। संत गरीबदास को बताया था। वाणी (अमर कछ रमैंणी से) :-

मुहम्मद बोध सुनो ब्रह्मज्ञानी। शंकर दीप से आये धुंन ध्यानी।।(25)
लोक द्वीप में हम लेगैऊँ। इच्छा रूपी वहां न रहैऊँ।।(26)
उलट मुहम्मद महल पठाया। गुझ बीरज एक कलमा लाया।।(27)
रोजा बंग निमाज दई रे। बिसमिल की नहीं बात कही रे।।(28)

अर्थात् कबीर जी ने बताया है कि नबी मुहम्मद की आत्मा शिव (तमगुण) देवता के (शंकर द्वीप) लोक से आयी थी। भक्ति में ध्यान अधिक रहता था। जब उनको काल के भेजे फरिस्ते जिब्राइल ने काल ब्रह्म वाला ज्ञान डरा-धमकाकर बताया जो हजरत मुहम्मद ने जनता तक पहुँचाया जो अधूरा तथा काल जाल में फँसाए रखने वाला ज्ञान है। जब मैंने (कबीर खुदा ने) देखा कि नेक आत्मा मुहम्मद काल के जाल में फँस गए हैं, तब उसे मिला। यथार्थ ज्ञान समझाया। उनके आग्रह पर उनको ऊपर अपने लोक में जहाँ मेरा (तख्त) सिंहासन है, लेकर गया। उसका शंकर द्वीप भी दिखाया जहाँ से वह पृथ्वी पर आया था। परंतु मुहम्मद ने सतलोक में रहने की इच्छा व्यक्त नहीं की। इसलिए वापिस शरीर में छोड़ दिया। फिर भी मुहम्मद की समय-समय पर गुप्त मदद करता रहा। वाणी (मुहम्मद बोध से) :-

ऐसा जान मुहम्मद पीरं, जिन मारी गऊ शब्द के तीरं।
शब्दै फेर जिवाई, जिन गोसत नहीं भाख्या। हंसा राख्या, ऐसा पीर मुहम्मद भाई।।

अर्थात् परमेश्वर कबीर जी ने एक कलमा ''अल्लाह अकबर'' मुहम्मद जी को जाप करने को कहा। उससे मुहम्मद जी में सिद्धियाँ प्रकट हो गई। एक दिन मुहम्मद जी ने एक गाय को वचन सिद्धि से मारकर सैंकड़ों मुसलमानों के सामने जीवित कर दी। पीर मुहम्मद ऐसे महान थे। उन्होंने जीव (गाय) की रक्षा की। उसका माँस नहीं खाया। वाणी (अमर कछ रमैंणी से) :-

चार यार मिल मसलत भीनी। गऊ पकड़ कर बिसमिल कीन्ही।।(**29**)
तब हम मुहम्मद याद किया रे। शब्द स्वरूपी बेग गया रे।।(**30**)

मूई गऊ हम बेग जिवाई। तब मुहम्मद के निश्चय आई।।(31)
तुम्ह सत कबीर अलह दरवेशा। मोमिन मुहम्मद का गया अंदेशा।।(32)
दास गरीब अनाहद थीरं। भज ल्यौ सतनाम अरू सत कबीरं।।(33)

अर्थात् जिन मुसलमानों के सामने हजरत मुहम्मद जी ने वचन की सिद्धि-शक्ति से गाय (Cow) मारकर फिर वचन (शब्द) से ही जीवित की थी, उन्होंने यह बात सबको बताई। जो विरोधी लोग थे, उन्होंने मसलत (Meeting) की और फैसला लिया कि हम गाय को बिस्मिल करेंगे यानि गाय की गर्दन काटकर मारेंगे। हमारे सामने मुहम्मद जी गाय को जीवित करेंगे तो मानेंगे।

निश्चित दिन हजारों मुसलमानों तथा गैर-मुसलमानों के सामने गाय को काटा गया। मुहम्मद जी ने गाय को जीवित करने के लिए सब मंत्र-जंत्र कर लिए, गाय जीवित नहीं हुई। तब मुहम्मद जी ने अल्लाह कबीर को अल्लाह अकबर कहकर ऊँची आवाज में कई बार पुकारा। अल्लाह अकबर बोलते-बोलते धरती के ऊपर हर बार माथा लगाकर और फिर आकाश की ओर मुख करके दोनों हाथ फैलाकर अल्लाह अकबर पुकारने लगा जो वर्तमान में सिजदा कहा जाने लगा। तब कबीर खुदा वहाँ पर पहुँचा जो केवल हजरत मुहम्मद जी को दिखाई दे रहा था। उपस्थित लोगों को दिखाई नहीं दे रहा था। हजरत मुहम्मद ने अल्लाह कबीर को सजदा किया और अपनी इज्जत रखने के लिए अर्ज की। तब कबीर परमेश्वर जी (कादिर अल्लाह कबीर जी) ने तुरंत गाय जीवित कर दी। तब मुहम्मद जी की शंका (अंदेशा) समाप्त हुई और कहा कि हे सतकबीर (अमर कबीर)! आप वास्तव में अल्लाह के दरवेश (संत यानि नबी) हो। हजरत मुहम्मद जी अभी भी अल्लाह कबीर जी को खुदा नहीं मान रहे थे। खुदा का संत शक्तियुक्त मान रहे थे। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी गाय को जीवित करके अंतर्ध्यान हो गए।

उसके पश्चात् खुदा कबीर जी हजरत मुहम्मद की अरूचि देखकर उसे उस वेश में नहीं मिले। इतनी शक्ति देखकर भी काल व कर्म के प्रभाव से सतलोक में जाने की बात नहीं मानी। सत्य साधना उनको नहीं मिली। जो काल ब्रह्म (पर्दे के पीछे से बोलने वाले प्रभु) की बताई साधना {रोजा रखना, नमाज करना, अजान (बंग) लगाना} से जन्नत (Heaven) में जाने की नहीं हैं। जो कलमा जाप करने का कबीर अल्लाह जी ने मुहम्मद जी को दिया था, उससे सिद्धि आती हैं। युद्ध में सफलता प्राप्त हो सकती है। वह जन्नत जाने में सहयोगी नहीं है। जिस कारण से नबी मुहम्मद जी जन्नत में भी नहीं जा सके। पित्तर लोक में अन्य नबियों के पास गए हैं। फिर अन्य जन्म धारण करेंगे।

5. रूमी द्वारा अल-खिज्र का जिक्र। रूमी द्वारा अपने मुर्शीद (गुरू) शम्स तबरेज (Shams Tebrez) की बड़ाई में लिखी दो रचनाओं Masnavi (मसनवी) और Diwan-e-Kabir (दीवान-ए-कबीर) में भी अल-खिज्र का जिक्र है।

6. Hayat-al-Qulub (Volume 2) Battle of Badar

Amirul Momineen के हवाले से Ibn Babawayh बताते हैं : अली बयान करता है कि बदर की लड़ाई से पहले एक रात अल-खिज्र मुझे सपने में दिखाई दिए। मैंने उनसे कहा कि कृप्या करके मुझे ऐसी दुआ (नाम मंत्र) दीजिए जिससे मैं लड़ाई में जीत हासिल कर सकूँ। अल-खिज्र ने मुझे कहा पढ़ो "O he, O one who is not except that He is." सुबह होने पर मैंने इसकी चर्चा हजरत मुहम्मद से की। ये सुन मुहम्मद ने कहा, अली! अल-खिज्र ने तुम्हें अल्लाह का सबसे बड़ा नाम सिखाया है। अली आगे बताता है कि मैं बदर की लड़ाई के दौरान अल-खिज्र द्वारा बताए बड़े नामों को निरंतर याद कर रहा था।

इस्लाम की अनसुलझी पहेली

यदि पुनर्जन्म न माना जाए तो निम्न प्रश्नों के उत्तर इस्लामिक प्रवक्ताओं के पास नहीं हैं :-

जैसे कोई निर्धन है, कोई धनवान है। कोई औलाद वाला है, कोई निःसंतान है। कोई रयत है, कोई महाराजा सुल्तान है। कोई अंधा है, कोई लंगड़ा है, कोई सर्वांगवान है। यह विचार करना अनिवार्य है कि उपरोक्त अंतर किस कारण से हैं। यदि पुनर्जन्म नहीं मानें तो ये अनसुलझी पहेली सदा बनी रहेगी। यदि हम पुनर्जन्म मानते हैं तो सुलझ जाती है।

संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

''पिछले जप–तप से होत हैं पूर्ण हंस मुराद।''

अर्थात् हे भक्त आत्मा! पूर्व जन्म में किए जाप व तप से मन्नत (मुराद) पूर्ण होती है। पहले वाले जन्मों में जिसने जैसा जप तथा तप किया है या पाप-पुण्य किया है। उसी के आधार से कोई राजा बना है, कोई बड़ा राज अधिकारी बना है, कोई बड़ा सेठ धनवान बना है। कोई निर्धन है, कोई अंधा है, कोई लंगड़ा है। कोई रोगी है, कोई स्वस्थ है। कोई नौकर है, कोई नौकरानी (लौंडी) है। कोई रानी, कोई महारानी है। कोई पूर्ण आयु जीवित रहता है, कोई अल्प आयु में मर जाता है। कोई पशु है, कोई पक्षी है। कोई गंदी नाली के कीड़े हैं। यह सब पूर्व जन्मों में किए कर्मों के आधार से ही होता है।

पुनर्जन्म होता है, पढ़ें ढेर सारे प्रमाण

7. सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम

सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम बलखी को भी अल-खिज्र के दर्शन हुआ करते थे और उनसे इल्म पाकर इब्राहिम ने राजगद्दी त्याग दी और बाकी का जीवन अल्लाह की इबादत में गुजार दिया। रूमी ने अपने मुर्शीद शम्स तबरेज से मिलने के बाद लिखी पुस्तक "Masnavi" में इब्राहिम के जीवन का वर्णन किया है।

सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम को अल कबीर मिले थे। बार-बार समझाने के पश्चात् राज्य त्यागकर मोक्ष के लिए निकले थे। कृपया पढ़ें अल्लाह कबीर (परमेश्वर कबीर) ने सुल्तान इब्राहिम को कैसे काल के जाल से निकाला?

सम्मन वाली आत्मा ही सुल्तान इब्राहिम था

जिस समय परमेश्वर कबीर जी ने काशी में एक सौ बीस वर्ष लीला की थी, उस समय दिल्ली के निवासी सम्मन जाति से मनियार, उसकी पत्नी नेकी तथा पुत्र शिव (सेऊ) ने परमेश्वर से दीक्षा ली थी। आर्थिक स्थिति कमजोर थी। परमात्मा के उपदेश का दृढ़ता से पालन करते थे। परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास था। दोनों पति-पत्नी स्त्रियों को चूड़ियाँ पहनाने का कार्य घर-घर जाकर करते थे। साथ में अपने गुरूदेव कबीर जी की महिमा भी किया करते थे।

बताया करते थे कि हमारे सतगुरू देव जी ने राजा सिकंदर लोधी का असाध्य रोग आशीर्वाद मात्र से ठीक कर दिया। बादशाह सिकंदर ने स्वामी रामानन्द जी की गर्दन काट दी थी। उसको सतगुरू कबीर जी ने धड़ पर गर्दन जोड़कर जीवित कर दिया। एक कमाल नाम का लड़का मर गया था। उसके कबीले वालों ने अंतिम संस्कार रूप में दरिया में प्रवाह कर दिया था। शेखतकी जो राजा सिकंदर जी का धर्मगुरू है, उसको विश्वास नहीं था कि रामानंद जी की गर्दन काटने के पश्चात् भी कबीर जी ने जीवित कर दिया। वह राजा से कहता था कि कबीर जन्त्र-मन्त्र जानता है और कुछ नहीं है, मुर्दे कभी जिंदा होते हैं। मेरे सामने कोई मुर्दा जिन्दा करे तो मैं मानूँ।

राजा सिकंदर को कबीर जी पर पूर्ण विश्वास था क्योंकि वह तो रोग से महादुःखी था तथा रामानन्द स्वामी जी को अपने हाथों से कत्ल किया था। उसके सामने कबीर जी ने जीवित किया था। उस दिन शेखतकी भी दरिया पर उपस्थित था। मुर्दे को देखकर कहा कि यदि मेरे सामने इस मुर्दे को जीवित कर दे तो मैं कबीर को अल्लाह का नबी मान लूँगा।

कबीर जी ने कहा कि हे शेख जी! आप भी बड़े पहुँचे हुए पीर हो, आप कोशिश करो, बाद में कहोगे कि मैं भी कर देता। उपस्थित सर्व मन्त्रियों और बादशाह ने भी यही कहा कि आप कौन-से छोटी हस्ती हो? कर दो काम।

शेखतकी ने शर्म के मारे जन्त्र-मन्त्र किए, परंतु व्यर्थ। कहा कि मुर्दे जिन्दा नहीं हुआ करते। कबीर तो चाहता है कि मुर्दा बहकर दूर चला जाए और इज्जत रह जाए। वह चला गया मुर्दा। कबीर जी ने अपने हाथ का संकेत किया और कहा मुर्दा वापिस आओ। इन्जन वाली नौका के समान बालक का शव वापिस आ गया। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी है, कबीर हुक्म से शव में प्रवेश कर और बाहर आओ। उसी समय वह 12 वर्षीय बालक जीवित होकर दरिया से बाहर आ गया। उपस्थित दर्शकों ने कहा, कबीर जी! कमाल कर दिया। बालक का नाम कमाल रख दिया। परमात्मा कबीर जी ने उस कमाल बालक को अपने घर बच्चे की तरह पाला। शेखतकी शर्म से पानी-पानी हो गया, परंतु माना नहीं। कहने लगा कि बालक को सदमा हुआ था। गलती

से मृत मानकर जल प्रवाह कर दिया था। जब जानूँ, मेरी बेटी कई दिनों से कब्र में दबा रखी है। वह मृत्यु को प्राप्त हो चुकी है। उसको कबीर जीवित कर दे।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि दो दिन बाद तेरी बेटी को जीवित कर दूँगा। आसपास के गाँव तथा दिल्ली में मुनादी करा दो कि सब आकर देखें। ऐसा ही किया गया। कब्र तोड़ दी गई। कबीर परमेश्वर जी ने कहा, शेख जी! प्रयत्न करो, कहीं बाद में कहे कि लड़की सदमे में थी। उपस्थित जनता ने कहा कि कबीर जी! यदि शेख में शक्ति होती तो अपनी बेटी को कैसे मरने देता? आप कोशिश करो। कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! जीवित हो जा। लड़की जीवित नहीं हुई। ऐसा दो बार कहा। लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी को अपनी बेटी के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर जी की हार की खुशी मनाने लगा और ताली बजाते हुए नाचने लगा। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी हो, कबीर हुक्म से अपने शरीर में प्रवेश कर और कब्र से बाहर आओ। कहने की देरी थी, उसी समय 12 वर्षीय कन्या के शरीर में हलचल हुई और लड़की उठकर बाहर आई और कबीर जी को दण्डवत् प्रणाम किया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! अपने पिता के साथ घर जाओ। शेखतकी ने भी बेटी का हाथ पकड़ा और घर चलने को कहा। कन्या का नाम कमाली रखा क्योंकि उपस्थित जनता ने कहा, कमाल है, कमाल है। इसलिए कमाली नाम रखा।

कमाली ने कहा कि शेखतकी की ओर से तो मैं यमराज के पास जा चुकी थी। अब तो मैं अल्लाह अकबर की बेटी हूँ। यह कबीर स्वयं अल्लाह है। इस प्रकार लड़की ने कबीर परमेश्वर जी के आशीर्वाद से 1½ घण्टे तक प्रवचन किए। अपने पूर्व के जन्मों की जानकारी दी कि एक बार मैं राबिया थी। उस समय 12 वर्ष की आयु में कबीर जी मिले थे। मैंने 4 वर्ष इनकी बताई साधना की थी। फिर अपने मुसलमान धर्म वाली साधना करने लगी थी जो व्यर्थ थी। फिर मैं बांसुरी लड़की बनी। मक्के में अपना शरीर भी काटकर अर्पित कर दिया था। अगले जन्म में मैंने वेश्या का जीवन जीया। उन चार वर्ष की सत्यभक्ति से मुझे 2½ जन्म मनुष्य के मिले थे। अब मेरा कोई मानव जीवन शेष नहीं था। पशु की योनि में जाना था। उसी समय परमेश्वर कबीर जी धर्मराज के पास गए और मुझे छुड़ाकर लाए और शरीर में प्रवेश कर दिया। इनकी कृपा से मुझे मानव जीवन मिला है। अब मैं अपने वास्तविक पिता अल्लाह कबीर जी के साथ रहूँगी।

कबीर जी ने कमाली को बेटी की तरह पाला और अपने घर पर रखा। उपस्थित लाखों की सँख्या में दर्शकों ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली। सबको प्रथम 5 मन्त्र का उपदेश दिया। {इस प्रकार कबीर जी के उस समय 64 लाख शिष्य हो गए थे। वे चमत्कार देखकर ही शरण में आए थे।} दिल्ली नगर की स्त्रियाँ नेकी तथा सम्मन से ये अनोखी बातें सुनकर बाद में चर्चा करती थी कि क्या ये बातें सम्भव हो सकती हैं? कुछ तो कहती थी कि हमारे घर वाला भी उस समय वहीं उपस्थित था। जब शेख की लड़की कब्र से निकालकर जीवित की गई थी, परंतु मेरा पति इस बात से नाराज हुआ कि कबीर क्यों ले गया लड़की को? जिसकी बेटी थी, उसको सौंप देनी थी। भावार्थ है कि कुल मिलाकर वे स्त्रियां अंदर से मजाक रूप में मानती थी, परंतु उनके सम्मुख चुप रह जाती थी।

नेकी-सेऊ-सम्मन के बलिदान की कथा

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच जाते हैं। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ (शिव)। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे?

कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो।

नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है।

सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ।

नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि

हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-आदि कहकर मजाक करने लगे।

सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ।

नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पृथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुंह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे में जा कर फूट-2 कर रोने लगा।

तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोईये मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व भक्तों के लिए।

तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। माँ आपको मेरी कसम।

तब नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। जिस नगर में निर्वाह किया है। इसकी रक्षा के लिए चोरी करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग हमसे बहुत चिढ़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) पृथ्वी पर आए हुए हैं। इन्होंने एक मृतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लोधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लोधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री स्वामी रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) को सिंकदर लोधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो?

बेटा! ये नादान प्राणी हैं। यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना।

तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न।

अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए जाते हैं। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूंगा और ले कर भाग जाना।

सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा।

सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे?

सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर जाता है। तब सम्मन कहता है कि पुत्र! केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर आटा अपनी फटी-पुरानी चाद्दर में बाँधकर चलने लगता है तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा गया। जोरदार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग जाता है और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़कर रस्से से बाँध देता है। इससे पहले सेऊ वह चाद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक देता है और कहता है कि पिता जी! मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा

ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना।

आटा लेकर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पाकर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थाम्ब से बाँध दिया।

नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न करवा दें। यह कहकर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए।

सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें।

तब सेऊ उस सेठ (बनिए) से कहता है कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कृप्या करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए।

सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई।

सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। मुझे पहचानकर घर तक सेठ पहुँचेगा। राजा तक इसकी पहुँच है। यह अपने गुरूदेव को मरवा देगा। पिताजी हम क्या मुख दिखाऐंगे? सम्मन ने एकदम करद मारी और सिर काट कर घर ले गया।

सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देखकर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था, उस खण्डहर में डाल गया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ। जब सम्मन दुकान पर पहुँचा। उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ तीन दौनों (मिट्टी के बर्तनों) में भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दौनों में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद पाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद के लिए बैठ गए। तब साहेब कबीर जी ने कहा :-

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।

साहेब कबीर (अल्लाहू अकबर = अल खिज्र) ने कहा कि सेऊ आओ भोजन पाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों (भक्तों) के नहीं। उनकी तो रक्षा होती है। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा। बोलो कबीर साहेब (कविरमितौजा) की जय। (वेदों के वचन :- कविर् = कविर्देव = कबीर परमेश्वर, अमित + औजा = जिसकी शक्ति का कोई वार-पार न हो।)

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संशय को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था।। सत साहिब।।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 162 मंत्र 2 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है। यदि मृत्यु को भी प्राप्त हो चुका हो, उसे धर्मराज से छुड़वाकर सौ वर्ष का जीवन दे देता है।

।। जय हो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ (अल खिज्र) जी की।।

सम्मन वाली आत्मा नौशेर खान बना

नेकी और सेऊ तो उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर गए, परंतु सम्मन के दिल पर ठेस लग गई कि यदि मेरे पास धन होता तो मुझे बेटा काटना ना पड़ता। परमात्मा ने उसी जन्म में सम्मन-नेकी-सेऊ को धन-धान्य से परिपूर्ण कर दिया था। वे निर्धन नहीं रहे थे। सम्मन दिल्ली का महान धनी व्यक्ति हो गया था, परंतु फिर भी मोक्ष की इच्छा नहीं बनी। जिस कारण से बेटे की कुर्बानी परमेश्वर रूप सतगुरू के लिए करने के कारण अगले जन्म में नौशेरखाँ शहर के राजा के घर जन्म लिया। राजा बना। 80 खजाने हीरे-मोतियों के भरे थे, परंतु दान नहीं करता था, न परमात्मा को याद करता था।

परमेश्वर कबीर जी जिन्दा बाबा (अल खिज्र) का वेश बनाकर बादशाह नौशेरखान के पास गए और दान करने का उपदेश दिया। राजा ने कहा, मैं निर्धन राजा हूँ। जिन्दा ने कहा कि आपके 80 खजानों को झंडे लगे हैं। (यह राजा की पहचान होती थी कि जिसके पास जितने खजाने होते, उतने झण्डे खड़े किया करते।)

राजा ने कहा, ये तो कोयले हैं। जिन्दा ने कहा कि जैसी तेरी नीयत है, कोयले हो जाएंगे। राजा ने खोलकर खजाने देखे तो सच में कोयले हो गए थे। राजा ने परमेश्वर के चरण पकड़कर क्षमा याचना की। परमेश्वर ने कहा कि यदि अधिक धन को दान करे तो ये फिर से हीरे-मोती बन जाएंगे। राजा ने कहा, जैसे आपकी आज्ञा, वही करूँगा। खजाने फिर से हीरों से भर गए। राजा नौशेरखान ने अधिक मात्रा में धन को दान किया। जिसके फलस्वरूप तथा पूर्व जन्म की भक्ति व सतगुरू सेवा के फलस्वरूप ईराक देश में बलख नामक शहर का राजा बना। विस्तृत कथा आगे है :-

सुल्तान अब्राहिम की जन्म कथा

एक अधम शाह नाम का फकीर था। उसने बलख शहर से कुछ दूर एक कुटिया बना रखी थी। शहर में घूमने-फिरने आता था। एक दिन उसने बलख के बादशाह की इकलौती बेटी को देखता है जो युवा तथा सुंदर थी। अधम शाह के मन में लड़की से विवाह करने की प्रबल प्रेरणा बन जाती है।

वह राजा के पास जाकर कहता है कि इस लड़की का विवाह मुझसे कर दो। राजा हैरान होता है और फकीर कहीं श्राप न दे दे, इसलिए डर भी जाता है। अचानक हाँ या ना नहीं कह सका, फकीर को कल आने को कह देता है। मंत्रियों को पता चला। एक राय बनी कि कल उसे कह देंगे कि राजा की लड़की से विवाह करने के लिए मोतियों का एक हार लाना पड़ता है या सौ मोती लाने होते हैं। अन्यथा विवाह नहीं होता। अगले दिन फकीर को यह शर्त बता दी गई।

फकीर मोती लेने के लिए चल पड़ता है। किसी ने बताया कि मोती तो समुद्र में मिलते हैं। समुद्र के किनारे जाकर अपने करमण्डल (लोटे) से समुद्र का जल भरकर कुछ दूरी पर रेत में डालने लग जाता है। कई दिन तक भूखा-प्यासा इसी प्रयत्न में लगा रहा। शरीर भी समाप्त होने को आया। जो भी देखता, वही कहता कि अल्लाह के लिए घर त्यागा था। अब नरक की तैयारी कर रहा है। समुद्र कभी खाली नहीं हो सकता। भक्ति कर।

परमात्मा जिंदा बाबा के वेश में वहाँ प्रकट हुए तथा अधम शाह से पूछा कि क्या कर रहे हो? उसने बताया कि राजा की लड़की से विवाह करना है। उसके लिए मोतियों की शर्त रखी है। मोती समुद्र में बताए हैं। समुद्र खाली करके मोती लेकर जाऊँगा।

जिन्दा ने कहा कि समुद्र खाली नहीं हो सकता। आप भूखे-प्यासे मर जाओगे। आप जिस मोक्ष के उद्देश्य के लिए घर से निकले हो। मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न करो तो कुछ बात बने। आपने जीवन को नष्ट करने की योजना बना ली है। अधम शाह ने कहा कि आपकी शिक्षा की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, तुम अपना करो।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

विकार मरे मत जानिया, ज्यों भूभल (राख) में आग। जब करेल्लै धधकहीं, कोई बचै सतगुरू शरण लाग।।

{चुटकुला :- एक 70-75 वर्ष का वृद्ध शराब पीकर मार्ग में खड़ा-खड़ा झूम रहा था। उसके हाथ का डोगा (सहारे के लिए डण्डा) जमीन पर गिर गया। वह डोगा उठाने में असमर्थ था क्योंकि वह नशे में था, गिर जाता। फिर उठना मुश्किल हो जाता।

एक भद्र पुरूष उसी रास्ते से आया। वृद्ध ने उसे लड़खड़ाती आवाज में कहा कि मेरा डोगा उठाकर मुझे दे दो। यात्री को समझते देर नहीं लगी। कहा, हे दादा जी! आप अपनी आयु की ओर देखो। इस आयु में शराब पीना शोभा नहीं देता। पोते-पोतियों वाले हो। उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

यह बात सुनकर वृद्ध ने कहा कि शिक्षा बिना बात ना रह रही, क्या आज तक कोई मुझे यह शिक्षा देने वाला नहीं मिला होगा? यदि डोगा उठाना है तो उठा नहीं तो जा। यही दशा अधम शाह फकीर की थी।}

परमात्मा ने देखा कि भक्त तो मरेगा। कबीर जिंदा बाबा (अल खिज्र) ने अपनी शक्ति से समुद्र की झाल मारी, हजारों मोती रेत में पड़े थे। या अल्लाह कहकर अधम शाह ने हजारों मोती चद्दर में बाँध लिए और राजा के दरबार में जाकर रख दिए और कहा कि आप अपने वायदे अनुसार शहजादी का विवाह मेरे से कर दो। मंत्रियों ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि इसको डण्डे मारो और मारकर जंगल में डाल आओ। ऐसा ही किया गया। परमात्मा की कृपा से वह मरा नहीं। कुछ दिन में चलने-फिरने लगा।

कुछ दिन के पश्चात् राजा की लड़की मर गई। उसको कब्र में दबाकर चार पहरेदार छोड़ दिए कि कोई जंगली जानवर शव को खराब न कर दे। अधम शाह को पता चला। वह रात्रि को कब्र के पास गया। पहरेदार गहरी नींद में सोए थे। अधम शाह कब्र को खोदकर शव को निकालकर, कब्र को उसी तरह ठीक करके लड़की के शव को अपनी कुटिया में उठा ले गया।

उसी रात्रि में बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर उसी जंगल में चला गया। कुटिया में दीपक जल रहा था। लड़की का शव कफन में लिपटा दीवार के सहारे रखा जैसे लड़की पलाथी लगाकर बैठी हो। सर्दी का मौसम था। अग्नि लेने के लिए काफिले के दो व्यक्ति कुटिया पर गए। आवाज सुनकर अधम शाह डर गया कि राजा के आदमी आ गए। वह कुटिया के पीछे जाकर एक गुफा में छिप गया जिसमें वह साधना किया करता था।

काफिले के व्यक्तियों ने मृत जवान लड़की को दीवार के सहारे बैठा देखा तो डर के मारे उलटे पैरों काफिले में जाकर बताया। एक वैद्य भी काफिले में रहता था। कई व्यक्ति तथा वैद्य वहाँ गये तो लड़की को देखते ही वैद्य ने कहा कि यह लड़की मरी नहीं है, इसको सदमा लगा है। उपचार कर सकता हूँ। काफिले के मालिक ने कहा कि आप उपचार करो। यदि लड़की स्वस्थ हो गई तो इसी से पूछेंगे कि कौन है तेरा पिता या पति कहाँ है? पहले लड़की के नग्न शरीर के ऊपर चाद्दर डाली। फिर वैद्य ने हाथ की नस में चीरा देकर अशुद्ध रक्त निकाला।

लड़की कुछ ही मिनटों में सचेत हो गई। बोली कि मैं यहाँ कैसे आयी हूँ? अधम शाह फकीर ने दीपक की रोशनी में देखा कि ये राजा के आदमी नहीं हैं। शहजादी भी जीवित हो गई है। वह काफिले के व्यक्तियों के पास आया और सारी दास्तां बताई जो लड़की ने भी सुनी।

लड़की को काफिले के व्यक्तियों ने समझाया कि यदि आपको यह फकीर कब्र से निकालकर नहीं लाता तो आप तो संसार से चली गई होती। अब आपको चाहिए कि इस फकीर के साथ अल्लाह की रजा मानकर रहें। लड़की ने हाँ कर दी। उन व्यक्तियों ने दोनों का विवाह कर दिया, निकाह पढ़ दिया। काफिले के मालिक ने कहा कि यदि आप हमारे साथ चलना चाहें तो हम आपकी सेवा करेंगे, कोई कष्ट नहीं होने देंगे। गृहस्थी बना फकीर बोला कि हमें यहीं रहना है। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूल सकूँगा। आप मेरे लिए अल्लाह का स्वरूप बनकर आए हो। हम दोनों की मौत होनी थी। आपने हमारे जीवन की रक्षा की है। उनको वहीं छोड़कर काफिले के व्यक्ति चले गए।

कुछ दिन पश्चात् लड़की ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम ''सुल्तान इब्राहिम'' रखा। चार वर्ष का बच्चा होने के पश्चात् बलख शहर के मौलवी के पास पढ़ने के लिए प्रवेश दिलाया। प्रतिदिन अधम बेटे को मौलवी के पास सुबह छोड़ आता, शाम को ले आता। बलख के बादशाह की इकलौती बेटी थी, पुत्र नहीं था। राजा गरीब बच्चों की मदद किया करता था। एक दिन बलख का राजा उस मौलवी के पास गया। वह विधार्थियों को इनाम देता था। गरीब बच्चों को कपड़े बाँटता था। अधम शाह फकीर के लड़के को देखकर राजा हैरान रह गया। उसकी सूरत राजा की लड़की से मिलती थी।

राजा ने मौलवी से पूछा कि यह बच्चा किसका है? मौलवी ने बताया कि एक फकीर जंगल से आता है, उसका बालक है। सुबह छोड़कर जाता है, शाम को ले जाता है। हमने अधिक पूछताछ नहीं की। लड़का भी उठकर राजा से लिपट गया। राजा ने उसे गोद में उठा लिया और चल पड़ा। मौलवी से कहा कि इसका पिता

आए तो महल में भेज देना, वहाँ से ले जाएगा। राजा ने रानी को वह बालक दिखाया, वह तो देखते ही अपनी बेटी को याद करके मूर्छित होकर पृथ्वी के ऊपर गिर गई। सचेत होने पर बालक को सीने से लगाया। खाना खीर-हलवा स्वयं बनाकर खिलाया। रानी ने कहा कि यह तो अपनी लड़की से मिलती शक्ल का है। इतने में फकीर मौलवी के पास जाकर राजा के महल में चला गया। राजा ने नौकरों को बोल रखा था कि इस लड़के का पिता आए तो उसे रोकना नहीं, महल में आदर के साथ लेकर आना है। उसी फकीर को देखकर राजा ने कहा कि यह बालक किसका है?

फकीर ने बताया कि यह मेरा लड़का है। आपकी लड़की से उत्पन्न हुआ है। राजा ने कहा कि फकीर होकर झूठ बोलना ठीक नहीं होता। फकीर ने सर्व कथा बताई। राजा को विश्वास नहीं हुआ। फकीर को साथ लेकर नौकरों के साथ पहले लड़की की कब्र को खोदा, वहाँ शव नहीं था। फकीर की कुटिया पर गए। उनकी लड़की कई स्थानों से फटे और पैबन्द लगे वस्त्र पहने बैठी थी। अपने माता-पिता को देखते ही दौड़कर पिता-माता से बारी-बारी सीने से लगी।

लड़की, बच्चे तथा फकीर को निवेदन करके अपने महल में ले गए। फकीर अधम को अपना उतराधिकारी नियुक्त कर दिया। जिस कारण से शाह कहा जाने लगा। उसका नाम 'अधम' था। कुछ दिन रहकर अधम शाह को राज-ठाठ अच्छे नहीं लगे। वह उनसे प्रेम से विदाई लेकर कुटिया में चला गया और कभी-कभी लड़के तथा पत्नी से मिल जाता था। कुछ वर्षों के पश्चात् अधम शाह फकीर की मुत्यु हो गई। उसकी समाधि कुटिया में बना दी। आसपास सुंदर बगीची बनाई गई। वहाँ मेले लगने लगे। बालक इब्राहिम नाना जी के राज्य का उतराधिकारी बनाया गया।

विचारणीय विषय :-

कबीर कमाई आपनी, कबहू न निष्फल जाय। सात समंदर आड़े पड़े, मिले अगाऊ आय।।

अर्थात् भक्ति की जैसी कमाई (साधना) की है, वह निष्फल नहीं जाती चाहे सात समुंद्रों जितनी बाधा क्यों न आ जाए।

भक्ति के लिए भक्त का शरीर स्वभाव बहुत सहयोगी होता है। अच्छे माता-पिता से मिले जन्म से बच्चे के शरीर में माता-पिता का स्वभाव भी साथ रहता है। सुल्तान इब्राहिम जिस जन्म में सम्मन मनियार था। उसने अपने लड़के की कुर्बानी सतगुरू की सेवा के लिए दी थी। कुछ कारण ऐसा बना था। परमेश्वर जी यानि सतगुरू कबीर जी ने वह लड़का जीवित कर दिया था। वही सम्मन फिर राजा बना। भक्ति नहीं की। अबकी बार उस आत्मा को ऐसे पिता से शरीर दिया जो जन्म से परमात्मा पर समर्पित थे। सम्मन की आत्मा को मोक्ष दिलाने के लिए परमेश्वर जी ने अधम शाह में विवाह की प्रेरणा प्रबल की। लड़की को सदमा, समुद्र से मोती, बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर कुटिया पर आना, लड़की को जीवित करना। सुल्तान इब्राहिम का जन्म अधम शाह से पाक आत्मा लड़की से होना जो एक फकीर के साथ रहकर साध्वी जीवन जी रही थी। उच्च विचार बने थे। संसार की कोई बुराई लड़की को नहीं लगी थी। सतगुरू के लिए अपने पुत्र सेऊ (शिव) का बलिदान तथा नौशेरखान रूप में अरबों रूपये दान (जकात) में दिए। उस दान का फल भी उस जीव को देना था। उसके लिए परमेश्वर कबीर जी ने यह लीला की थी। आदम शाह फकीर का दादा उसी बलख शहर का राजा था जिसका राज्य अब्राहिम के नाना जी के पिता ने लड़ाई करके छीन लिया था। फिर वही राज्य उसी वंश के सुल्तान अब्राहिम को मिला। आदम शाह भी भक्ति से भटकने के कारण पशु की योनि में जन्मा।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

ये सब खेल हमारे कीये, हमसे मिले सो निश्चय जीये।।

जो जन हमरी शरण है, ताका हूँ मैं दास। गैल—गैल लाग्या फिरूँ, जब तक धरणी आकाश।।

सुल्तान इब्राहिम को शरण में लेना

{अल्लाह अकबर जी जिंदा बाबा (अल खिज्र) का वेश बनाकर बार-बार सुल्तान इब्राहिम को समझाया।}

सम्मन वाला जीवन पूरा करके शरीर त्याग गया। वही जीव अगले जन्म में नौशेरखान फिर राजा बना। फिर सुल्तान अब्राहिम बना। इराक के अंदर एक बलख नाम का शहर था। उस शहर में उसकी राजधानी थी। राजा का नाम सुल्तान अब्राहिम अधम था। उस आत्मा ने सम्मन के जीवन में जो श्रद्धा से भक्ति की थी। उसके कारण मानव जीवन मिलते आ रहे थे तथा जो दान किया था, उसके प्रतिफल में राजा बनता रहा। उसका सबसे बड़ा दान तीन सेर आटा था जो बेटे की कुर्बानी देकर किया था। उसी कारण से वह धनी राजा बनता रहा। कुछ नौशेरखान के जीवन में कबीर परमेश्वर जी ने कारण बनाकर दान करवाया। जिस कारण से भी बलख का धनी राजा बना। अठारह लाख घोड़े थे। अन्य हीरे-मोतियों की कमी नहीं थी। एक जोड़ी जूतियों के ऊपर अढ़ाई लाख के हीरे लगे होते थे। कहते हैं 16 हजार स्त्रियां रखता था। ऐश (मौज) करता था। शिकार करने जाता, बहुत जीव हिंसा करता था।

एक दिन राजा के महल के पास किसी भक्त के घर कुछ संत आए थे। उन्होंने सत्संग किया। राजा ने रात्रि में अपने घर की छत के ऊपर बैठकर पूरा सत्संग सुना। परमात्मा की भक्ति की प्रबल प्रेरणा हुई। सुबह अपने मंत्रियों से कहा कि किसी अच्छे संत का पता करो। मुझे मिलाओ।

एक ढ़ोंगी बाबा बड़ा प्रसिद्ध था। राजा को उसके पास ले जाया गया। राजा उसके बताए मार्ग से भक्ति करने लगा। राजा की ऊँगली में एक बहुमूल्य छाप (अंगूठी) थी। ढ़ोंगी बाबा दिखावा तो करता था कि वह धन को हाथ नहीं लगाता। लगता था कि बड़ा त्यागी और बैरागी है, परंतु था धूर्त। सुल्तान भी उससे प्रभावित था। उस बाबा ने अपने निजी सेवक से कहा कि जिस सुनार ने राजा अब्राहिम की अँगूठी बनाई है, उस सुनार से वैसी ही अँगूठी नकली हीरों तथा मोतीयुक्त नकली सोने की बनवाकर ला। नकली अँगूठी बिल्कुल वैसी ही बन गई।

एक दिन राजा संत के पास गया। संत ने नौका विहार की इच्छा की। सुल्तान अब्राहिम अधम ने नौका विहार का प्रबन्ध करवाया। सरोवर के मध्य में जाकर बाबा ने कहा, राजन्! आपकी अँगूठी अति सुन्दर है, दिखाना जरा। राजा ने अँगूठी निकालकर संत जी को दे दी, वह बाबा देखने लगा। नजर बचाकर अँगूठी बदल दी। राजा ने कहा कि आप चाहें तो अँगूठी ले लें या और बनवा दूँ। बाबा ने कहा, अरे! साधु-संतों के लिए तो यह मिट्टी है मिट्टी। यह कहकर नकली अँगूठी सरोवर में फैंक दी।

राजा को पूरा भरोसा हो गया कि वास्तव में साधु त्यागी और बैरागी है। कुछ दिन बाद उस ढ़ोंगी बाबा की पोल खुल गई। उसके राजदार शिष्य ने राजा को बताया कि आपकी अँगूठी ऐसे-ऐसे बाबा ने ठगी है। वह उसके पास है। जब राजा ने वह अँगूठी उसी बाबा की कुटिया में जमीन में दबी पाई तो बहुत दुःख हुआ और साधु-संतों से विश्वास उठ गया। उस ढ़ोंगी को जेल में डाल दिया। फिर तो राजा ने अपने राज्य के सब संत-महात्माओं को बुला-बुलकार उनसे प्रश्न किया कि यदि आपने खुदा को पाया है तो मुझे भी मिला दो। इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। एक संत ने कहा कि आप एक गिलास दूध का मंगवाऐं दूध का गिलास नौकर ने लाकर दे दिया। संत ने दूध में उंगली डाली और राजा से कहा, राजन्! आपके दूध में घी नहीं है। राजा ने कहा, दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। पहले दूध को गर्म करके ठण्डा किया जाता है। फिर जमाया जाता है, दही बनती है। फिर बिलोया जाता है। तब घी निकलता है। उस संत जी ने कहा, सुल्तान जी! जिस प्रकार दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। वैसे ही मानव शरीर से परमात्मा प्राप्ति की विधि है। उस विधि से परमात्मा प्राप्त होता है। गुरू बनाओ, साधना करो।

राजा के मन में गुरू के प्रति घृणा थी। वह सबको उसी दृष्टिकोण से देख रहा था। सब महात्माओं को जेल में डाल दिया। सबसे चक्की चलवाई जा रही थी। सब साधु परमात्मा के लिए ही तो घर-परिवार त्यागकर निकले होते हैं। भक्ति मार्ग सही नहीं मिलने के कारण महिमा की चाह स्वतः हो जाती है। अधिक शिष्य बनाना। अच्छा-बड़ा आश्रम बनाना, यह धुन लग जाती है, परंतु परमेश्वर की अच्छी आत्माऐं होती हैं। वे परमेश्वर के लिए प्रयत्नशील होने से परमात्मा की उन पर रजा रहती है। उनको सत्यज्ञान देने के लिए वेश बदलकर परमात्मा

उनको समझाते हैं, परंतु काल के जाल में अँधे होकर नहीं मानते। परमात्मा सबका पिता है। वह बालक जानकर क्षमा करता रहता है। फिर भी उनकी सहायता करता रहता है।

लीला नं. 1 :- जेल में दुःखी भक्तों की पुकार सुनकर उनको छुड़वाने के लिए तथा अपने परम भक्त सम्मन को काल के जाल से निकालने के लिए परमेश्वर कबीर जी एक भैंसे के ऊपर बैठकर सुल्तान अधम के राज दरबार (कार्यालय) में पहुँच गए।

साधु वेश में परमेश्वर को देखकर अब्राहिम सुल्तान ने पूछा, आप किसलिए आए हो? परमेश्वर जी ने कहा कि आपके प्रश्न का उत्तर देने आया हूँ। अब्राहिम ने प्रश्न किया कि मुझे बताओ खुदा कैसा है? यदि खुदा से आप मिले हैं तो मुझे भी मिलाओ। कबीर जी ने भैंसे से कहा कि बता दे भैंसा! अल्लाह कैसा है? कहाँ है? खुदा की कसम सच कहना। भैंसा मनुष्य की तरह बोला, कहा कि अब्राहिम मेरे ऊपर बैठा यह अल्लाहु अकबर है। सुल्तान को भैंसे को बोलते देखकर आश्चर्य हुआ और प्रभावित भी हुआ। सोचने लगा कि यह कोई सेवड़ा हो सकता है। परमेश्वर भैंसे सहित अन्तर्ध्यान हो गये। अब्राहिम को चक्कर आ गया। परमात्मा जेल के सामने खड़े हो गए। सिपाहियों को आदेश था कि कोई भी साधु मिले, उसको जेल में डाल दो। उन्होंने परमात्मा को जेल में बंद कर दिया।

सिपाहियों ने कहा कि चक्की चलाओ। अन्य सब साधु भी चक्की चलाकर आटा पीस रहे थे, रो रहे थे। कबीर जी ने सिपाहियों से कहा कि हम बन्दी एक काम करेंगे, एक सिपाही करेंगे। हम चक्की चलाएंगे तो चक्की में कनक (गेहूँ, चना, बाजरा) सिपाही डालेंगे। या हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ।

सिपाहियों ने क्रोधित होकर कहा कि हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ। कबीर जी ने कहा कि सब संत खड़े हो जाओ। यह कहकर अपनी चक्की को डण्डा लगाया। उसी समय सब (360) चक्की अपने आप चलने लगी। परमात्मा ने कहा, सिपाही भाई डालो कनक, पीसो जितना चाहिए। साधुओं से कहा कि आँखें बंद करो। सबने आँखें बंद कर ली। फिर परमेश्वर जी ने कहा कि आँखें खोलो। आँखें खोली तो सब जेल से बाहर बलख शहर से दूर जंगल में खड़े थे। कबीर जी ने कहा कि आप इस राजा के राज्य को त्यागकर दूर चले जाओ। सर्व भक्त जन परमेश्वर को प्रणाम तथा धन्यवाद करके भाग चले। दूर चले गए। राजा को पता चला कि एक सिद्ध फकीर आया था। सब कैदियों को छुड़वाकर ले गया। जाते दिखाई नहीं दिए। एक चक्की को डण्डा लगाया, सब (360) चक्कियाँ चलने लगी हैं। राजा जेल में गया। चलती चक्कियों को देखकर हैरान रह गया। फिर चक्कियाँ बंद हो गई। राजा विचारों में खो गया।

लीला नं. 2 :- कुछ दिनों के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी एक ऊँट चराने वाले ग्रामीण जैसे वेश बनाकर हाथ में लंबी लाठी लेकर राजा के निवास के ऊपर छत पर प्रकट हो गए। रात्रि का समय था। राजा सो रहा था। परमेश्वर ने छत के ऊपर लाठी को जोर-जोर से मारना शुरू किया। सुल्तान अब्राहिम नींद से जागा। नौकरों को डाँटा, यह कौन शोर कर रहा है? लाओ पकड़कर। नौकर ऊपर गए। एक ऊँटों को चराने वाले को छत पर से पकड़कर सुल्तान के समक्ष लाए। राजा ने पूछा, तू कौन है? मेरे महल की छत पर क्या कर रहा है?

परमेश्वर जी ने कहा कि मैं ऊँटवाल (कारवांन) हूँ। मेरा एक ऊँट गुम हो गया है। उसको छत पर खोज रहा हूँ। सुल्तान अधम ने कहा कि हे भोले बन्दे! छत के ऊपर ऊँट कैसे चढ़ सकता है? यह तो कभी हुआ न होगा। कहीं जंगल में ऊँट को खोज।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे अब्राहिम! जैसे ऊँट छत के ऊपर नहीं होता, न छत के ऊपर कभी मिलता है, ऊँट को जंगल में खोजना चाहिए। इसी प्रकार परमात्मा राजगद्दी पर बैठकर ऐशो-आराम (मौज-मस्ती) करने से नहीं, वह संतों में मिलता है। इतना कहकर कबीर परमेश्वर जी अंतर्ध्यान हो गए। सुल्तान अधम मूर्छित होकर जमीन पर गिर गए। मन्त्रियों तथा रानियों ने एक झाड़-फूँक करने वाला बुलाया। उसने राजा की दांई बाजू पर ताबीज बाँध दिया और कहा कि इसके ऊपर भूत-प्रेत का साया है, ठीक हो जाएगा। राजा का मन राज-काज में नहीं लग रहा था। उदास रहने लगा। राजा ने कुछ संतों को फिर से कैद कर रखा था।

परमेश्वर फिर से जेल में गए। उसी तरह उनको भी जेल से निकाला। अबकी बार सब कैदियों से कहा कि तुम सब खड़े होकर आँखें बंद करो। कुछ देर अल्लाह का चिंतन करो। उसके पश्चात् चक्की चलाएंगे। चक्की आसानी से चलेंगी। सब बंदी खड़े होकर अल्लाह का चिंतन आँखें बंद करके करने लगे। परमेश्वर ने एक चक्की

को डण्डा (सोटी) लगाया। सर्व चक्कियां चलने लगी।

परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आँखें खोलो। सबने आँखें खोली तो अपने को बलख नगर से दूर जेल से बाहर जंगल में खड़े पाया। परमेश्वर ने कहा कि फिर से इस सुल्तान के राज्य की सीमा में मत आना। उसके पश्चात् राजा ने साधु-संतों को कैद में डालना बंद कर दिया था, परंतु डर के मारे कोई भी साधु-महात्मा उसके राज्य में नहीं आते थे। {कबीर परमेश्वर जी भी यही चाहते थे कि ये नकली गुरू यहाँ न आऐं। कहीं राजा को भ्रमित करके मेरे से दूर न कर दें। इसलिए उनको इस विधि से दूर रखना था।} कुछ समय उपरांत राजा सामान्य हो गया और ऐसो-आराम में खो गया।

लीला नं. 3 :- परमात्मा कबीर जी अपने गुण अनुसार फिर एक लीला करने आए। एक यात्री (मुसाफिर) का रूप बनाकर काख में कपड़ों की पोटली, ग्रामीण वेशभूषा में शाम के समय सुल्तान के निवास में आए। सुल्तान घर के द्वार पर आँगन में कुर्सी पर बैठा था। राजा ने पूछा कि आप यहाँ किसलिए आए हो? परमात्मा कबीर जी ने कहा कि मैं एक यात्री हूँ। रात्रि में आपकी धर्मशाला (सराय) में रूकना है। एक रात का भाड़ा (किरवाया) बता, कितना लेगा।

सुल्तान अब्राहिम अधम हँसा और कहा कि हे भोले मुसाफिर, यह सराय नहीं है। यह तो मेरा महल है। मैं नगरी का राजा हूँ। परमात्मा बन्दी छोड़ दया के सागर ने प्रश्न किया आपसे पहले इस महल में कौन रहता था? सुल्तान अब्राहिम अधम ने उत्तर दिया कि मेरे बाप-दादा आदि रहते थे।

प्रश्न प्रभु का :- वे कहाँ हैं? मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। उत्तर सुल्तान काः- वे तो अल्लाह को प्यारे हुए। परमात्मा ने प्रश्न किया कि आप कितने दिन इस महल में रहोगे। उत्तर के स्थान पर सुल्तान ने चिंतन किया और कहा कि मुझे भी मरना है। परमेश्वर ने कहा कि हे भोले प्राणी! यह सराय (धर्मशाला) नहीं तो क्या है?

तेरे बाप–दादा पड़ पीढ़ी। वे बसे इसी सराय में गीद्यी।।
ऐसे ही तू चल जाई। तातें हम महल सराय बताई।।
अब तू तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढ़ने को सूली।।

इतना कहकर परमात्मा गुप्त हो गए। सुल्तानी को मूर्छा आ गई। बहुत देर में होश में आया। अन्य मौलवी बुलाया। उसने बांयी बाजु पर ताबीज बाँधकर झाड़फूँक की, कहा कि अब कुछ नहीं होगा। चला गया।

लीला नं. 4 :- कुछ दिन बाद राजा सामान्य होकर फिर मौज-मस्ती करने लगा। दिन के समय राजा अब्राहिम अपने नौलखा (जिसमें नौ लाख फलदार पेड़ भिन्न-भिन्न प्रकार के लगाए जाते थे, उसको नौलखा बाग कहते थे।) बाग में सोया करता था। उसके बिस्तर को नौकरानियाँ बिछाया करती थी। फूलों के गुलदस्ते चारों ओर रखा करती थी। नौकरानियों की पोषाक रानियों से भिन्न होती थी। सब बांदियों की पोषाक एक जैसी होती थी।

दीन दयाल कबीर जी ने उस अपनी प्यारी आत्मा सम्मन के जीव को काल जाल से निकालने के लिए क्या-क्या उपाय करने पड़े थे। एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने नौकरानी का वेश बनाया।(स्त्री रूप धारण किया।) बाग में राजा का बिस्तर (सेज) बिछाया। फूलों के गुलदस्ते अत्यंत सुन्दर तरीके से लगाए और स्वयं उस सेज पर लेट गए। राजा अब्राहिम आया तो देखा, एक बांदी (खवासी) मेरी सेज पर सो रही है। इसको मेरा जरा-सा भी भय नहीं है। सुल्तान ने उसी समय कोड़ा उठाकर लेटे हुए परमेश्वर की कमर पर तीन बार मारा। तीन निशान कमर पर बन गए, खाल उतर गई। बांदी वेश में परमेश्वर ने पलंग से नीचे उतरकर एक बार रोने का अभिनय किया और फिर जोर-जोर से हँसने लगे। दासी को इतनी चोट लगने के पश्चात् भी हँसते देखकर अब्राहिम आश्चर्य में पड़ गया। वह विचार कर रहा था कि बांदी को तो बेहोश हो जाना चाहिए था या मर जाना चाहिए था। राजा ने दासी वेश धारी परमात्मा का हाथ पकड़ा और पूछा कि लौंडी! हँस किसलिए रही है?

परमात्मा ने कहा कि मैं इस बिस्तर पर एक घड़ी (24 मिनट) लेटी हूँ, विश्राम किया है। एक घड़ी के विश्राम का दण्ड मुझे तीन कोड़े मिला है। मेरे शरीर का चाम भी उतर गया है। मैं इसलिए हँस रही हूँ कि जो इस गंदी सेज पर दिन-रात सोता है, उसका क्या हाल होगा? मुझे तेरे ऊपर तरस आ रहा है भोले प्राणी!

मैं एक घड़ी सेज पर सोई। ताते मेरा यह हाल होई।।
जो सोवै दिवस और राता। उनका क्या हाल विधाता।।

गैब भये ख्वासा। सुल्तानी भये उदासा।।
यह कौन छलावा भाई। याका भेद समझ ना आई।।

यह दृश्य देखकर सुल्तान अधम अचेत हो गया। उठा तब सोचा कि यह क्या हो रहा है? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।

लीला नं. 5 :- कुछ समय के पश्चात् मन्त्रियों-रानियों ने कहा कि राजा को शिकार करने ले जाओ। कई दिनों तक जंगल में रहो। इनके मन की चिंता कम हो जाएगी। ऐसा ही किया गया। पहले दिन ही दोपहर तक कोई जानवर नहीं मिला। राजा को यह सब अच्छा नहीं लगा। जंगल में तो मृगों के झुण्ड के झुण्ड चलते हैं। आज एक हिरण भी नहीं आया है। अचानक एक हिरण दिखाई दिया। राजा ने कहा कि यह हिरण बचकर नहीं जाना चाहिए। जिसके पास से निकल गया, उसकी खैर नहीं। देखते-देखते हिरण राजा के घोड़े के नीचे से निकलकर जंगल की और दौड़ लिया। राजा ने शर्म के मारे घोड़ा पीछे-पीछे दौड़ाया। दूर जाकर हिरण जंगल में छिप गया। राजा तथा घोड़े को बहुत प्यास लगी थी। जान जाने वाली थी। अल्लाह से जीवन रक्षार्थ जल की याचना की। वापिस अपने पड़ाव की ओर चला। पड़ाव एक घण्टा दूर था। वहाँ तक जीवित बचना कठिन था।

कुछ दूर चलकर दाऐं-बायें देखा तो एक जिन्दा फकीर बैठा दिखाई दिया। पास में स्वच्छ जल का छोटा जलाश्य था। उसके चारों ओर फलदार वृक्ष थे। मधुर फल लगे थे। राजा को जीवन की किरण दिखाई दी। जल पीया, कुछ फल खाए। घोड़े को पानी पिलाया। वृक्ष से बाँध दिया। जिन्दा बाबा की ओर देखा तो उनके पास तीन सुंदर कुत्ते बँधे थे। एक कुत्ते बाँधने की सांकल (चैन=लोहे की बेल) साथ में रखी थी।

सुल्तान ने फकीर को सलाम वालेकुम किया। फकीर ने भी उत्तर में वालेकुम सलाम बोला। राजा ने कहा, हे फकीर जी! आप तीन कुत्तों का क्या करोगे? इनमें से दो मुझे दे दो। फकीर जी ने कहा, ये कुत्ते मैं किसी को नहीं दे सकता। इनको मैंने पाठ पढ़ाना है। ये तीनों बलख शहर के राजा रहे हैं। मैं इनको समझाता था कि तुम अल्लाह को याद किया करो। इस संसार में सदा नहीं रहोगे। मरकर कुत्ते का जीवन प्राप्त करोगे। अब तुम नान पुलाव-काजू-किशमिश, मनुखा दाख, खीर, हलवा, फल खा रहे हो। यह आपके पूर्व जन्मों के पुण्यों तथा भक्ति का फल मिला है। यदि इस मानव जीवन में भक्ति नहीं करोगे तो कुत्ते आदि के प्राणियों के जीवन में कष्ट उठाओगे। खाने को यह अच्छा भोजन नहीं मिलेगा। झूठे टुकड़े खाया करोगे। टट्टी खाया करोगे, गंदा पानी नाली का पीया करोगे। जब राजा थे, तब इन्होंने मेरी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। ये सोचते थे कि यह फकीर मूर्ख है। राज्य को कौन संभालेगा? रानियों का क्या होगा? अब ये तीनों कुत्ते बने हैं। देखो! मैंने काजू-बादाम, किशमिश मिलाकर बनाया हलवा-खीर इनके सामने रखा है। इनको खाने नहीं देता हूँ। दिखाता हूँ। जब ये खाने की कोशिश करते हैं तो मैं इनको पीटता हूँ। यह कहकर परमेश्वर जी ने जो एक लोहे की बेल खाली रखी थी। उठाकर कुत्तों को मारना शुरू किया। कुत्ते चिल्लाने लगे। परमेश्वर बोले कि खाओ न हलवा खिलाऊँ तुमको। झूठा-सूखा टुकड़ा डालूँगा। ऐ घोड़े वाले भाई! यह जो खाली बेल रखी है, यह बताऊँ किसलिए है? जो बलख शहर का राजा सुल्तान अब्राहिम इब्न अधम है। वह भी संसार तथा राज्य की चकाचौंध में अँधा होकर अल्लाह को भूल गया है। अब उसको याद नहीं कि मरकर कुत्ता भी बनूंगा। उसको बहुत बार समझाया है कि भक्ति कर ले, इन महल रूपी सराय में सदा नहीं रहेगा, परंतु उसको खुदा का कोई खौफ नहीं है। वह तो खुद खुदा बनकर निर्दोष फकीरों को दण्डित कर रहा है। मैं तो यहाँ दूर बैठा हूँ। इसलिए बचा हूँ। वह राजा मरेगा, भक्ति बिना कुत्ता बनेगा। उसको लाकर इस सांकल से बाँधूंगा।

जिन्दा फकीर के मुख से ये वचन सुनकर कुत्तों के रूप में अपने पूर्वजों की दुर्दशा देखकर अब्राहिम काँपने लगा और बोला कि हे फकीर जी! बलख शहर का राजा मैं ही हूँ। मुझे क्षमा करो। यह कहकर फकीर के चरणों में गिर गया। कुछ देर पश्चात् उठा तो देखा, वहाँ पर न जिन्दा बाबा था, न जलाश्य, न बाग था, न कुत्ते थे। सुल्तानी इसको स्वप्न भी नहीं मान सकता था क्योंकि घोड़े के पैर अभी भी भीगे थे। कुछ फल तोड़कर रखे थे, वे भी सुरक्षित थे। सुल्तान को समझते देर नहीं लगी। घोड़े पर चढ़ा और पड़ाव पर आया। मुख से नहीं बोल पाया। हाथ से संकेत किया कि सामान बाँधो और लौट चलो शहर को। कुछ मिनटों में काफिला बलख शहर को चल पड़ा।

लीला नं. 6 :- घर में एक कमरे में बैठकर रोने लगा। रानियों ने, मंत्रियों ने समझाना चाहा कि यह तो वैसे ही होता रहता है। मुख्य रानियाँ कह रही थी कि ऐसी बात तो स्त्रियों के साथ होती हैं, आप तो मर्द हैं। हिम्मत रखो। आप तो प्रजा के पालक हो।

इतने में एक कुत्ता आया। उसके सिर में जख्म था। उसमें कीट (कीड़े) नोच रहे थे। कुत्ता बोला, हे सुल्तान अब्राहिम! मैं भी राजा था। जितने प्राणी शिकार में मारे तथा एक राजा के साथ युद्ध में सैनिक मारे, वे आज अपना बदला ले रहे हैं। मेरे सिर में कीड़े बनकर मुझे नोंच रहे हैं। मैं कुछ करने योग्य नहीं हूँ। यही दशा तेरी होगी। अपना भविष्य देख लो। तेरे पीछे-पीछे खुदा भटक रहा है। तू परिवार-राज्य मोह में अपना जीवन नष्ट कर रहा है। (यह लीला भी स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने की थी।) यह अंतिम झटका था अब्राहिम को दलदल से निकालने का।

उसी रात्रि में मुख पर काली स्याही लेपकर एक अलफी के स्थान पर एक शॉल लपेटा, फिर एक तकिया, एक लोटा, एक पतला गद्दा यानि बिछौना लेकर घर से कमद के रास्ते पीछे से उतरकर चल पड़ा। (कमद=एक मोटा रस्सा जिसको दो-दो फुट पर गाँठें लगा रखी होती थी जिसके द्वारा छत से आपत्ति के समय उतरते थे।)

लीला नं. 7 :- रास्ते में एक मालिन बाग के बाहर बेर बेच रही थी। सुल्तान को भूख लगी थी। सारी रात पैदल चला था। मालन से बेरों का भाव पूछा तो मालिन ने बताया कि एक आने के सेर। (एक रूपये में 16 आने होते थे। एक सेर यानि एक किलोग्राम) राजा के पास आना नहीं था। उसने जो जूती पहन रखी थी, उन दोनों की कीमत उस समय 2½ लाख रूपये थी। उनके ऊपर हीरे-पन्ने जड़े थे।

राजा ने कहा कि मेरे पास एक आना या रूपया नहीं है। ये जूती हैं, इनकी कीमत अढ़ाई लाख रूपये है। ये दोनों ले लो, मुझे भूख लगी है, एक सेर बेर तोल दो। मालिन एक सेर बेर तोलकर अब्राहिम के शॉल के पल्ले में डालने लगी तो एक बेर नीचे गिर गया। उस बेर को उठाने के लिए मालिन ने भी हाथ बढ़ाया और अब्राहिम ने भी मालिन के हाथ से बेर छीनना चाहा। दोनों अपना बेर होने का दावा करने लगे।

उसी समय परमेश्वर कबीर जी प्रकट हुए और कहने लगे, हे गंवार! यह तो मूर्ख है जिसको इतना भी विवेक नहीं कि एक बेर के पीछे उस व्यक्ति से उलझ रही है जिसने अढ़ाई लाख की जूती छोड़ दी। हे मूर्ख! ढ़ाई लाख की जूती छोड़ रहा है और एक पैसे के बेर के ऊपर झगड़ा कर रहा है। ये कैसा त्याग है तेरा? विवेक से काम ले। यह कहकर परमात्मा ने सुल्तान अधम के मुख पर थप्पड़ मारा और अंतर्ध्यान हो गए।

जीवन की यात्रा ऐसे भी हो सकती है :- सुल्तान आगे चला तो देखा कि एक निर्धन व्यक्ति एक डले के ऊपर सिर रखकर जमीन पर सो रहा है। उसी समय तकिया तथा बिछौना फैंक दिया। आगे देखा कि एक व्यक्ति नदी से हाथों से जल पी रहा था। लोटा भी फैंक दिया।

काल की भूल-भुलैया में फँसे व्यक्ति को समझाना :- रास्ते में वर्षा होने लगी। शीतल वायु बहने लगी। अब्राहिम ने एक झौंपड़ी देखी जो एक किसान की थी। उसके पास दो बीघा जमीन बिना सिंचाई की थी। एक बूढ़ी गाय जो चार-पाँच बार प्रसव कर चुकी थी। एक काणी स्त्री थी। शीतल वायु के कारण उत्पन्न ठण्ड से बचने के लिए अब्राहिम अधम सुल्तान उस झौंपड़ी के पीछे लेट गया। रात्रि में दोनों पति-पत्नी बातें कर रहे थे कि वर्षा अच्छी हो गई है। गाय का चारा पर्याप्त हो जाएगा। अपने खाने के लिए भी अच्छी फसल पकेगी। अपने ऐसे ठाठ हो जाएंगे, ऐसे तो बलख बुखारे के बादशाह के भी नहीं हैं।

सुल्तान अब्राहिम अधम यह सब वार्ता सुनकर उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे जानकर उनको भविष्य के दुःखों से अवगत कराने के उद्देश्य से सूर्योदय तक वहीं पर ठहरा रहा। सुबह उठकर उनकी झौंपड़ी के द्वार पर खड़ा होकर सलाम किया। दोनों पति-पत्नी झौंपड़ी से बाहर आए। अब्राहिम उनको भक्ति करने तथा माया से मुख मोड़ने का ज्ञान देने लगा। कहा कि आपके पास तो एक गाय है, एक स्त्री है। दो बीघा जमीन है। आप इसी से चिपके बैठे हो। इसे बलख के बादशाह से भी अधिक ठाठ मान रहे हो। यह तो कुछ दिनों का मेला है। तुमको गुरू जी से उपदेश दिला देता हूँ, तुम्हारा जीवन धन्य हो जाएगा। मैं ही बलख शहर वाला सुल्तान अब्राहिम अधम हूँ। मैं उस राज्य को छोड़कर परमात्मा की प्राप्ति के लिए चला हूँ।

उन्होंने कहा कि हमें तो लगता नहीं कि आप बलख शहर के राजा हो। यदि ऐसा है तो तेरे जैसा मूर्ख

व्यक्ति इस पृथ्वी पर नहीं है। आपकी शिक्षा की हमें आवश्यकता नहीं है।

सुल्तान ने कहा कि :-

गरीब, एक रांडी (स्त्री) ढांढ़ी (गाय) ना तजैं, ये नर कहिये काग।
बलख बुखारा तज दिया, यह कुछ पिछली लाग।।

इसके पश्चात् अब्राहिम अधम पृथ्वी का सुल्तान तो नहीं रहा, परंतु भक्ति का सुल्तान बन गया। भक्त राज बन गया। इसलिए उसको सुल्तान या प्यार में सुल्तानी नाम से प्रसिद्धि मिली। आगे की कथा में इसको केवल सुल्तान नाम से ही लिखा-कहा जाएगा। जैसे धर्मदास जी को धनी धर्मदास कहा जाने लगा था। वे भक्ति के धनी थे। वैसे सांसारिक धन की भी कोई कमी नहीं थी। सुल्तान को परमेश्वर मिले और प्रथम मंत्र दिया और कहा कि बाद में तुझे सतनाम, फिर सार शब्द दूंगा।

कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' में पृष्ठ 62 पर प्रमाण है :-

प्रथम पान प्रवाना लेई। पीछे सार शब्द तोई देई।।
तब सतगुरू ने अलख लखाया। करी परतीत परम पद पाया।।
सहज चौका कर दीन्हा पाना (नाम)। काल का बंधन तोड़ बगाना।।

विचार करें :- उस समय अब्राहिम के पास न तो आरती चौंका करने को धन था, न अन्य सुविधा थी। यह वास्तविक कबीर जी की दीक्षा की विधि है। जो आरती चौका, उसमें लाखों या हजारों का सामान, नारियल आदि का कोई प्रावधान नहीं है। वह तो बाद में कोई पाठ कराना चाहे तो कराए अन्यथा दीक्षा विधि केवल मंत्रित जल तथा मीठे पदार्थ (मिश्रि-चीनी, गुड़, बूरा, शक्कर) से दी जा सकती है। सत्य नाम तथा सार शब्द में पान (पेय पदार्थ) नहीं दिया जाता। केवल दीक्षा मंत्र बताए-समझाए जाते हैं। संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनको दिव्य दृष्टि प्रदान की थी।

उसी के आधार से संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू कूँ उपदेश दिया। जात जुलाहा भेद न पाया, काशी माहीं कबीर हुआ।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, एक रती नहीं भार। सतगुरू पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

अब्राहिम अधम सुल्तान के विषय में संत गरीबदास जी के विचार

कबीर परमेश्वर जी ने अपने शिष्य गरीबदास जी को बताया कि :-

*सुनत ज्ञान गलताना, पद पदे समाना।। टेक।।
अमर लोक से सतगुरु आये, रूप धर्या कारवाना।
ढूंढत ऊँट महल में डोलै, बूझत शाह बियाना।।टेक।।
कहा कबीर हम कारवान होय आये। महलौं पर ऊँट बताये।।1।।
बोले पादशाह सुलतानां। तूं रहता कहां दिवानां।।2।।
दूजै कासिद गवन किया रे। डेरा महल सराय लिया रे।।3।।
जब हम महल सराय बताई। सुलतानी कूँ तावर आई।।4।।
अरे तेरे बापदादा पड़ पीढ़ी। ये बसे सराय में गीदी।।5।।
ऐसे ही तूं चल जाई। यौं हम महल सराय बताई।।6।।
अरे कोई कासिद कूँ गह ल्यावै। इस पंडित खाने द्यावै।।7।।
ऊठे पादशाह सुलताना। वहां कासिद गैब छिपाना।।8।।
तीजे बांदी होय सेज बिछाई। तन तीन कोरड़े खाई।।9।।
तब आया अनहद हांसा। सुलतानी गहे ख्वासा।।10।।
मैं एक घड़ी सेजां सोई। तातैं मेरा यौह हवाल होई।।11।।
जो सोवैं दिवस अरू राता। तिन का क्या हाल विधाता।।12।।
तब गैबी भये ख्वासा। सुलतानी हुये उदासा।।13।।

यौह कौन छलावा भाई। याका कुछ भेद न पाई।।14।।
चौथे योगी भये हम जिन्दा। लीन्हें तीन कुत्ते गल फंदा।।15।।
दीन्ही हम सांकल डारी। सुलतानी चले बाग बाड़ी।।16।।
बोले पातशाह सुलताना। कहां से आये जिन्द दिवाना।।17।।
ये तीन कुत्ते क्या कीजे। इनमें से दोय हम कूँ दीजे।।18।।
अरे तेरे बाप दादा हैं भाई। इन बड़ बदफैल कमाई।।19।।
यहां लोह लंगर शीश लगाई। तब कुत्यौं धूम मचाई।।20।।
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढ़ी। तूं समझे क्यों नहीं गीदी।।21।।
अब तुम तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढ़ने कूँ शूली।।22।।
योगी जिन्दा गैब भया रे। हम ना कुछ भेद लह्या रे।।23।।
बोले पादशाह सुलताना। जहां खड़े अमीर दिवाना।।24।।
येह च्यार चरित्र बीते। हम ना कछु भेद न लीते।।25।।
वहां कबीर मार्या ज्ञान गिलोला। सुलतानी मुख नहीं बोला।।26।।
तब लगे ज्ञान के बाना। छाड़ी बेगम माल खजाना।।27।।
सुलतानी योग लिया रे। कबीर सतगुरु उपदेश दिया रे।।28।।
छोड़ा अठारा लाख तुरा रे। सब लाग्या माल बुरा रे।।29।।
छोड़े गज गैबर जल होड़ा। अब भये बाट के रोड़ा।।30।।
संग सोलह सहंस सुहेली। एक से एक अधिक नवेली।।31।।
गरीब, अठारह लाख तुरा तज्या, पदमनी सोलह सहंस।
एक पलक में तज गये, सो सतगुरु के हंस।। 32।।
गरीब, एक रांडी ढांढ़ी ना तजैं, ये नर कहिये काग।
बलख बुखारा तज दिया, यह कुछ पिछली लाग।। 33।।
छाड़े मीर खान दीवाना, अरबों खरब खजाना।।34।।
छोड़े हीरे हिरंबर लाला। सुलतानी मोटे ताला।।35।।
जिन लोक परगनां त्यागा। सुन्न शब्द अनाहद लाग्या।।36।।
पगड़ी की कौपीन बनाई। शालौं की अलफी लाई।।37।।
शीश किया मुँह कारा। सुलतानी तज्या बुखारा।।38।।
गण गंधर्व इन्द्र लरजे। धन्य मात पिता जिन सिरजे।।39।।
भया सप्तपुरी पर साका। सुलतानी मार्ग बांका।।40।।
जिन पांचौं पकड़ पछाड़या। इनका तो दे दिया बाड़ा।।41।।
सुन्न शब्द अनाहद राता। जहां काल कर्म नहीं जाता।।42।।
नहीं कच्छ मच्छ कुरंभा। जहां धौल धरणि नहीं थंभा।।43।।
नहीं चंद्र सूर जहां तारा। नहीं धौल धरणि गैनारा।।44।।
नहीं शेष महेश गणेशा। नहीं गौरा शारद भेषा।।45।।
जहां ब्रह्मा विष्णु न वाणी। नहीं नारद शारद जानी।।46।।
जहां नहीं रावण नहीं रामा। नहीं माया का विश्रामा।।47।।
जहां परसुराम नहीं पर्चा। नहीं बलि बावन की चर्चा।।48।।
नहीं कंस कान्ह करतारा। नहीं गोपी ग्वाल पसारा।।49।।
यौह आवन जान बखेड़ा। यहां कौन बसावै खेड़ा।।50।।
जहाँ नौ दसवां नहीं भाई। दूजे कूँ ठाहर नाहीं।।51।।
जहां नहीं आचार विचारा। नहीं कोई शालिग पूजनहारा।।52।।

बेद कुरान न पंडित काजी। जहाँ काल कर्म नहीं बाजी।।53।।
नहीं हिन्दू मुसलमाना। कुछ राम न दुवा सलामा।।54।।
जहाँ पाती पान न पूजा। कोई देव नहीं है दूजा।।55।।
जहाँ देवल धाम न देही। चीन्ह्यो क्यूं ना शब्द स्नेही।।56।।
नहीं पिण्ड प्राण जहां श्वासा। नहीं मेर सुमेर कैलाशा।।57।।
नहीं सत्ययुग द्वापर त्रेता। कहूँ कलियुग कारण केता।।58।।
यौह तो अंजन ज्ञान सफा रे। देखो दीदार नफा रे।।59।।
निःबीज सत निरंजन लोई। जल थल में रमता सोई।।60।।
है निर्भय निर्गुण बीना। सोई शब्द अतीतं चीन्हा।।61।।
अडोल अबोल अनाथा। नहीं देख्या आवत जाता।।62।।
है अगम अनाहद सिंधा। योगी निर्गुण निर्बंधा।।63।।
कुछ वार पार नहीं थाहं। सतगुरु सब शाहनपति शाहं।।64।।
उलटा पंथ खोज है मीना। सतगुरु कबीर भेद कहैं बीना।।65।।
यौह सिंधु अथाह अनूपं। कुछ ना छाया ना धूपं।।66।।
जहां गगन धुंनि दरबानी। जहां बाजैं सत्य सहदानी।।67।।
सुलतान अधम जहां राता। तहां नहीं पांच तत्त का गाता।।68।।
जहां निर्गुण नूर दिवाला। कुछ न घर है खाला।।69।।
शीश चढ़ाय पग धरिया। यौह सुलतानी सौदा करिया।।70।।
सतगुरु जिन्दा योग दिया रे। सुलतानी अपना किया रे।।71।।
कहै दास गरीब पूर्ण पीरा। सतगुरु मिले कबीरा।।72।।

{संत गरीबदास जी की इन उपरोक्त वाणियों का अर्थ यही है। इनमें भी सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम के जीवन की घटनाओं का वर्णन है।}

अब्राहिम अधम सुल्तान की परीक्षा

सुल्तान अधम ने एक साधु की कुटिया देखी जो कई वर्षों से उस स्थान पर साधना कर रहा था। अब्राहिम उसके पास गया। वह साधक बोला कि यहाँ पर मत रहना, यहाँ कोई खाना-पानी नहीं है। आप कहीं और जाइये। सुल्तान अब्राहिम बोला कि मैं तेरा मेहमान बनकर नहीं आया। मैं जिसका मेहमान (अल्लाह का मेहमान) हूँ, वह मेरे रिजक (खाने) की व्यवस्था करेगा। इन्सान अपनी किस्मत साथ लेकर आता है। कोई किसी का नहीं खाता है। हे बेइमान! तू तो अच्छा नागरिक भी नहीं है। तू चाहता है अल्लाह से मिलना। नीयत ठीक नहीं है तो इंसान परमार्थ नहीं कर सकता। बिन परमार्थ खुदा नहीं मिलता। जिसने जीवन दिया है, वह रोटी भी देगा। अब्राहिम थोड़ी दूरी पर जाकर बैठ गया।

शाम को आसमान से एक थाल उतरा जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जी, हलवा, खीर, रोटी तथा जल का लोटा था। थाली के ऊपर थाल परोस (कपड़े का रूमाल) ढ़का था। अब्राहिम ने थाली से कपड़ा उठाया और पुराने साधक को दिखाया। उस पुराने साधक के पास आसमान से दो रोटी वे भी जौ के आटे की और एक लोटा पानी आए।

यह देखकर पुराना साधक नाराज हो गया कि हे अल्लाह! मैं तेरा भेजा हुआ भोजन नहीं खाऊँगा। आप तो भेदभाव करते हो। मुझे तो सूखी जौ की रोटी, अब्राहिम को अच्छा खाना पुलाव वाला भेजा है।

अल्लाह ने आकाशवाणी की कि हे भक्त! यह अब्राहिम एक धनी राजा था। इसके पास अरब-खरब खजाना था। इसकी 16 हजार रानियां थी, बच्चे थे। अमीर (मंत्री) तथा दीवान थे। नौकर-नौकरानियां थी। यह मेरे लिए ऐसे ठाठ छोड़कर आया है। इसको तो क्या न दे दूँ। तू अपनी औकात देख, तू एक घसियारा था। सारा दिन घास खोदता था। तब एक टका मिलता था। सिर पर गट्ठे लेकर नित बोझ मरता था। न बीबी (स्त्री) थी, न माता थी, न कोई पिता तेरा सेठ था। तुझको मैं पकी-पकाई रोटियां भेजता हूँ। तू फिर भी नखरे करता है। यदि

तू मेरी रजा में राजी नहीं है तो कहीं और जा बैठ। यदि भक्ति से विमुख हो गया तो तेरा घास खोदने का खुरपा और बाँधने की जाली, ये रखी, जा खोद घास और खा। यदि कुछ हासिल करना है तो मेरी रजा से बाहर कदम मत रखना। भक्त में यदि कुब्र (अभिमान) है तो वह परमात्मा से दूर है। यदि भक्त में आधीनी है तो वह हक्क (परमेश्वर) के करीब है।

सुल्तान अधम ने परमेश्वर से अर्ज की कि हे दाता! मैं मेहनत करके निर्वाह करूँगा। आपकी भक्ति भी करूँगा। आप यह भोजन न भेजो। रूखी-सूखी खाकर मैं आपके चरणों में बना रहना चाहता हूँ। यह भोजन आप भेज रहे हो। यह खाकर तो मन में दोष आएंगे, कोई गलती कर बैठूँगा। यह अर्ज वह पुराना भक्त भी सुन रहा था। उसकी गर्दन नीची हो गई। परमात्मा से अर्ज की, प्रभु! मेरी गलती को क्षमा करो। मैं आपकी रजा में प्रसन्न रहूँगा। उस दिन से अब्राहिम जंगल से लकड़ियां तोड़कर लाता, बाजार में बेचकर खाना ले जाता। आठ दिन तक उसी को खाता और भक्ति करता था।

भक्त हो नीयत का पूरा

कुछ वर्ष पश्चात् अब्राहिम भ्रमण पर निकला। एक सेठ का बाग था। उसको नौकर की आवश्यकता थी। सुल्तान को पकड़कर बाग की रखवाली के लिए रख दिया। एक वर्ष पश्चात् सेठ बाग में आया। उसने अब्राहिम से अनार लाने को कहा। अनार लाकर सेठ को दे दिए। अनार खट्टे थे। सेठ ने कहा कि तुझे एक वर्ष में यह भी पता नहीं चला कि मीठे अनार कैसे होते हैं?

सुल्तान ने कहा कि सेठ जी! आपने मुझे बाग की सुरक्षा के लिए रखा है, बाग उजाड़ने के लिए नहीं। यदि रक्षक ही भक्षक हो जाएगा तो बात कैसे बनेगी? मैंने कभी कोई फल खाया ही नहीं तो खट्टे-मीठे का ज्ञान कैसे हो सकता है? सेठ ने अन्य नौकरों से पूछा तो नौकरों ने बताया कि यह नौकर तो जो रोटी मिलती है, बस वही खाकर बाग के चारों ओर कुछ बड़बड़ करता घूमता रहता है। हमने गुप्त रूप से भी देखा है। इसने कभी कोई फल नहीं तोड़कर खाया है, न नीचे पड़ा उठाया है।

किसी नौकर ने बताया कि यह बलख शहर का राजा है। मैंने 10 वर्ष पहले इसको जंगल में शिकार के समय देखा था। जब मैंने इससे पूछा कि लगता है आप बलख शहर के सुल्तान अब्राहिम अधम हो। पहले तो मना किया, फिर मैंने बताया कि आपको शिकार के समय जंगल में देखा था। आपकी सेना में मेरा साला याकूब बड़ा अधिकारी है। उसने बताया कि राजा ने सन्यास ले लिया है। उसका बेटा गद्दी पर बैठा है। तब इसने कहा कि किसी को मत बताना। सेठ ने चरणों में गिरकर क्षमा याचना की और ढ़ेर सारा धन देकर कहा कि आप यह धन लेकर अपना निर्वाह करो, भक्ति भी करो। मेरे घर रहो या बाग में महल बनवा दूँ, यहाँ रहकर भक्ति करो। सुल्तान धन्यवाद कहकर चल पड़ा।

दास की परिभाषा

एक समय सुल्तान एक संत के आश्रम में गया। वहाँ कुछ दिन संत जी के विशेष आग्रह से रूका । संत का नाम हुकम दास था। बारह शिष्य उनके साथ आश्रम में रहते थे। सबके नाम के पीछे दास लगा था। फकीर दास, आनन्द दास, कर्म दास, धर्मदास। उनका व्यवहार दास वाला नहीं था। उनके गुरू एक को सेवा के लिए कहते तो वह कहता कि धर्मदास की बारी है, उसको कहो, धर्मदास कहता कि आनन्द दास का नम्बर है। उनका व्यवहार देखकर सुल्तानी ने कहा कि:-

दासा भाव नेड़े नहीं, नाम धराया दास। पानी के पीए बिन, कैसे मिट है प्यास।।

सुल्तानी ने उन शिष्यों को समझाया कि मैं जब राजा था, तब एक दास मोल लाया था। मैंने उससे पूछा कि तू क्या खाना पसंद करता है। दास ने उत्तर दिया कि दास को जो खाना मालिक देता है, वही उसकी पसंद होती है। आपकी क्या इच्छा होती है? आप क्या कार्य करना पसंद करते हो? जिस कार्य की मालिक आज्ञा देता है, वही मेरी पसंद है। आप क्या पहनते हो? मालिक के दिए फटे-पुराने कपड़े ठीक करके पहनता हूँ। उसको मैंने मुक्त कर दिया। धन भी दिया। उसी की बातों को याद करके मैं अपने गुरु की आज्ञा का पालन करता हूँ। अपनी मर्जी कभी नहीं चलाता। जो प्रभु देता है, उसकी आज्ञा जानकर खाता हूँ। मैं अपने को दास मानकर

सेवा करता हूँ। परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए गुरूदेव को प्रसन्न करना अनिवार्य होता है। उसके पश्चात् वे सर्व शिष्य दास भाव से रहकर अपने गुरू जी की आज्ञा का पालन करने लगे तथा आपस में अच्छा व्यवहार करने लगे। अपना जीवन सफल किया।

सुल्तानी को सार नाम कैसे प्राप्त हुआ?

परमेश्वर कबीर जी एक आश्रम बनाकर रहने लगे। नाम जिन्दा बाबा से प्रसिद्ध थे। सुल्तानी को प्रथम मंत्र दीक्षा के कुछ महीनों के पश्चात् सतनाम की (दो अक्षर के मंत्र की) दीक्षा दी जिसमें एक ''ओम्'' मंत्र है तथा दूसरा उपदेश के समय बताया जाता है। दर्शन के लिए सुल्तान अनेकों बार आता रहा। सत्यनाम के पश्चात् योग्य होने पर सार शब्द साधक को दीक्षा में दिया जाता है। एक वर्ष के पश्चात् सुल्तान अधम ने अपने गुरू की कुटिया में जाकर सारनाम की दीक्षा के लिए विनम्र प्रार्थना की तो परमेश्वर जी ने कहा कि एक वर्ष के पश्चात् ठीक इसी दिन आना, सारनाम दूंगा। दर्शनार्थ कभी-भी आ सकते हो। सुल्तान अब्राहिम अधम ठीक उसी दिन सारनाम लेने के लिए गुरू जी की कुटिया में गया तो गुरू जी ने कहा कि ठीक एक वर्ष पश्चात् इसी दिन आना, सारनाम दूँगा। ऐसे करते-करते ग्यारह (11) वर्ष निकाल दिए। बीच-बीच में भी सतगुरू के दर्शन करने आता था, परंतु सारनाम के लिए निश्चित दिन ही आना होता था। जब ग्यारहवें वर्ष सुल्तानी सारशब्द के दीक्षार्थ आ रहा था तो एक मकान के साथ से रास्ता था। उस मकान की मालकिन ने छत से कूड़ा बुहारकर गली में डाला तो गलती से भक्त के ऊपर गिर गया। सुल्तान इब्राहिम के ऊपर कूड़ा गिरा तो वह ऊँची आवाज में बोला, क्या तुझे दिखाई नहीं देता? गली में इंसान भी आते-जाते हैं? यदि मैं आज राज्य त्यागकर न आया होता तो तेरी देही का चॉम उधेड़ देता।

उस बहन ने क्षमा याचना की और कहा, हे भाई! मेरी गलती है, मुझे पहले गली में देखना चाहिए था। आगे से ध्यान रखूँगी। वह मकान वाली बहन भी जिन्दा बाबा की भक्तमति थी। उसने जब इब्राहिम को आश्रम में देखा तो गुरू जी से पूछा, हे गुरूदेव! वह जो भक्त बैठा है एकान्त में, क्या वह कभी राजा था? जिन्दा बाबा ने पूछा, क्या बात है बेटी? यहाँ तो राजा और रंक में कोई भेद नहीं है। आपने यह प्रश्न किस कारण से किया? यह पहले बलख शहर का राजा था। इसको मैंने ज्ञान समझाया तो इसने राज्य त्याग दिया और मेहनत करके लकड़ियां बेचकर निर्वाह करता है, भक्ति भी करता है। उस बहन ने बताया कि मेरे से गलती से सूखा कूड़ा छत से फैंकते समय इसके ऊपर गिर गया तो यह बहुत क्रोधित हुआ और बोला कि यदि मैंने राज्य न त्यागा होता तो तेरी खाल उतार देता। सत्संग के पश्चात् सार शब्द लेने वालों को बुलाया गया। जब सुल्तान अब्राहिम की बारी आई तो गुरू जी ने कहा कि अभी तो आप राजा हो, सार शब्द तो बच्चा! दास को मिलता है जिसने शरीर को मिट्टी मान लिया है। सुल्तानी ने कहा, गुरूदेव! राज्य को त्यागे तो वर्षों हो चुके हैं। गुरू महाराज जी ने कहा, मुझसे कुछ नहीं छुपा है। तूने जैसा राज्य त्यागा है। राज भाव नहीं त्यागा है। आप एक वर्ष के पश्चात् इसी दिन सारनाम के लिए आना। एक वर्ष के पश्चात् फिर सुल्तानी आ रहा था। उसी मकान के साथ से आना था। गुरू जी ने उसी शिष्या से कहा कि कल वह राजा सारशब्द लेने आएगा। तेरे मकान के पास से रास्ता है, और कोई रास्ता कुटिया में आने का नहीं है। अबकी बार उसके ऊपर पानी में गोबर-राख घोलकर बाल्टी भरकर उसके ऊपर डालना। फिर उसकी क्या प्रतिक्रिया रहे, वह मुझे बताना। उस बहन ने ऐसा ही किया। बहन ने साथ-साथ यह भी कहा कि हे भाई! धोखे से गिर गया। मैं धोकर साफ कर दूँगी। आप यहाँ तालाब में स्नान कर लो। सुल्तान ने कहा कि बहन मिट्टी के ऊपर मिट्टी ही तो गिरी है, कोई बात नहीं, मैं स्नान कर लेता हूँ, कपड़े धो लेता हूँ। उस शिष्या ने गुरूदेव को सुल्तानी की प्रक्रिया बताई, तब उसको सारशब्द दिया और कहा, बेटा! आज तू दास बना है। अब तेरा मोक्ष निश्चित है।

इसलिए भक्तजनों को इस कथा से शिक्षा लेनी चाहिए। सारशब्द प्राप्ति के लिए शीघ्रता न करें। अपने अंदर सब विकारों को सामान्य करें। विवेक से काम लें, मोक्ष निश्चित है।

राजा बड़ा है या भक्त राज

एक बार सुल्तान अधम अपने बलख शहर के बाहर एक तालाब पर जाकर बैठ गया। उसका पुत्र राजा था।

पता चला तो हाथी पर चढ़कर बैंड-बाजे के साथ तालाब पर पहुँचा। पिता जी से घर चलने को कहा। सुल्तान ने साफ शब्दों में मना कर दिया। लड़के ने कहा कि आपने यह क्या हुलिया बना रखा है? आप यहाँ ठाठ से रहो। आप भिखारी बनकर कष्ट उठा रहे हो। मेरी आज्ञा से आज सब कुछ हो जाता है। सुल्तान ने कहा कि जो परमात्मा कर सकता है, वह राजा नहीं कर सकता। लड़के ने कहा कि आप आज्ञा दो, वही कर दूँगा। आपको हमारे पास रहना होगा। सुल्तानी ने कहा कि ठीक है, स्वीकार है। मैं हाथ से कपड़े सीने की एक सूई इस तालाब में डालता हूँ। यह सूई जल से निकालकर मुझे लौटा दे। राजा ने सिपाहियों, गोताखोरों तथा जाल डालने वालों को बुलाया। सब प्रयत्न किया, परंतु व्यर्थ। लड़के ने कहा, पिताजी! एक सूई के बदले हजार सूईयाँ ला देता हूँ। क्या आपका अल्लाह यह सूई निकाल देगा? तब सुल्तान ने कहा कि हे पुत्र! यदि मेरा अल्लाह यही सूई निकाल देगा तो क्या तुम भक्ति करोगे? क्या सन्यास ले लोगे? लड़के ने कहा कि आप पहले यह सूई अपने प्रभु से निकलवाओ, फिर सोचूँगा। इब्राहिम ने कहा कि परमात्मा की बेटी मछलियों! मुझ दास की एक सूई आपके तालाब में गिर गई है। मेरी सूई निकालकर मुझे देने की कृपा करें। कुछ ही क्षणों के उपरांत एक मछली मुख में सूई लिए इब्राहिम के पास किनारे पर आई। इब्राहिम ने सूई पकड़ ली और मछलियों का हाथ जोड़कर धन्यवाद किया। तब सुल्तानी ने कहा, बेटा! देख परमात्मा जो कर सकता है, वह मानव चाहे राजा भी क्यों न हो, नहीं कर सकता। अब क्या भक्ति करेगा? पुत्र ने कहा कि भगवान ने आपको सूई ही तो दी है, मैं तो आपको हीरे-मोती दे सकता हूँ। भक्ति तो वृद्धावस्था में करूंगा। भक्त इब्राहिम उठकर चल पड़ा। अपनी गुफा में चला गया।

विकार जैसे काम, मोह, क्रोध, वासना नष्ट नहीं होते, शांत हो जाते हैं

विकार मरे ना जानियो, ज्यों भूभल में आग। जब करेल्लै धधकही, सतगुरू शरणा लाग।।

एक समय इब्राहिम सुल्तान मक्का शहर में गया हुआ था। उसका उद्देश्य था कि भ्रमित मुसलमान श्रद्धालु मक्का में हज के लिए या वैसे भी आते रहते हैं। उनको समझाना था। उनको समझाने के लिए वहाँ कुछ दिन रहे। कुछ शिष्य भी बने। किसी हज यात्री ने बलख शहर में जाकर बताया कि सुल्तान इब्राहिम मक्का में रहता है। छोटे लड़के ने पिता जी के दर्शन की जिद की तो उसकी माता-लड़का तथा नगर के कुछ स्त्री-पुरूष भी साथ चले और मक्का में जाकर इब्राहिम से मिले। इब्राहिम अपने शिष्यों को शिक्षा देता था कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले लड़के तथा परस्त्री की ओर अधिक देर नहीं देखना चाहिए। ऐसा करने से उनके प्रति मोह बन जााता है। अपने लड़के को देखकर इब्राहिम से रहा नहीं गया, एकटक बच्चे को देखता रहा। लड़के की आयु लगभग 13 वर्ष थी। शिष्यों ने कहा कि गुरूदेव आप हमें तो शिक्षा देते हो कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले बच्चे की ओर ज्यादा देर नहीं देखना चाहिए, स्वयं देख रहे हो। इब्राहिम ने कहा, पता नहीं मेरा आकर्षण इसकी ओर क्यों हो रहा है? उसी समय एक वृद्ध ने कहा, राजा जी! यह आपकी (बेगम) पत्नी है और यह आपका पुत्र है। आप राज्य त्यागकर आए, उस समय यह गर्भ में था। आपसे मिलने आए हैं। उसी समय लड़का पिता के चरणों को छूकर गोदी में बैठ गया। इब्राहिम की आँखों में ममता के आँसू छलक आए।

परमेश्वर की ओर से आकाशवाणी हुई कि हे सुल्तानी! तुझे मेरे से प्रेम नहीं रहा। अपने परिवार से प्रेम है। अपने घर चला जा। उसी समय इब्राहिम को झटका लगा तथा आँखें बंद करके प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मेरे वश से बाहर की बात है, या तो मेरी मृत्यु कर दो या इस लड़के की। उसी समय लड़के की मृत्यु हो गई। इब्राहिम उठकर चल पड़ा। बलख से आए व्यक्ति लड़के के अंतिम संस्कार करने की तैयारी करने लगे। परमात्मा पाने के लिए भक्त को प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। तब सफलता मिलती है। उस लड़के के जीव को परमात्मा ने तुरंत मानव जीवन दिया और अपने भक्त के घर में लड़के को उत्पन्न किया। बचपन से ही उस आत्मा को परमात्मा का मार्ग मिला। एक बार सब भक्त बाबा जिन्दा के आश्रम में सत्संग में इकट्ठे हुए। वह लड़का उस समय 4 वर्ष की आयु का था। परमेश्वर की कृपा से उसका बिस्तर तथा इब्राहिम का बिस्तर साथ-साथ लगा था। इब्राहिम को देखकर लड़का बोला, पिताजी! आप मुझे मक्का में क्यों छोड़ आए थे? मैं अब भक्त के घर जन्मा हूँ। देख न अल्लाह ने मुझे आप से फिर मिला दिया। यह बात गुरू जी जिन्दा बाबा (परमेश्वर कबीर जी) के पास गई तो जिन्दा बाबा ने बताया कि यह इब्राहिम का लड़का है जो मक्का में मर गया था। अब परमात्मा ने इस जीव को भक्त के घर जन्म दिया है। इब्राहिम को लड़के के मरने का दुःख बहुत

था, परंतु किसी से साझा नहीं करता था। उस दिन उसने कहा, कृपासागर! तू अन्तर्यामी है। आज मेरा कलेजा (दिल) हल्का हो गया। मेरे मन में रह-रहकर आ रहा था कि परमात्मा ने यह क्या किया? इसकी माँ घर पर किस मुँह से जाएगी? आज मेरी आत्मा पूर्ण रूप से शांत है। जिन्दा बाबा ने उस लड़की पूर्व वाली माता यानि इब्राहिम की पत्नी को संदेश भिजवाया कि वह आश्रम आए। लड़के तथा उसके नए माता-पिता तथा इब्राहिम को भी बुलाया। उस लड़के को पहले वाली माता से मिलाया। लड़का देखते ही बोला, अम्मा जान! आप मुझे मक्का छोड़कर चली गई। वहाँ पर अल्लाह आए, देखो ये बैठे (जिन्दा बाबा की ओर हाथ करके बोला) और मुझे साथ लेकर इनके घर छोड़ गए। मैं इस माई के पेट में चला गया। फिर मेरा जन्म हुआ। अब मैं दीक्षा ले चुका हूँ। प्रथम मंत्र का जाप करता हूँ। हे माता जी! आप भी गुरू जी से दीक्षा ले लो, कल्याण हो जाएगा। इब्राहिम की पत्नी ने दीक्षा ली और कहा कि इस लड़के को मेरे साथ भेज दो।

परमेश्वर कबीर जी (जिन्दा बाबा) ने कहा कि यदि उस नरक में (राज की चकाचौंध में) रखना होता तो इसकी मृत्यु क्यों होती? अब तो आप आश्रम आया करो और महीने में सत्संग में बच्चे के दर्शन कर जाया करो। इब्राहिम को उस लड़के में अपनापन नहीं लगा क्योंकि वह किसी अन्य के शरीर से जन्मा था। परंतु उसके भ्रम, मन की मूर्खता का नाश हो गया। जो वह मन-मन में कहा करता कि अल्लाह ने यह नहीं करना चाहिए था। अब उसे पता चला कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। भले ही उस समय अपने को अच्छा न लगे। अल्लाह के सब जीव हैं, वह सबके हित की सोचता है। हम अपने-अपने हित की सोचते हैं। रानी को भी उस लड़के में वह भाव नहीं था, परंतु आत्मा वही थी। इसलिए माता वाली ममता दिल में जागृत थी। इसलिए उसको देखकर शांति मिलती थी। यह कारण बनाकर परमेश्वर जी ने उस रानी का भी उद्धार किया और बालक का भी।

भक्त तरवर (वृक्ष) जैसे स्वभाव का होता है

एक बार एक समुंद्री जहाज में एक सेठ व्यापार के लिए जा रहा था। उसके साथ रास्ते का खाना बनाने वाले तथा मजाक-मस्करा करके दिल बहलाने वालों की पार्टी भी थी। लम्बा सफर था। महीना भर लगना था। मजाकिया व्यक्तियों को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जिसके ऊपर सब मजाक की नकल झाड़ सकें। खोज करने पर इब्राहिम को पाया और पकड़कर ले गए। सोचा कि इस भिखारी को रोटियाँ चाहिए, मिल जाएंगी। समुद्र में दूर जाने के पश्चात् सेठ के लिए मनोरंजन का प्रोग्राम शुरू हुआ। इब्राहिम के ऊपर मजाक झाड़ रहे थे। कह रहे थे कि एक इस (इब्राहिम) जैसा मूर्ख था। वह वृक्ष की उसी डाली पर बैठा था जिसे काट रहा था। गिरकर मर गया। हा-हा करके हँसते थे। इस प्रकार बहुत देर तक ऐसी अभद्र टिप्पणियाँ करते रहे।

इब्राहिम बहुत दुःखी हुआ। सोचा कि महीनों का दुःख हो गया। न भक्ति कर पाऊँगा, न चैन से रह पाऊँगा। उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे भक्त इब्राहिम! यदि तू कहे तो इन मूर्खों को मार दूँ। जहाज को डुबो दूँ, तुझे बचा लूँ। ये तुझे तंग करते हैं। यह आकाशवाणी सुनकर जहाज के सब व्यक्ति भयभीत हो गए। इब्राहिम ने कहा, हे अल्लाह! यह कलंक मेरे माथे पर न लगा। ये बेखबर हैं। इतने व्यक्तियों के मारने के स्थान पर मुझे ही मार दे या इनको सद्बुद्धि दे दो, ये आपकी भक्ति करके अपने जीव का कल्याण कराएँ। जहाज मालिक सहित सब यात्रियों ने इब्राहिम से क्षमा याचना की तथा परमात्मा का ज्ञान सुना। आदर के साथ अपने साथ रखा। भक्ति करने के लिए जहाज में भिन्न स्थान दे दिया। इब्राहिम ने उन सबको सत्यज्ञान समझाकर आश्रम में लाकर गुरू जी से दीक्षा दिलाई।

इब्राहिम स्वयं दीक्षा दिया करता था। जब जिन्दा बाबा यानि परमेश्वर कबीर जी को किसी ने इब्राहिम की उपस्थिति में बताया कि हे गुरूदेव! इब्राहिम दीक्षा देता है। तब परमेश्वर जी ने बताया कि हे भक्त! आप गलती कर रहे हो। आप अधिकारी नहीं हो। उस दिन के पश्चात् इब्राहिम ने दीक्षा देनी बंद की तथा अपने सब शिष्यों को पुनः गुरू जी से उपदेश दिलाया। क्षमा याचना की, स्वयं भी अपना नाम शुद्ध करवाया। भविष्य में ऐसी गलती नहीं की।

प्रश्न :- इस बात का कहाँ प्रमाण है कि अल-खिज्र रूप में अल्लाह कबीर ही लीला कर रहे थे? कबीर जी जुलाहा (काशी-भारत वाले) ही कादिर अल्लाह है जिसने सब रचना की है।

उत्तर :- पहले यह सिद्ध करता हूँ कि काशी (बनारस) शहर में जो कबीर नामक जुलाहा रहा करता था, वह सब सृष्टि का रचने वाला खुदा है। इसके लिए अनेकों चश्मदीद गवाह (Eye Witness) हैं जिन्होंने उस समर्थ (कादिर) अल्लाह को ऊपर (तख्त) सिंहासन पर बैठे देखा तथा बताया कि जो कबीर काशी शहर (भारत देश) में जुलाहे की भूमिका किया करता, वही समर्थ परमेश्वर है।

☛ गवाह नं. 1 :- संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रांत-हरियाणा (देश-भारत):- संत गरीबदास जी दस वर्ष के बालक अपने खेतों में गाँव के अन्य ग्वालों के साथ प्रतिदिन की तरह गाय चराने गए हुए थे। विक्रमी संवत् 1774 (सन् 1717) फाल्गुन महीने की शुदी (चांदनी) द्वादशी को दिन के लगभग दस बजे ग्वाले तथा बालक गरीबदास जी एक जांडी के वृक्ष के नीचे छाया में बैठकर भोजन खा रहे थे। परमेश्वर जी जिंदा बाबा (अल-खिज्र) के वेश में ऊपर आसमान वाले तख्त (सिंहासन) से चलकर कुछ दूरी पर धरती के ऊपर उतरे तथा ग्वालों के पास गए। वह जांडी का पेड़ गाँव-कबलाना से गाँव-छुड़ानी को जाने वाले कच्चे रास्ते पर था तथा कबलाना की सीमा से सटे संत गरीबदास जी के खेत में था। {संत गरीबदास के पिता जी के पास गाँव में एक हजार तीन सौ पचहत्तर (1375) एकड़ जमीन थी। उसी जमीन पर चरागाह बना रखी थी जिसमें गाँव छुड़ानी के अन्य निर्धन व्यक्ति भी अपनी गायों को चराने के लिए ले जाया करते थे।} बाबा जिंदा यानि साधु को देखकर बड़ी आयु के ग्वालों (पालियों) में से एक ने कहा कि बाबा जी भोजन खाओ। साधु ने कहा, ''भोजन तो मैं अपने डेरे से खाकर आया हूँ।'' कई ग्वाले एक साथ बोले, ''यदि भोजन नहीं खाते तो दूध पी लो।'' परमेश्वर ने कहा कि दूध पिला दो, परंतु दूध उसका पिलाओ जिसको कभी बच्चा उत्पन्न न हुआ हो यानि कुंवारी गाय का। पालियों ने उसे मजाक समझा।

बालक गरीबदास जी उठे तथा एक अपनी प्रिय बछिया को लाए और बोले, हे बाबा जी! यह कुंवारी गाय दूध कैसे दे सकती है? तब बाबा जी ने कहा कि यह दूध देगी, तुम स्वच्छ बर्तन लेकर इसके थनों के नीचे रखो। संत गरीबदास जी ने एक मिट्टी का बर्तन (छोटा घड़ा 3-4 किलोग्राम की क्षमता का) लिया और उसे हाथों से पकड़कर बछिया के थनों के नीचे करके बैठ गया। बाबा जिंदा (अल-खिज्र) ने गाय की बछड़ी की पीठ के ऊपर हाथ से थपकी मारी। उसी समय थन लंबे व कुछ मोटे हो गए तथा दूध निकलने लगा। जब वह तीन-चार किलोग्राम का बर्तन भर गया तो थनों से दूध आना बंद हो गया। बालक गरीबदास जी ने वह दूध से भरा बर्तन बाबा जी को दे दिया तथा कहा कि यह तो आपकी दया से मिला है, पी लो। बाबा जिंदा ने उस बर्तन को मुख लगाकर कुछ दूध पीया। शेष उन पालियों की ओर किया कि पी लो, यह प्रसाद है। अन्य ग्वाले उठकर चल दिए। कहने लगे कि यह दूध जादू-जंत्र करके कुंवारी बछड़ी से निकाला है। हमारे को कोई भूत-प्रेत की बाधा हो जाएगी। यह कोई सेवड़ा (भूत-प्रेत निकालने वाला) लगता है। कुंवारी गाय का दूध पाप का दूध है। यह बाबा पता नहीं किस छोटी जाति का है। इसका झूठा दूध हम नहीं पीएँगे।

बालक गरीबदास जी ने बाबा से बर्तन लिया और पालियों के देखते-देखते उसमें से कुछ दूध पीया। वे बड़ी आयु के ग्वाले बालक को दूध न पीने के लिए कहते रहे। बालक नहीं माना। सब दूर चले गए। बाबा जिंदा तथा बालक गरीबदास जी रह गए। तब कुछ ज्ञान सुनाया। बालक ने सतलोक और समर्थ परमात्मा (जो ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी से भी शक्तिशाली जो बाबा ने बताया था) आँखों देखने की इच्छा की। जिंदा बाबा बालक गरीबदास के जीव को शरीर से निकालकर आसमान में ले गया। ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी के लोक दिखाए। स्वर्ग तथा नरक दिखाए। ब्रह्मलोक (महाजन्नत) काल ब्रह्म का दिखाया। फिर और ऊपर अपने अमरलोक में ले गए। जो बाबा जिंदा बालक के साथ गया था, वह ऊपर बने (तख्त) सिंहासन के ऊपर बैठ गया। उस समय परमात्मा रूप बन गए। परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों के प्रकाश से भी अधिक था। अमरलोक प्रकाशित था। बालक गरीबदास जी का भी अन्य शरीर बन गया जिसका प्रकाश सोलह सूर्यों के समान था। अमरलोक के सब भक्त/भक्तमति (हँस/हँसनी) अपने परमेश्वर को दंडवत् करने लगे। जय हो कबीर सतपुरूष की बुलाने लगे। सबने कहा कि ये अनंत करोड़ ब्रह्मंड का सृजनहार समर्थ परमेश्वर है। इसका नाम कबीर है। फिर परमात्मा ने सब ज्ञान अपने नबी गरीबदास जी की आत्मा में डाल दिया। सारा सतलोक तथा नीचे के सब लोक दिखाकर बालक की आत्मा को शरीर में प्रवेश करा दिया। उस

समय बालक गरीबदास जी के शरीर को अंतिम संस्कार के लिए चिता (लकड़ियों के ढ़ेर) पर रखा था। अग्नि लगाने ही वाले थे, उसी समय गरीबदास जी उठ लिए। गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। संत गरीबदास जी को उसी जिंदा बाबा वेशधारी परमेश्वर जी ने दीक्षा दी। संत गरीबदास जी ने आँखों देखा तथा परमेश्वर के मुख कमल से सुना सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान दोहों, चौपाईयों, शब्दों के रूप में बोला जो एक दादू जी के पंथ से दीक्षित गोपाल दास नाम के महात्मा जी ने लिखा। लेखन कार्य में लगभग छः महीने लगे।

प्रसंग है कि यह कहाँ प्रमाण है कि अल-खिज्र ही अल कबीर है :- जैसे इसी ''अल-खिज्र (अल कबीर) की जानकारी'' वाले प्रकरण में ''रूमी का परिचय'' शीर्षक में लिखा है कि रूमी नाम का व्यक्ति टर्की देश के कोन्या शहर में एक मस्जिद में मौलवी था जो मुसलमान धर्म का प्रचार किया करता था। लोग उनका विशेष सम्मान किया करते। जो शम्स तबरेज संत के ज्ञान को समझकर मौलवी की पदवी त्यागकर गुरू जी शम्स तबरेज द्वारा बताई भक्ति करते थे जो प्रसिद्ध कवि भी हुए हैं। उन्होंने बताया कि बलख शहर के राजा (बलखी) सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम ने अल-खिज्र से प्रेरणा पाकर राज त्याग दिया था। शेष जीवन अल-खिज्र के सम्पर्क में रहकर अल्लाह की इबादत में गुजारा। सुल्तान को अल-खिज्र के दर्शन हुआ करते थे। ऊपर आप जी ने पूरा प्रकरण सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम का पढ़ा जिसमें स्पष्ट है कि अल्लाह कबीर जी ने सुल्तान को भक्ति के लिए प्रेरणा दी थी। इसलिए अल-खिज्र ही अल कबीर है। इसी का समर्थन संत गरीबदास जी ने किया है कि :-

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू कूँ उपदेश दिया। जात जुलाहा भेद न पाया, काशी माहीं कबीर हुआ।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने बताया है कि हम सब (मैं गरीबदास, सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम, सिख धर्म प्रवर्तक नानक जी तथा संत दादू जी) को उस सतगुरू कबीर परमेश्वर जी ने पार किया जो काशी शहर में जुलाहे जाति में हुआ है। फिर कहा है कि :-

गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मंड का, एक रती नहीं भार। सतगुरू पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

अर्थात् सर्व ब्रह्मंडों के उत्पत्तिकर्ता यानि सारी कायनात के सृजनकर्ता मेरे सतगुरू कबीर परमेश्वर जी हैं। उन्होंने सब लोकों, तारागण तथा सब नक्षत्रों (सूर्य, चाँद, ग्रहों) को बनाकर अपनी शक्ति से रोका हुआ है जिसे विज्ञान की भाषा में गुरूत्वाकर्षण शक्ति कहते हैं। उस सृजनहार कबीर के ऊपर इस सारी रचना (अनंत करोड़ ब्रह्मंडों) का कोई भार नहीं है। जैसे वैज्ञानिक ने वायुयान (Airplane) बनाकर उड़ा लिया। स्वयं भी उसमें सवार हो गया। जिस प्रकार उस वायुयान का वैज्ञानिक के ऊपर कोई भार नहीं है, उल्टा उसके ऊपर सवार है। इसी प्रकार कबीर कादिर अल्लाह सब लोकों की रचना करके उनके ऊपर सवार है तथा सारे जीव सवार कर रखे हैं। इससे सिद्ध हुआ कि अल-खिज्र ही अल कबीर है।

☛ गवाह नं. 2 (संत दादू दास जी) :- **संत दादू दास जी ग्यारह वर्ष के बालक थे। तब गाँव के बाहर जंगल में दादू जी को अल्लाह कबीर एक जिंदा बाबा के वेश में मिला। संत दादू जी की आत्मा को निकालकर अल-कबीर जी ऊपर अपने सतलोक में ले गए। दादू जी तीन दिन-रात अचेत रहे। ऊपर अपना तख्त (सिंहासन) दिखाया। अपना परिचय करवाया कि मैं पूर्ण ब्रह्म (परमेश्वर) हूँ। सारी सृष्टि मैंने रची है। बालक दादू जी को अल्लाह कबीर जी ने सब ब्रह्मंडों की सैर करवाकर तीसरे दिन आत्मा शरीर में प्रवेश कर दी। संत दादू दास जी सचेत हो गए। तब लोगों ने पूछा कि आपको क्या हो गया था? दादू जी ने बताया कि मुझे एक बाबा के वेश में अल्लाह कबीर मिले थे और मुझे दीक्षा दी। ऊपर आसमानों पर लेकर गए थे। दादू जी के साथ उस समय कुछ अन्य हमउम्र बच्चे भी थे। उन्होंने भी बताया था कि एक बाबा ने जंत्र-मंत्र का जल बनाकर स्वयं पीया तथा पान के पत्ते को कटोरे रूप में बनाकर उसमें अपना झूठा पानी दादू को पिलाया था। फिर बाबा दिखाई नहीं दिया। दादू बालक बेहोश हो गया। संत गरीबदास जी ने अपनी वाणी में परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त ज्ञान को इस प्रकार बताया है कि :-**

गरीब, दादू कूँ सतगुरु मिले, दई पान की पीक। बूढा बाबा जिसे कहैं, याह दादू की नहीं सीख।।

अर्थात् संत दादू जी को सतगुरू रूप में कबीर अल्लाह मिले थे जो एक जिंदा बाबा के वेश में थे। उन्होंने दादू जी को पान के पत्ते के ऊपर अपने मुख से निकाला जल डालकर दीक्षा के समय पिलाया था। जो व्यक्ति यह कहते हैं कि दादू को वृद्ध बाबा मिला था जो जंत्र-तंत्र विद्या को जानने वाला था, यह दादू ने नहीं बताया। दादू जी ने उसके

विषय में जो बताया है, वह इस प्रकार है जो दादू जी के द्वारा बोली वाणी से बने दादू ग्रंथ में लिखा है। वाणी :-

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर का, सुनकर कांपे काल। नाम भरोसै जो चले, होवे ना बांका बाल।।
केहरी नाम कबीर है, विषम काल गजराज। दादू भजन प्रताप से, भागे सुनत आवाज।।

अर्थात् दादू जी ने कहा है कि मुझे जिसने (निजनाम) भक्ति का यथार्थ मंत्र दिया, वह मेरा सतगुरू है। उसका नाम कबीर है। यही कबीर सारी कायनात (सृष्टि) का (सृजनहार) उत्पत्तिकर्ता है।

❖ संत दादू जी ने कहा है कि ''कबीर'' नाम सुनते ही ज्योति निरंजन (काल) कांपने लग जाता है। कबीर नाम इतना शक्तिशाली है। जो भक्त कबीर जी के बताए नाम पर पूर्ण विश्वास करके जीवन यात्रा करता है तो काल ब्रह्म उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकता।

❖ संत दादू जी ने कबीर अल्लाह की समर्थता एक उदाहरण के माध्यम से बताई है कि काल भी बहुत ता. कतवर है, परंतु कबीर अल्लाह के सामने वह भी कमजोर पड़ जाता है। काल (गजराज) हाथियों के राजा के समान बलवान है। कबीर जी का भक्ति करने को दिया नाम भी बहुत शक्तिशाली है। वह केहरी यानि बब्बर शेर (Biggest Lion) के समान ताकतवर है। उस नाम का जाप (भजन) करने से उस नाम रूपी केहरी की शक्ति के आगे काल टिक नहीं पाता यानि नाम की सूक्ष्म दहाड़ (गाज) सुनकर काल रूप गजराज भाग जाता है। संत दादू दास जी ने स्पष्ट कर दिया है कि कबीर ही सारी सृष्टि (कायनात) को उत्पन्न करने वाला परमेश्वर है।

☛ गवाह नं. 3 {संत धर्मदास जी बांधवगढ़ (मध्य प्रदेश, भारत) वाले} :- **हिन्दू धर्म में जन्म होने के कारण धर्मदास जी हिन्दू धर्मगुरूओं द्वारा बताए अधूरे ज्ञान के आधार से साधना किया करते थे। एक समय धर्मगुरूओं के बताए अनुसार तीर्थ भ्रमण करते हुए मथुरा (श्री कृष्ण की नगरी) में गए हुए थे। पत्थर व पीतल की देवी-देवताओं (श्री विष्णु, श्री शंकर व देवी आदि) की मूर्तियों को थैले में डालकर साथ लिए हुए थे। सुबह तीर्थ में (उस तालाब में श्री कृष्ण स्नान किया करते थे,) उसमें स्नान करके मूर्तियों की पूजा करने लगा। उस समय कबीर अल्लाह भारत देश के काशी शहर में जुलाहे की भूमिका करने संसार में प्रकट थे, जो धर्मदास जी को सत्य मार्ग बताने हेतु मथुरा के उसी तालाब पर पहुँचे और सब क्रिया करते धर्मदास जी को देख रहे थे। धर्मदास जी ने मूर्तियों की उपासना के पश्चात् श्रीमद्भगवत गीता का पाठ किया। खुदा कबीर धर्मदास जी की सब क्रियाओं को ध्यान से देख व सुन रहा था। धर्मदास जी अपनी दैनिक भक्ति की क्रियाओं से फारिक हुआ। तब परमेश्वर कबीर जी ने उससे ज्ञान चर्चा की। ज्ञान चर्चा का दौर कई दिनों तक चला। धर्मदास जी को भी अल्लाह कबीर जी अपने सतलोक में बने तख्त के पास लेकर गए। धर्मदास जी तीन दिन तक बेहोश रहे। ऊपर के सब लोक दिखाए। अपना सतलोक दिखाया। सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान समझाकर पुनः शरीर में प्रवेश कर दिया। उसके पश्चात् संत धर्मदास जी ने अपनी पहले वाली इबादत त्याग दी तथा अपने नबी स्वयं बनकर आए अल्लाह कबीर द्वारा बताई सच्ची इबादत की और पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।**

धर्मदास जी ने अल्लाह कबीर की महिमा में अनेकों वाणी बोली :-

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।
सत्य लोक से चल कर आए, काटन जम की जंजीर।
हिन्दू के तुम देव कहाये, मुसलमान के पीर।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहा ना पाया शरीर।।
धर्मदास की अर्ज गोसांई, बेड़ा लंघाईयो परले तीर।।

अर्थात् धर्मदास जी ने सतलोक देखने के बाद माना कि काशी वाला जुलाहा कबीर सारी कायनात को उत्पन्न करने वाला कादिर अल्लाह है। उनकी महिमा विस्तार के साथ बताई जो आँखों देखी थी।

जब परमेश्वर कबीर जी भारत देश के गोरखपुर जिला उत्तरप्रदेश प्रांत के मगहर कस्बे से सशरीर सतलोक गए थे। उस समय उनके हिन्दू राजा बीर सिंह जो काशी शहर के राजा थे तथा मुसलमान नवाब बिजली खान पठान जो मगहर कस्बे के नवाब थे, दोनों शिष्य थे। अनेकों हिन्दू तथा मुसलमान मगहर, काशी तथा अनेकों

स्थानों के व्यक्ति भी कबीर जी के शिष्य थे जो सँख्या में चौंसठ लाख बताए हैं। जब कबीर जी ने सतलोक जाने की बात कही तो दोनों (हिन्दू तथा मुसलमान) धर्मों के व्यक्ति तथा राजा अपनी-अपनी रीति से अंतिम संस्कार करने की बात की जिद करके लड़ने को तैयार हो गए थे। तब कबीर जी ने उनसे कहा कि आप लड़ाई नहीं करना। मैं एक चद्दर नीचे बिछाऊँगा, एक ऊपर ओढूँगा। आप मेरे शरीर के दो भाग कर लेना तथा एक-एक चद्दर व आधा-आधा शरीर ले लेना। जो लड़ाई करेगा, उसको त्याग दूँगा। एक चद्दर बिछाई गई। भक्तों ने श्रद्धा से उसके ऊपर दो-तीन इंच मोटाई में सुगंधित फूल बिछा दिए। कबीर जी उनके ऊपर लेट गए। एक चद्दर ऊपर ओढ़ी। दोनों धर्मों के व्यक्ति अपने मन में दोष लिए हुए थे कि आधे शरीर का संस्कार अपशकुन यानि बुरा होता है। इसलिए युद्ध करके पूरा शरीर लेकर संस्कार करेंगे। अल्लाह कबीर तो मन की बात भी जानता है। कुछ समय पश्चात् आकाश से आवाज आई कि चद्दर उठाकर देखो, इसके नीचे मुर्दा नहीं है। सबने ऊपर नजर की। देखा तो कबीर जी आकाश में ऊपर की ओर जा रहे थे। कह रहे थे कि मैं सर्व सृष्टि का रचनहार परमेश्वर कबीर करतार हूँ। तुम मुझे समझ नहीं सके। चद्दर उठाई तो शव के समान सुगंधित फूलों का ढ़ेर लगा था। कबीर खुदा अपने आसमान वाले तख्त (सिंहासन) पर जा विराजे थे। यदि यह चमत्कार परमेश्वर न करते तो हिन्दू तथा मुसलमानों का घोर युद्ध होता। हजारों व्यक्ति मारे जाते। उस अनर्थ को परमेश्वर बिना कोई नहीं टाल सकता। उसी समय हिन्दू तथा मुसलमान आपस में गले लगकर अल्लाह के चले जाने के गम में बिलख-बिलखकर रोने लगे। कहने लगे कि हमने अल्लाह को पहचाना नहीं। हमसे बड़ी गलती हुई है। दोनों धर्मों में एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे फूल बाँटे। बिजली खान पठान (मगहर के नवाब) ने अपने पीर कबीर जी के लिए दोनों धर्मों को एक स्थान पर (सौ फुट के अंतर में) फूलों का अंतिम संस्कार करने के लिए जगह दे दी। दोनों धर्मों ने एक चद्दर तथा आधे फूलों का अपनी-अपनी रीति से अंतिम संस्कार किया। आज भी दोनों यादगार मगहर नगर (जिला-संत कबीर नगर, उत्तरप्रदेश, भारत) में विद्यमान हैं। बिजली खान पठान ने दोनों यादगारों के लिए 500-500 बीघा जमीन दान (जकात) में दी थी।
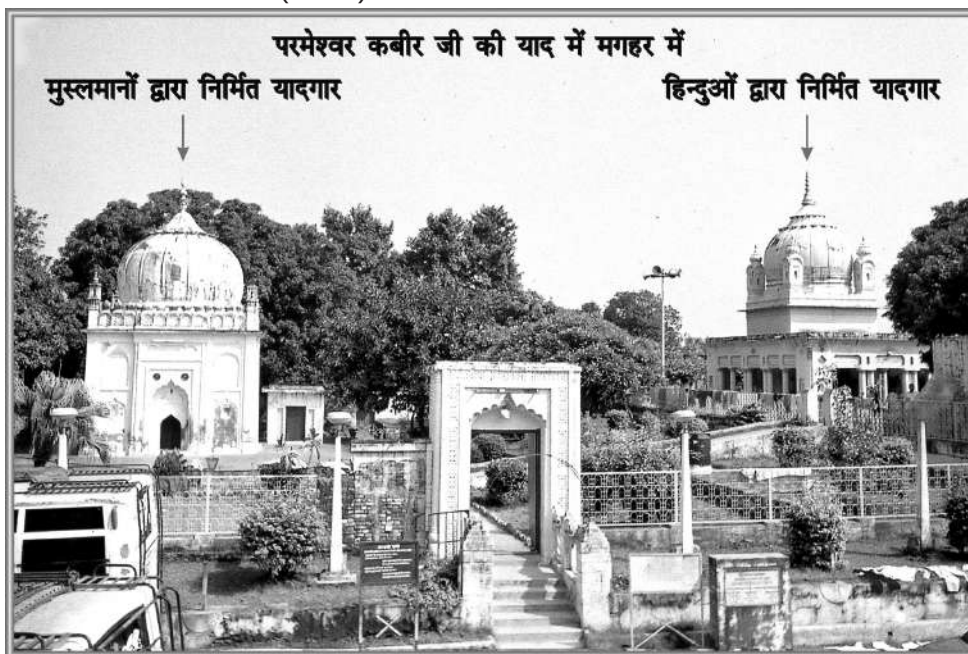
जब परमेश्वर कबीर जी सबके बीच से चले गए तो इस वियोग में संत धर्मदास जी ने रोते हुए कहा था कि हे परमेश्वर कबीर जी! मुझे फिर से दर्शन दो। आप तो सतलोक से अपने तख्त (सिंहासन) से चलकर पृथ्वी के ऊपर हमारे कर्म बंधन रूपी जंजीर काटने आए थे। दोनों (धर्मों) का झगड़ा होने जा रहा था। सबने अपनी-अपनी सेना हथियारों सहित लड़ने को तैयार कर दी थी। आपका शरीर ही नहीं मिला। आप कादिर अल्लाह हो। इसको समझने के लिए यह लीला पर्याप्त है। हे परमेश्वर! मेरे जीवन रूपी खेवे (नौका) का संसार रूपी दरिया के (परले

तीर) दूसरे किनारे लगाओ यानि मोक्ष प्रदान करो। कुछ दिनों के पश्चात् संत धर्मदास जी को अल्लाह कबीर जी फिर सतलोक से आकर मिले। उसके साथ रहे। संत धर्मदास जी को सतलोक भेजा। इससे सिद्ध हुआ कि जो अल-खिज्र रूप में हजरत मुहम्मद वसल्लम आदि को मिला था, वह अल-कबीर ही सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता खुदा है।

☛ गवाह नं. 4 (संत मलूक दास जी) :- संत मलूक दास जी को भी कबीर जी सतलोक लेकर गए। सब व्यवस्था दिखाकर वापिस शरीर में छोड़ा था। पहले मलूक दास जी श्री कृष्ण तथा श्री रामचन्द्र (श्री विष्णु जी) के परम भक्त थे। उसके पश्चात् पहले वाली पूजा त्यागकर खुदा कबीर जी द्वारा बताई इबादत की। मोक्ष प्राप्त किया।

संत मलूक दास जी ने कहा :-

जपो रे मन साहेब नाम कबीर, जपो रे मन परमेश्वर नाम कबीर।।
एक समय गुरू बंसी बजाई, कालंद्री के तीर।
सुर नर मुनिजन थकत भये, रूक गया जमना नीर।।
अमृत भोजन म्हारे सतगुरू जीमें, शब्द दूध की खीर।
दास मलूक सलूक कहत है, खोजो खसम कबीर।।

अर्थात् संत मलूक दास जी ने स्पष्ट किया है कि परमात्मा कबीर जी का नाम जपा करो। उस (खसम) सर्व के मालिक कबीर जी की खोज करो, उसे पहचानो। सत्य साधना करके सतलोक में कबीर खुदा के पास जाओ। जैसे श्री कृष्ण के विषय में बताया जाता है कि वे बांसुरी मधुर बजाते थे। उसको सुनकर गोपियाँ व गायें खींची चली आती थी। मलूक दास ने बताया है कि एक समय मेरे सतगुरू कबीर जी ने (कालंद्री) जमना दरिया के किनारे बांसुरी बजाई थी जिसको सुनकर स्वर्ग लोक के देवता, ऋषिजन तथा आस-पास के गाँव के व्यक्ति खींचे चले आए थे। और क्या बताऊँ! जमना दरिया का जल भी रूक गया था। मेरे सतगुरू शब्द की खीर खाते हैं यानि अमृत भोजन के साथ-साथ अमर आनंद भी भोगते हैं। संत मलूक दास जी ने आँखों देखा बताया कि कबीर पूर्ण ब्रह्म (कादिर अल्लाह) है।

☛ गवाह नं. 5 (श्री नानक देव जी) :- श्री नानक जी को परमात्मा मिले थे जिस समय श्री नानक देव साहेब जी सुल्तानपुर शहर में नवाब के यहाँ मोदी खाने में नौकरी करते थे। सुल्तानपुर शहर से आधा कि.मी. दूर बेई नदी बहती है। श्री नानक जी प्रतिदिन उस दरिया में स्नान करने जाया करते थे।

एक दिन परमात्मा जिंदा बाबा की वेशभूषा में बेई नदी पर प्रकट हुए, वहाँ श्री नानक देव जी से ज्ञान चर्चा हुई। उसके पश्चात् श्री नानक जी ने दरिया में डुबकी लगाई लेकिन बाहर नहीं आए। वहाँ उपस्थित व्यक्तियों ने मान लिया कि नानक जी दरिया में डूब गए हैं। शहर के लोगों ने दरिया में जाल डालकर भी खोजा, परंतु निराशा ही हाथ लगी क्योंकि श्री नानक देव जी तो जिन्दा बाबा के रूप में प्रकट परमात्मा के साथ सच्चखण्ड (सत्यलोक) में चले गए थे। तीन दिन के पश्चात् श्री नानक देव जी वापिस पृथ्वी पर आए। उसी बेई नदी के उसी किनारे पर खड़े हो गए जहाँ से अन्तर्ध्यान हुए थे। श्री नानक जी को जीवित देखकर सुल्तानपुर के निवासियों की खुशी का ठिकाना नहीं था। श्री नानक जी की बहन नानकी भी सुल्तानपुर शहर में विवाही थी। अपनी बहन के पास श्री नानक जी रहा करते थे। अपने भाई की मौत के गम से दुःखी बहन नानकी को बड़ा आश्चर्य हुआ और गम खुशी में बदल गया। श्री नानक देव को परमात्मा मिले, सच्चा ज्ञान मिला, सच्चा नाम (सत्यनाम) मिला। पुस्तक भाई बाले वाली "जन्म साखी गुरू नानक देव जी" में तथा प्राण संगली हिन्दी लिपि वाली में जिसके सम्पादक सन्त सम्पूर्ण सिंह हैं, इन दोनों पुस्तकों में प्रमाण है कि श्री गुरू नानक देव जी ने स्वयं मर्दाना को बताया कि मुझे परमात्मा जिंदा बाबा के रूप में बेई नदी पर मिले, जब मैं स्नान करने के लिए गया। मैं तीन दिन तक उन्हीं के साथ रहा था। वह बाबा जिन्दा मेरा सतगुरू भी है तथा वह सर्व सृष्टि का रचनहार भी है। इसलिए वही "बाबा" कहलाने का अधिकारी है, अन्य को "बाबा" नहीं कहा जाना चाहिए, उसका नाम कबीर है।

कायम दायम कुदरती सब पीरन सिर पीर आलम बड़ा कबीर।।

इसलिए श्री नानक जी की वाणी (महला 1) है, वह सूक्ष्म वेद से मेल खाती है, यह सही है। अन्य सन्तों की वाणी इतनी सटीक नहीं है। कारण यह है कि श्री नानक देव जी को परमात्मा कबीर जी मिले थे।

प्रमाण :- श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में पृष्ठ 24 पर लिखी वाणी :-

एक सुआन दुई सुआनी नाल भलके भौंकही सदा बियाल,
कुड़ छुरा मुठा मुरदार धाणक रूप रहा करतार।
तेरा एक नाम तारे संसार मैं ऐहो आश ऐहो आधार, धाणक रूप रहा करतार।
फाही सुरत मलूकी वेश, एह ठगवाड़ा ठगी देश।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी के पृष्ठ 731 पर निम्न वाणी है :-

नीच जाति परदेशी मेरा, क्षण आवै क्षण जावै।
जाकि संगत नानक रहंदा, क्यूकर मुंडा पावै।।

पृष्ठ 721 पर निम्न वाणी लिखी है :-

यक अर्ज गुफतम पेश तोदर, कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

यह उपरोक्त अमृतवाणी श्री गुरू ग्रन्थ साहेब जी की है जिससे सिद्ध हुआ कि श्री नानक जी को परमात्मा मिले थे। वह "कबीर करतार" है जो काशी में धाणक रूप में लीला करने आए थे।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ है कि कबीर जुलाहा काशी (भारत) वाला सबका उत्पत्ति करने वाला, सबका धारण-पोषण करने वाला समर्थ परमात्मा है। वही अल-खिज्र के वेश में अच्छी आत्माओं को मिला था। वह ऐसे अन्य वेश बनाकर नेक आत्माओं को भी भक्ति की उत्तम विधि का ज्ञान करवाता है। ऊपर जो सुल्तान इब्राहिम इब्न अधम के प्रकरण से भी स्पष्ट है कि अल-खिज्र ही कबीर अल्लाह है।

8. रूमी का परिचय :-

रूमी विश्व के जाने-माने कवि हैं और कबीर साहिब के बाद दूसरा नंबर रूमी का आता है। पश्चिमी देशों में रूमी काफी मशहूर हैं। रूमी की कविताएँ अमेरिका में सबसे ज्यादा बिकती हैं। रूमी की रचनाएँ "Masnavi" और Diwan-e-Kabir को Melvana Museum, Konya, Turkey में रखा गया है। रूमी की मजार Konya, Turkey में स्थित है। उसी के साथ रूमी के मुर्शीद शम्स तबरेज की भी कृत्रिम कब्र बनी हुई है। हर साल पूरे विश्व से लाखों लोग रूमी की मजार का सिजदा करने जाते हैं और हैरत की बात ये है कि मुसलमानों से ज्याद गैर-मुसलमान जाते हैं।

रूमी की शम्स तबरेज से मुलाकात :-

रूमी शहर कोन्या, टर्की देश की मस्जिद के सबसे बड़े मौलवी थे और मुसलमान धर्म का प्रचार-प्रसार किया करते थे और उनके बहुत से शागिर्द थे।

15th November 1244 की रोज एक 60 साल का सफेद दाढ़ी वाला शख्स सिर से एड़ी तक काला लिबास पहने हुए कोन्या के महशूर चीनी बाजार में व्यापारियों की सराय में पहुँचा। इस शख्स का नाम शम्स तबरेज (Shams Tabrez) था। पूछने पर लोगों को बताया कि मैं एक राह चलता व्यापारी हूँ। वो वहाँ जैसे कुछ खोज रहे थे और आखिरकार उन्हें रूमी घोड़े की सवारी करते हुए दिखाई दिया।

एक दिन एक हौज (तालाब) के किनारे रूमी पुरानी इल्मी किताबों का एक ढ़ेर रखकर बैठे थे और अपने शागिर्दों को पढ़ा रहे थे। शम्स तबरेज वहाँ से गुजरे और उन किताबों के ढ़ेर की तरफ इशारा करते हुए रूमी से पूछा, ये क्या है? रूमी ने व्यंग्यपूर्वक उत्तर दिया, बाबा ''ये वो है जो तू नहीं जानता।'' ये सुन शम्स तबरेज ने उन किताबों को हौज में धक्का दे दिया। ये देख रूमी आग-बबूला हो गए और कहा हे बदबक्त! ये तूने क्या किया? क्या तू जानता है ये किताबें कितनी कीमती थी? ये सुनकर शम्स तबरेज हौज में कूद गए और एक-एक कर सारी किताबें पानी से बाहर निकालकर रख दी और एक भी किताब गीली नहीं हुई थी। उल्टा उनमें से धूल निकल रही थी। ये हैरतंगेज नजारा देख रूमी दंग रह गया और शम्स तबरेज से पूछा, बाबा ये क्या है? शम्स तबरेज ने उत्तर दिया ''ये वो है जो तू नहीं जानता'', और वहाँ से चले गए।

अगले दिन रूमी अपने घोड़े पर सवार होकर बाजार में पहुँचे। वहाँ लोग आदर-सत्कार में उनका हाथ चूम रहे थे। तब अचानक शम्स तबरेज वहाँ पहुँचे और रूमी के घोड़े की लगाम पकड़ ली। रूमी पहचान गया कि ये तो वही बाबा है, रूमी भी उनसे मिलना चाह रहे थे। बाबा ने कहा कि रूमी एक मसला है, मुझे ये बताओ कि

मुहम्मद बड़ा या बायाजिद बसतामी बड़ा? (इंटरनेट पर ऐसा विवरण मिलता है कि मंसूर-अल-हल्लाज जिसने अनल हक्क का नारा लगाया था, बायाजिद बसतामी उनके जीवन को प्रभावित करने वालों में से एक हैं) रूमी ने कहा ये तो बच्चा भी जानता है, मुहम्मद बड़ा है। बाबा ने कहा अगर मुहम्मद बड़ा है तो उसने ये क्यों कहा कि ''हे अल्लाह! मैं तुझे नहीं जानता, तू कौन है?'' और बायाजिद बस्तामी ने ये क्यों कहा कि ''हे अल्लाह! तू पाक है, तू बादशाहों का बादशाह है और तेरी बड़ी शान है।'' दोनों के बीच काफी लंबी चर्चा होती है और बाबा के तर्क सुनकर रूमी बेहोश होकर घोड़े से नीचे गिर पड़ता है। रूमी की आँखें खुली तो अपना सिर बाबा की गोद में पाया। बाबा रूमी को लेकर शहर से दूर चले जाते हैं। इसके बाद शम्स तबरेज कोन्या से गायब हो जाते हैं। रूमी उनकी याद में पागल-सा हो जाता है और बाबा की खोज में भटकने लगता है। एक वर्ष बाद रूमी को किसी से पता लगता है कि शम्स तबरेज को Damascus (आज Sirya देश का एक शहर) में देखा गया है। रूमी अपने बड़े लड़के से कहता है कि घर में जो सोना, चाँदी, गहने, पैसा पड़ा है, सब ले जा और बाबा को यहाँ ले आओ। रूमी का बड़ा लड़का Damascus पहुँचकर शम्स तबरेज के नाम पर भंडारा खोल देता है और देखता है कि कुछ दूरी पर बाबा एक लड़के के साथ शतरंज खेल रहे हैं। रूमी का लड़का बाबा से विनती करके उन्हें घोड़े पर बैठाकर कोन्या ले आता है। रूमी कहता है कि बाबा आप क्यों गायब हो गए थे। आपने मेरे साथ ऐसे क्यों किया? मैं एक साल से आपकी याद में तड़फ रहा था। बाबा कहते हैं अगर मैं गायब ना होता तो तेरे दिल में आज ये आग ना होती। बाबा रूमी को इल्म देते हैं जिसे पाने के बाद रूमी अपनी पारंपरिक पूजा-पाठ छोड़ देता है। ये देख रूमी के शागिर्द शम्स तबरेज से ईर्ष्या करने लगते हैं।

एक रोज रूमी अपने मुर्शिद शम्स तबरेज के साथ अपनी कुटिया में बैठे थे। तब रूमी का छोटा लड़का व कुछ शागिर्द शम्स तबरेज के कत्ल के इरादे से वहाँ पहुँच जाते हैं और शम्स तबरेज को आवाज लगाते हैं। शम्स तबरेज रूमी से कहते हैं कि बस! अब मेरा जाने का वक्त आ गया है। शागिर्द जैसे ही उनको मारने के लिए तलवार उठाते हैं, शम्स तबरेज अदृश्य हो जाते हैं।

मन्सूर अली का उद्धार कबीर जी ने किया

परमात्मा कबीर जी अपने सिद्धांत अनुसार एक अच्छी आत्मा शम्स तबरेज मुसलमान को जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। उन्हें अल्लाहू अकबर (कबीर परमात्मा) यानि अपने विषय में समझाया, सतलोक दिखाया, वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् कबीर परमात्मा यानि जिंदा बाबा नहीं मिले। उसे केवल एक मंत्र दिया ''अनल हक'' जिसका अर्थ मुसलमान गलत करते थे कि मैं वही हूँ यानि मैं अल्लाह हूँ अर्थात् जीव ही ब्रह्म है। वह यथार्थ मंत्र ''सोहं'' है। इसका कोई अर्थ करके स्मरण नहीं करना होता। इसको परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का वशीकरण मंत्र मानकर जाप करना होता है। शम्स तबरेज परमात्मा के दिए मंत्र का नाम जाप करता था। उसका आश्रम बगदाद (वर्तमान में ईराक देश की राजधानी) शहर के बाहर बणी में था।

{एक स्थान पर ऐसा भी लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी ने शम्स तबरेज को प्रेरणा करके दूर भेज दिया। स्वयं शम्स तबरेज का वेश बनाकर उसी असली शम्स तबरेज वाले आश्रम में रहने लगे। फिर मुल्तान शहर में उस लीला के अंत में शम्स तबरेज को मुल्तान शहर में भेजा। उस समय मुहम्मद (मन्सूर) शरीर त्याग चुका था। असली शम्स तबरेज मौनी हो गया था। बोल नहीं पा रहा था। कई वर्ष से उसकी यही दशा थी, परंतु स्वस्थ था। कबीर परमेश्वर जी ने भी जान-बूझकर मुल्तान में कई दिनों से मौन धारण कर रखा था। जिस दिन असली शम्स तबरेज मुल्तान में आया, उसी दिन परमात्मा कबीर जी घूमने के बहाने प्रतिदिन की तरह आश्रम से बाहर गए। वापिस नहीं आए। जिस समय कबीर जी (शम्स तबरेज) प्रतिदिन लौटकर आते थे, उसी समय शम्स तबरेज ने आश्रम देखा। उसमें चला गया। उपस्थित व्यक्तियों को कुछ पता नहीं लगा। उन्होंने जाना कि पीर शम्स तबरेज सैर करके लौट आए हैं। शम्स तबरेज का मुल्तान शहर में जाते ही देहांत हो गया। लोगों ने मजार बना दी।}

अब उस आश्रम में अल्लाह कबीर शम्स तबरेज के रूप में विराजमान रहे। उस नगरी के राजा की एक लड़की जिसका नाम शिमली था, शम्स तबरेज के ज्ञान व सिद्धि से प्रभावित होकर उनकी परम भक्त हो गई। उसने दिन-रात नाम जाप किया। सतगुरू की सेवा करने प्रतिदिन आश्रम में जाने लगी। पिता जी से आज्ञा लेकर जाती थी। बेटी के साधु भाव को देखकर पिता भी उसे नहीं रोक पाया। वह प्रतिदिन सुबह तथा शाम सतगुरू

जी का भोजन स्वयं बनाकर ले जाया करती थी। किसी व्यक्ति ने मन्सूर अली से कहा कि आपकी बहन शिमली शाम के समय आश्रम में अकेली जाती है। यह शोभा नहीं देता। नगर में आलोचना हो रही है।

एक शाम को जब शिमली बहन संत जी का खाना लेकर आश्रम में गई तो भाई मन्सूर गुप्त रूप से पीछे-पीछे आश्रम तक गया। दीवार के सुराख से अंदर की गतिविधि देखने लगा। लड़की ने संत को भोजन खिलाया। फिर संत जी ने ज्ञान सुनाया। मन्सूर भी ज्ञान सुन रहा था। वह जानना चाहता था कि ये दोनों क्या बातें करते हैं? क्या गतिविधि करेंगे? प्रत्येक क्रिया जो शिमली तथा संत शम्स तबरेज कर रहे थे तथा जो बातें कर रहे थे, ध्यानपूर्वक सुन रहा था। अन्य दिन तो आधा घंटा सत्संग करता था, उस दिन दो घण्टे सत्संग किया। मन्सूर ने भी प्रत्येक वचन ध्यानपूर्वक सुना। वह तो दोष देखना चाहता था, परंतु उस तत्त्वज्ञान को सुनकर कृतार्थ हो गया।

परमात्मा की भक्ति अनिवार्य है। अल्लाह साकार है, कबीर है। ऊपर के आसमान में विराजमान है। पृथ्वी के ऊपर भी मानव शरीर में प्रकट होता है। सत्संग के बाद संत शम्स तबरेज तथा बहन शिमली ने दोनों हाथ सामने करके परमात्मा से प्रसाद माँगा। आसमान से दो कटोरे आए। दोनों के हाथों में आकर टिक गए। शम्स तबरेज ने उस दिन आधा अमृत पीया। शिमली बहन सब पी गई। शम्स तबरेज ने कहा कि बेटी! यह शेष मेरा अमृत प्रसाद आश्रम से बाहर खड़े कुत्ते को पिला दे। उसका अंतःकरण पाप से भरा है। उसका दिल साफ हो जाएगा। शिमली गुरूजी वाले शेष बचे प्रसाद को लेकर दीवार की ओर गई। गुरूजी ने कहा कि इस सुराख से फैंक दे। बाहर जाएगी तो कुत्ता भाग जाएगा। लड़की ने तो गुरूजी के प्रत्येक वचन का पालन करना था। शिमली ने उस सुराख से अमृत फैंक दिया जिसमें से मन्सूर जासूसी कर रहा था। मन्सूर का मुख कुछ स्वभाविक खुला था। उसमें सारा अमृत चला गया। मन्सूर का अंतःकरण साफ हो गया। उसकी लगन सतगुरू से मिलने की प्रबल हो गई। वह आश्रम के द्वार पर आया। शिमली ने पहचान लिया। वह डर गई, बोली नहीं। मन्सूर सीधा गुरू शम्स तबरेज के चरणों में गिर गया। अपने मन के पाप को बताया। अपने उद्धार की भीख माँगी। शम्स तबरेज ने दीक्षा दे दी।

मन्सूर प्रतिदिन आश्रम में जाने लगा। ''अनल हक'' मंत्र को बोल-बोलकर जाप करने लगा। मुसलमान समाज ने विरोध किया। कहा कि मन्सूर काफिर हो गया। परमात्मा को मानुष जैसा बताता है। ऐसा कहता है कि पृथ्वी पर आता है परमात्मा। अनल हक का अर्थ गलत करके कहते थे कि मन्सूर अपने को अल्लाह कहता है। इसे जिंदा जलाया जाए या अनल हक कहना बंद कराया जाए। मन्सूर राजा का लड़का था। इसलिए किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि मन्सूर को मार दे। यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो कब का राम नाम सत कर देते। नगर के हजारों व्यक्ति राजा के पास गए। राजा को मन्सूर की गलती बताई। राजा ने सबके सामने मन्सूर को समझाया। परंतु वह अनल हक-अनल हक का जाप करता रहा। उपस्थित व्यक्तियों से राजा ने कहा कि जनता बताए कि मन्सूर को क्या दण्ड दिया जाए? जनता ने कहा कि मन्सूर को चौराहे पर बाँधकर रखा जाए। नगर का प्रत्येक व्यक्ति एक-एक पत्थर जो लगभग आधा किलोग्राम का हो, मन्सूर को मारे तथा कहे कि छोड़ दे काफिर भाषा। यदि मन्सूर अनल हक कहे तो पत्थर मारे, आगे चला जाए। दूसरा भी यही कहे। तंग आकर मन्सूर अनल हक कहना त्याग देगा।

नगर के सारे नागरिक एक-एक पत्थर लेकर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए। उन नागरिकों में भक्तिमती शिमली भी पंक्ति में खड़ी थी। उसने पत्थर एक हाथ में उठा रखा था तथा दूसरे हाथ में फूल ले रखा था। शिमली ने सोचा था कि भक्त-भाई है। पत्थर के स्थान पर फूल मार दूँगी। जनता में निंदा भी नहीं होगी तथा भाई को भी कष्ट नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) मन्सूर से कहते कि छोड़ दे अनल हक कहना, नहीं तो पत्थर लगेगा। मन्सूर बोले अनल हक, अनल हक, अनल हक, अनल हक। पत्थर भी साथ-साथ लग रहे थे। मतवाले मन्सूर अनल हक बोलते जा रहे थे। शरीर लहू-लुहान यानि बुरी तरह जख्मी हो गया था। रक्त बह रहा था। परमात्मा का आशिक अनल हक कह रहा था। हँस रहा था। जब शिमली बहन की बारी आई। वह कुछ नहीं बोली। मन्सूर ने पहचान लिया और कहने लगा, बहन! बोल अनल हक। शिमली ने अनल हक नहीं बोला। हाथ में ले रखा फूल भाई मन्सूर को मार दिया। मन्सूर बुरी तरह रोने लगा। शिमली ने कहा, भाई! अन्य व्यक्ति पत्थर मार रहे थे। घाव बन गए, आप रोये नहीं। मैंने तो फूल मारा है जिसका कोई दर्द नहीं होता। आप बुरी तरह रोने लगे। क्या कारण है?

मन्सूर बोला कि बहन! जनता तो अनजान है कि मैं किसलिए कुर्बान हूँ। आपको तो ज्ञान है कि परमात्मा के लिए तन-मन-धन भी सस्ता है। मुझे भोली जनता के द्वारा पत्थर मारने का कोई दुःख नहीं था क्योंकि इनको ज्ञान नहीं है। हे बहन! आपको तो सब पता है। मुझे इस मार्ग पर लाने वाली तू है। तेरा हाथ मेरी ओर कैसे उठ गया? बेईमान तेरे फूल का पत्थर से कई गुना दर्द मुझे लगा हैं। तुझे (मुर्शिद) गुरूजी क्षमा नहीं करेंगे। नगर के सब व्यक्ति पत्थर मार-मारकर घर चले गए। कुछ धर्म के ठेकेदार मन्सूर को जख्मी हालत में राजा के पास लेकर गए तथा कहा कि राजा! धर्म ऊपर राज नहीं। परिवार नहीं है। मन्सूर अनल हक कहना नहीं छोड़ रहा है। इससे कहा जाए कि या तो अनल हक कहना त्याग दे, नहीं तो तेरे हाथ, गर्दन, पैर सब टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँगे। यदि यह अनल हक कहना नहीं त्यागे तो इस काफिर को टुकड़े-टुकड़े करके जलाकर इसकी राख दरिया में बहा दी जाए। मन्सूर को सामने खड़ा करके कहा गया कि या तो अनल हक कहना त्याग दे नहीं तो तेरा एक हाथ काट दिया जाएगा। मन्सूर ने हाथ उस काटने वाले की ओर कर दिया (जो तलवार लिए काटने के लिए खड़ा था) और कहा कि अनल हक। उस जल्लाद ने एक हाथ काट दिया। फिर कहा कि अनल हक कहना छोड़ दे नहीं तो दूसरा हाथ भी काट दिया जाएगा। मंसूर ने दूसरा हाथ उसकी ओर कर दिया और बोला ''अनल हक''। दूसरा हाथ भी काट दिया। फिर कहा गया कि अबकी बार अनल हक कहा तो तेरी गर्दन काट दी जाएगी। मन्सूर बोला अनल हक, अनल हक, अनल हक। मन्सूर की गर्दन काट दी गई और फूँककर राख को दरिया में बहा दिया। उस राख से भी अनल हक, अनल हक शब्द निकल रहा था। कुछ देर बाद एक हजार मन्सूर नगरी की गली-गली में अनल हक कहते हुए घूमने लगे। सब डरकर अपने-अपने घरों में बंद हो गए। परमात्मा ने वह लीला समेट ली। एक मन्सूर गली-गली में घूमकर अनल हक कहने लगा। फिर अंतर्ध्यान हो गया। मन्सूर का नाम बदलकर मुहम्मद रखा और उसको लेकर सतगुरू शम्स तबरेज मुल्तान शहर (पाकिस्तान) की ओर चल पड़े।

{एक पुस्तक में लिखा है कि मन्सूर अली जिस शहर के राजा का लड़का था, उस शहर का नाम बगदाद है जो वर्तमान में ईराक देश की राजधानी है। संत गरीबदास जी की वाणी भी यही संकेत कर रही है।

गरीब, खुरासान काबुल किला, बगदाद बनारस एक। बलख और बिलायत लग, हम ही धारैं भेष।।

अर्थात् जैसे बनारस (काशी) शहर में कुछ समय रहे, ऐसे ही बगदाद में रहे। बगदाद से मन्सूर निकाला। बनारस से रामानंद का उद्धार किया। बलख शहर से सुलतान इब्राहिम इब्न अधम को निकाला। बिलायत यानि इंग्लैंड तक हम (परमेश्वर कबीर जी) ही वेश बदलकर लीला करते हैं।}

मन्सूर अली का शब्द

अगर है शौक अल्लाह से मिलने का, तो हरदम नाम लौ लगाता जा।।(टेक)।।

न रख रोजा, न मर भूखा, न कर सिजदा। वजू का तोड़ दे कूजा, शराबे नाम जाम पीता जा।।1

पकड़ कर इश्क का झाड़ू, साफ कर दिल के हूजरे को।

दूई की धूल रख सिर पर, मूसल्ले पर उड़ाता जा।।2

धागा तोड़ दे तसबी, किताबें डाल पानी में। मसाइक बनकर क्या करना, मजीखत को जलाता जा।।3

कहै मन्सूर काजी से, निवाला कूफर का मत खा। अनल हक्क नाम बर हक है, यही कलमा सुनाता जा।।4

अर्थात् अल्लाह कबीर (अल-खिज्र व जिंदा वेशधारी) से ज्ञान सुनने के बाद पता चल जाता है कि जो साधना वर्तमान समाज में की जा रही है, यह तो सामान्य लाभ देती है। मोक्ष तो सूक्ष्मवेद के ज्ञान में बताई इबादत से ही संभव है। जिस कारण से परंपरागत इबादत (पूजा) छोड़कर सत्य भक्ति करनी होती है जो समाज के अन्य लोगों को अच्छा नहीं लगता। वे भयंकर विरोध करते हैं। जान के दुश्मन बन जाते हैं। यही कारण था भक्त मन्सूर जी को मारने का। परंतु भक्त मरते नहीं। जब मन्सूर जी को दृढ़ विश्वास हुआ कि पूर्व वाली साधना {रोजे (व्रत) रखना, अजान (बंग देना) लगाना, नमाज अदा करना, बकरी-बकरा, गाय आदि जब्ह (कत्ल) करना} मोक्ष प्राप्ति के लिए सहयोगी नहीं है और पर्याप्त भी नहीं है। नरक का मार्ग है। तब उसने अपने ही धर्म के प्रचारकों को समझाना चाहा और कहा कि हे काजी! यदि आपको अल्लाह से मिलने का शौक (इच्छा) है तो प्रत्येक श्वांस-उश्वांस में सच्चे नाम का जाप (लौ लगाकर) ध्यान लगाकर किया कर। (रोजा) व्रत करना त्याग दे। भूखा मरने से अल्लाह नहीं मिलता। जो तुम (वजू) स्नान आदि किए बिना धार्मिक क्रिया करना पाप मानते

हो, यह मात्र भ्रम है। स्नान के लिए जल लाने वाले (कूजे) टोकने यानि मटके को फोड़कर कहीं डाल दे अर्थात् नहाने-धोने के चक्कर में ही ना लगा रह यानि शरीर के ऊपर की सफाई से ही मोक्ष प्राप्ति की साधना सफल नहीं होती। उसके लिए दिल (पाक) शुद्ध होना चाहिए। नाम जाप करने का नशा कर यानि नाम जाप (वाली शराब पीया कर) का नशा कर। अल्लाह से गहरा प्रेम (इश्क) कर। इस (ईश्क) प्रेम की झाडू से दिल का मैल (दोष) साफ कर। (दूई) ईर्ष्या का नाश कर, सच्चा भक्त बन। जो माला ले रखी है, यथार्थ नाम की साधना नहीं कर रहा है। इस माला (तसबी) को तोड़ दे। जो तुम किताबों (कुरआन मजीद, जबूर, तोरात, इंजिल) को पढ़ते हो, इसी से मोक्ष होना मानते हो, यह तुम्हारी धारणा गलत है। इसलिए कहा है कि इन किताबों को जल प्रवाह कर दो। प्रभु प्राप्ति के लिए अहंकार को जला दे यानि अभिमान करना त्याग दे। मन्सूर जी ने काजी से कहा कि जीव हिंसा (गाय-बकरा आदि को मारना) करना त्याग दे। यह (कुफ्र) पाप न कर। अनल हक्क नाम सच्चा मोक्ष मंत्र है। यही कलमा पढ़।

रूमी को अल्लाह कबीर शम्स तबरेज के वेश में मिले थे। जो मन्सूर अली को मिले, वे शम्स तबरेज मुसलमान सूफी संत थे। कुछ पुस्तकों में उल्लेख यह भी है कि परमात्मा कबीर ने गुप्त प्रेरणा करके शम्स तबरेज के मन में आश्रम त्याग जाने की इच्छा उत्पन्न की क्योंकि उस नगरी में शम्स तबरेज का विरोध बहुत बढ़ गया था। शम्स तबरेज के आश्रम छोड़कर निकलते ही स्वयं कबीर जी ही शम्स तबरेज के वेश में आश्रम में रहने लगे। वहाँ से अपने हंस मन्सूर को निकालना था। वहाँ के राजा तथा प्रजा के घोर विरोध के बाद शम्स तबरेज वेशधारी अल खिज़ अपने शागिर्द शहजादे मुहम्मद (मन्सूर का नाम बदलकर मुहम्मद रख लिया था) को साथ लेकर हिन्दुस्तान (वर्तमान में पाकिस्तान) के शहर मुल्तान में आ गए। सतगुरू शम्स तबरेज तथा शहजादे मुहम्मद ने मुल्तान शहर में अपना डेरा लगाया। उनके ज्ञान को सुनकर कुछ अच्छी आत्माएँ उनके अनुयाई बन गए। परंतु इस्लाम के विरूद्ध भक्ति क्रिया होने के कारण वहाँ के व्यक्तियों ने घोर विरोध करना शुरू कर दिया। जो अनुयाई बने थे, उनका भी आश्रम में जाना बंद कर दिया। शम्स तबरेज के पास ईंधन समाप्त हो गए। उन्होंने शहजादे से कहा कि इस आटे की एक ही मोटी रोटी बनाकर शहर में ले जा। किसी के घर से रोटी पका ला। शहजादा कच्ची रोटी लेकर शहर में गया। किसी ने रोटी नहीं सेकी। उल्टा मुहम्मद के मुख पर चोट मारकर जख्मी कर दिया। बिना रोटी पकाये शागिर्द वापिस आया और सतगुरू जी को बताया कि लोगों ने मेरा यह हाल कर दिया। रोटी भी नहीं सेकी (पकाई)। तब शम्स तबरेज ने रोटी को हाथ पर रखकर सूरज (Sun) की ओर मुख करके कहा कि यहाँ आकर मेरी बाटी सेक (पका)। उसी समय सतगुरू जी के हुक्म से सूरज जमीन के करीब आने लगा। गर्मी इतनी बढ़ गई कि मुल्तान शहर भठ्ठी बन गया। पूरा मुल्तान शहर जलने लगा। दर तथा दीवार तपने लगे। कुछ समझदार लोग सतगुरू की खिदमत में पेश हुए और क्षमा याचना की। कहा कि कुछ नादान लोगों के कर्म की सजा पूरे मुल्तान को मत दीजिए।

सतगुरू ने कहा कि ये लोग नादान नहीं दुष्ट हैं। इन्होंने आग जैसी सस्ती वस्तु भी संतों को देने से मना कर दिया। इस बच्चे का मुँह फोड़ दिया। करबद्ध खड़े लोगों ने कहा कि ये आपकी शक्ति से वाकिफ नहीं हैं। खुदा के लिए इन्हें माफ कर दो। यह सुनकर सतगुरू शम्स तबरेज ने कहा कि तुम खुदा को बीच में ले आए हो तो माफ कर देता हूँ। सूरज की ओर नजर करके कहा कि अपनी गर्मी कम कर दें। पता नहीं ये लोग दोजख की आग कैसे सहन करेंगे? इतना कहते ही सूरज वापिस अपने स्थान पर चला गया। उसके पश्चात् मुल्तान के व्यक्ति भक्त बनने लगे। सतगुरू कबीर जी जो शम्स तबरेज का अभिनय कर रहे थे। उन्होंने अपनी योजना के तहत कुछ दिन मौन धारण किया क्योंकि शम्स तबरेज अपने शिष्य मन्सूर के साथ हुए घोर-विरोध व अत्याचार को देखकर मौन हो गए थे। शम्स तबरेज रूप में कबीर जी भी कई दिनों से मौन धारण किए हुए थे। प्रतिदिन की तरह सुबह सैर करने गए। लौटे नहीं। उसी दिन असली शम्स तबरेज उस आश्रम में आ गया जो मौनी हो गया था। आते ही शरीर त्याग दिया। लोगों को आज तक इस राज का पता नहीं है। शम्स तबरेज के शरीर को कब्र में दफना दिया गया। सन् 1329 में यादगार बना दी। सन् 1398-1518 तक एक सौ बीस वर्ष काशी (भारत) में कबीर परमेश्वर जी ने लीला की। उस समय कमाली बालिका कब्र से निकलवाकर जीवित की थी। जवान होने पर कमाली को जब उपरोक्त हकीकत का पता चला तो उसे देखने की प्रबल इच्छा की। सतगुरू से निवेदन

किया। कमाली का विवाह उसी मुल्तान शहर में भक्त के घर कर दिया।

संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, सतगुरु समसतबरेज कूँ, बाटी धरिया हाथ। सूरज कूँ सेकी जहां, तेजपुंज का गात।।

अर्थात् सतगुरू समसतबरेज ने कच्ची रोटी (बाटी) हाथ पर रखकर सूरज से सेकने (पकाने) के लिए कहा। उसी समय सूरज धरती के निकट आ गया। उस समय शम्स तबरेज रूपधारी सतगुरू का शरीर तेजपुंज में बदल गया। नूरी शरीर दिखाई देने लगा। सूरज की गर्मी से वह रोटी खाने योग्य पक गई।

भक्त शेख फरीद की कथा

भक्त फरीद जी का जन्म मुसलमान धर्म में शेख कुल में हुआ। शेख फरीद बचपन में बहुत चंचल थे। गली में खेलने जाता था तो बच्चों की पिटाई कर देता। उलाहने आते, माता दुःखी हो जाती थी। माता ने विचार किया कि फरीद को खजूर बहुत प्रिय है। इसे नमाज करने की कहती हूँ। माता ने योजना अनुसार फरीद से कहा कि बेटा! अल्लाह की नमाज किया कर। फरीद बोला कि अल्लाह (प्रभु) क्या देगा? माता ने कहा कि अल्लाह खजूर देता है। फरीद बोला कि बता कब करनी है नमाज? माता जब घर के कार्य में व्यस्त होती थी तो फरीद बाहर भाग जाता था। माता ने वही समय नमाज के लिए बताया। एक चद्दर बिछा दी तथा कहा कि आँखें बंद करके अल्लाह खजूर दे, अल्लाह खजूर दे। ऐसे करते रहना। माता ने एक वृक्ष के नीचे चद्दर बिछाई और कहा कि जब तक तेरे ऊपर धूप न आए, आँखें बंद रखना और नमाज करते रहना। जब फरीद आँखें बंद कर लेता तो माता ताड़ वृक्ष के पत्ते पर खजूर रखकर चद्दर के एक कोने के नीचे रख देती थी। फरीद ने धूप आने पर आँखें खोली। देखा तो खजूर नहीं मिला। उठकर माता के पास आया। बोला आपने झूठ बोला, मैं कभी नमाज नहीं करूँगा। अल्लाह ने खजूर नहीं दिया। माता जी ने कहा कि बेटा! अल्लाह गुप्त रूप में सब कार्य करता है। चद्दर के नीचे देख, खजूर अवश्य मिलेगा। फरीद ने चद्दर उठाई तो सच में खजूर रखा था। खुशी-खुशी खजूर खाया। माता से कहा कि अब कब करनी है नमाज। माता बोली कि मैं बता दिया करूँगी जब नमाज करनी होगी। प्रतिदिन काम के समय चद्दर बिछा देती। फरीद आँखें बंद करके बैठ जाता। माता खजूर रख दिया करती। एक दिन माता जी खजूर रखना भूल गई। फरीद ने धूप आते ही आँखें खोली। खजूर (टटोली) खोजी। चद्दर के नीचे खजूर प्रतिदिन की तरह रखी थी। फरीद खजूर खाता हुआ घूम रहा था। माता विचार करने लगी कि आज मेरे से बड़ी गलती हो गई। फरीद अब कभी नहीं मानेगा। परेशान करेगा। फरीद खजूर खाता-खाता माता जी के पास आया। माता ने पूछा कि बेटा! खजूर कहाँ से लाया? बालक फरीद बोला! माँ अल्लाह तो नमाज के वक्त प्रतिदिन खजूर देता है। माँ बोली कि सच बता। माँ सच बताता हूँ। देख! इस पत्ते में खजूर अल्लाह रखकर जाता है। माता को भी समझ आई कि यह सामान्य बालक नहीं है। फरीद जी इस्लाम धर्म वाली सब साधना करता था। एक दिन एक सूफी संत मिले। उसने उसे बताया कि तप करके खुदा मिलता है। इस साधना से नहीं मिलना। मैं भी इस्लाम धर्म में जन्मा हूँ। मुझे एक सूफी संत ने यह मार्ग बताया, तब मैंने उनकी बताई इबादत की। मेरा यह नाम है। इस स्थान पर गाँव के बाहर आश्रम है। कुछ दिन के बाद फरीद जी उस सूफी संत के आश्रम में स्वाभाविक गए। वहाँ जाने से पता चला कि इस संत में बहुत सिद्धियाँ हैं। आश्रम आने वाले बाहर के लोगों ने बताया जो मुसलमान थे। उसके पश्चात् फरीद घर त्यागकर उस फक्कड़-फकीर का शिष्य बनकर आश्रम में रहने लगा। वह फकीर (साधु) सिद्धि प्राप्त था। हुक्का पीता था। आश्रम में कुल सात शिष्य थे जो घर त्यागकर आए थे। प्रतिदिन एक सेवक सब सेवा करता था। गुरूजी का भोजन बनाना। भोजन के तुरंत बाद हुक्का भरकर गुरूजी को देना। कपड़े धोना। शेख फरीद दिलोजान से गुरूजी की तथा आश्रम की साफ-सफाई की सेवा करता था। गुरूजी शेख फरीद की बहुत प्रशंसा करते थे जो अन्य शिष्यों को खटकती थी। उन सबने मिलकर शेख फरीद को गुरूजी की नजरों से गिराने का विचार किया। षड़यंत्र रचा कि बारिश का मौसम है। गुरूजी भोजन के तुरंत बाद हुक्का पीते हैं। यदि हुक्का भरने में देरी कोई शिष्य कर देता तो उसे डंडों से पीटता था। कई दिन तक सेवा से वंचित कर देता था। शेख फरीद कभी गलती में नहीं आए थे। एक दिन शेख फरीद ने भोजन बनाया। अग्नि प्रतिदिन की तरह तैयार कर रखी थी। भोजन गुरूजी को खिलाया। चिलम में आग रखने के लिए चुल्हे के पास गया तो देखा आग बुझ चुकी थी। आग नहीं थी। गुरूजी नाराज न हो जाएँ, इस भय से शेख फरीद दौड़ा-दौड़ा गाँव में

गया जो आधा कि.मी. की दूरी पर थी। एक माई चुल्हे में अग्नि सुलगाकर रोटी बना रही थी। शेख फरीद ने कहा, माई! आग दे। गुरु जी का हुक्का भरना है। हमारी आग बुझ गई है। गुरूजी नाराज हो गए तो जीवन नरक बन जाएगा। माई ने दुःखी होकर फूँक मार-मारकर अग्नि जलाई थी। मौसम बारिश का था। माई बोली कि आग आँखें फूटने से मिलती है। मैंने आँखें फुड़वाकर अग्नि तैयार की है। तू भी आँखें फूड़वा, तब आग मिलेगी। शेख फरीद ने अपनी एक आँख में चिमटा मारा। आँख निकालकर माई के पास रख दी और बोला कि लो माई! आँख फोड़ ली है। अब तो आग दे दो। वह औरत घबरा गई। उसे पता था कि वह फकीर सिद्ध पुरूष है। वह मुझे हानि करेगा। तुरंत चुल्हे से अग्नि निकालकर बाहर कर दी। शेख फरीद आग चिलम में रखकर दौड़ा। फकीर दो आवाज लगाता था। कहता था कि हुक्का लाओ। शिष्य का नाम पुकारता था। तीसरी बार तो डंडा लेकर मारने चलता था। गुरूजी ने पहली आवाज लगाई। तब शेख फरीद आधे रास्ते में था। दूसरी लगाई, तब आश्रम में प्रवेश कर चुका था। गुरूजी ने दूसरी बार कहा कि हे शेख फरीद! कहाँ मर गया। शेख फरीद बोला कि आ गया गुरूजी। शेख फरीद ने फूटी आँख पर कपड़ा बाँध रखा था। गुरूजी को बताया कि बारिश की वजह से आश्रम में आग बुझ गई थी। दौड़कर नगरी से लाया हूँ। गुरूजी को अंधेरे में कुछ कम दिखाई देता था। शेख फरीद की आँख पर कपड़ा बँधा देखकर पूछा कि आँख को क्या हो गया? फरीद बोला कि कुछ नहीं गुरूजी। आपकी कृपा से सब ठीक है। गुरूजी ने भी अधिक ध्यान नहीं दिया। सुबह वह औरत शेख फरीद की आँख एक मिट्टी के ढ़क्कन पर रखकर आश्रम लाई। फकीर जी से अपनी गलती की क्षमा माँगी। बताया कि आपका शिष्य कल शाम को आग लेने गया था। बोला माई आग दे दे। आश्रम की आग बुझ गई है। गुरूजी भोजन खाते ही हुक्का पीते हैं। हुक्का भरने में देरी हो जाने पर नाराज हो जाते हैं। कई दिन सेवा नहीं देते हैं। यदि गुरूजी नाराज हो गए तो मेरा जीवन नरक बन जाएगा। महिला बोली कि मैंने बड़ी मुश्किल से आग तैयार की थी। मेरी आँखें धुँए से लाल हो गई थी। फूँक मार-मारकर परेशान थी। मैंने भक्त से कह दिया कि आँखें फुड़वाकर आग बनती है। आँखें फुड़वा, तब आग मिलेगी। इसने सच में चिमटे से आँख निकालकर रख दी। बोला कि यदि गुरूजी नाराज हो गए तो आँखें किस काम की? यह आँख मैं लेकर आई हूँ। गुरूजी ने शेख फरीद को बुलाया। कहा कि आँख का कपड़ा खोल। कपड़ा खोला तो आँख स्वस्थ थी। परंतु कुछ छोटी थी। माई ने यह सब देखा तो गाँव जाकर फकीर की प्रसिद्धि की कि बड़ा चमत्कारी साधु है। मेरे सामने आँख ठीक कर दी। गुरूजी ने शेख फरीद को सीने से लगाया। आशीर्वाद दिया कि तेरी साधना सफल हो।

गुरूजी की मृत्यु के पश्चात् शेख फरीद ने आश्रम त्याग दिया। गुरूजी ने तप करने से मोक्ष बताया था। जैसा गुरूजी का आदेश था, शेख फरीद पूरी निष्ठा से पालन कर रहा था। बारह वर्ष तक तो कुँए में उल्टा लटक-लटककर तप किया। उस दौरान केवल सवामन (पचास किलोग्राम) अन्न खाया था जो नाम मात्र था। (प्रतिदिन ग्यारह-बारह ग्राम की औसत आती है।) शरीर अस्थिपिंजर बन गया था। शेख फरीद कुछ देर कुँए से बाहर लेटता व बैठता था। एक दिन (कागों) कौओं ने उसे मृत जानकर उसकी आँखें खाने के लिए उसके माथे पर बैठ गए। शेष शरीर पर माँस नहीं था। फरीद बोला! हे कौओ! आप मेरी दो आँखें छोड़कर शरीर का सारा माँस खा लो। मैं परमात्मा देखना चाहता हूँ। इसलिए मेरी आँखें-आँखें छोड़ दो। जब फरीद बोला तो कौवे उड़ गए। शेख फरीद रस्से से पैर बाँधकर प्रतिदिन की तरह कुँए में लटक गया। खुदा कबीर जी एक जिंदा बाबा (अल-खिज्र) के वेश में कुँए पर आए तथा रस्सा पकड़कर फरीद को कुँए से निकालने लगे। शेख फरीद बोला भाई! आप मुझे ना छेड़। तू अपना काम कर, मैं अपना काम कर रहा हूँ। परमात्मा बोले कि आप क्या कर रहे हो? फरीद बोला कि मैं अल्लाह का दर्शन करने के लिए घोर तप कर रहा हूँ। परमात्मा ने कहा कि मैं ही अल्लाह अकबर हूँ। फरीद बोला! भाई मजाक मत कर। अल्लाह तो बेचून (निराकार) है। वह मानुष रूप में नहीं आता। परमात्मा ने कहा कि आप कहते हैं कि परमात्मा निराकार है। दूसरी ओर कह रहे हो कि परमात्मा के दर्शन (दीदार) के लिए घोर तप कर रहा हूँ। कहते हैं घाम का और ज्ञान का तो चमका-सा ही लगता है। विचार किया कि अल्लाह नहीं है तो अल्लाह का बाखबर अवश्य है। शेख फरीद ने चरण पकड़ लिए। तत्त्वज्ञान समझा। कबीर परमात्मा के द्वारा बताई साधना करके कल्याण करवाया।

(अध्याय नं. 4)

रहमत रहमान की

मैं समझा अल्लाह की महिमा

मैं मुबारक खान (Mubarak Khan) जिला-औरैया, उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ। उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में चरित्रार्थ होती है क्योंकि जब मैंने संत रामपाल जी महाराज द्वारा लिखित पवित्र पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' को पढ़ना शुरू किया तो उसमें मैंने देखा कि संत रामपाल जी महाराज जी ने बताया था कि कुरआन शरीफ सूरः फुरकानि-25 आयत नं. 52-59 में लिखा है कि वो अल्लाह कबीर है जिसने धरती और आसमान के बीच स्थित सब चीजों को छः दिन में बनाया और 7वें दिन तख्त पर जा विराजा। उसकी खबर किसी बाखबर (तत्त्वदर्शी संत) से पूछकर तो देखो। पहले मैं जुम्मे की नमाज पढ़ने जाता था। लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं थी। वहाँ सुख नहीं मिलता था। इतनी नमाज पढ़ते, लेकिन फल शून्य ही रहता था। मेरी बेटी को निमोनिया रहता था। मैं भी डिप्रेशन का शिकार रहता था। फिर मैंने ज्ञान गंगा पुस्तक में जो लिखा था, वो सब बातें कुरआन शरीफ में मिलाकर देखी तो वो सब लिखा पाया। तब मैंने सोचा कि बात तो सही है। लेकिन संत रामपाल जी महाराज अल्लाह नहीं हो सकते। मैंने कहा कि अगर आप अल्लाह हैं तो मेरी दाढ़ी ही गायब हो जाए। तो जब मैं रात को सोकर सुबह उठा तो मेरी दाढ़ी में जलन हो रही थी। फिर जब मैंने देखा तो पाया कि मेरी दाढ़ी के बाल गायब हो गए तो मैंने सोचा कि अल्लाह तो लग रहे हैं संत रामपाल जी महाराज। फिर मैं आश्रम में गया और वहाँ पर देखा कि सब एक समान है। जैसे अल्लाह के लिए एक समान होते हैं। तत्त्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जी ने एक शब्द गाया :-

मोकूँ कहाँ ढूंढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना तीर्थ में ना मूरत में, ना काशी कैलाश में, मैं तो हूँ विश्वास में।।

संत रामपाल जी महाराज से मैंने नाम दीक्षा 2 अक्टूबर 2012 को ली थी और नाम दीक्षा लेने के बाद तो संत रामपाल जी अल्लाह ने मेरी सारी परेशानी ही खत्म कर दी। नाम दीक्षा लेने के बाद मेरी डिप्रेशन की समस्या दूर हो गयी। मेरी बेटी को निमोनिया की बीमारी थी। वह बिल्कुल ठीक हो गयी। एक बार मेरी बेटी सड़क पार कर रही थी। तभी एक ऑटो के नीचे पैर आ गया। हम लोगों ने सोचा कि इसका पैर गया। लेकिन जब देखा तो पाया कि उसको तो कुछ नहीं हुआ है जो कि संत रामपाल जी महाराज की कृपा थी। मेरी बेटी को कैंसर हो गया था तो मेरी घरवाली और आस-पड़ोस के लोग कहने लगे कि संत रामपाल जी के पास जाने से ये हुआ। लेकिन मैंने उनको बोला कि उनके यहाँ जाने से तो ये ठीक होगी। फिर मैंने गुरू जी से प्रार्थना की कि गुरू जी मेरी बेटी को कैंसर है, आप कृपा करें। तो गुरू जी बोले कि सब ठीक हो जाएगा बेटा! आप भक्ति करो। फिर मेरी बेटी का कैंसर अपने आप खत्म हो गया।

मैं एक मुस्लिम समाज से हूँ। लेकिन संत रामपाल जी महाराज जी की दया से अब मैं माँस को छूता तक नहीं हूँ। ना बीड़ी-सिगरेट, तम्बाकू, शराब को हाथ लगाता हूँ। कुरआन शरीफ में जो लिखा है, वो आज संत रामपाल जी महाराज की शरण में आने के बाद समझ आया। अल्लाह ने कहा है कि ये मजहब तो दीवारें हैं। भक्ति मार्ग में आपको इन्हें नहीं मानना। अल्लाह, खुदा, राम, ईश, गौड ये एक ही हैं। अल्लाह ने मजहब नहीं बनाया। उन्होंने इंसानों को नहीं बाँटा। इसलिए हम सभी हिन्दू, मुस्लिम, सिख व ईसाई सभी एक ही भगवान की संतान हैं। संत रामपाल जी महाराज (बाखबर) से नाम दीक्षा लेने के बाद मुझे पता चला कि असली भक्ति विधि यही है जो शास्त्रों से प्रमाणित है और संत रामपाल जी महाराज ही अल्लाह, परमात्मा हैं। संत रामपाल जी महाराज जी की शरण में आप सभी को आना चाहिए और भक्ति करके कल्याण करवाना चाहिए।

भक्त मुबारक खान
जिला - ओरैया, उत्तरप्रदेश

अब बना हूँ सही मायने में मुस्लिम

मैं सलीम खान जिला-इटावा (उत्तर प्रदेश) का निवासी हूँ। मैं एक मुस्लिम समाज से हूँ। लेकिन एक सच्चा

मुसलमान क्या होता है? वह मुझे बाखबर संत रामपाल जी महाराज जी का ज्ञान समझकर समझ आई। आज मैं सही मायनों में एक सच्चा मुसलमान हूँ। बंदी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा मैंने सन् 2013 में ली। बाखबर संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेने से पहले मैं मुस्लिम धर्म में हो रही साधना ही करता था। लेकिन उससे मुझे कोई आत्म संतुष्टि नहीं मिली। जैसे मुस्लिम समाज में नमाज पढ़ना, रोजे रखना, बकरा ईद मनाना, इबादत करना, दरगाह पर जाना आदि करते हैं। यह सब मैं करता था। लेकिन यह सब करते हुए मुझे कोई भी सुकून नहीं मिल रहा था। जैसे हम दरगाह में जाते थे तो वहाँ के मौलवी कहते थे कि अल्लाह है। लेकिन यह कोई नहीं बताता कि वह अल्लाह कौन है? वह कहते थे कि अल्लाह एक नूर है। तो मैं कहता था कि किसी ने तो अल्लाह को देखा ही होगा? लेकिन इन प्रश्नों का उत्तर किसी के पास नहीं था। बाखबर संत रामपाल जी महाराज की जानकारी मुझे उनके एक शिष्य के द्वारा हुई। उन्होंने कहा कि आपकी पवित्र कुरआन शरीफ में बाखबर का जिक्र है। आप उस बाखबर की पहचान करके उनके द्वारा बताई गई इबादत करो तो मैंने कहा कि चलो ठीक है। यह भी करके देखते हैं। फिर मैं संत रामपाल जी महाराज के आश्रम में गया। वहाँ पर मुझे बताया कि पवित्र कुरआन शरीफ में अल्लाह का जिक्र है जिसने छः दिन में सृष्टि बनाई और सातवें दिन में तख्त पर जा विराजा। आश्रम से लौटने के बाद जब मैं घर आया तो मैंने पवित्र पुस्तक कुरआन शरीफ तथा बाइबल दोनों में वह सब देखा। क्या वह सच बता रहे थे? तो वास्तव में जो उन्होंने बताया वो सब पवित्र कुरआन शरीफ तथा बाइबल में मिला। बहुत सी जगह कबीर साहिब का नाम था। फिर मैंने सोचा कि जो ज्ञान संत रामपाल जी महाराज बता रहे हैं, वह पूर्णतया सत्य है। पवित्र कुरआन शरीफ में जिस बाखबर का जिक्र है, वह बाखबर संत रामपाल जी महाराज हैं जिन्हें हर बात का इल्म है। संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेने के बाद मैंने लोगों का विरोध भी सहा। मैं उन लोगों को समझाता था कि वह अल्लाह कबीर है तो मौलवी कहते थे कि अल्लाह के तो 90 नाम हैं। मैंने कहा कि आप कुरआन शरीफ में देखो। जब उन्होंने पवित्र कुरआन शरीफ देखी तो उसमें लिखा था ''कबीर बड़ा''। मैंने कहा कि देखो कुरआन शरीफ में भी लिखा हुआ है। इसमें कबीर बड़ा लिखा है। लोगों ने छिपाने की वजह से कबीर को बड़ा-बड़ा लिख दिया है तो उन्होंने कहा कि ठीक है। अब वहाँ जाते हो, लेकिन आप नमाज भी पढ़ा करो। मैंने कहा कि नमाज क्या है? उन्होंने कहा कि नमाज नबी के आँखों की ठंडक है। मैंने बोला कि फिर मेरी सारी भक्ति तो नबी के पास चली जाएगी। मुझे तो कुछ नहीं मिलेगा। फिर वे मुझे बोलने लगे कि तू कहाँ फंस गया है। कहाँ हिन्दू धर्म के गुरूओं के पास चला गया, तू तो बेकार हो गया। हम तुझे समाज से निकाल देंगे।

मैं उन लोगों को बताना चाहता हूँ कि मैंने अपना कोई धर्म नहीं छोड़ा है। अपने धर्म की साधनाओं को ठीक किया है जो इल्म ना होने की वजह से मुझे लाभ नहीं दे रही थी। बाखबर संत रामपाल जी महाराज जो शास्त्रों का इल्म रखते हैं, उन्होंने मुझे सही साधना बताई है और मैं वही कर रहा हूँ। एक बार मेरी अम्मी के 4000 रूपये खो गए थे तो अम्मी ने कहा कि तूने मेरे पैसे चुराए हैं तो मैंने कहा कि मैं संत रामपाल जी महाराज का शिष्य हूँ, मैं चोरी नहीं करता। फिर मैंने संत रामपाल जी महाराज को बोला कि परमात्मा मेरी अम्मी के 4000 रूपये नहीं मिल रहे हैं तो परमात्मा बोले कि मिल जाएँगे। जब मैंने अपनी अलमारी में देखा तो मुझे अम्मी का पर्स मिला जिसमें 4000 रूपये रखे हुए थे। मैंने अम्मी को वह दे दिया और बोला कि ये सब संत रामपाल जी महाराज की दया से हुआ है। एक बार मेरी अम्मी की बहुत ज्यादा तबीयत खराब हो गई थी। उनके पेट में बहुत ज्यादा दर्द रहता था। मैं जब काम से वापिस आता था तो मैं उन्हें हमेशा रोता हुआ ही देखता था। फिर मैंने उनसे कहा कि आप भी संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा ले लो। आपकी सभी समस्याएँ खत्म हो जाएँगी। फिर कबीर प्रकट दिवस पर उन्होंने भी संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा ली और आज वो बिल्कुल ठीक हैं। जिन लोगों को यह लगता है कि संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेने के बाद मुस्लिम हिन्दू बन जाता है तो ऐसा कुछ नहीं है। हम सब एक ही अल्लाह की संतान हैं। हमें एक ही अल्लाह ने बनाया है। मैं खुद एक मुसलमान हूँ। लेकिन मुझे कुरआन शरीफ का और अपने पवित्र शास्त्रों का कोई ज्ञान नहीं था, कोई इल्म नहीं था। लेकिन बाखबर संत रामपाल जी महाराज ने मुझे वह सारा इल्म दिया है। आप जिस भी धर्म के हैं, उसी धर्म में रहें। लेकिन आप सत्भक्ति करें। आपको पूरे लाभ मिलेंगे। आप भी समय रहते बाखबर संत रामपाल

जी महाराज को पहचानो। बाखबर संत रामपाल जी महाराज पवित्र शास्त्रों के अनुसार ही सत्भक्ति बताते हैं। आप संत रामपाल जी महाराज द्वारा लिखित पवित्र पुस्तक ज्ञान गंगा, जीने की राह पढ़कर ज्ञान समझकर संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाएँ।

भक्त सलीम खान
जिला-इटावा, उत्तरप्रदेश

भूत-प्रेत की बाधा से मिली निजात

मैं शाहिना गर्ग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) की रहने वाली हूँ। मैंने पोस्ट ग्रेजुएट किया है। एक मुस्लिम परिवार से संबंध होने के नाते मैं रोजे रखना, नमाज करना ये सब करती थी क्योंकि मुझे भी अल्लाह की तलाश थी। मुझे प्रेत बाधा की समस्या हो गई थी। मैंने बहुत सारे पीर, फकीरों, मजारों पर दिखाया। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मेरी शादी एक हिन्दू परिवार में हुई। मैंने हिन्दू रीति-रिवाज के हिसाब से भी भक्ति साधना की। लेकिन कोई लाभ नहीं हुई। मेरे ससुराल वालों ने भी मुझे बहुत जगह दिखाया। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मानसिक और आर्थिक परेशानी सम्पूर्ण परिवार की बढ़ गई थी। फिर हमारे एक रिश्तेदार हैं जो शिमला में ही रहते हैं। उन्होंने हमें बताया कि आप संत रामपाल जी महाराज की शरण में चले जाओ। वहाँ सब ठीक हो जाएगा। लेकिन हमें भरोसा नहीं हुआ और हम वापिस घर आ गए। उन्होंने हमें एक किताब ज्ञान गंगा भी दी। लेकिन हमने उसे भी 3-4 महीने तक ऐसे ही रखे रखा। फिर हम बहुत ज्यादा परेशान होते गए तो हमने संत रामपाल जी महाराज से जून 2014 में नाम दीक्षा ली। जब संत रामपाल जी महाराज जी ने मुझे आशीर्वाद दिया तो ऐसे लगा कि मन से पता नहीं कितना भार उतर गया और संत जी ने कहा कि सब ठीक हो जाएगा। फिर हम घर आ गए और मेरी प्रेत बाधा भी समाप्त हो गई। मैं एकदम ठीक हो गई। मेरी बीमारी की वजह से हमारा तालाक भी होने वाला था जो संत रामपाल जी महाराज से नाम दीक्षा लेने के बाद में टल गया। आज हम अच्छे से रह रहे हैं। मेरे पति के पास में जॉब नहीं थी। संत रामपाल जी महाराज की दया से आज उनकी जॉब भी लग गई है। संत रामपाल जी महाराज पवित्र शास्त्रों के अनुसार भक्ति विधि बताते हैं। भगत समाज से मेरा यही निवेदन है कि आप संत रामपाल जी महाराज जी की शरण में आएँ। वही पूर्ण संत हैं जो सही भक्ति विधि बताते हैं।

भक्तमति शाहिना गर्ग
शिमला, हिमाचल प्रदेश
सम्पर्क सूत्र :- 8307744506

❖❖❖

☞ आपने उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्मकथाएँ पढ़ी। ऐसे-ऐसे भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्मक.था पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहाँ पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्मकथा लिख पाए। यदि सभी भक्तों की आत्मकथा हम लिखने बैठ जाएँ तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएँगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को संकेत ही पर्याप्त होता है।

(अध्याय नं. 5)

संक्षिप्त सृष्टि रचना

सबसे पहले सतपुरुष अकेले थे, कोई रचना नहीं थी। सर्वप्रथम परमेश्वर जी ने चार अविनाशी लोक की रचना वचन (शब्द) से की।

1. अनामी लोक जिसको अकह लोक भी कहते हैं।

2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सतलोक।

फिर परमात्मा ने चारों लोकों में चार रुप धारण किए। चार उपमात्मक नामों से प्रत्येक लोक में प्रसिद्ध हुए।

1. अनामी लोक में अनामी पुरुष या अकह पुरुष।

2. अगम लोक में अगम पुरुष।

3. अलख लोक में अलख पुरुष।

4. सतलोक में सतपुरुष उपमात्मक नाम रखे।

फिर चारों लोकों में परमात्मा ने वचन से ही एक-एक सिंहासन (तख्त) बनाया। प्रत्येक सिंहासन पर सम्राट के समान मुकुट आदि धारण करके विराजमान हो गए। फिर सतलोक में परमेश्वर ने अन्य रचना की। एक शब्द (वचन) से 16 द्वीपों तथा एक मानसरोवर की रचना की। पुनः 16 वचन से 16 पुत्रों की उत्पत्ति की। उनमें मुख्य भूमिका अचिन्त, तेज, सहजदास, जोगजीत, कूर्म, इच्छा, धैर्य और ज्ञानी की रही है।

अपने पुत्रों को सबक सिखाने के लिए कि समर्थ के बिना कोई कार्य सफल नहीं हो सकता। जिसका काम उसी को साजे और करे तो मूर्ख बाजे।

सतपुरुष ने अपने पुत्र अचिन्त से कहा कि आप अन्य रचना सतलोक में करें। मैंने कुछ शक्ति तुझे प्रदान कर दी है। अचिन्त ने अपने वचन से अक्षर पुरुष की उत्पत्ति की। अक्षर पुरुष युवा उत्पन्न हुआ। मानसरोवर में स्नान करने गया, उसी जल पर तैरने लगा। कुछ देर में निंद्रा आ गई। सरोवर में गहरा नीचे चला गया। (सतलोक में अमर शरीर है, वहाँ पर शरीर श्वांसों पर निर्भर नहीं है।) बहुत समय तक अक्षर पुरुष जल से बाहर नहीं आया। अचिन्त आगे सृष्टि नहीं कर सका, तब सतपुरुष (परम अक्षर पुरुष) ने मानसरोवर पर जाकर कुछ जल अपनी चुल्लु (हाथ) में लिया। उसका एक विशाल अण्डा वचन से बनाया तथा एक आत्मा वचन से उत्पन्न करके अण्डे में प्रवेश की और अण्डे को जल में छोड़ दिया। जल में अण्डा नीचे जाने लगा तो उसकी गड़गड़ाहट के शोर से अक्षर पुरूष की निंद्रा भंग हो गई। अक्षर पुरुष ने क्रोध से देखा कि किसने मुझे जगा दिया। क्रोध उस अण्डे पर गिरा तो अण्डा फूट गया। उसमें से एक युवा तेजोमय व्यक्ति निकला। उसका नाम क्षर पुरुष रखा। (आगे चलकर यही काल कहलाया) सतपुरुष ने दोनों से कहा कि आप जल से बाहर आओ। अक्षर पुरुष तुम निंद्रा में थे, तुझे नींद से उठाने के लिए यह सब किया है। अक्षर पुरुष और क्षर पुरुष से सतपुरुष ने कहा कि आप दोनों अचिंत के लोक में रहो।

कुछ समय के पश्चात् (क्षर पुरुष जिसे ज्योति निरंजन काल भी कहते हैं) ने मन में विचार किया कि हम तीन तो एक लोक में रह रहे हैं। मेरे अन्य भाई एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। यह विचार कर उसने अलग द्वीप प्राप्त करने के लिए तप प्रारम्भ किया। इससे पहले सतपुरुष जी ने अपने पुत्र अचिन्त से कहा कि आप सृष्टि रचना नहीं कर सकते। मैंने तुम्हें यह शिक्षा देने के लिए ही आप से कहा कि अन्य रचना कर। परन्तु अचिन्त आप तो अक्षर पुरुष को भी नहीं उठा सके। अब आगे कोई भी यह कोशिश न करना। सर्व रचना मैं अपनी शब्द शक्ति से रचूँगा।

सतपुरुष जी ने सतलोक में असँख्यों लोक रचे तथा प्रत्येक में अपने वचन (शब्द) से अन्य आत्माओं की उत्पत्ति की। ये सब लोक सतपुरुष के सिंहासन के इर्द-गिर्द थे। इनमें केवल नर हंस (सतलोक में मनुष्यों को हंस कहते हैं) ही रहते हैं और उनको परमेश्वर ने शक्ति दे रखी है कि वे अपना परिवार (नर हंस) वचन से उत्पन्न कर सकते है। वे केवल दो पुत्र ही उत्पन्न कर सकते हैं।

क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने तप करना शुरु किया। उसने 70 युग तक तप किया। सत्पुरुष जी ने क्षर

पुरुष से पूछा कि आप तप किसलिए कर रहे हो? क्षर पुरुष ने कहा कि यह स्थान मेरे लिए कम है। मुझे अलग स्थान चाहिए। परमेश्वर (सतपुरुष) जी ने उसे 70 युग के तप के प्रतिफल में 21 ब्रह्माण्ड दे दिए जो सतलोक के बाहरी क्षेत्र में थे जैसे 21 प्लॉट मिल गए हों। ज्योति निरंजन (क्षर पुरुष) ने विचार किया कि इन ब्रह्माण्डों में कुछ रचना भी होनी चहिए। उसके लिए, फिर 70 युग तक तप किया। फिर सतपुरुष जी ने पूछा कि अब क्या चाहता है? क्षर पुरुष ने कहा कि सृष्टि रचना की सामग्री देने की कृपा करें। सतपुरुष जी ने उसको पाँच तत्व (जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु तथा आकाश) तथा तीन गुण (रजगुण, सतगुण तथा तमगुण) दे दिये तथा कहा कि इनसे अपनी रचना कर।

क्षर पुरूष ने तीसरी बार फिर तप प्रारम्भ किया। जब 64 (चौंसठ) युग तप करते हो गए तो सत्य पुरूष जी ने पूछा कि आप और क्या चाहते हैं? क्षर पुरूष (ज्योति निरंजन) ने कहा कि मुझे कुछ आत्मा दे दो। मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। क्षर पुरूष को आत्मा ऐसे मिली, आगे पढ़ें :-

हम काल के लोक में कैसे आए ?

जिस समय क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) एक पैर पर खड़ा होकर तप कर रहा था। तब हम सभी आत्माएँ इस क्षर पुरुष पर आकर्षित हो गए। जैसे जवान बच्चे अभिनेता व अभिनेत्री पर आसक्त हो जाते हैं। लेना एक न देने दो। व्यर्थ में चाहने लग जाते हैं। वे अपनी कमाई करने के लिए नाचते-कूदते हैं। युवा-बच्चे उन्हें देखकर अपना धन नष्ट करते हैं। ठीक इसी प्रकार हम अपने परमपिता सतपुरुष को छोड़कर काल पुरुष (क्षर पुरुष) को हृदय से चाहने लग गए थे। जो परमेश्वर हमें सर्व सुख सुविधा दे रहा था। उससे मुँह मोड़कर इस नकली ड्रामा करने वाले काल ब्रह्म को चाहने लगे। सत पुरुष जी ने बीच-बीच में बहुत बार आकाशवाणी की कि बच्चो तुम इस काल की क्रिया को मत देखो, मस्त रहो। हम ऊपर से तो सावधान हो गए, परन्तु अन्दर से चाहते रहे। परमेश्वर तो अन्तर्यामी है। इन्होंने जान लिया कि ये यहाँ रखने के योग्य नहीं रहे। काल पुरुष (क्षर पुरुष = ज्योति निरंजन) ने जब दो बार तप करके फल प्राप्त कर लिया तब उसने सोचा कि अब कुछ जीवात्मा भी मेरे साथ रहनी चाहिए। मेरा अकेले का दिल नहीं लगेगा। इसलिए जीवात्मा प्राप्ति के लिए तप करना शुरु किया। 64 युग तक तप करने के पश्चात् परमेश्वर जी ने पूछा कि ज्योति निरंजन अब किसलिए तप कर रहा है?

क्षर पुरुष ने कहा कि कुछ आत्माएं प्रदान करो, मेरा अकेले का दिल नहीं लगता। सतपुरुष ने कहा कि तेरे तप के बदले में और ब्रह्माण्ड दे सकता हूं, परन्तु अपनी आत्माएं नहीं दूँगा। ये मेरे शरीर से उत्पन्न हुई हैं। हाँ, यदि वे स्वयं जाना चाहते हैं तो वह जा सकते हैं। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुनकर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेरकर खड़े हो गए। ज्योति निरंजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं। यदि पिता जी आज्ञा दें, तब क्षर पुरूष(काल), पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूँगा। क्षर पुरूष तथा परम अक्षर पुरूष (कविर्मितौजा) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंसात्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता हैं, हाथ ऊपर करके स्वीकृति दें। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल(ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फँसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है, मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूँगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर

में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/प्रकृति देवी/दुर्गा) पड़ा तथा सत्यपुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तुझे शब्द शक्ति प्रदान कर दी है। जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कर्विदेव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरूष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सब आत्माओं को प्रवेश कर दिया है, जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी। इसको वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कहकर सहज दास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गतिविधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरू मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी।

उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देखकर सूक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्ण ब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कर्विदेव(कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरूष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्रणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है।

इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि.मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण :- अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरूष, अकालपुरूष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरूष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरूष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात संख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरूष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे:- ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरूष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है, वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकिय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है, उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकिय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा:- जिस अजन्मा सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते। (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है।(श्लोक 86)

(देखें एक ब्रह्माण्ड का लघु चित्र)

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाड़ेगा? मनमानी करूँगा। प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आपकी (ब्रह्म) की अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद मे मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ। मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी, मिल गई। मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मैं मनमानी करूँगा। यह कहकर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त विष्णु जी तथा तमगुण युक्त शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इकट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) ने इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है। काल ब्रह्म के आदेश से प्रकृति देवी ने तीनों एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक, तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है, वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरूष स्वयं महाविष्णु रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रखकर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है, उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्येश्वर संहिता के पृष्ठ 24-26 पर जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7,9 पृष्ठ नं०. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद् देवी महापुराण तीसरा स्कन्ध पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता है श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रखकर काल ब्रह्म अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रखकर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरूष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकालकर खाना होता है, उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्त शिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिघलाकर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलीन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिंतन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देशभक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

(देखें ब्रह्म लोक का लघु चित्र व ज्योति निंरजन (काल) ब्रह्म के लोक 21 ब्रह्माण्ड का लघु चित्र अगले पृष्ठों पर)

ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र

ब्रह्म लोक का लघु चित्र
महाविष्णु रूप में काल
जटा कुण्डली झील
महाशिव रूप में काल
महाब्रह्मा रूप में काल
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
शुन्य स्थान
दुर्गा लोक
सप्तपुरी
अठासी हजार द्वीप
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
मीठे जल का समुद्र
महास्वर्ग
फलदार वृक्षों का वन
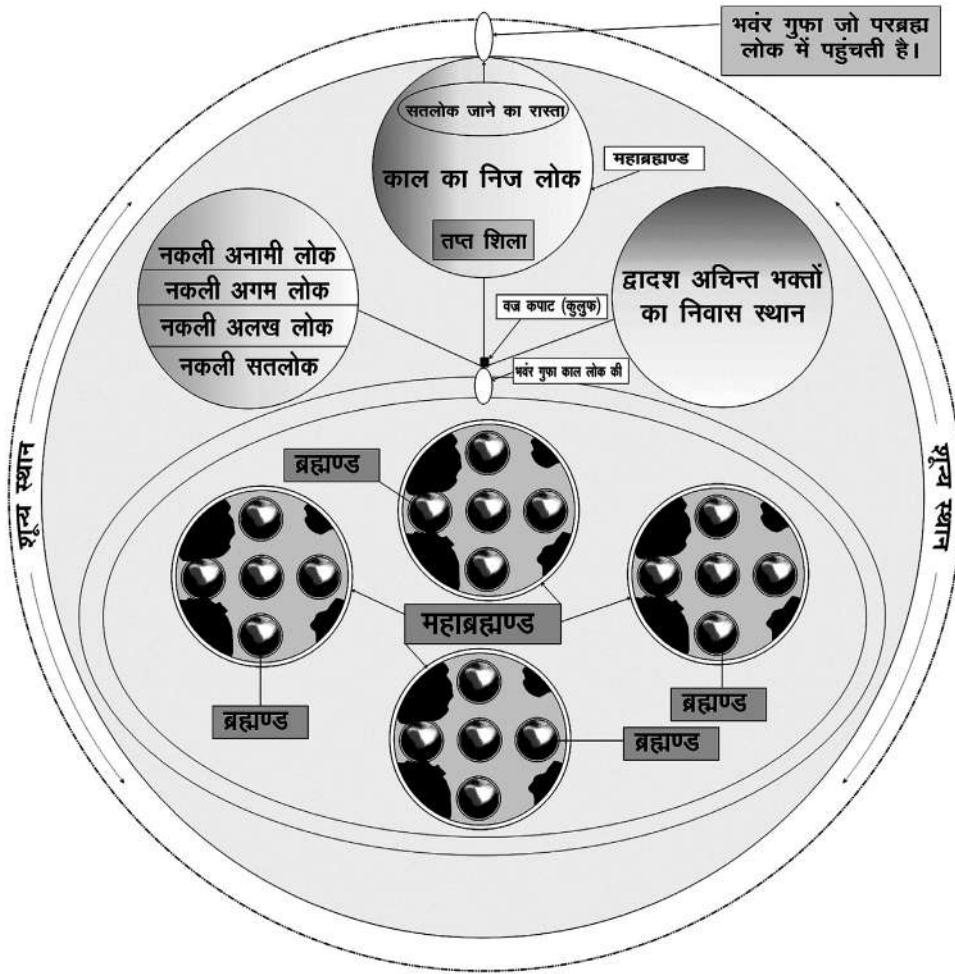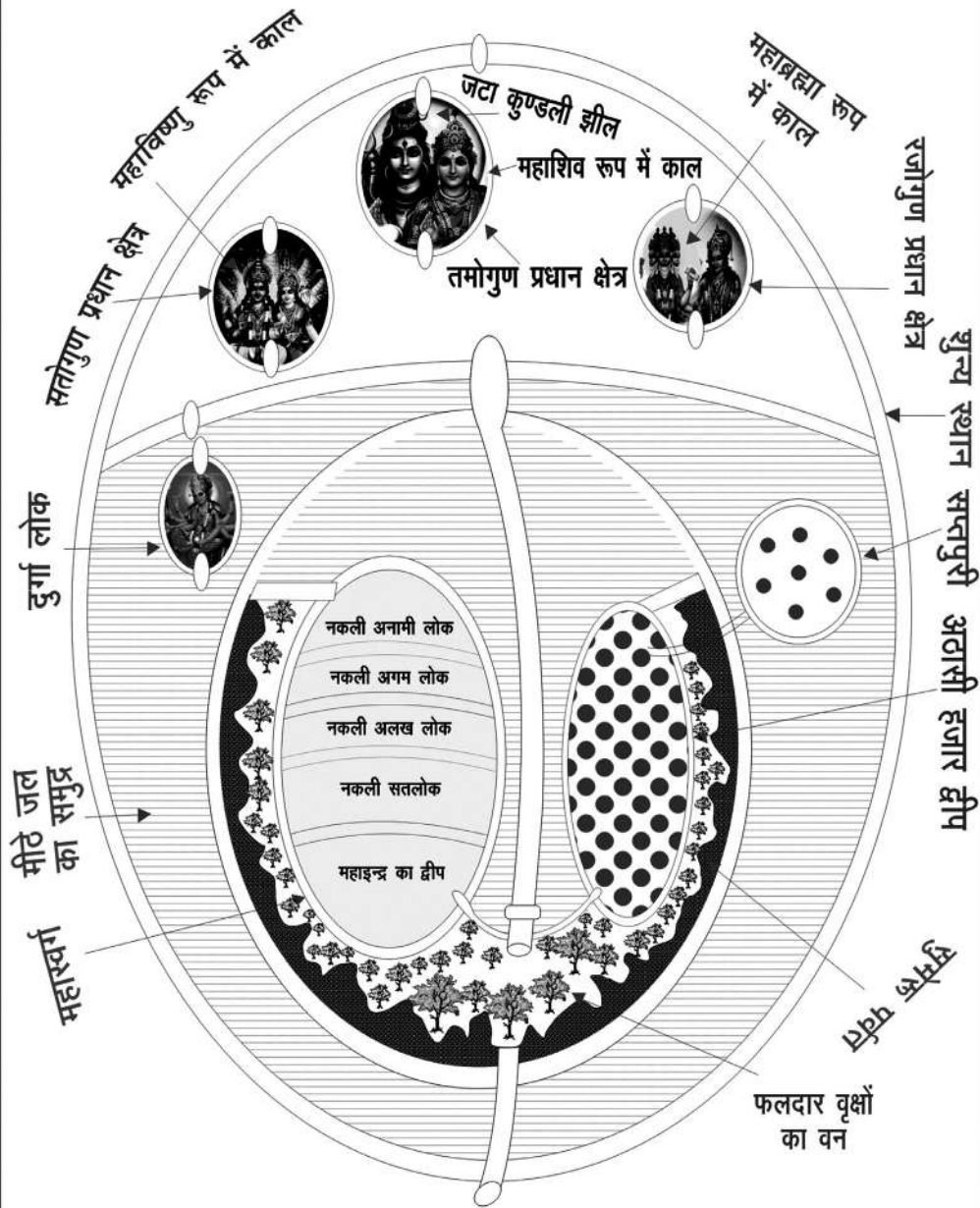
सम्पूर्ण सृष्टि रचना

(सूक्ष्मवेद से निष्कर्ष रूप सृष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माएँ प्रथम बार निम्न सृष्टि की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृपया धैर्य के साथ पढ़ते पढ़ें तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखें। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माएँ कृपया सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-भिन्न रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्माण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्माण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्माण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्रीमद्‌भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्माण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सूक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माएँ उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृह मंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-भिन्न लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी अरब सूर्यों

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में कबीर साहेब अनामी पुरूष रूप में रहते हैं। यहाँ अकेले हैं।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।
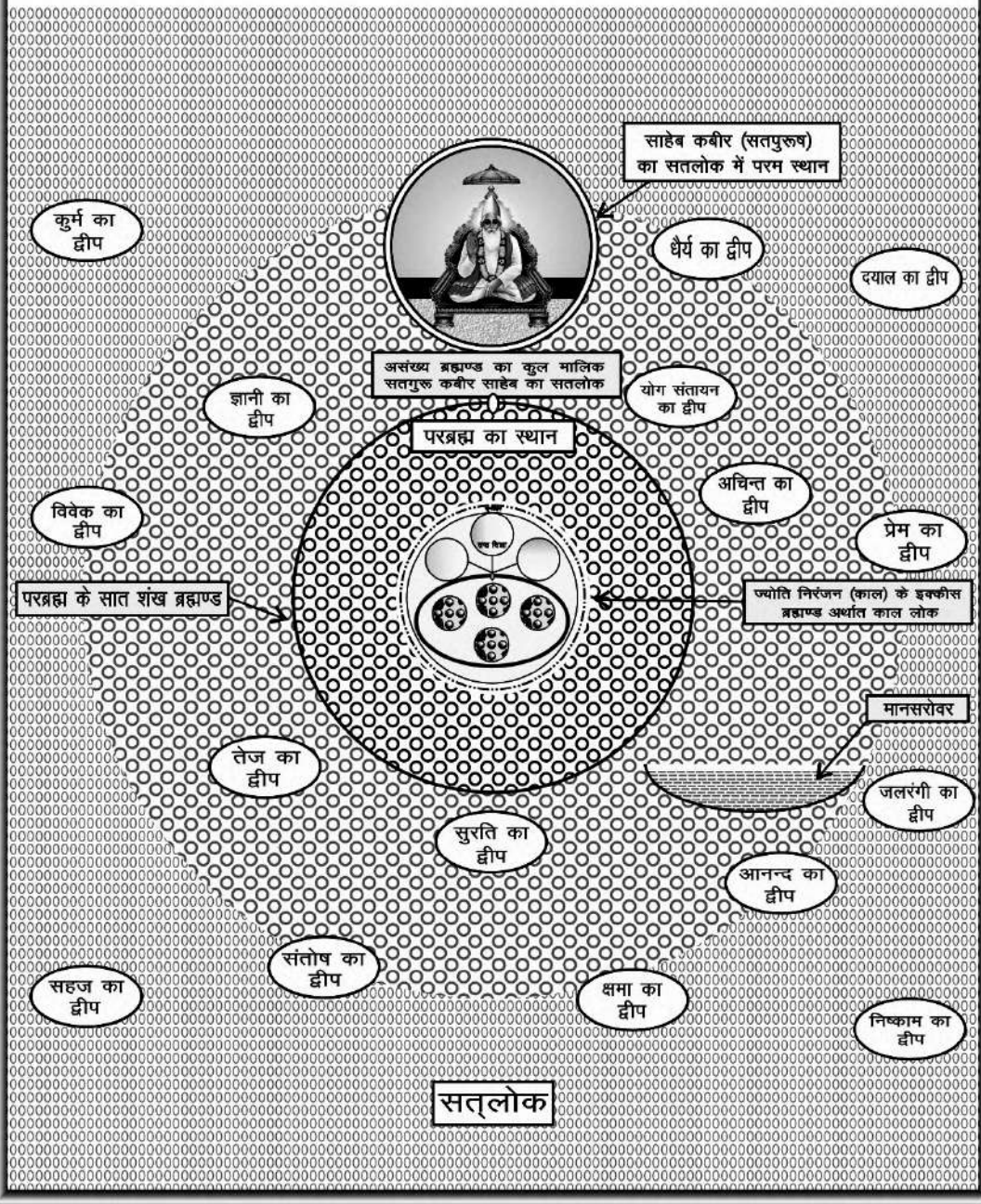
के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं।

पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

आत्माएँ काल के जाल में कैसे फँसी?

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माएँ, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा हृदय से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरुष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल सृष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता–पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी

यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्माण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्माण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्माण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्माण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा=कविर अमित औजा यानि जिसकी शक्ति का कोई वार नहीं, वह कबीर) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तुझे शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सूक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र
शुन्य स्थान
महाविष्णु रूप में काल (ब्रह्म)
जटा कुण्डली झील
महाशिव रूप में काल
परमेश्वर का राजदूत भवन
महाब्रह्मा रूप में काल
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
ब्रह्म लोक
सप्तपुरी
दुर्गा लोक
अठासी हजार द्वीप
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
धर्मराय का लोक
मीठे जल का समुद्र
मानसरोवर
महास्वर्ग
सुमेरू पर्वत
स्वर्ग
नरक
फलदार वृक्षों का वन
जटा वुफण्डली झील
विष्णु लोक
ब्रह्मा लोक
शिव लोक
इन्द्र का लोक
सूर्य
पृथ्वी
चन्द्रमा
वितल
महातल
अतल
सूतल
तलातल
रसातल
पाताल लोक
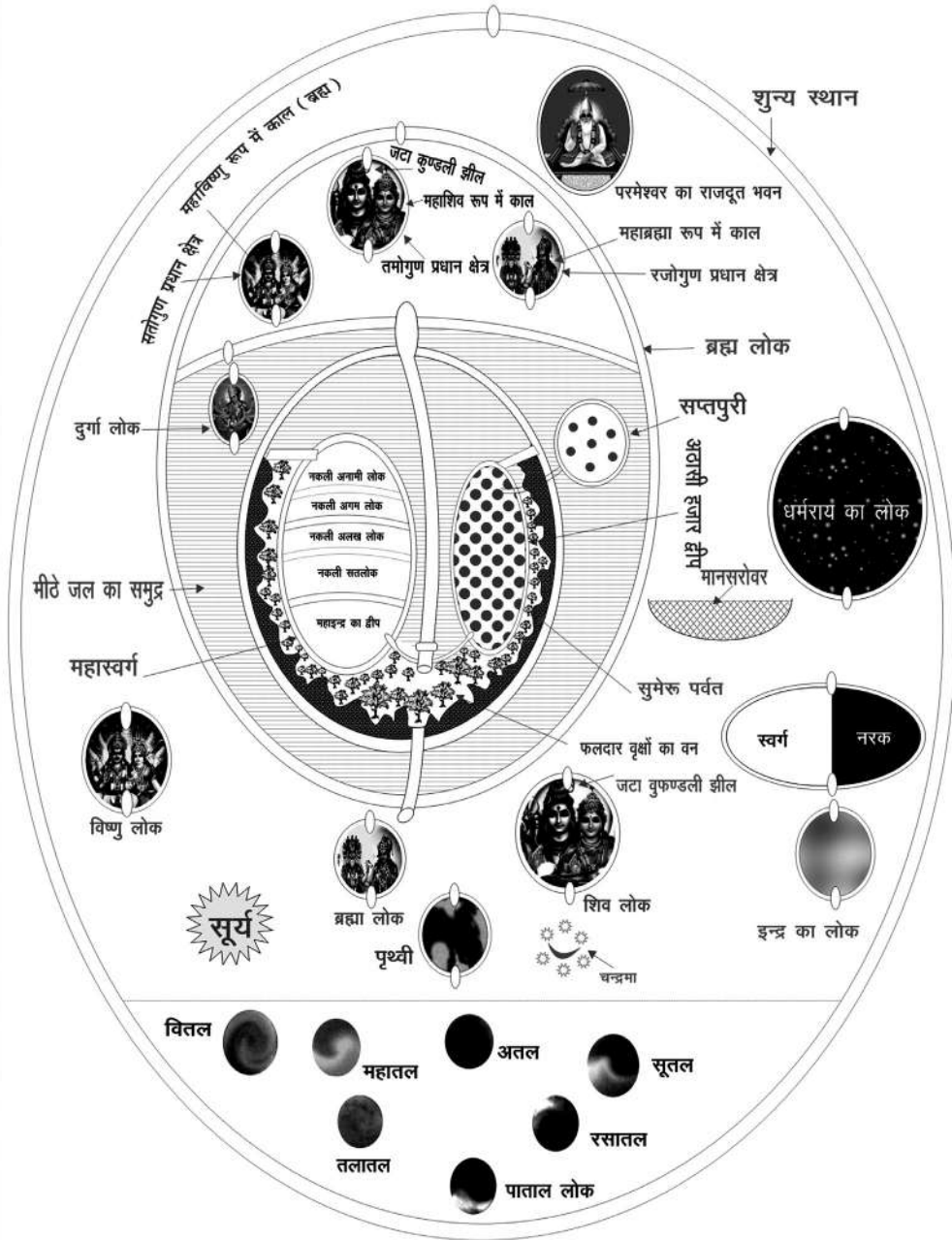
का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकिय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मनमानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त-ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त-शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) ने इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है। काल ब्रह्म के आदेश से प्रकृति देवी ने तीनों एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देती है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का प्रभु बनाया तथा काल ब्रह्म स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक

ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं।

एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है।

दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पृष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पृष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद् देवी महापुराण तीसरा स्कन्ध पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर काल ब्रह्म अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पृष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कन्ध, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति कीः कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो।

भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

❖ उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन

मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है।

तीसरा स्कन्ध अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा – अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः
के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा।। 42।।

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किसलिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है। ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग-विलास करता है।

ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा

सूक्ष्मवेद से शेष सृष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का श्राप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाएँ तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती।

{प्रमाण :-इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।}

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढ़े।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात् काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकृति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते।

दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ`कालको (व्यक्तिम्) नर रूप आकार में कृष्ण (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भाव को (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको कृष्ण समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निंरजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूंगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊंगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि जीव उत्पत्ति क्यों नहीं की? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पति का सब कार्य असम्भव है।

ब्रह्म (काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। तब दुर्गा (प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे श्राप दूँगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मुझे माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा को पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें श्राप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – "दास गरीब यह चूक धुरों धुर")

माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शाप देना

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ है तब दोनों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है?

ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।

ब्रह्मा को श्राप :- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

गायत्री को श्राप :- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।

पुहपवति को श्राप :- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। (हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी

(कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।)

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को श्राप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

{सृष्टि रचना में दुर्गा जी के अन्य नामों का बार-बार लिखने का उद्देश्य है कि पुराणों, गीता तथा वेदों में प्रमाण देखते समय भ्रम उत्पन्न नहीं होगा। जैसे गीता अध्याय 14 श्लोक 3-4 में काल ब्रह्म ने कहा है कि प्रकृति तो गर्भ धारण करने वाली सब जीवों की माता है। मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ। श्लोक 5 में कहा है कि प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण जीवात्मा को कर्मों के बँधन में बाँधते हैं।-(लेख समाप्त)। इस प्रकरण में प्रकृति तो दुर्गा है तथा तीनों गुण तीनों देवता यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव के सांकेतिक नाम हैं।}

विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर, देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जग में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है।

काल के इक्कीस ब्रह्माण्डों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जग में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए :-

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया। भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहाँ पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तीनों अपने-अपने लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पृथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है। उपरोक्त विवरण एक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सूक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सूक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओ३म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को

निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूंगा। मुझे अव्यक्त जाना करेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ3म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को श्रापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खाएगा तो सर्व को ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाऐं।

इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

प्रत्येक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि :-

'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है।
माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है।
आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई।
अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्माण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्माण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्माण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्माण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माएँ रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधी पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है

ब्रह्म लोक का लघु चित्र
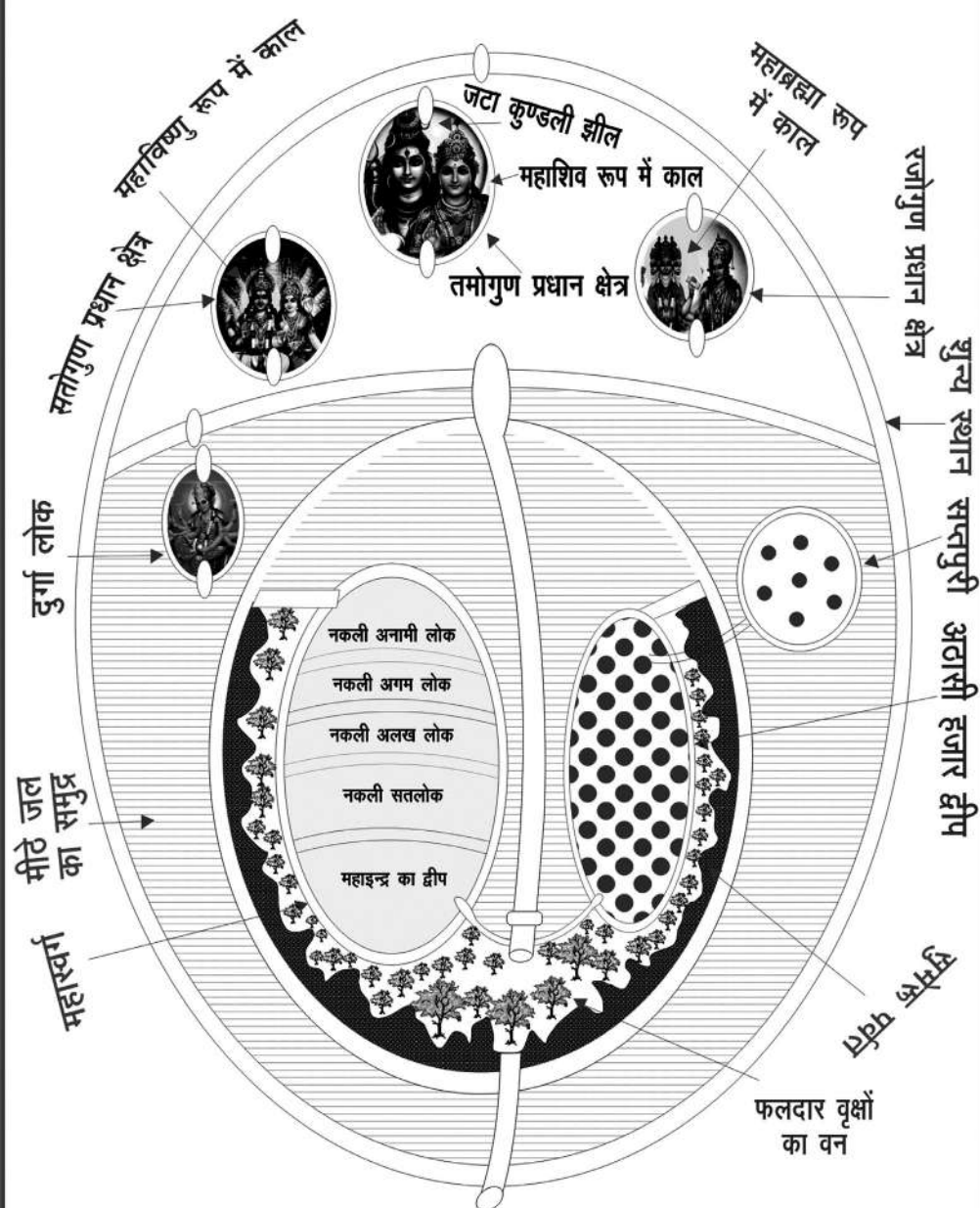
ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र
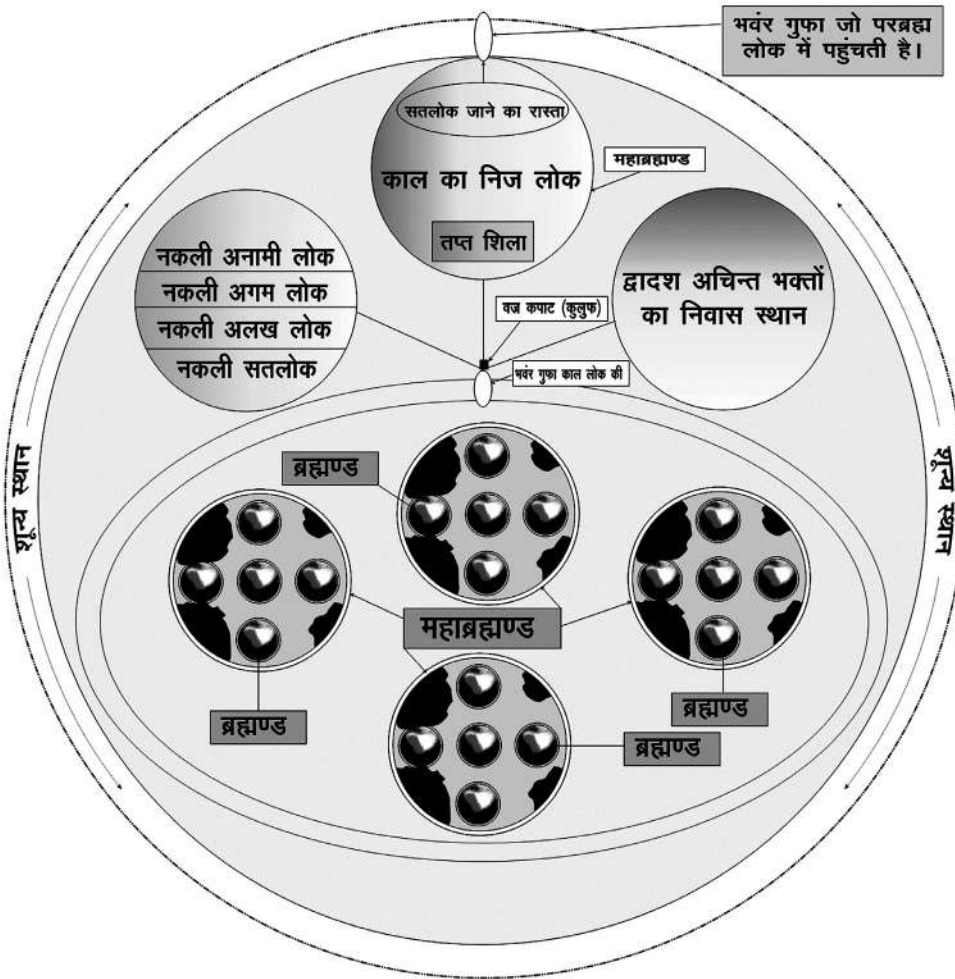
तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्माण्डों को चार महाब्रह्माण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्माण्ड में पाँच ब्रह्माण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्माण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड की रचना एक महाब्रह्माण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है।

जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों की स्थापना

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण सात संख ब्रह्माण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। अन्य कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, वह स्वतंत्र राज्य करेगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माएँ जो परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्माण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माएँ गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माएँ जो पहले काल ब्रह्म के साथ गई आत्माओं के प्रेम में व्याकुल थी, वे अक्षर पुरूष के वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के

लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ।

पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्माण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्माण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्माण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्माण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्माण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकृति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्माण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों सहित असंख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं।

पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी.वी. पर बाहर का सर्व दृश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

पवित्र अथर्ववेद में सृष्टि रचना का प्रमाण

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :-

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्त्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
सः बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म—ज—ज्ञानम्—प्रथमम्—पुरस्तात्—विसिमतः—सुरुचः—वेनः—आवः—सः—
बुध्न्याः —उपमा—अस्य—विष्ठाः—सतः—च—योनिम्—असतः—च—वि वः

अनुवाद :— (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ—बूझ से (पुरस्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को रचा। उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न

(विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :-

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।

तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्—पित्र्या—राष्ट्रि—एतु—अग्रे—प्रथमाय—जनुषे—भुवनेष्ठाः—तस्मा—एतम्—सुरुचम्

— हवारमह्यम्—धर्मम्—श्रीणान्तु—प्रथमाय—धास्यवे

अनुवाद :— (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पति की शक्ति अर्थात् पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक—दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।

ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति

ब्रह्मः—ब्रह्मणः— उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्माण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा सृजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक—ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म—क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्माण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्माण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है। जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।

महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां स**द्म** पार्थिवं च रजः।।4।।

:—हि—दिवः—स—पृथिव्या—ऋतस्था—मही—क्षेमम्—रोदसी—अकस्भायत्—

महान् —मही—अस्कभायद्—विजातः—धाम्—सदम्—पार्थिवम्—च—रजः

अनुवाद :— (सः) उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर—अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पृथिव्या) नीचे के पृथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड (मही) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सूक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्माण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न—भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्माण्ड में छोटे—छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।

अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः—बुध्न्यात्—आष्ट्र—जनुषेः—अभि—अग्रम्—बृहस्पतिः—देवता—तस्य— सम्राट—अहः— यत्—शुक्रम्—ज्योतिषः—ज. निष्ट—अथ—द्युमन्तः—वि—वसन्तु—विप्राः

अनुवाद :— (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि—अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया—दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकृति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।

एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे— विषिते—एष— जज्ञे—बहुभिः—सा. कम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद — (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टि उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर
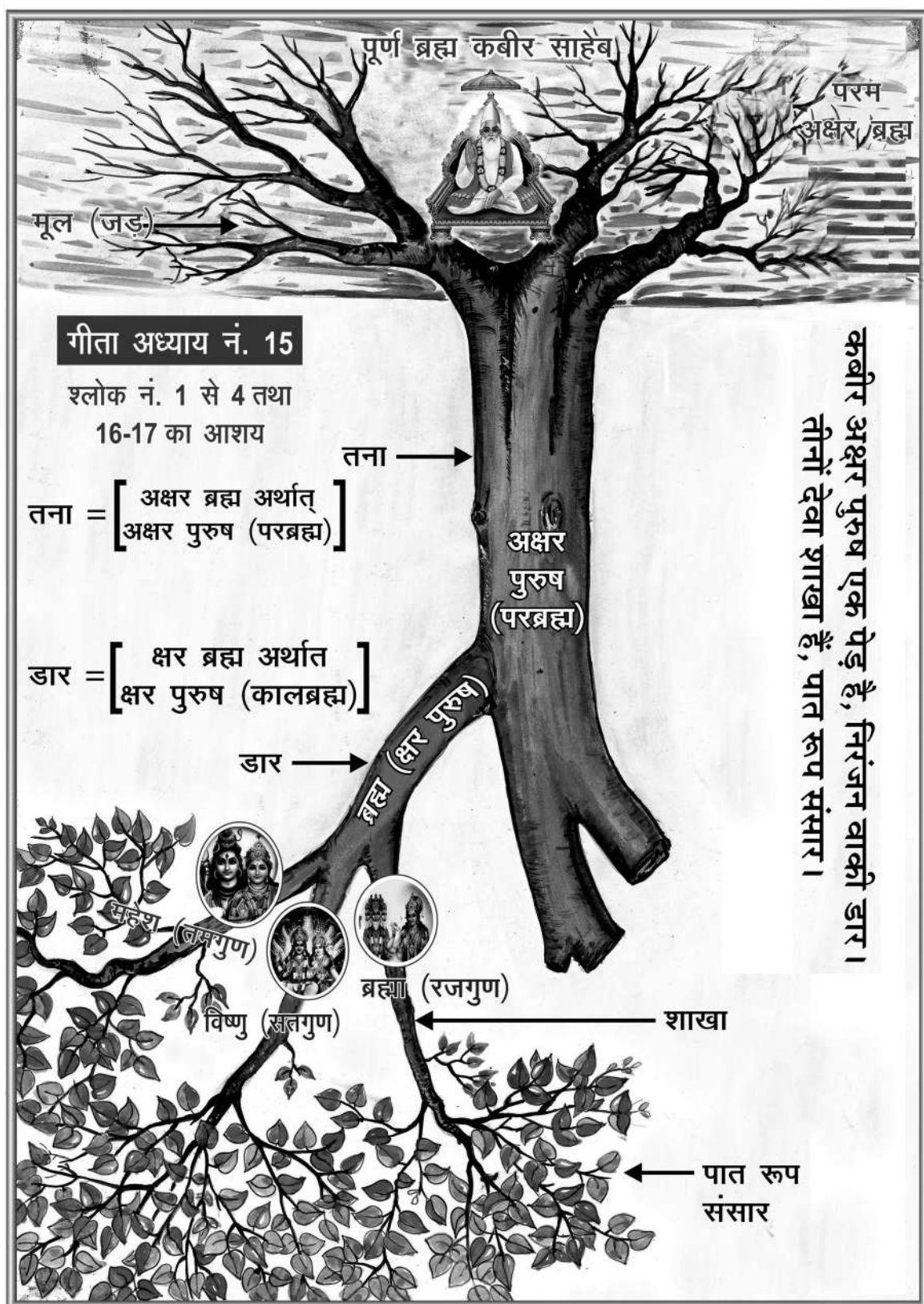
ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे।

तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहा :-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकूँ सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च— गच्छात्
त्वम्— विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को अर्थात् जिनका पूर्ण मोक्ष हो गया, वे सत्यलोक में जा चुके हैं। उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्माण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्माण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

पवित्र ऋग्वेद में सृष्टि रचना का प्रमाण

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्रशिर्षा—पुरूषः—सहस्राक्षः—सहस्रपात्
स—भूमिम्—विश्वतः—वृत्वा—अत्यातिष्ठत् —दशंगुलम्।

अनुवाद :— (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरुष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्माण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने

चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्माण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष–एव–इदम्–सर्वम्–यत्–भूतम्–यत्–च–भाव्यम्

उत–अमृतत्वस्य– इशानः–यत्–अन्नेन–अतिरोहति

अनुवाद :– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

तावान्–अस्य–महिमा–अतः–ज्यायान्–च–पुरूषः

पादः–अस्य–विश्वा– भूतानि–त्रि–पाद्–अस्य–अमृतम्–दिवि

अनुवाद :– (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात्् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्माण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्माण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरुष-अक्षर पुरुष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरुष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है। {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :-

गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।

सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।

दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार।

हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि—पाद—ऊर्ध्वः—उदैत्—पुरुषः—पादः—अस्य—इह—अभवत्—पूनः

ततः— विश्वङ्— व्यक्रामत्—सः—अशनानशने—अभि

अनुवाद :— (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलो. क—अलख लोक—अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टि रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट श्राप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्माण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशिय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभु ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्माण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं (अमृतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।

माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः

स—जातः—अत्यरिच्यत— पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :— (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे—छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के

पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सुक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कृताः

देवा—यत्—यज्ञम्— तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम्।

अनुवाद :— (सप्त) सात संख ब्रह्माण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्माण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात संख ब्रह्माण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन्—अयज्ञम—अ—यजन्त—देवाः—तानि—धर्माणि—प्रथमानि— आसन्—ते— ह—नाकम्— महिमानः— सचन्त— यत्र—पूर्वे—साध्याः—सन्ति देवाः।

अनुवाद :— जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टि के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची सृष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्माण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधि अनुसार करता

है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैंः- ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता–पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3 (गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है। {जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है।} एक ब्रह्माण्ड की सृष्टि रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे! इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्माण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे ज्ञान नहीं, इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कन्ध पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अथ. र्ात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ

अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कन्ध पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कन्ध अ. 6 के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कन्ध में।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।

अनुवाद :– (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाएँ हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (शिव पुराण पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया। फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टि रचना का प्रमाण

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा)

तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं। यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित् ।।

अनुवाद :– (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वृक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्ष को (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके ।।

अनुवाद :– (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा ।।

अनुवाद :– (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्व ब्रह्माण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असंड्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्ष्म वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी ।।

अनुवाद :– जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च, क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते ।।

अनुवाद :– (लोके) इस संसार में (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणिया. के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनीयां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उस के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्वदर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरुष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरुष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वृक्ष का पालन होता है तथा वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

पवित्र बाइबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण

इसी का प्रमाण पवित्र बाइबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाइबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाइबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं, वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाइबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरिूल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो। उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मो (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं।

पूर्ण परमात्मा ने कहा :- कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना

➢ **विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच**

वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद्ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मृत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्त्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए।

कृपया पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोई न जाने पद निरवाना।।1।।
यही कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवों का भरम नशाओ।।2।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि राम का का भेद न जाना।।3।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोई बिरला जाने।।4।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।5।।
अब मैं तुमसे कहूँ चिताई। त्रिदेवन की उत्पत्ति भाई।।6।।
कुछ संक्षेप कहूँ गौहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।7।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।8।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछे से माया उपजाई।।9।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।10।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।11।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।12।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।13।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।14।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।15।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।16।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।17।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। माया को रही तब आसा।।18।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।19।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।20।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।21।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।22।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।23।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।24।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।25।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।26।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।27।।

अकाल पुरुष काहू नहीं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।28।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्म को ना पहिचाने।।29।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।30।।
तीनों गुण का यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।31।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।।32।। कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।33।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास जी से कहा था कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्त्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों (देवों) देवताओं (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली।

मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्माण्ड समेत सोलह (16) संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

➢ **विशेष :- पाठकजन विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दू समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाश्वान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दू समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (वह विद्वान नही) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्ति साधना करवाकर परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने पाँच वर्ष की लीलामय आयु में सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में सर्व सद्ग्रन्थों से स्पष्ट हो रहा है। इससे सिद्ध है कि कविंदेव (कबीर प्रभु) तत्त्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।**

आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना का प्रमाण

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धूंधूंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तख्त कबीर ख्वासा।।2।।
मन मोहिनी सृजी माया। सतपुरुष कबीर एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सृजे दरबानी। चौंसठ युग तप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथ्वी जा कूँ दीन्ही। राज करो देवा रख आधीनी।।5।।
ब्रह्मण्ड इक्कीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जग लीन्हा।।6।।

माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्या। मन माया का रूप विचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सर्वस्व जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनुरागी। धर्मराय दिया दिल से त्यागी।।11।।
पुरुष लोक से दीया ढहाही। सहज दास के दीप चल आये भाई।।12।।
सहज दास जिस द्वीप रहंता। कारण कौन कौन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ युग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथ्वी हम कूँ दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन मौरा। मनमोहिनी ठगिया भंवरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चल आये।।17।।
अगर द्वीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहज दास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष से अर्ज गुजारूं। जब तुम्हारा बिमान उतारूं।।20।।
सहज दास को किया पियाना। सत्यलोक लिया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अबिगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर द्वीप चल गये प्रानी।।23।।
कौन हुक्म करी अर्ज आवाजा। कहां पठाऊँ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमान चले अधिकाई। छिन में अपने द्वीप चल आई।।26।।
हम तो अर्ज करी अनुरागी। तुम विषय लोक जाओ बड़भागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। जहां कबीरा रूप में थाना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पांचों मिल जगत बंधाना। लख चौरासी में जीव सताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज बैठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिस्त बैकुण्ठ दगा सी साजी।।33।।
कृत्रिम जीव भुलाने भाई। निज घर की तो खबर न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उत्पत्ति खपति याह प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौरा जम जेरी।।36।।
पांचों तत्त्व हैं प्रलय मांहीं। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्मण्ड सकल भ्रमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्मण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊँ हंस शब्द सुन दासा। अगम द्वीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर यम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पांचों ऊपर पद की नगरी। बाट विहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सौं दावा। भवसागर में जीव भ्रमाया।।44।।
हम तो कहैं अगम की बाणी। जहां अबिगत अदली आप कबीर बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थिर ठामं।।46।।
युगन युगन हम कहते आये। जम जौरा से हंस छुटाये।।47।।

जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भ्रमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो किन देखा।।49।।
दास गरीब कबीर की बाणी। खोजो हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी ने भी यही कहा कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्माण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकृति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकृति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा श्राप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मृत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे। संत गरीबदास जी कृत अमर ग्रन्थ के अध्याय ''हंस परमहंस की कथा की वाणी नं. 37-43 में कहा है कि :-

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाये आपै खाई। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ओम् सोहं का है खेला।।37।।
शिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई। लाख ग्रासै नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कूती।।38।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उत्पत्ति प्रलय डांडे। ये तीनौं चेला बट पारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।39।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपन नरक, बैकुण्ठ बनाये। यौह हरहट का कूवा लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।40।।
कीड़ी कुंजर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा। अरब अलिल इन्द्र हुए भाई, हरहट डोरि बंधे सब आई।।41।।
शेष महेश अरू गणेश तांई, हरहट डोरि बंधे सब आंई। शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरि बंधे सब खेवा।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरि कहूँ सुन लेखा।।42।।
ये चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरि बंधे सब आवैं।
यौह है खोखा पुर का कूवा, या में पड़या सो निश्चय मूवा।।43।।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के बहुत सारे अण्डे होते हैं।

जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है। जो साधक ब्रह्म (काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन, देवी दुर्गा तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा अन्य देवताओं तक की भक्ति करते हैं, वे काल ब्रह्म रूपी नागनी के घेरे यानि जन्म-मरण के चक्र में काल लोक में रह जाते हैं जिनको काल ज्योति निरंजन खाता है।)

गरीब, माया काली नागनी, अपने जाये खात। कुंडली में छोड़ै नहीं, सौ बातौं की बात।।

इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्माण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मृत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पृष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक
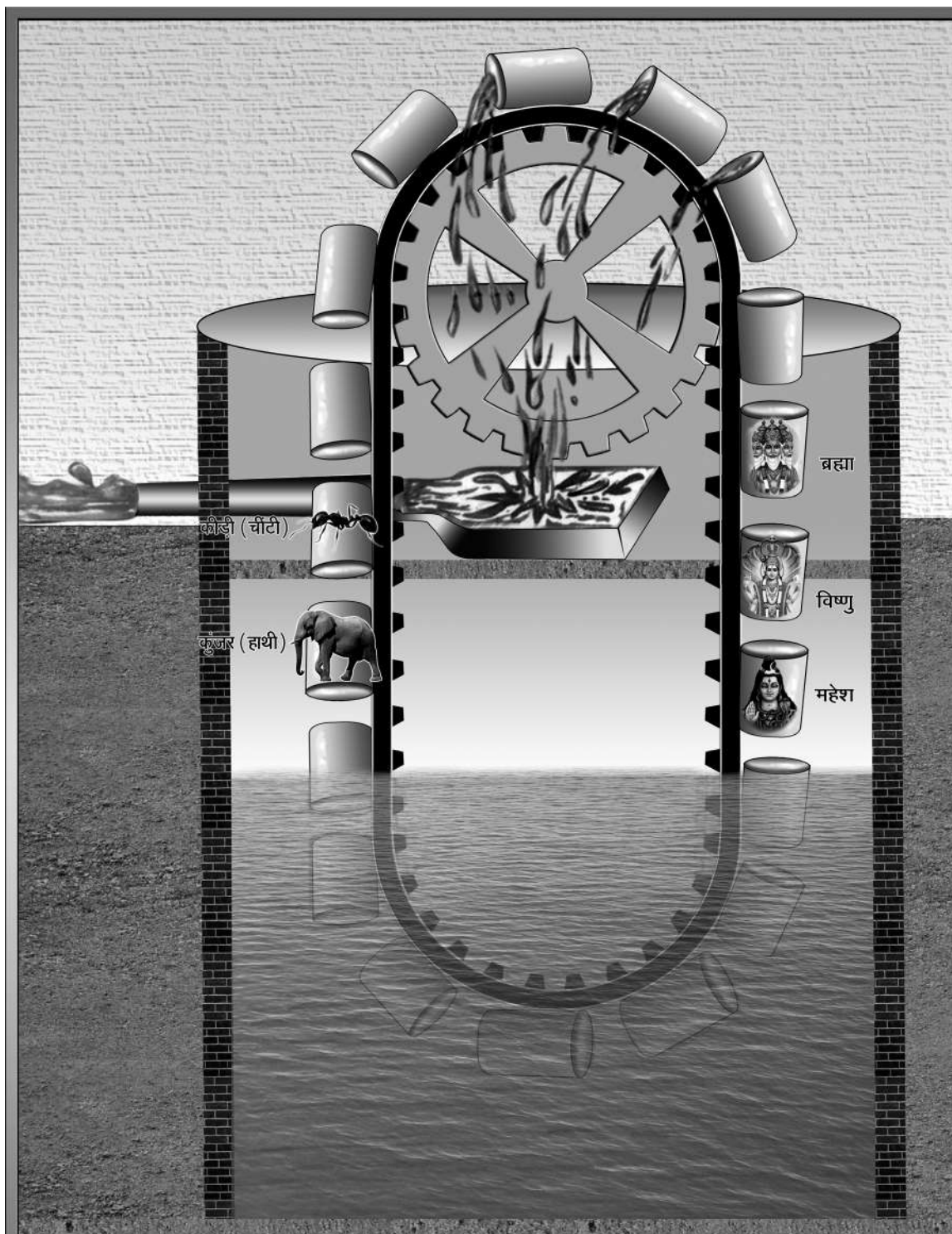
योह हरहट का कुआँ लोई, या गल बंध्या है सब कोई ।
कीड़ी कुंजर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा ।।

काल लोक में जन्म–मरण रूपी हरहट (चक्र)

कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए काल लोक में ही रहे तथा 'ॐ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

गरीब, अनंत कोटि अवतार हैं, माया के गोबिंद। कर्ता होय होय उतरैं, बहुर पड़ैं जग फंद।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है। जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न होकर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बंधकर कर्मों को भोगकर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का श्राप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया।

महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :-

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये। इन पांचौं मिल प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पांचन मिल जीव अटकाये। युगन युगन हम आन छुटाये।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगंबर कुतब औलिया, सुरनर मुनिजन ज्ञानी। येतां कूँ तो राह नहीं पाया, जम कै बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा धामी, जम पर जंग चलाऊँ। जौरा कूँ तो जान न द्योंगा, बांध अदलि घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूं कूँ मोसूं, महाकाल सिर मूंडूं। मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूँ ढूंढूं।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन चुन खाई। ज्योति स्वरूपी कह निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
सहंस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मूला डोरी। एत्यां में यम का तलबाना, चलिये पुरुष किशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सत की मौहर करूंगा। पुरुष दीप कूँ हंस चलाऊँ, दरा न रोकन द्योंगा।।
हम तो बंदी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवे। सत्यलोक की सिकल सुनावां, वाणी हमरी अखवे।।
नौ लख पट्टन ऊपर खेलूं, शाहदरे कूँ रोकूं। द्वादश कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी। खालिक खलक खलक में खालिक, अबिगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आये। पांचों पर प्रवाना मेरा, बंध छुटावन धाये।।
जहां ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं जाहीं।
जहां कर्ता नहीं जान भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राना।।
जहाँ पांच तत्व तीनों गुण नाहीं, जौरा काल द्वीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सत्य लोक पठाऊँ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' = (कविर्) कविर्देव (कबीर परमेश्वर) (अंघ अरि) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' = (बम्भारिः) का बन्धनों का (अरि) शत्रु अर्थात् बंधनों का शत्रु यानि बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो

समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। इसी विषय में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने कहा है :-

शिव ब्रह्मा का राज इन्द्र गिनती कहां। च्यार मुक्ति बैकुण्ठ समझ येता लह्या।।
संख युगन की जूनी उमर बड़ धारिया। जा जननी कुर्बान सु कागज पारिया।।
ऐती उमर बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान न भेंटे संत रे।।

चाहे संख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओउम् + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

❖ यदि सत्य साधना की जाए तो कम आयु ही अच्छी है। यदि सत्य साधना सतपुरूष की नहीं है तथा काल ब्रह्म की व देवताओं व देवियों की पूजा करके व प्राणायाम आदि करके लंबी आयु जीने वालों का कोई लेखा (Account) मोक्ष मार्ग में नहीं किया जाएगा। इतनी लंबी आयु (जितनी शंकर जी की है) मिल जाए तो भी एक दिन मृत्यु अवश्य होगी। भक्ति गलत है। इसलिए जन्म तथा मृत्यु का चक्र बना रहेगा। ऐसी आयु का क्या औचित्य है।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्माण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड व अन्य सर्व ब्रह्माण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमृतवाणी महला 1(गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।

इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार :-

ओअंकारि ब्रह्मा उतपति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओउम् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओउम् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :- श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओउम् + तत् + सत्) का स्थान-स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा।।(17)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमृतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)
हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीतं (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आप की साधना भगवान शिव तक है, उससे आप को शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्व से पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ

(अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमृतवाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टि के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टि रचना कैसे हुई? पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए जो पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कृप्या निम्न पढ़ें :- सृष्टि रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टि की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टि की रचना'' पृष्ठ 8 :-

''प्रथम धुंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पृष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं। आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ३म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।

पाक कुरआन से पुस्तक में प्रमाणित आयतों की फोटोकॉपियां

सूरः अम्बिया-21 से आयत नं. 30-32, 92, 104 की फोटोकॉपी :-

सूरह अम्बिया–21

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

अ–व लम् य–रल्लज़ी–न क–फ़रू अन्नस्–समावाति वल्अर्–ज़ का–नता रत्क़न् फ़–फ़–तक़्नाहुमा व ज–अ़ल्ना मिनल्माइ कुल्–ल शैइन् हय्यिन् अ–फ़ला युअ्मिनून (30)

क्या काफ़िरों ने नहीं देखा कि आसमान और ज़मीन दोनों मिले हुए **थे,** तो **हमने जुदा-जुदा** कर दिया और तमाम जानदार चीज़ें हमने पानी से बनायीं, फिर ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते ? (३०)

सूरह अम्बिया–21

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

व ज–अ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि–य अन् तमी–द बिहिम् व ज–अ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल् ल–अ़ल्लहुम् यह्–तदून (31)

और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाये ताकि लोगों (के बोझ) से हिलने (और झुकने) न लगे और उस में कुशादा रास्ते बनाये, ताकि लोग उन पर चलें। (३१)

सूरह अम्बिया–21

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

व ज–अ़ल्नस्समा–अ सक़्फ़म् मह्फ़ूज़ंव् व हुम् अ़न् आयातिहा मुअ्‌रिज़ून (32)

और आसमान को महफ़ूज़ छत बनाया, इस पर भी वे हमारी निशानियों से मुंह फेर रहे हैं। (३२)

सूरह अम्बिया–21

إِنَّ هَٰذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩٢﴾

इन्–न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव् वाहि–द–तंव् व अना रब्बुकुम् फ़अ्‌बुदून (92)

यह तुम्हारी जमाअत एक ही जमाअत है, और मैं तुम्हारा परवरदिगार हूं, तो मेरी ही इबादत किया करो। (९२)

सूरह अम्बिया–21

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿١٠٤﴾

यौ–म नत्विस् समा–अ क–तय्यिस् सिजिल्लि लिल्कुतुबि कमा बदअ्‌ना अव्व–ल ख़ल्क़िन् नुई़दुहू वअ्‌दन् अ़लैना इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन (104)

जिस दिन हम आसमान को इस तरह लपेट लेंगे, जैसे ख़तों का तूमार लपेट लेते हैं, जिस तरह हमने (काइनात) को पहले पैदा किया था, उसी तरह दोबारा पैदा कर देंगे। (यह) वायदा (है जिस का पूरा करना) ज़रूरी है। हम ऐसा ज़रूर करने वाले हैं। (१०४)

सूरः अनआम-6 से आयत नं. 108 की फोटोकॉपी :-

सूरह अनआम –6

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾

व ला तसुब्बुल्लज़ी–न यद्ऊ–न मिन् दूनिल्लाहि फ–य–सुब्बुल्ला–ह अद्वम् बिग़ैरि अिल्मिन् कज़ालि–क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ–म–लहुम् सुम्–म इला रब्बिहिम् मर्जिअुहुम् फ़यु– नब्बिउहुम् बिमा कानू यअ्–मलून (108)

और जिन लोगों को ये मुश्रिक ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, उनको बुरा न कहना कि ये भी कहीं ख़ुदा को बे-अदबी से बे-समझे बुरा (न) कह बैठें। इस तरह हमने हर एक फ़िर्क़े के आमाल (उन की नज़रों में) अच्छे कर दिखाये हैं फिर उनको अपने परवरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है, तब वह उन को बतायेगा कि वे क्या-क्या किया करते थे।(१०८)

सूरः बकरा-2 से आयत नं. 25,28,29,35 की फोटोकॉपी :-

सूरह बक़रह–2

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِن قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾

व बश्–शिरिल्–लज़ी–न आ–मनू व अमिलुस्सालिहाति अन्–न लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्ति–हल्–अन्हारु कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् स–म–रतिर्–रिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्–लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु व उतू बिही मु–तशाबिहन् व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मु–तह्ह–रतुंव्–व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (25)

और जो लोग ईमान ले आए और नेक अमल करते रहे, उन को ख़ुशख़बरी सुना दो कि उन के लिए (नेमत के) बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन में से किसी क़िस्म का मेवा खाने को दिया जाएगा तो कहेंगे यह तो वही है जो हम को पहले दिया गया था और उन को एक दूसरे से शक्ल में मिलते-जुलते मेवे दिए जाएंगे और वहां उन के लिए पाक बीवियां होंगी और वे बहिश्तों में हमेशा रहेंगे। (२५)

सूरह बक़रह–2

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

कै–फ़ तक्फ़ुरू–न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़ अह्याकुम् सुम्–म युमीतुकुम् सुम्–म युह्यीकुम् सुम्–म इलैहि तुर्–जअून(28)

(काफ़िरो!) तुम ख़ुदा के कैसे इन्कारी हो सकते हो, जिस हाल में कि तुम बे-जान थे, तो तुमको जान बख़्शी, फिर वही तुमको मारता है, फिर वही तुमको ज़िंदा करेगा, फिर उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (२८)

सूरह बक़रह–2

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

हुवल्लज़ी ख़–ल–क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअन् सुम्मस्तवा इ–लस्समाइ फ़–सव्वाहुन्–न सब्–अ समावातिन् व हु–व बिकुल्लि शैइन् अलीम(29)

वही तो है, जिसने सब चीज़, जो ज़मीन में हैं, तुम्हारे लिए पैदा कीं, फिर आसमानों की तरफ़ मुतवज्जह हुआ, तो उनको ठीक सात आस्मान बना दिया और वह हर चीज़ से ख़बरदार है।(२९) ★

सूरह बक़रह–2

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

व क़ुल्ना या आ–दमुस्कुन् अन्–त व ज़ौजुकलजन्न–त व कुला मिन्हा र–ग़–दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्–श–ज–र–त फ़–तकूना मिनज़्ज़ालिमीन (35)

और हमने कहा कि ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और जहां से चाहो, बे-रोक-टोक खाओ (पियो) लेकिन उस पेड़ के पास न जाना, नहीं तो ज़ालिमों में (दाखिल) हो जाओगे। (३५)

सूरः बकरा-2 से आयत नं. 36,37,38,188,219 की फोटोकॉपी :-

सूरह बक़रह–2

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۳۶﴾

फ़–अ–ज़ल्लहुमश्–शैतानु अन्हा फ़–अख़्–र–जहुमा मिम्मा काना फ़ीहि व कुल्–नहबितू बअ् –ज़ुकुम् लि–बअ्ज़िन् अदुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्त–क़र्रुंव्–व मताउन् इला हीन(36)

फिर शैतान ने दोनों को वहां से फिसला दिया और जिस (ऐश व निशात) में थे, उससे उनको निकलवा दिया। तब हमने हुक्म दिया कि (जन्नत से) चले जाओ, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त तक ठिकाना और मआश (रोज़ी) मुक़र्रर कर दिया गया है। (३६)

सूरह बक़रह–2

فَتَلَقّٰىٓ اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿۳۷﴾

फ़–त– लक़्क़ा आ–दमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ता–ब अलैहि इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम(37)

फिर आदम ने अपने परवरदिगार से कुछ कलिमात (बोल) सीखे (और माफ़ी मांगी) तो उसने उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया। बेशक वह माफ़ करने वाला (और) रहम वाला है। (३७)

सूरह बक़रह–2

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۳۸﴾

कुल्–नहबितू मिन्हा जमीअन् फ़इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़–मन् तबि–अ हुदा–य फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम व ला हुम् यह्ज़नून (38)

हमने फ़रमाया कि तुम सब यहां से उतर जाओ। जब तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचे तो (उसकी पैरवी करना कि) जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की, उनको न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मनाक होंगे। (३८)

सूरह बक़रह–2

وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

व ला तअ्कुलू अम्वा–लकुम् बै–नकुम् बिलबातिलि व तुद्लू बिहा इलल्हुक्कामि लि–तअ्कुलू फ़रीक़म्–मिन् अम्वालिन्नासि बिल्–इस्मि व अन्तुम् तअ्–लमून (188)

और एक दूसरे का माल ना-हक़ न खाओ और न उसको (रिश्वत के तौर पर) हाकिमों के पास पहुंचाओ ताकि लोगों के माल का कुछ हिस्सा नाजायज़ तौर पर न खा जाओ और (इसे) तुम जानते भी हो। (१८८) ★

सूरह बक़रह–2

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۭ قُلْ فِيْهِمَآ اِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ ۡ وَاِثْمُهُمَآ اَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ۭ وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ڛ

قُلِ الْعَفْوَ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱۹﴾

यस्अलू–न–क अनिल्–ख़म्रि वल्मैसिरि कुल् फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव्–व मनाफ़िअु लिन्नासि व इस्मुहुमा अक्बरु मिन् नफ़्अिहिमा व यस्अलून–क मा ज़ा युन्फ़िक़ून कुलिल् अफ़्व कज़ालि–क युबय्यि– नुल्लाहु लकुमुल् आया ति ल–अल्लकुम् त–त–फ़क्करून (219)

(ऐ पैग़म्बर!) **लोग तुम से शराब और जुए का हुक्म मालूम करते हैं। कह दो कि इन में नुक़्सान बड़े हैं और लोगों के** लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, मगर उनके नुक़्सान फ़ायदों से कहीं ज़्यादा हैं।' **और यह भी तुम से पूछते हैं** कि (ख़ुदा की राह में) कौन सा माल ख़र्च करें? कह दो कि जो ज़रूरत से ज़्यादा हो। इस तरह ख़ुदा तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को खोल-खोलकर बयान फ़रमाता है, ताकि तुम सोचो। (२१९)

सूरः बकरा-2 से आयत नं. 243, 255, 261 की फोटोकॉपी :-

सूरह बक़रह–2

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

अ–लम् त–र इलल्लज़ी–न ख़–रजू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह– ज़–रल्मौति फ़क़ा–ल लहुमुल्लाहु मूतू सुम्–म अह्याहुम् इन्नल्ला–ह लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासि व लाकिन्– न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (243)

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो (गिनती में) हज़ारों ही थे और मौत के डर से अपने घरों से निकल भागे थे, तो ख़ुदा ने उन को हुक्म दिया कि मर जाओ, फिर उन को ज़िन्दा भी कर दिया। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लोगों पर मेहरबानी रखता है, लेकिन ज़्यादा लोग शुक्र नहीं करते। (२४३)

सूरह बक़रह–2

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

अल्लाहु ला इला–ह इल्ला हु–व अल्हय्युल् क़य्यूमु ला तअ्खुज़ुहू सि–नतुंव्–व ला नौमुन् लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यशफ़अ़ु अ़िन्दहू इल्ला बि–इज़्निही यअ्– लम् मा बै–न अैदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू–न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा – अ वसि– अ़ कुर्सिय्यु–हुस्–समावाति वल्अर्ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अ़लिय्युल्–अज़ीम(255)

ख़ुदा, (वह सच्चा माबूद है कि) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। ज़िन्दा हमेशा रहने वाला, उसे न ऊंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है। कौन है कि उस की इजाज़त के बग़ैर उस से (किसी की) सिफ़ारिश कर सके। जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो कुछ उन के पीछे हो चुका है, उसे सब मालूम है और वे उस की मालूमात में से किसी चीज पर दस्तरस (क़ाबू पाना) हासिल नहीं कर सकते, हां, जिस क़दर वह चाहता है (उसी क़दर मालूम करा देता है) उस की बादशाही (और इल्म) आसमान और ज़मीन सब पर हावी है और उसे उन की हिफ़ाज़त कुछ भी मुश्किल नहीं। वह बड़ा आली रुत्बा और जलीलुल क़द्र है। (२५५)

सूरह बक़रह–2

مَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝

म–सलुल्लज़ी–न युन्फ़िक़ू–न अम्वा–लहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि क–म–सलि हब्बतिन् अम्ब–तत् सब्–अ़ सनाबि–ल फ़ी कुल्लि सुम्बु–लतिम्मि–अतु हब्बतिन् वल्लाहु युज़ाअ़िफ़ु लिमंय्यशा–उ वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (261)

जो लोग अपना माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं, उन (के माल) की मिसाल उस दाने की-सी है, जिस से सात बालें उगें और हर एक बाल में सौ-सौ दाने हों और ख़ुदा जिस (के माल) को चाहता है, ज़्यादा करता है, वह बड़ी वुस्अत वाला और सब कुछ जानने वाला है। (२६१)

सूरः बकरा-2 से आयत नं. 262, 268, 269, 276, 278 की फोटोकॉपी :-

सूरह बक़रह–2

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٢٦٢﴾

अल्लज़ी–न युन्फ़िक़ू–न अम्वा– लहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्–म ला युत्बिअू–न मा अनफ़क़ू मन्नंव्वला अ–जल्– लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्–द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून(262)

जो लोग अपना माल खुदा के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर इस के बाद न इस खर्च का (किसी पर) एहसान रखते हैं और न (किसी को) तक्लीफ़ देते हैं, उन का बदला उन के परवरदिगार के पास (तैयार) है और (क़ियामत के दिन) न उन को कुछ डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। (२६२)

सूरह बक़रह–2

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

अश्शैतानु यअ़िदुकुमुल्–फ़क्–र व यअ्मुरुकुम् बिल्फ़ह्शा–इ वल्लाहु यअ़िदुकुम् मग़्फ़ि–र–तम्मिन्हु व फ़ज़्लन् वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम(268)

(और **देखना**) शैतान (का कहा न मानना, वह) तुम्हें तंगदस्ती का खौफ़ दिलाता और बे-हयाई के काम **करने** को कहता है और खुदा तुम से अपनी बख्शिश और रहमत का वायदा करता **है और** खुदा **बड़ी** वुस्अत वाला (और) सब कुछ जानने वाला है।, (२६८)

सूरह बक़रह–2

يُّؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

युअ्तिल्हिक्म–त मंय्यशा–उ व मंय्यूअ्तल्–हिक्म–त फ़–क़द् ऊति–य ख़ैरन् कसीरन् व मा यज़्–जक्करु इल्ला उलुल्– अल्बाब (269)

वह जिस को चाहता है दानाई बख़्शता है और जिस को दानाई मिली, बेशक उस को बड़ी नेमत मिली और नसीहत को वही लोग **क़ुबूल** करते हैं, जो अक़्लमंद हैं। (२६९)

सूरह बक़रह–2

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِى الصَّدَقٰتِ ۗ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٧٦﴾

यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्स–दक़ाति वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्–ल कफ़्फ़ारिन् असीम(276)

खुदा सूद को ना-बूद (यानी बे-बरकत) करता और ख़ैरात (की बरकत) को बढ़ाता है और खुदा किसी ना-शुक्रे गुनाहगार को दोस्त नहीं रखता। (२७६)

सूरह बक़रह–2

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧٨﴾

या अय्युहल्लज़ी–न आ– मनुत्तक़ुल्ला–ह व–ज़रू मा बक़ि–य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (278)

मोमिनो ! खुदा से डरो और अगर ईमान रखते हो तो जितना सूद बाक़ी रह गया है, उस को छोड़ दो। (२७८)

सूरः बकरा-2 से आयत नं. 279, 280 की फोटोकॉपी :-

सूरह बक़रह–2

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَأْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ أَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٩﴾

फ़–इल्लम् तफ्–अलू फ़अ्–ज़नू बि–ह़र्बिम्–मिनल्लाहि व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ़–लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू–न व लातुज़्–लमून (279)

अगर ऐसा न करो, तो ख़बरदार हो जाओ (कि तुम) ख़ुदा और रसूल से जंग करने के लिए (तैयार होते हो) और अगर तौबा कर लोगे (और सूद छोड़ दोगे) तो तुम को अपनी असल रक़म लेने का हक़ है, जिस में न औरों का नुक़सान, और न तुम्हारा नुक़सान। (२७९)

सूरह बक़रह–2

وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلٰى مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨٠﴾

व इन् का–न ज़ू अ़स्रतिन् फ़–नज़ि–रतुन् इला मै–स–रतिन् व अन् त–सद्दक़ू ख़ैरुल्–लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्–लमून (280)

और अगर क़र्ज़ लेने वाला तंगदस्त हो तो (उसे) फ़राख़ी (के हासिल होने) तक मोहलत (दो) और अगर (क़र्ज़ रक़म) बख़्श ही दो, तो तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है, बशर्ते कि समझो। (२८०)

सूरः फातिहा-1 से आयत नं. 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7 की फोटोकॉपी :-

सूरह फ़ातिहा–1

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١﴾

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आ़–लमीन(1)

सब तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही के लिए है जो तमाम मख़्लूक़ात का परवरदिगार है।[1] (१)

सूरह फ़ातिहा–1

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾

अर्रह़्मानिर्रहीम (2)

बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला, (२)

सूरह फ़ातिहा–1

مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٣﴾

मालिकि यौमिद्दीन (3)

इन्साफ़ के दिन का हाकिम,[3] (३)

सूरह फ़ातिहा–1

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ﴿٤﴾

इय्या– क नअ़्बुदु व इय्या–क नस्तईन (4)

(ऐ परवरदिगार!) हम तेरी ही इबादत करते हैं, और तुझी से मदद मांगते हैं, (४)

सूरह फ़ातिहा–1

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿٥﴾

इह्दिनस्– सिरातल मुस्– तक़ीम (5)

हम को सीधे रास्ते पर चला, (५)

सूरह फ़ातिहा–1

صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

सिरातलज़ी– न अन्अ़म्–त अ़लैहिम् (6)

उन लोगों का रास्ता जिन पर तू अपना फ़ज़्ल व करम करता रहा, (६)

सूरह फ़ातिहा–1

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿٧﴾

गैरिल–मग्ज़ूबि अ़लैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन (7)

न उनका जिन पर ग़ुस्सा होता रहा और न गुमराहों का। ✶ (७)

सूरः फुरकान-25 से आयत नं. 52,53,54,55,56 की फोटोकॉपी :-

सूरह फुरकान–25

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿۵۲﴾

फ़ला तुतिअ़िल्–काफ़िरी–न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा (52)

तो तुम काफ़िरों का कहा न मानो और उनसे इस क़ुरआन के हुक्म के मुताबिक़ बड़े ज़ोर से लड़ो। (५२)

सूरह फुरकान–25

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾

व हुवल्लज़ी म–र–जल् बह्रैनि हाज़ा अ़ज़्बुन् फुरातुंव् व हाजा मिल्हुन् उजाजुन् व ज–अ़–ल बै–नहुमा बर्‌ज़ख़ंव् व हिज्‌रम् मह्‌जूरा (53)

और वही तो है जिस ने दो नदियों को मिला दिया, एक का पानी मीठा है, प्यास बुझाने वाला और दूसरे का खारी है छाती जलाने वाला और दोनों के दर्मियान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी। (५३)

सूरह फुरकान–25

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ۭ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿۵۴﴾

व हुवल्लज़ी ख़–ल–क़ मिनल्माइ ब–शरन् फ़–ज–अ़–लहू न–स–बंव् व सिह्‌रन् व का–न रब्बु–क क़दीरा (54)

और वही तो है, जिस ने पानी से आदमी पैदा किया, फिर उस को नसब वाला और दामादी रिश्ते वाला बनाया और तुम्हारा परवरदिगार(हर तरह की) क़ुदरत रखता है। (५४)

सूरह फुरकान–25

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۭ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿۵۵﴾

व यअ़्बुदू–न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम् व कानल्काफ़िरू अ़ला रब्बिही ज़हीरा (55)

और ये लोग ख़ुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की पूजा करते हैं कि जो न उन को फ़ायदा पहुचा सके और न नुक़सान और काफ़िर अपने परवरदिगार की मुख़ालफ़त में बड़ा ज़ोर मारता है। (५५)

सूरह फुरकान–25

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۵۶﴾

व मा अर्‌सल्ना–क इल्ला मुबश्शिरंव् व नज़ीरा (56)

और हमने (ऐ मुहम्मद!) तुम को सिर्फ़ ख़ुशी और अज़ाब की ख़बर सुनाने को भेजा है। (५६)

सूरः फुरकान-25 से आयत नं. 57,58,59 की फोटोकॉपी :-

सूरह फुरक़ान–25

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝٥٧

कुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन्शा–अ अंय्यत्तख़ि–ज़ इला रब्बिही सबीला (57)

कह दो कि मैं तुम से इस (काम) का मुआवज़ा नहीं मांगता। हां, जो शख्स चाहे अपने परवरदिगार की तरफ़ जाने (का) रास्ता अख़्तियार कर ले। (५७)

सूरह फुरक़ान–25

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۭ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرَا ۝٥٨

व त–वक्कल् अ–ललह़य्यिल् लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बि–ह़म्दिही व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरा (58)

और उस (खुदा-ए-) ज़िंदा पर भरोसा रखो जो (कभी) नहीं मरेगा और उस की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो और वह अपने बन्दों के गुनाहों से ख़बर रखने को काफ़ी है। (५८)

सूरह फुरक़ान–25

اِلَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٩

अल्लज़ी ख़–ल– क़स्समावाति वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ–लल्अ़र्शि अर्रह़मानु फ़स्–अल् बिही ख़बीरा (59)

जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठहरा, (वह जिसका नाम रहमान यानी) बड़ा मेहरबान (है), तो उसका हाल किसी बा-ख़बर से मालूम कर लो, (५९)

सूरः हदीद-57 से आयत नं. 26 की फोटोकॉपी :-

सूरह हदीद–57

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ

व ल–क़द् अर्सल्ना नूह़व् व इब्राही–म व ज–अ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिमन् नुबुव्व–त वल्किता–ब फ़मिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम् मिन्हुम् फ़ासिक़ून (26)

और हम ने नूह और इब्राहीम को (पैग़म्बर बना कर) भेजा और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब (के सिलसिले) को (वक़्त-वक़्त पर) जारी रखा, तो कुछ तो उन में से हिदायत पर हैं और अक्सर उन में से इताअत से बाहर हैं। (२६)

सूरः हदीद-57 से आयत नं. 27 की फोटोकॉपी :-

सूरह हदीद–57

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا فَآتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ ﴿٢٧﴾

सुम्–म कफ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बिई़–सब्नि मर्‌य–म व आतैनाहुल् इन्जी–ल व ज–अ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल् लज़ी–नत्त–बअू़हु रा–फ़्–तंव् व रह्‌म–तन् व रह्‌बानिय्य–त निब्‌त–द अू़हा मा क–तब्‌नाहा अ़लैहिम् इल्लब्‌तिग़ा– अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा रऔ़हा ह़क़्–क़ रिआ़यतिहा फ़आतै– नल्लज़ी–न आ–मनू मिन्हुम् अज्– रहुम् व कसीरुम् मिन्हुम् फ़ासिक़ून (27)

फिर उन के पीछे उन्हीं के क़दमों पर (और) पैग़म्बर भेजे और उन के पीछे मरयम के बेटे ईसा को भेजा और उन को इंजील इनायत की और जिन लोगों ने उन की पैरवी की, उन के दिलों में शफ़क़त और मेहरबानी डाल दी और लज़्ज़तों से किनारा-कशी की, तो उन्हों ने ख़ुद एक नयी बात निकाल ली। हम ने उन को इस का हुक्म नहीं दिया था, मगर (उन्हों ने अपने ख़्याल में) ख़ुदा की ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए (आप ही ऐसा कर लिया था) फिर जैसा उस को बनाना चाहिए था, निबाह भी न सके। पस जो लोग उन में से ईमान लाए उन को हम ने उन का बदला दिया और उन में से बहुत से ना-फ़रमान हैं। (२७)

सूरः हज्ज-22 से आयत नं. 61 की फोटोकॉपी :-

सूरह हज्ज–22

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾

ज़ालि–क बि-अन्नल्ला–ह यूलिजुल्लै–ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा–र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला–ह समीअुम् बसीर (61)

यह इस लिए कि ख़ुदा रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और ख़ुदा तो सुनने वाला, देखने वाला है। (६१)

सूरः कहफ-18 से आयत नं. 47,48 की फोटोकॉपी :-

सूरह कहफ़–18

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾

व यौ–म नु–सय्यिरुल् जिबा–ल व त–रल् अर्–ज़ बारि–ज़–तंव् व ह–शर्‌नाहुम् फ़–लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ–ह़दा (47)

और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को साफ़ मैदान रखोगे और उन (लोगों) को हम जमा कर लेंगे तो उन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे। (४७)

सूरह कहफ़–18

وَعُرِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفًّا لَّقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّن نَّجْعَلَ لَكُم مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾

व अ़ुरिज़ू अ़ला रब्बि–क सफ़्फ़न् ल–क़द् जिअ्‌तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व–ल मर्रतिम् बल् ज़–अ़म्तुम् अल्लन् नज्–अ़–ल लकुम् मौअ़िदा (48)

तुम्हारे परवरदिगार के सामने सफ़ बांध कर लाए जाएंगे (तो हम उन से कहेंगे कि) जिस तरह हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था, (इसी तरह आज) तुम हमारे सामने आए, लेकिन तुम ने तो यह ख़्याल कर रखा था कि हम ने तुम्हारे लिए (क़ियामत का) कोई वक़्त मुक़र्रर ही नहीं किया। (४८)

सूरः लुक्मान-31 से आयत नं. 12,13,14,15 की फोटोकॉपी :-

सूरह लुक़्मान–31

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۱۲﴾

व ल–क़द् आतैना लुक़्मानल् हिक्म–त अनिश्कुर् लिल्लाहि व मंय्यश्कुर् फ़–इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क–फ़–र फ़–इन्नल्ला–ह ग़ानेय्यून् हमीद (12)

और हमने लुक़्मान को हिक्मत बख़्शी कि ख़ुदा का शुक्र करो और जो शख़्स शुक्र करता है, तो अपने ही फ़ायदे के लिए शुक्र करता है और जो ना-शुक्री करता है, तो ख़ुदा भी बे-परवाह (और) हम्द (व तारीफ़) के लायक़ है। (१२)

सूरह लुक़्मान–31

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۳﴾

व इज़् क़ा–ल लुक़्मानु लिब्निही व हु–व यअ़िज़ुहू याबुनय्–य ला तुशरिक् बिल्लाहि इन्नश्शिर्–क ल–ज़ुल्मुन् अ़ज़ीम (13)

और (उस वक़्त को याद करो,) जब लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा ख़ुदा के साथ शिर्क न करना शिर्क तो बड़ा (भारी) ज़ुल्म है। (१३)

सूरह लुक़्मान–31

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰي وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ۭ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿۱۴﴾

व वस्सैनल्इन्सा–न बिवालिदैहि ह–म–लत्हु उम्मुहू वह्नन् अ़ला वह्निंव् व फ़िसालुहू फ़ी आ़मैनि अनिश्कुर्ली व लिवालिदै–क इलय्यल् मसीर (14)

और हम ने इंसान को, जिसे उस की मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ सह कर पेट में उठाए रखती है (फिर उस को दूध पिलाती है) और (आखिरकार में) दो वर्ष में उस का दूध छुड़ाना होता है,(अपने, साथ ही) उसके मां-बाप के बारे में ताकीद की है कि मेरा भी शुक्र करता रह और अपने मां-बाप का भी (कि तुम को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है●(१४)

सूरह लुक़्मान–31

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰٓي اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۡ وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾

व इन् जा–हदा–क अ़ला अन् तुश्रि–क बी मा लै–स ल–क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ़्हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ़रूफ़ंव् वत्तबिअ़् सबी–ल मन् अना–ब इलय्–य सुम्–म इलय्–य मर्जिअ़ुकुम् फ़उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्–मलून(15)

और वे तेरे पीछे पड़े हों कि तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे, जिस का तुझे कुछ भी इल्म नहीं, तो उन का कहना न मानना। हां, दुनिया के कामों में उन का अच्छी तरह साथ देना और जो शख़्स मेरी तरफ़ रुजूअ लाये, उस के रास्ते पर चलना, फिर तुम को मेरी तरफ़ लौट कर आना है। तो जो काम तुम करते रहे, मैं सब से तुम को आगाह करूंगा। (१५)

सूरः लुक्मान-31 से आयत नं. 16,17,18,19,21 की फोटोकॉपी :-

सूरह लुक़्मान–31

يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۶﴾

या बुनय्–य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा–ल ह़ब्बतिम् मिन् ख़र्दलिन् फ–तकुन् फ़ी सख़्–रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु इन्नल्ला–ह लती़फुन् ख़बीर (16)

(लुक़्मान ने यह भी कहा कि) बेटा ! अगर कोई अमल (मान लो) राई के दाने के बराबर भी (छोटा) हो और हो भी किसी पत्थर के अन्दर या आसमानों में (छिपा हुआ हो) या ज़मीन में, ख़ुदा उस को क़ियामत के दिन ला मौजूद करेगा। कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लतीफ़ (और) ख़बरदार है।(१६)

सूरह लुक़्मान–31

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿۱۷﴾

या बुनय्–य अक़िमिस्स़ला–त वअ्मुर् बिल्मअ्रूफ़ि वन्–ह

अ़निल्मुन्करि वसबिर् अ़ला मा अस़ा–ब–क इन्–न ज़ालि–क मिन् अ़ज़्मिल् उमूर(17)

बेटा ! नमाज़ की पाबन्दी रखना और (लोगों को) अच्छे कामों के करने का हुक्म और बुरी बातों से मना करते रहना और जो मुसीबत तुझ पर आए, उस पर सब्र करना। बेशक ये बड़ी हिम्मत के काम हैं। (१७)

सूरह लुक़्मान–31

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿۱۸﴾

व ला तुसअ़्अ़िर् ख़द्–द–क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म–र–ह़न् इन्नल्ला–ह ला युह़िब्बु कुल्–ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर (18)

और (घमंड में आकर) **लोगों से गाल न फुलाना और ज़मीन में अकड़ कर न चलना कि ख़ुदा किसी इतराने वाले ख़ुद-पसंद को पसंद नहीं करता। (१८)**

सूरह लुक़्मान–31

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿۱۹﴾

वक़्सि़द् फ़ी मशयि–क वग़्ज़ुज़् मिन् सौ़ति–क इन्–न अन्करल् अस्वाति लसौ़तुल् ह़मीर (19)

और अपनी चाल में दर्मियानी रास्ता अपनाए रहना और (बोलते वक़्त) आवाज़ नीची रखना, क्योंकि (ऊंची आवाज़ गधों की-सी है और कुछ शक नहीं कि) सब से बुरी आवाज़ गधो की है★(१९)

सूरह लुक़्मान–31

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿۲۱﴾

व इज़ा की़–ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़–लल्ल नत्तबिअु मा व–जद्ना अ़लैहि आबा–अना अ–व लौ कानश्शैतानु यद्अूहुम् इला अ़ज़ाबिस् सअ़ीर (21)

और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमायी है, उसी की पैरवी करो, तो कहते हैं कि हम तो उसी की पैरवी करेंगे, जिस पर अपने बाप-दादा को पाया। भला अगरचे शैतान उन को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता है, (तब भी ?) (२१)

सूरः मायदा-5 से आयत नं. 1 की फोटोकॉपी :-

सूरह मायदा – 5

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ۬ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ①

या अय्युहल्लज़ी–न आ–मनू औफू बिल्अुकूदि उहिल्लत् लकुम् बही– मतुल्अन्आमि इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् ग़ै–र मुहिल्लिस्सैदि व अन्तुम् हुरुमुन् इन्नल्ला–ह यह्कुमु मा युरीद (1)

ऐ ईमान वालो ! अपने इक़रारों को पूरा करो । तुम्हारे लिए चार पाए जानवर, (जो चरने वाले हैं,) हलाल कर दिए गये हैं, अलावा उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाये जाते हैं, मगर (हज के) एहराम में शिकार को हलाल न जानना । खुदा जैसा चाहता है, हुक्म देता है । (१)

सूरः मुद्दस्सिर-74 से आयत नं. 26, 27 की फोटोकॉपी :-

सूरह मुद्दस्सिर–74

سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ㉖

सउस्लीहि स–क़र (26)

ऐसा हरगिज़ नहीं होगा । यह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है । (१६)

सूरह मुद्दस्सिर–74

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ㉗

व मा अद्रा–क मा स–क़र (27)

हम उसे सक़र पर चढ़ाएंगे । (१७)

सूरः मुल्क-67 से आयत नं. 2,9 की फोटोकॉपी :-

सूरह मुल्क–67

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ②

निल्लज़ी ख़–ल–क़ल् मौ–त वल् हया–त लियब्लु–वकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़–म–लन् व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् ग़फूर (2)

उसी ने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया, ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन अच्छे काम करता है और वह ज़बरदस्त (और) बख़्शने वाला है । (२)

सूरह मुल्क–67

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَاۗءَنَا نَذِيْرٌ ڏ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ښ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ⑨

क़ालू बला क़द् जा–अना नज़ीरुन् फ़–कज़्ज़ब्ना व कुल्ना मा नज़्ज़–लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर(9)

वे कहेंगे, क्यों नहीं, ज़रूर हिदायत करने वाला आया था, लेकिन हम ने उस को झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने तो कोई चीज़ नाज़िल ही नहीं की । तुम तो बड़ी ग़लती में (पड़े हुए) हो ।(९)

सूरः मुअ्मिनून-23 से आयत नं. 12,49,50,79 की फोटोकॉपी :-

सूरह मुअ्मिन–40

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾

ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअि–यल्लाहु वह्दहू क–फ़र्तुम् व इंय्युश्रक् बिही तुअ्मिनू फ़ल्हुक्मु लिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् कबीर (12)

यह इसलिए कि जब तन्हा ख़ुदा को पुकारा जाता था, तो तुम इन्कार कर देते थे और अगर उस के साथ शरीक मुक़र्रर किया जाता था, तो मान लेते थे, तो हुक्म तो ख़ुदा ही का है, जो (सब से) ऊपर(और सब से) बड़ा है. (१२)

सूरह मुअ्मिनून–23

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

व ल–क़द् आतैना मूसल्किता–ब ल–अ़ल्लहुम् यह्तदून (49)

और हम ने मूसा को किताब दी थी, ताकि वे लोग हिदायत पाएं।(४९)

सूरह मुअ्मिनून–23

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ﴿٥٠﴾

व ज–अ़ल्–नब्–न मर्य–म व उम्महू आ–यतंव् व आवैनाहुमा इला रब्–वतिन् ज़ाति क़रारिंव् व मअ़ीन (50)

और हम ने मरयम के बेटे (ईसा) और उन की मां को (अपनी) निशानी बनाया था और उन को एक ऊंची जगह पर, जो रहने के लायक़ थी और जहां (निथरा हुआ) पानी जारी था पनाह दी थी। (५०)★

सूरह मुअ्मिन–40

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾

अल्लाहुल्लज़ी ज– अ़–ल लकुमुल् अन्आ़–म लि– तर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्कुलून(79)

ख़ुदा ही तो है,जिसने तुम्हारे लिए चारपाए बनाए,ताकि उनमें से कुछ पर सवार हो और कुछ **को तुम** खाते हो।(७९)

सूरः निसा-4 से आयत नं. 9,10,36 की फोटोकॉपी :-

सूरह निसा –4

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ⑨

वल यख़्शलज़ी–न लौ त–रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्य–तन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू अलैहिम् फ़ल्यत्–तकुल्ला– ह वल्–यक़ूलू क़ौलन् सदीदा (9)

और ऐसे लोगों को डरना चाहिए जो (ऐसी हालत में हों कि) अपने बाद नन्हें-नन्हें बच्चे छोड जाएं और उन को उन के बारे में डर हो (कि उनके मरने के बाद इन बेचारों का क्या हाल होगा) पस चाहिए कि ये लोग ख़ुदा से डरें और माक़ूल बात कहें। (९)

सूरह निसा –4

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ⑩

इन्नल्लज़ी–न यअ्कुलू–न अम्वा– लल्–यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू–न फ़ी बुतूनिहिम् नारन् व स–यस्लौ–न सअ़ीरा(10)

जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तौर पर खाते हैं, वे अपने पेट में आग भरते हैं और दोज़ख में डाले जाएंगे। (१०) ✱

सूरह निसा –4

بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ⑯

बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि व मा म–ल–कत् ऐमानुकुम् इन्नल्ला–ह ला युहिब्बु मन् का–न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा (36)

और ख़ुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और मां-बाप क़राबत वालों और यतीमों और मुहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू के साथियों (यानी पास बैठने वालों) और मुसाफ़िरों और जो लोग तम्हारे कब्ज़े में हों, सब के साथ एहसान करो कि ख़ुदा (एहसान, करने वालों को दोस्त रखता है और) घमंड करने वाले, बड़ाई मारने वाले को दोस्त नहीं रखता। (३६)

सूरः रहमान-55 से आयत नं.7,9 की फोटोकॉपी :-

सूरह रह्मान–55

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ⑦

वस्समा–अ र– फ़–अ़हा व व–ज़–अल् मीज़ान (7)

और उसी ने आसमान को बुलंद किया और तराज़ू क़ायम की, (७)

सूरह रह्मान–55

وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ⑨

व अक़ीमुल् वज़्–न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल् मीज़ान (9)

और इंसाफ़ के साथ ठीक तौलो और तौल कम मत करो (९)

सूरः रूम-30 से आयत नं.11 की फोटोकॉपी :-

सूरह रूम–30

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ⑪

अल्लाहु यब्दउल्ख़ल्–क़ सुम्–म युअ़ीदुहू सुम्–म इलैहि तुरजअ़ून (11)

ख़ुदा ही ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, वही उस को फिर पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट जाओगे। (११)

सूरः सबा-34 से आयत नं. 23 की फोटोकॉपी :-

सूरह सबा–34

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

व ला तन्फ़अुश् शशफ़ा–अ़तु अ़िन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि–न लहू ह़त्ता इज़ा फुज़्ज़ि–अ अ़न् कुलूबिहिम् क़ालू माज़ा क़ा–ल रब्बुकुम् क़ालुलह़क़्–क़ व हुवल् अ़लिय्युल् कबीर(23)

और ख़ुदा के यहां (किसी के लिए) सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी, मगर उस के लिए, जिस के बारे में वह इजाज़त बख्शे, यहां तक कि जब उन के दिलों से बेचैनी दूर कर दी जाएगी, तो कहेंगे कि तुम्हारे परवरदिगार ने क्या फ़रमाया है ? फ़रिश्ते कहेंगे कि हक़ (फ़रमाया है) और वह ऊंचे मर्तबे वाला (और) बहुत बड़ा है। (२३)

सूरः सजदह-32 से आयत नं. 4 की फोटोकॉपी :-

सूरह सजदह–32

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤﴾

अल्लाहुल् लज़ी ख़–ल–क़स्समावाति वल्अर्–ज़ व मा बै–नहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल् अ़र्शि मा लकुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव् वला शफ़ीअ़िन् अ–फ़ला त–त–ज़क्करून (4)

ख़ुदा ही तो है, जिस ने आसमानों और ज़मीन को और जो चीज़ें इन दोनों में हैं, सब को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर क़ायम हुआ। उस के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न सिफ़ारिश करने वाला। क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते ? (४)

सूरः शूरा-42 से आयत नं. 1,2 की फोटोकॉपी :-

सूरह शूरा–42

حٰمٓ ﴿١﴾ عٓسٓقٓ ﴿٢﴾

(1) अ़ैन्–सीन्–क़ाफ़्

हामीम्, (१)

सूरह शूरा–42

كَذَٰلِكَ يُوحِي إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣﴾

(2) कज़ालि–क यूह़ी इलै–क व इ– लल्लज़ी–न मिन् क़ब्लि–क ल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल् ह़कीम

ऐन्-सीन्-क़ाफ़्, (२)

सूरः यूनुस-10 से आयत नं. 4 की फोटोकॉपी :-

सूरह यूनुस–10

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَآمَنَ مَن فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتَّىٰ يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٩٩﴾

व लौ शा–अ रब्बु–क लआ–म–न मन् फ़िल् अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअ़न् अ–फ़–अन्–त तुक्रिहुन्ना–स ह़त्ता यकूनू मुअ्मिनीन (99)

और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता, तो जितने लोग ज़मीन पर हैं, सब के सब ईमान ले आते। तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वे मोमिन हो जाएं। (९९)

❑❑❑